

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

मामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विविध ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद,
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक—
(ऑनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

सम्पादक

श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए.

उप सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर.

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ }
प्रथमावृत्ति ५०० }

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२

{ ख्रिस्ताब्द १९६०
{ मूल्य १२००

RAJASTHAN PURATANA GRANTHMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa,
Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular

★

GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany, Bhandarkar
Oriental Research Institute, Poona, Vishveshvarananda Vaidic
Research Institute, Hoshiarpur, (Punjab), Gujrat Sahitya
Sabha, Ahemdabad, Retired Honorary Director,
Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay, General
Editor, Gujarat Puratattva Mandir
Granthavali, Bharatiya Vidya
Series, Sinhghi Jain Series
etc etc

★ ★

No 51

A CLASSIFIED LIST OF MANUSCRIPTS IN THE RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

Pt 2

★ ★ ★

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

Director, Rajasthana Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

सञ्चालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत सूची राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुरमे अप्रैल सन् १९५६ ई० से मार्च सन् १९५८ ई० तक सग्रहीत ३८५५ हस्तलिखित ग्रन्थोंकी है। मार्च सन् १९५६ तक सग्रहीत ४००० ग्रन्थोंकी सूची भाग १ के रूपमे प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही मार्च सन् १९५८ तक सग्रहीत राजस्थानी ग्रन्थोंकी सूची भी राजस्थानी ग्रन्थ सूची, भाग १, के नामसे पृथक प्रकाशित की जा चुकी है।

ग्रन्थोका वर्गीकरण और विषयनिर्द्धारण ये दोनो ही कठिन एव समय-सापेक्ष्य कार्य है। हमारा विचार था कि राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमे सग्रहीत ग्रन्थोका वर्गीकृत और सविवरण सूचीपत्र तैयार कराकर विज्ञानोके सामने लाया जाय, किन्तु ग्रन्थोकी सख्या दिनो-दिन बढ़ती रही और आगन्तुक विद्वानो-एव अनुसधित्सुओ का, सामग्रीकी उपयोगिताकी दृष्टिमे रखते हुए, यह अनुरोध रहा कि सग्रहीत सामग्रीका कोई न कोई रूप जल्दी से जल्दी सामने आ जाना चाहिए। एतदर्थ यथासाध्य उपकरणोको जुटा कर विभागीय कर्मचारियो द्वारा थोडे से थोडे समयमे मोटे तौर पर वर्गीकरण एव विषय-विभाजन कराकर ये सूचियाँ वार्षिक सूचिकाके रूपमे प्रकाशित की जा रही है। आगे विवरणादि तैयार करनेका कार्यक्रम भी हमारे सामने है और राजस्थानी सचित्र ग्रन्थोके सूचीपत्रका काम इस दिशामे श्रीगणेश करनेके लिए हाथ मे लिया गया है। इस प्रकार हमारे सूची-प्रकाशन कार्यक्रममे एक तो सग्रहीत-ग्रन्थोकी सूची और दूसरी विवरणात्मक सूचियाँ यथावसर निकलती रहेगी।

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची, भाग २, का स्वरूप यद्यपि प्रथम भागके बहुत कुछ अनु-रूप रखा गया है, फिर भी इसमे आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन किये गये है। यथा भाषाका कोष्ठक कम करके हिन्दी एव राजस्थानी ग्रन्थोके पृथक् विषय बना दिये गये है जिससे सुविधानुसार इन दोनो भाषाओके ग्रन्थोकी जानकारी मिल सके। विशेष उल्लेखनीय के कोष्ठकमे रचनाकाल, लिपिस्थान, लिपिकर्ता, ग्रन्थदशा और विषय-स्पष्टीकरणका सक्षिप्त ससूचन किया गया है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट १ मे कुछ विशिष्ट ग्रन्थोके आद्यन्त अश अविफल रूपमे उद्धृत कर दिये गये हैं। साथ ही ग्रन्थके विषयमे यदि कोई विशेष सूचना प्राप्त हुई है तो वह भी समाविष्ट कर दी गई है। तात्पर्य यह है कि ग्रन्थके स्वरूप एव दशाको समझनेके लिए सक्षिप्त रूपमे जानकारी देनेका यथाशक्य प्रयास किया गया है। परिशिष्ट २ मे ग्रन्थकर्ता-नामानुक्रमणिका दी

गई है। स्पष्ट है कि इन दोनों ही सूचियोंमें बहुतसे ग्रन्थ एव ग्रन्थकारोंके नाम अद्यावधि अन्यान्य सस्थाओंमें प्रकाशित ग्रन्थसूचियोंमें, विशेषत राजस्थानी ग्रन्थ-सूचियोंमें नहीं पाये जाते हैं, जो अद्यतन अनुसधित्सु विद्वानोंके लिए विशेष आवश्यक एव उपयोगी हैं।

प्रतिष्ठानकी वर्द्धमान प्रगतिको देखते हुए यह भी उचित ममत्ता गया है कि राज्यमें तत्स्थानों पर उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थ-सग्रहोंको भी इसी विभागके आगत कर दिया जावे। तदनुसार इन्द्रगढ पोथीखानेके २०६ ग्रन्थ प्रतिष्ठानमें प्राप्त हुए हैं जिनकी सूची इसी भागके परिशिष्ट ३ में प्रकाशित की जा रही है। भविष्यमें भी ऐसे प्राप्त होने वाले सरकारी एव व्यक्तिगत सग्रहोंकी सूचियाँ प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित की जावेगी।

इस सूचीमें समाविष्ट ग्रन्थोंके आक्रमाक त्रिशिष्ट परिचयान्त परिचय-पत्रक सन् १९५८ के नवम्बर मासमें ही श्री गोपालनारायण बहुरा एव श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी द्वारा भरे जा चुके थे, परन्तु दिसम्बर १९५८ में प्रतिष्ठानका स्थानान्तरण जोधपुरमें हो गया। यहाँ आकर व्यवस्था आदि करने में ५-६ मासका समय लगा। तदनंतर पुन जाच आदि करके प्रेम कापियाँ तैयार की गईं और मुद्रण चालू करवाया गया। इस पुस्तक का सम्पादन हमारे निर्देशनमें विभाग के उप सचालक श्री गोपालनारायण बहुराने किया तथा परिचय पत्रकाकन, प्रेस कॉपी लेखन, नामानुक्रमणिका और परिशिष्टादि सकलन और प्रूफ-सशोधनादि कार्यमें सर्व श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी, रमानन्द सारस्वत, स्वर्गीय विश्वेश्वरदत्त द्विवेदी प्रभृतिने भी यथेष्ट सहयोग दिया।

आशा है, इस प्रकाशनसे विद्वज्जन एव पुरासाहित्यानुसधित्सु लाभान्वित होंगे।

राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, }
जोधपुर }
दि० २९-७-६० }

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

राजस्थाने प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

विषय - तालिका



विषय	कृनियाँ	पृष्ठ मार्या
१ स्तुतिस्तोत्रादि	२६०	१-१४
२ वैदिक	११०	१५-२०
३ कर्मकाण्ड	१७६	२१-३०
४ तन्त्रमन्त्रादि	१३१	३१-३८
५ धर्मशास्त्र	११३	३९-४६
६ पुराण-कथा-माहात्म्यादि	१७१	४७-५७
७ वेदान्त	२२६	५८-६६
८ न्याय-दर्शन	५६	७०-७२
९ व्याकरण	१६६	७३-८१
१० कोष	५३	८२-८४
११ ज्योतिष	६२३	८५-१२१
१२ छन्द शास्त्र	२४	१२२-१२३
१३ सगीतशास्त्र	३	१२४
१४ कामशास्त्र	४	१२५
१५ काव्य-नाटक-चम्पू	२३३	१२६-१४०
१६ रसालङ्कारादि	४३	१४१-१४३
१७ सुभाषितादि	६४	१४४-१४८
१८ कथा-चरित्र-आख्यानादि	६१	१४९-१५३
१९ श्रायुर्वेद	१४२	१५४-१६१
२० राजस्थानीग्रन्थ	७६८	१६२-२०५
२१ हिन्दीग्रन्थ	५४८	२०६-२३६
२२ जैनस्तोत्र	१४६	२३७-२४५
२३ जैनागम	१८१	२४६-२५६
२४ जैनप्रकरण	१७१	२६०-२७१
२५ प्रकीर्णग्रन्थ	३५	२७२-२७४
परिशिष्ट १ [कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]		२७५-३२६
परिशिष्ट २ [ग्रन्थकारनामानुरुमणिका]		३३०-३४६
परिशिष्ट ३ [इन्द्रगढ पोथीखानेसे प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची]		३४७-३६१



राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १ स्तुतिस्तोत्रादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५८	अग्निहोत्रपञ्चाग्नि स्तोत्र	विष्णुधर्मोत्तर तृतीयकाण्डगत	१८२७	११	लि. क-वैष्णव नृसिंहवास
२	४५०३ (१)	अपराजिता विद्या (रुद्रगीता)	पद्मपुराणोक्त	१८वीं श	१-६	गढ बधणोर मध्ये
३	७६६८	अपराधनिरसन स्तोत्र	शङ्कराचार्य (टी रामानन्दभिक्षु	१८६०	२	लि. क.-रामनारायण
४	६६५२	अपराधसुन्दरस्तोत्र सटीक	रामेन्द्रवनशिष्य)	१७६७	७	
५	४४६७	अपामार्जन स्तोत्र	विष्णुरहस्योक्त (दालभ्य- पुलस्त्यसंवाद)	१८०२	८	लि. क-परमानन्द
६	४४७७	" "	विष्णुधर्मोत्तरे विष्णुरहस्योक्त	१६वीं श.	१०	लि. क.-द्वेवे सदाशिव
७	५४३८ (६)	अष्टाविंशति नाम	भगवदुक्त	१८६०	६६-६७	
८	४२३४	अहल्यास्तोत्र	अध्यात्मरामायणगत	१८वीं श.	६	*
९	४२५४	अज्ञानविमोचनस्तोत्र	नन्दिपुराणगत	१६वीं श	३	*
१०	४३७०	आदित्यहृदयस्तोत्र (द्वादशावरण)	भविष्योत्तरपुराणगत	१८२०	११	लि. क-गगाधर
११	४५१२	आदित्यहृदयस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१६वीं श.	२५	
१२	५०५२	" "	"	१८६५	१६	लि. क.-जोशी पन्नालाल सवाई जयपुरमध्ये
१३	५०५७	" "	"	१६२३	१८	
१४	६७८५	आनन्दलहरी	शङ्कराचार्य	१६०८	२	
१५	४५१३	आपदुद्धारवटुकभैरवकवच स्तोत्र (अष्टोत्तरशतनाम)	रुद्रयामले भैरवतन्त्रोक्त	१८०३	७	लि. क-द्वेवे सदाशिव
१६	६०७४	आलवन्दारस्तोत्र सटीक त्रिपाठ	यामुनाचार्य	१८२८	१३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६२४३	आलवन्दारस्तोत्र सटीक	यामुनाचार्य	१८२६	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१८	६५४७	"	"	१६वीं श	१४	
१९	७५८२	"	"	१८७८	१८	
२०	६३७६	इन्द्राक्षी स्तोत्र		१८वीं श	५	
२१	४६०४	(१) एकश्लोकी भागवत (२) महाभारत (३) दुर्गा (४) सप्तश्लोकी गीता		६६ से ६६		
२२	५६४७	कर्पूरस्तवराज सटीक	महाकालसहितोक्त	१६वीं श	१२	
२३	५४४८	कात्वेवीर्यजुं न कवच	श्रमरतन्त्रोक्त	"	३८	
२४	५७०३	कालिका-कवच	तन्त्रोक्त	१६१२	२	लि क -त्रैजवासी, अतवर
२५	५७६०	कालिकाखड्गमाला स्तोत्र	महाकालसहितान्तर्गत	१६वीं श	३	
२६	५८१७	कालीसहस्रनाम	"	१८वीं श.	३०	
२७	५१६२	काशोमङ्गल स्तोत्र	श्रीशंकराचार्य	१६वीं श	८	
२८	६२८० (२)	कृष्णकरुणामृत	लीलाशुक	१६०६	७-१६	लि क पुजारी हरदेवदास, गोविन्दगढ
२९	७६१६	कृष्णस्तवराज		१६वीं श	१०	
३०	४२३६	कौसल्यास्तोत्र	अध्यात्मरामायणान्तर्गत	१८वीं श	४	
३१	४२३१	गगालहरी	जगन्नाथ भट्ट	१८वीं श	२७	
३२	५४२० (२)	गगालहरी (सटीक)	जगन्नाथ, टी वलदेव	१६वीं श.	४८-६५	हिन्दी टीका सहित
३३	५५६६	गगालहरी बालबोधिनी टीकासहित	टी वलपतिराम	१६वीं श	३२	
३४	६०५८	गगालहरी टीका	टी. चतुर्भुज मिश्र	"	५८	लि क -सालग्राम
				१६०६		

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	४२३७	गगास्तोत्र	नारायण भट्ट	१८वीं श.	४	
३६	६६३६	"	ब्रह्मवैवर्तपुराणगत	१८८१	५	
३७	४२६६	गजेन्द्रमोक्ष	महाभारतोक्त	१८वीं श.	२६	
३८	५२८४	"	"	१६वीं श.	१३	
३९	४५०६	"	"	१८३६	१६	
४०	४४५२ (३८)	गणपतिस्तोत्र		१८वीं श.	४१	लि. क.-प० प्रीतसोभाग्य
४१	४६७०	गायत्रीसहस्रनाम	रघुयामलोक्त	१८१२	११	लि.क.-महात्मा नाथूराम शिवपुरीमध्ये
४२	५४५६	गीता पञ्चरत्न सचित्र		१८वीं श.	२१६	चित्र सख्या ५
४३	५५०८	"		१८३०	३६०	
४४	५८१८	"		१८७४	१६२	
४५	७१७४	"	सचित्र	१८वीं श.	गुटका	चित्र सख्या ५१
४६	४५०८	गुरुगीता	स्कन्दपुराणोत्तरखण्डोक्त	१८१६	५	लि.क-भीकमजी
४७	७६२६	गुरुपादुकास्मृति		१६वीं श.	३	
४८	७१४८	गुरुस्मरणाष्टक	कविताकिसिंह वैकटनाथ शिष्य	"	४०	
४९	५३१६	गोपालविंशति	गोपाल	१८८३	२	गोपालविद्याथिना लिखितं नेतरामजी कृते
५०	५२०५ (१४)	गोपिकागीत (रासपञ्चाध्यायी)	भागवतोक्त	१८वीं श.	४६-६४	
५१	४२६१	गोपीनाथाष्टक	विश्वनाथ चक्रवर्ती	१६४७	२	
५२	४५०५	गोविन्दस्तोत्र	श्रीशंकराचार्य	१८४३	३	
५३	७७८६	गोविन्दाष्टकम्	"	१७५१	२	
५४	५०८३	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१७८६	६१	आद्य चार पत्र अप्राप्त, लि क-धवल, चित्र स. ४६

राजस्थान पुरातत्त्ववेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, १ स्तुतिस्तोत्रादि]

क्रमांक	ग्रथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५	५२०८	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१८वीं श.	६८	चित्र सख्या १०
५६	५२०५ (१२)	चतु श्लोकी भागवत	मार्कण्डेयपुराणोक्त	"	४७-४८	
५७	४४५२ (५८)	चतु षष्टियोगिनीस्तव	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१६वीं श	११६वा	लि.क.-भरतदास वैष्णव, भरतपुर
५८	६३८१	जानकीनवरत्नस्तोत्र	अगस्त्यसंहितान्तर्गत	"	६	लि.क.-रामनारायण
५९	७७०३	जानकीस्तवराज	पद्मपुराणोक्त	१७६०	१८	लि.क.-भगवद्दास
६०	६६६७	जानकीसहस्रनामस्तोत्र		२०वीं श	७	
६१	७०६५	जानकीसहस्रनाम	भैरवीतन्त्रोक्त	१६वीं श	४	वेदान्तपरक
६२	४६६६	ताराकवच	रामायणोक्त	१८वीं श	५	
६३	४२४६	तारा-श्रीरामसवाद	आनन्दतीर्थ	१६वीं श	११	लि.क.-चतुर्भुज व्यास, अम्बावती
६४	६६३४	द्वादशस्तोत्राणि	स्कन्दपुराणे काशीखंडोक्त	१७४२	४	लि.क.-केशवदास, गठवदनोर
६५	७७०५	दशहरास्तोत्र		१६वीं श	१	
६६	७६१२	दशावतारस्तोत्र	शकराचार्य	१८वीं श	४	
६७	६०५२	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	"	१७६४	१२	लि.क.-हनुमदुपाध्याय
६८	४५४४	"		१८८६	१२	
६९	५५०४	दुर्गाकालकस्तोत्र		१६वीं श	३५	प्रथम पत्र अप्राप्त
७०	४२०७	दुर्गासप्तशती		१७७३	५६	लि.क.-रघुनाथजोशी, स जयपुर
७१	४४७६	"		१८३१	५८	लि.क.-हनुमदुपाध्याय
७२	५३२८	"		१८८६	८४	भोजपत्र पर लिखित
७३	५४६३	"		१७वीं श	१६१	
७४	६६२७	"		१८वीं श.		
७५	७१५७	"				

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	५०६२	देवीचरित्र (दुर्गोपाख्यान, त्रयोदशाध्यायात्)	रुद्रयामलोत्तरखंडोक्त	१६वीं श	५१	पत्र १ व ३२वां अप्राप्त तथा १५वें पत्रमें कुछ सन्दर्भ त्रुटित लि.क.—व्यास मुकुन्दवास, जोधनगर
७७	५५२०	देवीमहिम्नस्तोत्र	दुर्वासःप्रोक्त	१६१७	२२	
७८	४३११	देवीमाहात्म्य	वेदव्यास	१८५६	१८	
७९	४२६०	नदाष्टक, कृष्णाष्टक	श्रीमद्गोस्वामी (विठ्ठल?)	१८वीं श	४	
८०	७७५७ (९)	नवस्तोकीस्तोत्र	शकराचार्य	१८५०	२२८-२३०	
८१	४१७२	नारायणकवच	भागवतोक्त	१८वीं श	८	
८२	४४६८	"	"	१६वीं श	४	
८३	५४३८ (७)	"	"	१८६०	६७-७३	
८४	४२३३	नारायणाष्टक	"	१८वीं श.	३	
८५	६४५०	नारायणहृदयस्तोत्र	"	१६१७	१-४	
८६	४२६७	नृसिंहकवच	"	१८वीं श.	४	प्रथम पत्र सचित्र
८७	४१७५	पंचमुखी हनुमत्कवच	"	१६वीं श	१३	
८८	७६५३	पचायुधस्तोत्र	ब्रह्मांडपुराणोक्त	१८३७	२	
८९	४१७०	पद्मपुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	१८७८	१०	
९०	६८५८	"	"	१८वीं श	८	आद्यपत्र चित्रित
९१	४८८१	(१) पवनविजयाद्यानिस्तोत्र (२) रामनवमीसकल्प	"	१६वीं श	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
९२	४१७८	पीयूषलहरी	जगन्नाथ पंडितराज	१६१०	१४	लि.क.—गोदाराम जोशी
९३	४१७९	पीयूषलहरी	"	१६१०	१३	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, १ स्तुतिस्तोत्रादि]

क्रमांक	ग्रथांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५	५२०८	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१८वीं श.	६८	चित्र सख्या १०
५६	५२०५ (१२)	चतु श्लोकी भागवत		"	४७-४८	
५७	४४५२ (५८)	चतु षष्टियोगिनोस्त्व	मार्कण्डेयपुराणोक्त	"	११६वा	
५८	६३८१	जानकीनवरत्नस्तोत्र	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१६वीं श	६	लि क -भरतदास वैष्णव, भरतपुर
५९	७७०३	जानकीस्तवराज	अगस्त्यसहितान्तर्गत	"	६	लि क.-रामनारायण
६०	६६६७	जानकीसहस्रनामस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१७६०	१८	लि क -भगवद्दास
६१	७०६५	जानकीसहस्रनाम		२०वीं श	७	
६२	४६६६	ताराकवच	भैरवीतन्त्रोक्त	१६वीं श	४	वेदान्तपरक
६३	४२४६	तारा-श्रीरामसवाद	रामायणोक्त	१८वीं श	५	
६४	६६३४	द्वादशस्तोत्राणि	आनन्दतीर्थ	१६वीं श	११	
६५	७७०५	दशहरास्तोत्र	स्कन्दपुराणे काशीखंडोक्त	१७४२	४	लि क -चतुर्भुज व्यास, अम्बावती
६६	७६१२	दशावतारस्तोत्र		१६वीं श	१	लि क -केशवदास, गढवदनौर
६७	६०५२	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	शकराचार्य	१८वीं श	४	
६८	४५४४	"	"	१७६४	१२	
६९	५५०४	दुर्गाकीलकस्तोत्र		१८८६	१२	लि क -हनुमदुपाध्याय
७०	४२०७	दुर्गासप्तशती		१६वीं श	३५	
७१	४४७६	"		१७७३	५६	प्रथम पत्र अप्राप्त
७२	५३२८	"		१८३१	५६	लि क.-रघुनाथजोशी, स जयपुर
७३	५४६३	"		१८८६	५८	लि क -हनुमदुपाध्याय
७४	६६२७	"		१७वीं श	८४	भोजपत्र पर लिखित
७५	७१५७	"		१८वीं श.	१६१	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	५०६२	देवीचरित्र (डुर्गोपाख्यान, त्रयोदशाध्यायान्त)	हृद्रथामलोत्तरखंडोक्त	१६वीं श	५१	पत्र १ व ३२वां अप्राप्त तथा १५वें पत्रमें कुछ सन्दर्भ त्रुटित लि.क.—व्यास मुकुन्दवास, जोधनगर
७७	५५२०	देवीमहिम्नस्तोत्र	दुर्वासःप्रोक्त	१६१७	२२	
७८	४३११	देवीमाहात्म्य	वेदव्यास	१८५६	१८	
७९	४२६०	नवाष्टक, कृष्णाष्टक	श्रीमद्गोस्वामी (विठ्ठल?)	१८वीं श	४	
८०	७७५७(९)	नवदलीकीस्तोत्र	शकराचार्य	१८५०	२२८-२३०	
८१	४१७२	नारायणकवच	भागवतोक्त	१८वीं श	८	
८२	४४६८	"	"	१६वीं श	४	
८३	५४३८(७)	"	"	१८६०	६७-७३	
८४	४२३३	नारायणाष्टक	"	१६वीं श.	३	
८५	६४५०	नारायणहृदयस्तोत्र	"	१६१७	१-४	
८६	४२६७	नृसिंहकवच	"	१८वीं श	४	प्रथम पत्र सचित्र
८७	४१७५	पंचमुखी हनुमत्कवच	ब्रह्माडपुराणोक्त	१६वीं श	१३	
८८	७६५३	पंचायुधस्तोत्र	कवि रामकृष्ण	१८३७	२	
८९	४१७०	पद्मपुष्पाञ्जलि	"	१८७८	१०	
९०	६८५८	"	"	१८वीं श	८	आद्यपत्र चित्रित
९१	४८८१	(१) पवनविजयाशान्तिस्तोत्र (२) रामनवमीसकल्प	जगन्नाथ पंडितराज	१६वीं श	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
९२	४१७८	पीयूषलहरी	"	१६१०	१४	लि.क.—गोदाराम जोशी
९३	४१७९	पीयूषलहरी	"	१६१०	१३	

क्रमांक	ग्रथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४	४५१०	पीयूष लहरी	जगन्नाथ पण्डितराज	१६१०	११	
६५	५२५६	"	"	१८वीं श	२६	
६६	६५८५	ब्रह्मस्तुति (व्याख्यासहित)	श्रीनिवासदास	१८४०	२५	
६७	५२४८	बगलामुखीस्तोत्र		२०वीं श	७	
६८	४१३३	बटुकभैरवकवच		१६वीं श	८	
६९	४१३४	बटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्र		"	३५	
१००	४१५४	भगवती आर्गला कीलकस्तोत्र		"	३	
१०१	४१६२	भगवती पुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	"	६	लि क -रामशंकर, कुवेरलाल, स्थान-ग्राम सधवासना
१०२	६४२३	"	"	१८०७	६	
१०३	७६६४	भवान्यष्टक	शंकराचार्य	१७६४	१	लि क -राघव जोशी
१०४	४१२४	(१) भवानी कवच		१८वीं श	२२	
		(२) भवानीसहस्रनामस्तोत्र				
१०५	४२५६	भवानीसहस्रनाम		१८६१	३०	लि क -गगाविष्णु, मलारणा
१०६	५२१३	"		१८वीं श	३०	
१०७	५७६०	भवानीसहस्रनाम एव कवच		१८६८	६	लि क -हरिवल्लभ शर्मा
१०८	५४६७	भावकल्पतरु	मधुर शर्मा	१६वीं श	३४	
१०९	४२४१	भीष्मस्तवराज	महाभारतीयत	१८वीं श	२२	
११०	५२८५	"	"	१६वीं श	६	
१११	६६६६	"	"	"	१२	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११२	४५१८	भोग्मस्तोत्र, अनुस्मृति	शान्तिपर्वोक्त	१८३१	१४	
११३	५२०५ (१३)	भुजङ्गप्रयाताष्टकम्	पृथ्वीधराचार्य	१६८६	४८-४९	
११४	४२७५	भुवनेश्वरीस्तोत्र	कालिदास	१६वीं श	८	
११५	५३८५ (६)	मङ्गलाष्टक		१८९७	५	
११६	६६६०	"		१८वीं श	१	
११७	७७०१	मधुरकुञ्जविहार्यष्टक	ब्रह्माण्डपुराणक्षेत्रखडोक्त	"	३	
११८	५२४३	मल्लारिकवचस्तोत्र	देवी रहस्योक्त	१९वीं श.	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
११९	५०५९	महागणपतिकवच	राघवचैतन्य	१८२६	३	लि क -तिवाडी वखतरामजी
१२०	४५१४	महागणपतिस्तोत्र	शंकराचार्य	१८वीं श.	६-८	
१२१	४५०३ (२)	महागणपतिस्तोत्र		१९वीं श	१८	
१२२	४२१५	महानारायणस्तोत्रचिन्तामणि	अथर्वणरहस्योक्त	"	११	
१२३	५०४६	महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र	सुदर्शनसहिता	"	३	
१२४	६६८२	महासुदर्शनकवच	श्रीविष्णुकृत	१८३१	६	
१२५	५२५०	महिम्नस्तोत्र	पुष्पदन्त	१९वीं श	४	
१२६	५८७०	"	"	१७६०	११	लिपि स्थान-काशी
१२७	६६८३	"	"	१८८६	१०	लि क -नन्दराम
१२८	६६९१	"	मधुसूदन सरस्वती	१७९३	४८	आद्य दो पत्र अप्राप्त
१२९	७४९६	महिम्नस्तोत्रटीका		१९वीं श	१६	
१३०	५५६०	महिम्नस्तोत्र सटीक (त्रिपाठ)		१९१९	८	लि क -रामदास कबीरपंथी
१३१	६७८४	"		१८८८		लि क -त्रजवासी
१३२	५७८४	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	रुद्रयामलतत्रोक्त			

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर— हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, १. स्तुतिस्तोत्रादि]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३३	६६६८	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	विश्वसारोद्भूत	१६वीं श	१२	
१३४	५२७८	यमकाष्टक	पद्मप्रभदेव	२०वीं श	५	
१३५	४२३८	यमुनाष्टकस्तोत्र	श्रीवल्लभ-विठ्ठल-हरिराय-रघुनाथ	१८वीं श	३	(४८ कृतिया)
१३६	६७०१	यमुनाष्टकादिस्तोत्र	नारदीयपुराण	१६वीं श	५४	
१३७	६३७६	युगलकिशोर सहस्रनाम	ब्रह्मरहस्यगत	१८वीं श	१२	लि क -रामसेवक, चित्रकूट
१३८	४१७३	रघुवरसहस्रनामस्तोत्र	तत्रोक्त	१८११	२१	श्रतमें नवग्रहस्तोत्र आदि हे
१३९	६७४६ (५)	राधाकवच	त्रैलोक्यसम्मोहनतत्रोक्त	१६वीं श	११७-११६	
१४०	५४५५ (२)	राधाकृष्णशतनामस्तोत्र	गौतमीयतत्रोक्त	"	११	
१४१	७७००	राधाष्टकस्तोत्र	रुद्रयामलोक्त	१८वीं श	१	लि क -पुजारी हरदेवदास
१४२	६२८० (५)	राधास्तवराज	"	१६०६	३६	
१४३	५४५४	राधासहस्रनामस्तोत्र	वृहद्ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८१८	२५	
१४४	५५१८	राधिकाष्टकस्तोत्र	"	१६वीं श	२	
१४५	५२४७	राधिकास्तोत्र	"	१७६६	२	
१४६	७७०२	राधिकाष्टोत्तरशतनाम	नारदप्रोक्त	१६०६	१	लि क -पुजारी हरदेवदास
१४७	६२८० (७)	राधिकाष्टोत्तरशतनाम	नारदप्रोक्त	१६वीं श	२	
१४८	५२८३	रामचन्द्रस्तवराज	विजयरामाचार्य	"	८	
१४९	७७१८	रामचन्द्र स्तुति आदि	विश्वामित्र ऋषि	१६०१	६	
१५०	६३६६	राम महिम्न स्तोत्रम्	नीलकण्ठ	१६वीं श	११	
१५१	४३३२	रामशंकाकवच	विश्वामित्र	१६वीं श	६	
१५२	७६४७	रामरक्षाविवरणकारिका	विश्वामित्र	"	३	
१५३	५०५३	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र	"	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५४	६६७६	(१) रामवज्रकवच	हिरण्यगर्भसहितोक्त	१६वीं श	८	
१५५	६६८०	(२) विष्णुहृदयस्तोत्र	बृहद् ब्रह्मसहितोक्त	१८वीं श.	४	
१५६	६६३०	रामशरणस्तोत्र		१६वीं श	३	
१५७	४२४७	रामस्तव	सनत्कुमारसहितोक्त	१८वीं श	१८	
१५८	५२३५	"	"	१७५६	७	
१५९	५४३८(१)	"	"	१८६०	१-१६	
१६०	६६६५	"	"	१८६०	६	लि.क.-जयजयराम
१६१	६७४६(४)	"	"	१६वीं श	१०५-११६	किला अमरकोट मालवामें लिखित
१६२	५२३३	"	"	१६०६	३८	
१६३	४२४८	रामहृदयस्तोत्र	"	१८वीं श.	६	
१६४	४५०४	"	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१६वीं श	५	
१६५	७७५७(८)	"	अध्यात्मरामायणोक्त	१८५०	२२२-२२७	
१६६	६६३६	रामानुजाष्टोत्तरशतनाम	महात्मा आड्, त्रिपूर्ण	१८वीं श	२	
१६७	७६१६	रामाष्टक, रामस्तोत्र	महेश्वर भट्ट	१६वीं श.	१	
१६८	५७१५	रुचिस्तव	मार्कण्डेयपुराणोक्त	"	५	
१६९	७७६६	रूपचिन्तामणिस्तोत्र	चक्रवर्ती	१८६०	४	लि.क-रामनारायण
१७०	६२८०(६)	"	"	१६०६	२५-२८	लि.क-पुजारी हरदेवदास
१७१	५१६४	ललितादिव्यनामत्रिशती	ललितोपाख्यानागत	१६वीं श.	२०	
१७२	५८०७	ललितास्तव	दुर्वासि	१६वीं श	२६	स्तव २११ आर्याश्रोमे है ।
१७३	७६५६	लक्ष्मीपञ्जरस्तोत्र	मन्त्ररहस्योत्तरखण्डोक्त	१६१३	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७४	६६८६	लक्ष्मीस्तव	वैकटनाथ वैवात्ताचार्य	१६वीं श	३	
१७५	६६८८	लक्ष्मीस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	१६०१	४	
१७६	५५१६	लक्ष्मीस्तोत्र, नारायणहृदय	ब्रह्माण्डपुराणगत	१६२६	१२	७वा पत्र अप्राप्त
१७७	५३१६	लक्ष्मीसहस्रनाम	अथर्वणरहस्योक्त	१८२८	१०	
१७८	६४४० (२)	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र	श्रीधर स्वामी	१६१७	५-१७	
१७९	७७१३	त्रजविहार	नारायण	२०वीं श	२	
१८०	५३३६	वरदगुरुपचाशत		२०वीं श	६	लिक-देवकृष्ण, र का १६०१
१८१	५२३४ (२)	(१) विशातिनामस्तोत्र (२) चतु श्लोकी भागवत (३) एकश्लोकी रामायण (४) सप्तश्लोकी गीता (५) विहारी जतसई के २३ दोहे		१६११	१०-१४	
१८२	५५११	विलोम सप्तशती	मार्कण्डेयपुराण	१८वीं श	३२	
१८३	७७२१ (१६)	विष्णुपञ्जरस्तोत्र	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८४४	२०३-२०५	लिक-व्यास केशा
१८४	७७५० (२)	"		१८६०	२१-२४	लिपिकर्त्री-किशानी, लिपि स्थान-खारला
१८५	४२५१	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	महाभारतोक्त	१८वीं श.	३२	
१८६	४४७८	विष्णुसहस्रनाम (सार्थ)	पद्मपुराणोक्त	१७वीं श	५३	टीका हिन्दीमे
१८७	५२८२	"	महाभारतोक्त	१६वीं श	१३	
१८८	५४३८ (२)	"	"	१८६०	१६-४०	
१८९	५४६०	" (गीतापञ्चरत्न)	"	१८८२	३०१	चित्र संख्या ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	६६३५	विष्णुसहस्रनाम	महाभारतोक्त	१७वीं श.	११	
१६१	६३७५	"	"	१७८२	१७	
१६२	४५१५	"	"	१८वीं श.	१६	
१६३	६८६४	विषाणहारस्तोत्र व्याख्या	धनञ्जयसूरि	१६वीं श.	१०	लि.क-पण्डित हरिपाणि
१६४	५२०५ (१७)	विक्षिप्त ? (विक्षिप्तस्तोत्र)	विठ्ठलेश वीक्षित	१८वी श	८६-८८	
१६५	५१८३	वृन्दावनशतकम्	प्रबोधानन्द सरस्वती	"	२०	
१६६	५४६६	"	"	१८३७	११	
१६७	६४६८	वेदस्तव सटीक	विश्वनाथ	१६वीं श.	२७	
१६८	४२४६	वेदस्तुति	भागवतोक्त	१८वीं श	१४	
१६९	५४६७	वेदस्तुति (श्रन्वयवोधिनी टीका)		१८६२	३६	
२००	६४६३	वेदस्तुति सटीक		१६६६	६	लि.क-शिवनिधानगणि, लि० स्था०-प्रल्हादनपुर
२०१	६४६७	"	टी. श्रीधर	१८८८	५४	लि क -हरिनाथ
२०२	६५६३	"	श्रीनिवासवास	१६वीं श	२८	
२०३	४१८०	वैशम्पायन सहस्रनाम	वेदव्यास	"	२७	
२०४	४२५३	श्रीदेवीपुष्पाञ्जलि	रामकृष्ण	१८४६	३	
२०५	४१३१	श्रीसूक्त (सभाष्य)	विद्यातीर्थ	१६वीं श	६	
२०६	७७५७ (१०)	रत्नोक्तोपनिषत्	शंकराचार्य	१८५०	२३०-२३२	
२०७	५७५६	शारभसहस्रनाम (सकवच)	आकाशभैरवकल्पोक्त	१६वीं श	७	
२०८	४१७१	शारभकवच	शंकरप्रोक्त	"	१२	
२०९	६६८७	शालिग्रामस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	"	४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१०	७७६०	शिवताण्डवस्तोत्र	रावण	१६वीं श.	२	जयपुर में लिखित
२११	५५०६	शिवमहिम्न स्तोत्र	पुष्पदन्त	१८४२	६	
२१२	४६२१	शिवमहिम्न स्तोत्र	"	१६वीं श.	५	
२१३	४१६१	शिवमहिम्न स्तोत्रटीका	अहोबिल शास्त्री	"	२४	
२१४	६१६८	शिवमहिम्न स्तोत्र (सटीक)	"	"	८	
२१५	६६६७	"	मधुसूदन सरस्वती	१६१५	१४	लि क -बह्यानन्द
२१६	५१८६	"	"	१६वीं श.	५०	
२१७	७७७२	शिवस्तोत्र	रावण	१६वीं श.	१	
२१८	४४६६	शिवसहस्रनामस्तोत्र	शिवपुराणोक्त	१८६२	१०	
२१९	५०५६	शिवाष्टक	शकराचार्य	१८६०	३	लि क -गोपीनाथ
२२०	४२१६	शीतलास्तोत्र	"	१८७१	३	लि क -कैसोराम काव्यकुण्डज लि० स्या०-नगर बोली
२२१	७८११ (३)	स्तोत्रकवचादि	पद्मपुराणोक्त	१८वीं श.		*
२२२	६२८० (४)	स्मरणमाल	"	१६०६	२१-२२	लि क -पुजारी हरदेवदास
२२३	४५०१	सकटनक्षत्रस्तोत्र	"	१६वीं श.	१	
२२४	४१५३	सप्तशती दुर्गापाठ	"	१६२७	१०८	
२२५	७८३५	सप्तशती दुर्गास्तोत्र	"	१६वीं श.	११२	चित्र सख्या ११२
२२६	५५१२	सप्तशती टीका	नागोजी भट्ट	१८२४	८१	
२२७	७७६२	सप्तशती भाष्यम्	"	१६वीं श.	५६	
२२८	४४५२ (५६)	(१) सरस्वती मास्तोत्र (२) गणपतिमन्त्र	"	१८वीं श.	११७वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपी समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२६	६३६६	सहस्रनामस्तोत्र	कृष्णदास पयोहारी	१८०८	३	
२३०	५६२५	साम्बपचाशिका विवरण	टी - राजानक क्षेमराज	१९वीं श	३२	
२३१	६६७७	सुदर्शनस्तोत्र	अहिर्बुध्न्य संहितागत	"	१	
२३२	५५२७	सुदर्शनसहस्रनाम स्तोत्र	पडितराज जगन्नाथ	"	६	
१३३	४४३६	सुधासहस्रनामस्तोत्र	शकराचार्य	"	१०	
२३४	४५०२	सूर्यस्तोत्र	सीताराम पर्वणीकर	"	१	
२३५	७००६	"		२०वीं श	३	
२३६	७७२१ (१५)	सूर्याष्टक	शकराचार्य	१८४४	२०२	
२३७	४१७७	सौन्दर्यलहरी	"	१९वीं श	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३८	४४०३	"	"	१८५७	७	लि क - ऋषि देवचन्द
२३९	४५०७	"	"	१८२३	८	लि क - ऋषि श्रीकृष्ण
२४०	४५१६	"	"	१७३४	१५	लि क. - पलायथाग्रामस्थ ठाकुरसुरजीपुत्र वल्लभ
२४१	४५२६	"	"	१९वीं श	१०	
२४२	५२४४	"	"	१८६३	१६	लि क. - धनीराम मिश्र
२४३	५५८४	सौन्दर्यलहरी सटीक	टी श्री रगदास	१९वीं श	५४	
२४४	५६७६	"	टी नरसिंह	"	४१	
२४५	५७८८	"	कैवल्याश्रम	१९३६	७५	
२४६	६५२३	सौन्दर्यलहरी व्याख्या	गौरीकान्त	२०वीं श	३३	
२४७	५२३१	हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र	वाल्मीकीय रामायणोक्त	१७५६	१३	लि क. - शिवदत्त लि०स्था० - प्रजयदुर्ग

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि ममय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	७६४६	हनुमन्मधुनामस्तोत्र	वैकटनाथ वेदान्ताचार्य	२०वीं श	२	लाङ्गूल शत्रुञ्जयस्तोत्र
२४९	६७०७	हयग्रीवस्तोत्र	शकराचार्य	१९वीं श	४	
२५०	७७०६	हरिनाम्मालास्तोत्र	हरिवंशपुराणोक्त	"	३	(=१वा अध्याय)
२५१	७८१२	हरिहरस्तोत्र	शकराचार्य	"	६	
२५२	७६८८	हरिहरात्मकस्तोत्र	शकराचार्य	"	३	
२५१	६८२६(२)	(१) हस्तामलक (२) यमुनाष्टक (३) हनुमानाष्टक	शकराचार्य	१९०२	१-१४	
२५४	६५८२	हस्तामलक सटीक	नन्ददास			
२५५	६५८४	क्षमायोडशी	तुलसीदास	१९वीं श	५	
२५६	६६७८	"	शकराचार्य	१८९५	७	लि क-रामसुव रामनारायण
२५७	५१०९	(१) त्रिपुरसुन्दरीहृदय (२) त्रिशती (३) कल्याणीस्तोत्र (४) ललिताक्षतराज	वीरमहेश्वरस्तनोक्त	१९वीं श	३	लि क-रामकुमार, कोटा
२५८	५१९१	त्रिपुराकवच		१९२५	३१	
२५९	७७२१(१७)	त्रिपुरास्तोत्र आदि		१९वीं श	३	
२६०	४१९३	त्रैलोक्यविजयकवच	उत्तरगन्धर्वतन्त्र	१-४४	२०५-२७७	
				१९वीं श.	२४	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २. वैदिक]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४६४३	अथर्वण निरुक्त		१८६५	१२	लि.क.-सदासुख शुक्ल, जयनगर
२	४६३७	अथर्वणसहिता अष्टादशकांड		१६०४	११	" "
३	४६२८	अथर्वणसहिता		१८६२	१३४	" "
४	४०६५	आपस्तम्ब अग्निष्टोमसूत्र		१८वीं श.	५६	लि.क.-महादेव भट्ट
५	४७०२	ऐतरेयोपनिषत्	माधव	१६वीं श.	५	
६	४६४५	ऐतरेयोपनिषद्भाष्य		"	३०	
७	६५६२	ऐतरेयोपनिषद्भाष्यटीका	अभिनव नारायणेश्वर सरस्वती	"	४४	
८	४५६२	ऋग्विधान		"	२१	लि.क.-भट्ट मयाराम
९	४६४६	"	माधव	१८०६	१६	लि.क.-सवाईराम
१०	४६४४	ऋग्वेद (चतुर्थष्टक चतुर्थध्याय)		१६वीं श.	६४	
११	५०१०	ऋग्वेद प्रथमाष्टक		१७८१	१०५	लि.क.-वीरेश्वर शुक्ल
१२	५०११	द्वितीयाष्टक		१७८४	७५	" "
१३	५०१२	तृतीयाष्टक		"	८७	" "
१४	५०१३	चतुर्थष्टक		१७१६	१२४	" "
१५	५०१४	पञ्चमाष्टक		१७८४	७२	" "
१६	५०१५	षष्ठाष्टक		१७८२	१११	लि.क.-पंड्या चित्तामणि
१७	५०१६	सप्तमाष्टक		"	६६	" "
१८	५०१७	अष्टमाष्टक		१७८२	६८	लि.क.-वीरेश्वर
१९	५०१८	प्रथमाष्टक		१७२६	१३३	पत्र १६, ४६, ४७ अप्राप्त
२०	५०१९	द्वितीयाष्टक		१६वीं श.	१२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	५०२०	ऋग्वेद तृतीयाष्टक		१६वीं श	१११	१७वा पत्र अप्राप्त
२२	५०२१	चतुर्थष्टक		१८५३	१२६	
२३	५०२२	पञ्चमाष्टक		१८५५	६७	
२४	५०२३	षष्ठाष्टक		१८५५	१०४	
४५	५०२४	सप्तमाष्टक		१८५६	६६	
२६	५०२५	अष्टमाष्टक		१८५८	११४	
२७	५५७०	तृतीयाष्टक		१८वीं श	६६	पत्र २७ से ३८ तक अप्राप्त
२८	७६७३	प्रथमाष्टक		१७७५	६६	
२९	७६७४	द्वितीयाष्टक		१७७३	७४	
३०	७६७५	तृतीयाष्टक		१७७५	६६	
३१	७६७६	चतुर्थष्टक		१७७५	७२	
३२	७६७७	पञ्चमाष्टक		१७२०	१००	
३३	७६७८	षष्ठाष्टक		१७८०	८४	लि क -वीरेन्द्र शुक्ल
३४	७६७९	सप्तमाष्टक		१७७४	७२	लि क -जगन्नाथ, काशी
३५	७६८०	द्वितीयाष्टक		१६६६	८२	
३६	७६८१	तृतीयाष्टक		१७६३	७९	
३७	७६८२	"		१७०४	१६३	लि, क -रघुनाथ गोकुल, ढोडा
३८	७६८३	"		१७२६	६१	लि क -पण्ड्या चिन्तामणि
४०	७६८४	पञ्चमाष्टक		१७७४	७१	
४१	७६८६	षष्ठाष्टक		"	७२	
		सप्तमाष्टक		१८५३	११०	लि क -सुरजी

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	४६६७	ऋग्वेद प्रातिशाख्य (प्रथमाध्याय)		१८वीं श.	१६	लि.क -फकीरचन्द
४३	४६५३	ऋग्वेद संहिता		१७६३	६३	
४४	५१६६	"		१७३०	१५१	
४५	५०२६	ऋग्वेदानुक्रमणिका		१८५२	१२३	स्वरितं देवशकरेण
४६	५०२७	" (द्वैतं)		१७६६	४७	लि.क.-रविवत्त
४७	५०२८	" परिभाषाभाष्य	रघुनाथ	१७६८	१०	
४८	५०८५	ऋग्वेदानुक्रमणिका विवृति		१८वीं श.	१३	अपूर्ण
४९	४६६६	केनोपनिषत्		१६वीं श	३	
५०	७५८४	कैवल्योपनिषत्		१६वीं श	१	
५१	६१२६ (२)	कौषीतिक ब्राह्मण		१५४३	१३३	
५२	५४४३	गोपालतापिन्युपनिषत् त्रिपाठ सटीक		१६०१	१६	लि.क -अम्बालाल
५३	४६२८	चरणव्यूह व्याख्या		१७८०	५	लि.क -पीताम्बर, कान्हाजीसुत
५४	५७००	"		१६२४	३	
५५	७८२०	धनुर्वेदपरिच्छेद (वीरचिन्तामणिनामा)		१७६६	२६	लि.क.-हरिकृष्ण
५६	४२४५	नारायणोपनिषत्		१८वीं श	१३	
५७	७७१०	"		१६वीं श	४	
५८	५०३०	निघण्टु	पाणिनीय	१८१२	२२	लि.क शुभराम, तुलाराम व्याससुत
५९	६७२४	"		१६वीं श.	२६	
६०	५५७३	निरुक्तम्		१७२४	६३	पत्र ८, व २८ से ४२ तक अप्राप्त
६१	५०३४	ब्राह्मण प्रथम पत्रिका		१८वीं श	२३	

क्रमांक	ग्रथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सत्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५४८२	ब्राह्मण प्रथमपत्रिका		१८वीं श	४६	
६३	७७०४	" "		" "	२२	
६४	५०३५	द्वितीयपत्रिका		" "	२८	
६५	५५६६	" "		" "	६१	पत्र १, २, ५५ अप्राप्त
६६	५०३६	तृतीयपत्रिका		" "	३०	
६७	५४८३	" "		" "	५५	
६८	५०३७	चतुर्थपत्रिका		" "	२४	
६९	५०३८	पंचमपत्रिका		" "	३०	
७०	५०३९	षष्ठपत्रिका		" "	२३	
७१	५०४०	सप्तमपत्रिका		" "	२०	
७२	५०४१	अष्टमपत्रिका		" "	२०	
७३	६६४४	ग्राह्मणानि (तृतीयाध्यायपर्यन्त)		१८५४	५२	
७४	४१६४	मण्डल (श्रावणोक्तमङ्गलभूत)		१६वीं श	७	
७५	५१७६	मण्डल प्रकरण	सायणाचार्य	:७६१	१०	
७६	४६३०	मण्डल व्याख्यान		१७वीं श	६	लि क-साधयाश्रम शकर
७७	५५७१	मन्त्रसहिता शान्ति सूक्तानि		१८वीं श	१७१	पत्र २० से ६२ अप्राप्त
७८	५८२३	मन्त्रार्थवीपिका	शत्रुघ्नोपाध्याय	१८२५	१४२	आदिके दो पत्र नहीं हैं लि क-मित्रमणि
७९	७७१७	मन्युसूक्त		२०वीं श	४	
८०	४६०८	मनोज्योतिमत्र		१६१३	२	
८१	४७००	माण्डूक्योपनिषत्		१६वीं श	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८२	७६६३	माध्यन्दिनी संहिता		१८५६	४	
८३	४७०१	मुण्डकोपनिषत्		१९वीं श.	७	
८४	५५८०	खद्रजाय्य (खद्राष्टाध्यायी)		१७८८	३८	लि. क -रामगोपाल दाधीच पत्र १, ५, ११, ३७ अप्राप्त
८५	४४७६	खद्रागभूतमन्त्रन्यासादि		१९वीं श.	८	
८६	७६६५	खद्राध्याय		१८६६	१३	
८७	५७२८	वश-ब्राह्मण		१९वीं श.	११	
८८	४५७६	वाजसनेयी शिक्षा	याज्ञवल्क्य	"	१५	
८९	४२०३	वाजसनेय संहिता		१७९७	१६०	लि. क.-रावल वलभजी
९०	५००७	" "		१८४८	१४६	लि. क -वल्लभराम दुर्लभराम नागर, विषमनगरा
९१	५२००	" "		१८वीं श.	१५७	
९२	५८०३	" "		१७८२	१८२	लि. क -जयचद धनेश्वरसुत
९३	४६३२	" पूर्वार्द्ध		१८७६	१७०	लि.क -राधाकृष्ण स्थान-शम्बावती
९४	५७७८	" , उत्तरार्द्ध		१८५२	१४८	
९५	४६३३	" ,		१८७६	१०७	लि. क -रामकृष्ण
९६	५७७६	" "		१८७३	६३	
९७	५१६७	" "		१८२८	१५३	लि. क.-रामशुक्ल
९८	६४६६	वाजसनेयी संहितोपनिषदीशा- वास्यभाष्य सटिप्पण	भा.-शंकराचार्य, दि.श्रानन्दगिरि	१८८६	६	
९९	७८३०	वैदिक संहिता (पदसंग्रह)		१५२५	१५५	लि. क -हरिभाई सूर्यपुर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५०२९	शिक्षायोतिषछन्दसि		१७२७	२४	लि क—अम्बिकेश्वर श्यामजी- शुक्लसुत, टोडावास्तव्य
१०१	५०३१	” (शाकरीशिक्षा)		१७९७	१५	लि क—पुरयोत्तम
१०२	७५०९	षडङ्गमन्त्रा (मन्त्रार्थदीपिकाख्या- टीकोपेता)	श्रीशङ्घन	१९वीं श	७५	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०३	५५७४	षष्ठाध्याय		१७२४	१०३	
१०४	४११६	सहिता		१८६७	१८०	लि क—करणोदत्त पालीवाल
१०५	५५७७	” (द्वितीयाष्टक)		१७५९	१०४	
१०६	५००१	सहितैकादशप्रकाश		१९वीं श	१३	घन जटा, मण्डलादि
१०७	४९५६	सर्वानुक्रमणिकावृत्ति		१७९८	६१	लि क—दीनानाय
१०८	४६४१	हृदयकाण्ड		१६८७	२११	लि. क—मेदपाटज्जातीय वासुदेव
१०९	७७७१	त्र्युचाभाष्य		१९१७	२	
११०	७७७८	त्र्युचाभाष्य	ब्राह्मणोक्त	१९३७	२	

अर्थात् इवापुत्र्यात् गोसिः मराय ह्युत्तः तैः गीः २ लिः वासुशुमसिः तो नः वि
 श्वः सुवृष्णवर्गः गिरः शुभेति हृवः शोहः इन्द्राय पीताम्बुना नः यातिः इ
 युत्रासासैः गीः २ तिः पकिः कुनः विप्रस्यालथः ब्रह्मिथः पवमानः विप्रः इन्द्राय
 अमः योः सासुः श्रियोः इन्द्रा इति सुहृत्सुः वयसोः इन्द्रः अर्थः नः वाजः सुतः कनि
 कतिः पुवित्रीः आः यराः अरुः नः अतिः इन्द्रः पवत्वा वाजः स्नातयः विप्रस्याशु
 धारः नः युधः सासुः सुवीर्यैः कः इन्द्राय अर्धस्वः ३३ विरः मः नः तः २५ ॥ ३२
 नः इन्द्राय अर्धस्वः ३३ विरः मः नः तः २५ ॥ ३२
 नः इन्द्राय अर्धस्वः ३३ विरः मः नः तः २५ ॥ ३२
 नः इन्द्राय अर्धस्वः ३३ विरः मः नः तः २५ ॥ ३२
 नः इन्द्राय अर्धस्वः ३३ विरः मः नः तः २५ ॥ ३२

ऋग्वेदसंहिता

ग्रन्थसख्या ७८३०

(सप्रहके वैदिक ग्रन्थोमे प्राचीनतम ब्राह्मणलिपिसें सबत् १५२५ में लिखित ग्रन्थ)

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ३ कर्मकाण्ड]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४४६	अग्निष्टोमपद्धति	देव याज्ञिक	१८६६	८५	कात्यायनसूत्रोक्त
२	४४५०	"	"	१८६५	८२	लि.क.—उमाशंकर शुक्ल
३	४६१०	अनन्तव्रतविधि	भविष्योत्तरे	१८००	११	लि.क.—नन्दराम आचार्य
४	४४५१	अध्वर्युप्रयोग		१८००	५३	लि.क.—दुलभजन तिवाडी श्रीदीक्ष्य
५	४५५८	अधिदेवताविस्थापनहोमविधि	अगिरोक्त	१९वीं श.	१३	
६	५३४६	अष्टमहादानप्रकरण	"	१९वीं श.	३	
७	४६८८	अतुरसत्यासपद्धति		१७७३	५	लि.क.—लीलाधर ठाकुर, कोटा
८	५१७५	"		१८वीं श.	१४	
९	४६३६	आरामप्रतिष्ठाविधि		१५६८	२१	
१०	४०६४	आश्वलायनगृह्यपरिशिष्ट	नारायण	१८वीं श.	२६	
११	४६५०	आश्वलायनगृह्यसूत्रवृत्ति	त्रैविध्यवृद्ध	१८०३	१०७	
१२	४६५५	"	"	१८००	६४	
१३	४६५४	"		१७६६	१०७	
१४	५०३३	आश्वलायनश्रौतसूत्र	देवयाज्ञिक	१७६५	५२	लि.क.—इच्छाराम व्यास
१५	४६१६ (२)	आह्निकपद्धति		१७६८	४२	लि.क.—यदुराम
१६	६६७४	एकोद्दिष्टआह्निकविधि	भविष्यत्पुराणोक्त	१६०३	६	
१७	४६१३	ऋषिपञ्चमीव्रतविधि	कर्त्तार्य	१८वीं श.	४	लि.क.—छेदालाल, पंडित
१८	४६८३	कर्कभाष्य		१८०७	१६	लि.क.—सुखदेव गोलवाल, मुरतबदरमध्ये

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४६२५	कर्मप्रदीप	गोभिलोपत	१९वीं श	३३	१५वा पत्र अप्राप्त
२०	४९८७	"		१५६९	३५	ति. क-कालुआ महर्त, महसाणा
२१	४९४९	कात्यायनश्रौतसूत्र	देव याज्ञिक	१७६३	६१	
२२	४४४८	कात्यायनसूत्रपद्धति	"	१८६४	१५९	
२३	५४९४	कात्यायनपद्धति (सौत्रामणी)	"	१८वीं श	२०	
२४	६३६८	कार्तिकोद्यापनविधि	माधव	१८२२	९	
२५	४९६५	कुण्डकल्पत्रुम	"	१८१०	१८	र का-१७१२
२६	५७४९	"	वलभद्रशुक्ल	१९वीं श.	१०	ति क-ऋषीस्वर शुक्ल
२७	४९६०	कुण्डतत्त्वप्रदीप	रामचद्र नैमिषवासी	१८वीं श.	१५	*
२८	४९७८	कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)	महदेव राजगुरु	१८१७	३१	*
२९	५६१८	कुण्डप्रदापक सटीक	विट्ठल दीक्षित	१९२९	८	
३०	४६३५	कुण्डमण्डपसिद्धि सवृत्तिक	"	१९वीं श	४२	ति क-रघुदत्त शुक्ल जम्बूसर
३१	४५२७	" विवृति	विश्वनाथ श्रीपतिद्विवेदसुत	१८वीं श	२५	
३२	५६४४	कुण्डरत्नटीका	मू शकर भट्ट	१९वीं श	८६	ति क-वजवासी सिल्लु
३३	४१२८	कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)	टी. रघुवीर दीक्षित	१८९४	११	
३४	४९९७	कुशाकण्डिका	विश्वनाथ	१९वीं श	६	
३५	४११५	क्रियापद्धति	"	१८६०	१०६	जीर्ण प्रति
३६	४९५१	"	"	१८वीं श	७५	

क्रमांक	ग्रथांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	४६६३	क्रियापद्धति	देवयाज्ञिक प्रजापतिसुत	१७८२	२६	लि, क-नन्दिकैश्वर
३८	५७४१	"	देवकीनन्दन जीवानन्दसुत	१६वीं श	११	लि, क राधाकिशन, मूढोता ग्राम
३९	५७२६	ग्रहजपदानविधि	बृद्ध वशिष्ठ	१६१०	२१	अपत्र न से १६ तक अप्राप्त
४०	४४८०	ग्रहशान्ति	योद्धराज	१६वीं श	१२	
४१	४१८५	ग्रहशान्तिप्रकारः (पद्धतिः)	हेरम्ब शिष्य	१६वीं श	८३	
४२	४१२५	ग्रहशान्तिपद्धति		१८६३	२८	
४३	५७६५ (१)	"		१६वीं श	१-८२	
४४	५०४४	"		"	१६	
४५	४६१४	गयापद्धति	नारायणभट्ट रामेश्वरसुत	१७५१	१३	लि. क.--वामदेव
४६	५७१६	"	"	१८वीं श.	२२	
४७	४६३६	गृह्यसूत्र		१६वीं श	३१	
४८	४६६१	गृह्यसूत्रपद्धति	वसुदेव दीक्षित	१८वीं श	६३	
४९	५७६५ (२)	गोदानपद्धति		१६वीं श.	८२-८८	
५०	४१३०	घृततुलादान विधि		१८६३	३	लि क-त्रजवासीसिल्लु; काशी
५१	४५६०	जन्मदिवसकृत्यम्		१८४०	४	लि. क-भट्टराजा यज्ञदत्त, जयपुर
५२	४६३२	तर्पणविधि		१६वीं श	५	
५३	४६३४	"	विविधपुराणोक्तसंग्रह	१८६५	२	
५४	५६८१	तिलादिधेनुदानविधि	"	१६वीं श	६	
५५	४६२७	तीर्थयात्राविधि	भट्टोजिदीक्षितकृतत्रिस्थलोसेलुगत	"	१४	लि क.-सदासुख शुक्ल
५६	४६८०	तीर्थश्राद्धविधि		१८७६	२२	
५७	५०५१	तुलादानविधि		"	३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पग सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५४५१	तुलावाननिधि	गणपति रावल हरिशंकरसुत	१९९०	६	लि क-माणिकराम भट्ट
५९	६६८६	तुलापुरुषपद्धति		१९वीं श.	८	रचना १७१६
६०	४११२	द्वादशलिगोमण्डलेवेतापूजनविधि		१७१८	३६	लि क-भट्ट शंकरवत्तजी, जयपुर
६१	४९७५	वशकर्मपद्धति		१९वीं	१०३	
६२	४१२०	वशारात्र	श्राश्वलायनगृह्यसूत्रपरिशिष्ट शिवप्रसाद पुष्करवल्लीवास्तव्य	१८३४	७	लि क-हरयोद्विन्द बाधीच, सवाई जयपुर
६३	६५७३	वशहराकृत्य		१८९३	४	
६४	६७१३	नवग्रहजाप्यविधि		१९वीं श	२१	
६५	६७१४	नवग्रहन्यास		"	५	प्रयोगसारान्तर्गत जीर्णप्रति,
६६	४६३३	नवाश्लेषि	नीलकण्ठ शंकरभट्टात्मज "	१७९०	१९	लि क-नन्दिकेश्वर
६७	४९४०	नागवलिप्रयोग		१९वीं श	१५	लि क-हरिप्रसाद शर्मा
६८	५८६९	नरवाहकर्तव्यता		१८५२	४५	
६९	४९३९	नारायणबलि		१८वीं श.	३७	लि क-सम्पतराम शुक्ल, जयपुर राजाविजय प्रयाणविधि
७०	४९८९	नीलोद्वाह पद्धति	"	१८८६	३०	
७१	५००२	"		१८८८	९	
७२	४१०६	प्रतिष्ठाकर्म		१८८८		
७३	४१११	प्रतिष्ठामयूख		१८८८		
७४	४९५७	"		१८८८		
७५	४९९२	प्रयाणशान्ति		१८८८		

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	५५६१	प्रयोग	अनन्त भट्ट	१८४१	१६०	यज्ञोपवीतविधि पत्र २७ से ५६ व १५५ से १५७ तक अप्राप्त
७७	४०६३	प्रयोगदीपिका	मचनाचार्य	१६वीं श	६६	आश्वलायन सूत्रोक्त
७८	५५५४	प्रयोगरत्न	नारायण रामेश्वरभट्टात्मज	१८४२	२१४	लि क-काशीनाथ, पुस्तकमिद नारायणभट्टसूत्रोद्धृतम् ।
७९	५५७२	प्रयोगरत्नाकर	"	१६वीं श	११२	पत्र १, ३६, ४०, ७५, ९४ व ९५ वा अप्राप्त ।
८०	६५६५	प्राणप्रतिष्ठाविधि		१८८१	२	लि क.रामनारायण, सामरथाग्राम अपूर्ण ।
८१	६४११	प्रायश्चित्तधेनुदानविधि		१६वीं श	८	लि क.-करणशकर जोशी
८२	४६०४	प्रायश्चित्तप्रयोग		१८३६	२	लि क-आशाराम व्यास, मालपुरा
८३	४६७७	प्रासाद्वेदप्रतिष्ठा		१८१३	२०	
८४	४६४२	प्रेतबलि		१९वीं श	१६	
८५	४६८६	पशुबन्धप्रयोग		१७६४	६	लि. क-ऋषीश्वर ।
८६	५३३१	पापघटदानविधि		१६वीं श	८	लि. क-गोविन्द शर्मा
८७	४१७४	पार्थिवपूजा		"	६	
८८	६६८४	पार्थिवेश्वरचिन्तामणिपद्धति		१८७३	९	
८९	४११४	पार्थिवेश्वरपूजापद्धति	चन्द्र चूड	१६वीं श.	६	
९०	४२१२	पार्वणश्राद्धविधि		"	७	
					११	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	४५६५	श्राद्धपद्धति (यजुर्वेदीय)		१६वीं श	२५	लि क.-शकरवत्त
१३३	४६१५	"		१७६७	७	
१३४	५५१५	" (सावसरिक)		१६वीं श	१६	
१३५	५७२६	"		१६१५	७	
१३६	५०५५	श्राद्धविधि		१८२७	३१	लि. स्था-सवाई जयपुर
१३७	७२६५	श्राद्धविधिवृत्ति (कौमुदी)	रत्नेश्वरसूरि	१६वीं श	१२५	
१३८	५२५२	श्राद्धविवेक	रुद्रधर	१६वीं श	५१	२० वा पत्र अप्राप्त
१३९	४१८८	श्रावणोविधि (ऋषिपूजन)		१६वीं श	६१	
१४०	४२२१	"	गणपति रावल	१८७२	२१	लि क-केसोराम, नगर बौली
१४१	७६६१	श्रीतात्रानपद्धति	कमलाकर रामकृष्णसुत,	१६वीं श	३३	
१४२	५६३७	शान्तिकर्म	नारायणपौत्र	"	१५८	
१४३	४१२३	शान्तिपद्धति	दुर्गाशंकर शुक्ल	१८वीं श	२०	
१४४	४८७२	शान्तिविधान (पल्सीसरटपतन)	गर्गोदत	१८४४	३	लि क.-रेवावत्त
१४५	५१७०	शान्तिभाव्य	चशिष्ठोक्त	१८०६	६	लि क-केवलजी, जयपुर, माधवसिंह राज्ये
१४६	५५६४	शान्तिविधि	"	१८वीं श	६८	३७ वा पत्र अप्राप्त ।
१४७	४६५२	शुक्लसूत्र	कात्यायन	१६वीं श.	५	
१४८	४५६६	पट्पिण्डकर्म		"	७	
१४९	५००८	पण्ठीपूजा		१८७०	११	लि क-उमाशंकर
१५०	७६१३	पोडशोपचारपूजा		१८४६	६	लि क-रणछोडवास, गढ- बनौर ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४२०८	स्त्रीकर्तृ कश्चाद् प्रयोग	दानखण्डोक्त	१९१७	५	लि. क-नारायण शर्मा
१५२	४१६५	स्वस्तिवाचन	"	१९वीं श.	१३	
१५३	५७१६	"	युजुर्वेदीय	१७९९	१०	
१५४	६६८१	"	"	१९वीं श	९	
१५५	६६९२	"	"	१८९२	८	
१५६	५२५५	सध्या (यजुर्वेदीया)	"	१९वीं श	११	
१५७	५६९५	सध्या टीका "	"	१९वीं श.	१५	लि. क-मुरलीधर शरण
१५८	६६००	सध्यापद्धति (सामवेदीया)	नारायणमुनि शठकोपमुनि	१८९९	५	
१५९	६५७२	सध्याभाल्य	भट्टोजिदीक्षित	१९वीं श	९	
१६०	७७७५	सध्यामत्रव्याख्या	"	१९४२	१६	लि. क-मगनराज जोशी
१६१	७६९५	सध्या सटीका (यजुर्वेदीया)	"	१९०१	४	
१६२	४५८१	सध्यासपद्धति	"	१९०८	४	लि. क-रघुनाथाश्रम, काशी
१६३	६६४८	सपिण्डीकरणविधि	"	१९वीं श	४०	लि. क-वसुदेवराम, मथुरा
१६४	५७४०	सर्वतोभद्रमण्डलपूजाविधि	"	"	४	
१६५	५७६५ (५)	सर्वदेवतास्थापनपूजाविधि	"	"	११७-१३१	
१६६	४५९४	सिद्धिविनायकत्रतपद्धति	"	"	४	
१६७	४९८५	सूर्यत्रतविधि	"	"	४	लि. क-सदाशिव शुक्ल
१६८	४६३८	हरतालिकात्रतविधि	"	१८१२	४	लि. क.-म. सुर
१६९	५१८२	हेमाद्रिप्रयोग	"	१७२८	७	
१७०	४७०७	हेमाद्रिविधि (स्नान सकल्प)	"	१८वीं श	१२	
१७१	४५६८	त्र्युचाकल्प (श्रद्ध्यंदान)	हंसवतीविधानोक्त	१८४४	८	
				१९वीं श	६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७२	७७८८	त्र्युचाविधानम्		१९वीं श	७	अपूर्ण
१७३	७७७४	त्र्यम्बकमन्त्रविधि		१८९३	१९	लि क -बालमुकुन्द व्यास
१७४	५०५८	त्रिकालसध्या (सामवेदीया)		१९२३	१३	
१७५	५७६१	” (यजुर्वेदीया)		१९२५	१२	
१७६	६४२४	”		१८२५	८	लि क -चैनराम मिश्र, भरतपुर

राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ४-तन्त्रमन्त्रादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५७८१	अमरनाथपटल	भृङ्गीशसहितान्तर्गत	१९वीं श	२९	एकादशपटलात, अमरनाथकी यात्राका फल
२	५२२७	अष्टादशशंकरमहामन्त्रपद्धति	रुद्रयामलप्रोक्त	१८वीं श	१७	गोपालमन्त्रपरक
३	५७८३	उच्छिष्टगणपतिचतुरङ्ग		१९वीं श	१५	आदि में गणपतियत्र है ।
४	४१५२	उड्डीशकल्प		१९२७	९४	लि. क—रामनारायणमिश्र
५	५७९३	उद्धारकोश	सकलागमसारोक्त	१९वीं श.	२४	लि स्था—बयाना
६	५८२०	"	"	"	२	
७	४४५२ (५७)	श्रीषधिकल्प (चक्र)	सिद्धनागार्जुन	१८वीं श	११४-११६	
८	५७६७	कक्षपुटी	पुण्यानन्दमुनीन्द्र	१८७७	५०	लि क—कृपाराम
९	५६५०	कामकलाङ्गनाविलास	उड्डामरतत्रोक्त	१९१६	३३	
१०	५७९९	कार्तवीर्यदीपकर्मरहस्य		१६५१	५	लि क—गदाधर देवज्ञ, लि स्था.—वाराणसी
११	६६६२	कार्तवीर्यनित्यदीपविधि		१९०३	५	
१२	५२२८	कालाग्निरुद्रपटलोपनिषत्	नन्दिकेश्वरपुराणोक्त	१८५०	७	लि स्था—पुष्कर
१३	६७५१	कालाग्निरुद्रोपनिषत्	जगदानन्द महामहोपाध्याय	१९०६	१०	लि क—रामदास
१४	५६१७	कुलाचनदीपिका		१९वीं श	२४	
१५	५६२३	कुलाणवतत्र		"	७८	
१६	५७६२	"	सम्मोहनतत्रगत	"	८७	
१७	४३२६	कृष्णचरित	प्रतापरुद्रदेव	१७६२	१६	#
१८	४८८६	कौतुकचिंतामणि		१८०९	६८	लि. क—आशाराम ज्ञानी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६३५	कौल रहस्य (शतक)	तरुणीवीरेंद्र नरोत्तमारण्यमुनीन्द्र- शिष्य	१८८६	१०	लि क-राममुख, जयपुर
२०	७६६०	गणेशपूजा		१८८१	४	लि क-शिवनाथव्यास, जयलगर
२१	६७३२	गणपत्युपनिषत्		२०वीं श	३	
२२	६३४८	गायत्रीपद्धति		१८८७	३५	द्वितीय पत्र प्राप्त
२३	६७७३	गायत्रीपंचांग		१६०७	२०	लि क-रामदास कवीरपथी
२४	६२४७	गद्योत्तमानिर्णय		१८वीं श	२२	रचना-१७०२
२५	५७१०	गुरुकीलकपटल		१६वीं श	२	
२६	७८११ (२)	गौरीकल्प		१८वीं श		
२७	५१६८	घटाकर्णकल्प		१६वीं श		
२८	५७०२	चण्डिकाचर्चनदीपिका		१८६६	२०	प्राप्तद्वाराणमण्ययुत, अपूर्ण
२९	५८१४	चण्डीप्रयोगविधि	काशीनाथभट्ट जगरामयुत याराणसीगभंसभव नागोजीभट्ट	१८६६	२३	लि. क-यजवासी ज्योतिर्वित् लि स्था-काशी
३०	५८८६	चण्डीगाठप्रयोगविधि		१६००	२७	लि क-बामोदरदास, सिउलपुर प्रामवासी
३१	७५०६	चण्डीस्तोत्रव्याख्या		१६वीं श	२३	
३२	४८६७	तत्रत्तीलावली		१८११	६१	
३३	७७११	तत्रस्यहृदय (स्वोपजाटीकोपेत)	नागोजीभट्ट कर्णसिंह	१८वीं श	१६	रृत्तीयपटलात
३४	७६०८	तुम्बादिवीजमत्र	काशीनाथभट्ट अनन्तशिष्य नागपुरवास्तव्य जगरामयुत	"	१८	रृत्तीयपटलात
				१६वीं श	१	लि क-रेशवदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	५७२२	तुरीयोपस्थानविधि		१९१५	५	लि. क-घनश्याम ब्राह्मण लि. स्था-राजपुर, मेवाड
३६	५१२६	नवार्णव्यासविधि		१९वीं श	२	
३७	४६००	नित्यायात्रा (षोडशयात्रा)		"	९	
३८	४६२९	"	काशीखण्डोक्त बुद्धिराज	१८४७	१४	
३९	५७९५ (२)	नित्यापारायण		१९वीं श	१-२०	
४०	५५१६	नृसिंहमालामत्र		"	२०	
४१	७६४४	प्रत्यगिरासूक्तमत्र		१९१२	१९	लि. क-बजवासी मिरलू लि. स्था-अलवर
४२	४४५२ (८९)	प्रभातगायत्री तथा त्रिकाल-व्रत-गायत्री		१८वीं श	१२८वीं	
४३	५१२३ (५)	पंचदशोयत्रविधान		"	२७-२८	
४४	७७०८	परशुरामकल्पसूत्र		१८वीं श.	४८	# आदिके ११ पत्र कीटविद्ध ।
४५	५७५७	पात्रस्थापनविधि		१९वीं श	६	
४६	५६५४	पुरद्वचर्यर्णव	प्रतापशाहदेव	"	२४	प्रथम तरङ्ग
४७	५६५५	"	"	"	२५२	द्वितीयसे नवमतरङ्गपर्यन्त
४८	५६५६	"	"	"	११७	दशमैकादशद्वादशतरङ्ग रचना स० १८३१
४९	५६६१	पुरद्वचरणचद्रिका	देवेंद्राश्रम	"	११२	
५०	५६३८	गुजरत्न	सत्यानन्द	१९२८	२१२	
५१	५७९५ (१)	"	"	१९वीं श	१-६	प्रथम मयूख

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	निधि समय	पग मन्थ्या	विशेष उल्लेखनीय
५२	५१९५	पूजाभिवेक पञ्चम्याय मन्त्रादि		१८वीं श.	स्फुट पत्र	इन पत्रोंमें नृसिंहमुन्दरी नृहाना, यशमहाविद्या, बसानाना वसन्तलोक, शिवाबलि विधि नासिन्निद्योदार प्रौर तन्त्रोक्त अपूर्ण-हयवपदति विची हुई है ।
५३	६८०८	ब्रह्मकल्प (कायाकल्प)		१९वीं श	६	
५४	५००४	चटुकभैरवपद्धति	माचितामणिप्रोपा	१९वीं श	२३	
५५	४१३५	चटुकभैरवपूजापद्धति	विश्वनारोद्वारतागत	१९वीं श.	२७	
५६	६७६०	वालास्तोत्रादि		१७२८	१६-२४	जानकतोत्र, ईश्वरीतुंगिपूजा, भास्तीगतीय, सप्तपूर्णास्तोत्र, श्रीगतिरुपकृपास्य तपस्तोत्र, परमानन्दतोत्र ।
५७	७०५६	भुवनेश्वरोपत्रति (पञ्चवात)	रुद्रयामस्तपतिगण	१८वीं श	६६	पत्र ६ में १५ पद्याप
५८	५४२६	भूत-भूतिनीसाधनविधि	भूतनामरत्नोक्त	१९व श	७५	प्रथमपत्र पति ।
५९	६४१६	भूतमुक्ति		"	११	वि क-३४४ स्वायत्तगर्भ
६०	७००३	"		"	७	
६१	४१८१	भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा मातृका-पाम		"	२०	नि ४-राजवट पुराण
६२	५००५	भैरवपुराणरक्षणविधि	शिवयामनारोक्त	"	६	
६३	६४४६ (१)	श्रीमपूजाप्रकार		"	२६-४०	
६४	६७२३	सगतजगपूजाविधि		१९१७	६	वि ४-विद्यापर
६५	४४४४	सगमस्तोत्रविधि	महीपर	१८०३	१४६	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	५७४८	मन्त्रमहोदधि	महीधर	१८वीं श	८२	रचना सं० १६४५
६७	५७४४	"	"	१९वीं श	७४	नौकाढीकासहित
६८	६६५६	"	"	१८७६	२११	लि. क.—शिवदत्त शंकर सनाढ्य माधोपुर काशी
६९	४८५८	मन्त्रसिद्धिलक्षण	गौतमतत्रोक्त	१९वीं श	३	
७०	५०४९	सहायणपतिविधान (पञ्चाङ्ग)	खयामलोक्त	"	३२	
७१	६२६२	महानिर्वाणतत्र (पूर्वकाण्ड)		१९४२	१४९	
७२	५८३२	महाविद्या		१८वीं श	५५	४१वा पत्र अप्राप्त
७३	४२९६	महाविद्यादशश्लोकीविवरण		१४९१ (?)	४	*लि.स्था—सिरोही, लि.स—१८९१ प्रतीत होता है।
७४	५३३६	महाविद्यापारायणनिधि	नृसिंह	१९००	२७	
७५	५०००	मातृकानिघण्टु	टी. रामतीर्थ	१९वीं श	६	
७६	५६११	मानसोल्लास सटीक		१९१६	७७	
७७	६४१३	मायाबीजकल्प (ह्रींकारकल्प)		१९७५	३	लि. क—भक्तिमुदर, लि.स्था—विक्रमपुर
७८	५७८०	मार्तण्डसाहारम्य	भू गीशसहितांगंत	१९वीं श	१५	
७९	४११८	रामपद्धति (वेदोक्ता)	श्रीरामानुज	१८६७	८	* लि. क—विप्र जयराम
८०	४२३९	"	"	१८वीं श.	२६	
८१	४२५५	"	"	"	३९	
८२	५८७८	"	लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य	१७७१	१८	लि. क—पुरुषोत्तमदास वंणव, लि.स्था—गलता, जयपुर

राजस्थान पुरातत्त्ववैषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; ४-तन्त्रमन्त्रादि]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६७४२	रामपूजापद्धति	श्रीरामोपाध्याय	१६५६	१६१	* पत्र १६०वा अप्राप्त
८४	६८०४	"	लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य	१७६४	२६	
८५	४११७	राममन्त्रपटल		१६वीं श	७	लि क-वैष्णव रामप्रसाव वैष्णव
८६	७७१६	राममन्त्रविधिपटल		"	१७	लि क-प्रसरवास, खेतडी
८७	४१६६	राममन्त्रविधिपद्धतिपटल		"	१५	लि क-प्रसरवास, खेतडी
८८	५७६२	रामार्चनदर्पण (त्रिपुरसुदरीपूजाविधान)		१६१०	१२२	
८९	४१६७	लक्ष्मीपञ्चाङ्ग	ईश्वरतन्त्रोक्त	१८२४	३१	लि क-भवानीवत्त
९०	७०५४	ललितोपाख्यान	ब्रह्माण्ड पुराणोक्त	१८वीं श	४२	अपूर्ण
९१	५१२६	वरदणेशपञ्चाङ्ग	खट्वात्मन्तान्तर्गत	१६वीं श	२६	
९२	४४५२ (५६)	वश्ययन्त्रादि		१८वीं श	११४वां	
९३	५२३६	वसुधारा (आयवसुधारा)	वीद्वकल्प	१६वीं श	७	*
९४	५२२५	वसुधारानाम धारणीकल्प	वीद्वकल्प	१८६६	६	*
९५	५८०६	श्यामापद्धति		१६वीं श	८	अन्तर्मे भैरवतन्त्रोक्त जगन्मगत कवच भी है।
९६	५६२७	श्यामार्चनमंजरी	लालभट्ट अनारगिरिशिष्य	१६१६	६३	
९७	५६०५	श्यामारहस्य	पूर्णानन्दगिरि	१८वीं श.	१०४	
९८	६२२१	"	"	"	२२	पत्र २० से २२को लिपावट अर्वाचीन प्रतीत होती है।
९९	५५६२	"	"	"	६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५८०५	श्रीचक्रार्चनविधि	पृथ्वीधरमिश्र शाङ्ख्यगोत्रज जगन्नाथसुत हरपुरनिवासी दक्षिणामूर्तिसहितोक्त	१६वीं श.	६	परशुरामकल्पसूत्रानुसार
१०१	५७५५	श्रीविद्यापटल	मन्त्रमहोदध्युक्त	१६वीं श	१५	मन्त्रमहोदध्यनुसारिणी
१०२	७५०२	श्रीविद्यार्चनपद्धति	ललितापरिशिष्टतत्रोक्त	"	४७	
१०३	५४६८	श्रीविद्यार्चनसंक्षेपपद्धति	विद्यारण्य	"	३७	
१०४	५७६८	श्रीविद्यामालामन्त्र		"	१०	
१०५	५६६५	श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका		"	४४	
१०६	४६५८	शतचण्डीविधान		१८६६	५२	लि. क.-सदाशिव शुक्ल
१०७	४६६८	" "		१६वीं श	११	भट्टविश्वनाथस्य पुस्तकम् (अपूर्ण)
१०८	७१२६	शतचण्डी-सहस्रचण्डी-प्रयोगपद्धति	रामकृष्णदेवज्ञ नीलकण्ठवशीय	"	५२	
१०९	५६४१	शरभार्चनारिजात	आपदेवसुत भवानीगर्भज दक्षिणामूर्तिप्रोक्त	१६२६	१२२	
११०	५६६७	शिवताण्डवतत्र	"	१६११ -	६४	लि क -जीवणराम, द्वादश- पटलसेचतुर्दशपटलान्त
१११	६४४४	" "		१६वीं श	२५	
११२	६४६६	" "	टी० नीलकण्ठ गोविन्दसूरिसूनु	१८४०	४२	लि. क.-गगाधर
११३	४४६६	शिवपञ्चाक्षरीन्यासविधि		१६वीं श	६	#
११४	६७३३	शिवाम्बुकरूप		"	१७	
११५	७७४१ (२)	स्फुटमन्त्र		१७वीं श.	१२-१३	
११६	५००६	सर्वदेवप्रतिष्ठाविधि		१८६१	१५४	लि क सदाशिव शुक्ल ।
११७	५५८५	साख्यायनतत्र		१६वीं श.	५१	पञ्चत्रिंशत्पटलान्त ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११८	७७७३	सिद्धसिद्धान्तपद्धति	गोरक्षनाथ	"	२६	
११९	४२०५	सिंहसिद्धान्तसिंधु	गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट	१८२५	६०२	श्रचना सं० १७३१ लि स्या जयपुर लि. क गगापुरी लि स्या मागलौर ग्राम हाडौली प्रदेश
१२०	७६९२	सुमुखीविधान	रुद्रयामलोक्त	१७३४	३	
१२१	५६५८	सौभाग्यरत्नाकर	श्रीविद्यानन्दनाथ (श्रीनिवास- भट्ट गोस्वामी)	१९२७	२७२	
१२२	६३७१	हनुमत्पताकासिद्धि		१८वीं श.	४६	
१२३	५१३८	त्रिकूटारहस्य	रुद्रयामलोक्त	२०वीं श.	६	अपूर्ण
१२४	६१२१	"	रुद्रयामलगत	१७५०	५६	प्रथमपत्र अप्राप्त
१२५	५७७७	त्रिपुरार्चनमञ्जरी	भट्टगढाधार(ज्ञानानन्दापर नामधेय विमंशशिष्य शिवशकरसुत अम्बागर्भसभूत)	१९१९	१	लि क सुखराम प्रतिके कोण खण्डित है
१२६	५८१२	"	"	१९वीं श.	२९४	
१२७	५६५९	त्रिपुरारहस्य	"	१९वीं श.	१०६	
१२८	५६००	त्रिपुरासारसमुच्चय	नागभट्ट	"	५१	लि क नानूराम ब्राह्मण
१२९	५८०६	त्रिशतीनामार्थप्रकाशिका	शकराचार्य	१९३४	८६	लि स्या. जयपुर
१३०	५८२९	ज्ञानार्णवतंत्र		१९वीं श.	११६	८१वा पत्र अप्राप्त
१३१	६६५९	"		१९वीं श.	८६	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ५ धर्मशास्त्र]

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४३७८	अत्रिस्मृति	स्कन्दपुराणोक्त	१९वीं श	११	
२	४५३४	"		१८४०	४	
३	४६२७	अथर्वणशांतिप्रयोग		१८६३	७३	लि. क देवकृष्ण दाधीच लि स्था जयनगरमध्ये सीता- रामजीका मन्दिर
४	४५८६	आचारदीप	नागदेव उपाध्याय	१८वीं श.	६५	
५	४६१६	"	"	"	८८	ज्योतिर्विकेवलरामजीकस्य पुस्तकमिदम्
६	४६४३	"	"	१९वीं श	६३	पत्र ५८, ५९ अप्राप्त
७	६५५६	आचारप्रदीप	"	१९१५	४०	लि क रामनारायण मिश्र दाधीच
८	५२२६	आचारप्रदीप	कमलाकर कूर्परग्रामवासी	१७६०	६२	पत्र १ से ३ तथा ५४, ५५वें अप्राप्त । लि. क किशोरदास
९	४३८२	आचारमयूख	नीलकण्ठभट्ट शकरसुत	१८वीं श.	८४	लि. स्था सागवाटकपुर ७४वा पत्र अप्राप्त
१०	६५१३	"	"	१८३८	७२	
११	४५२६	आशौचत्रिशच्छ्लोकी		१९वीं श.	५	
१२	५२५८	"		"	२३	
१३	४५३०	आशौचनिर्णय	श्री भट्टाचार्य ?	१६७०	६	लि क. शीवजी केशवसुत त्रिशच्छ्लोकी व्याख्या
१४	४५३१	" वृत्ति		१८वीं श	१६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	४११३	आशौचवशाक सभाष्य	मू विज्ञानेश्वर, टी. हरिहर	१८४२	११	#
१६	७७६१	"	डी भट्टाचार्य	१९वीं श.	१०	शिवनन्दनजीलिखापित, जयपुर
१७	४६०२	आशौचसग्रह सटीक (त्रिशच्छ्लोकी भाष्य)	डी भट्टाचार्य	१९वीं श.	३७	
१८	४६०३	"	पुरुषोत्तम	"	६	
१९	६२२८	"	श्रीरामचन्द्राचार्य गोपालगुरुशास्त्र	१८६६	१६	लि क मोरेश्वर
२०	५२२०	उत्सवप्रदान	"	१८वीं श.	३८	लि क दयाराम, जयनगर
२१	४५५६	कालनिर्णयवीपिका	"	१८१३	२०	लि क गोविंदराम महाशकर
२२	४६७१	"	"	१८११	३०	दोडा मध्ये
२३	६६६५	कालनिर्णयप्रकाश	रामचन्द्रभट्ट विठ्ठलभट्टसुनु बालकृष्णभट्टपौत्र	१८६१	१४१	लि क अनिरुद्र प्रश्नोरा, प्रति अपूर्ण ।
२४	४३५१	कालनिर्णयसिद्धांत सटीक	मू रघुराम, टी महादेव	१७४०	१४७	अपत्र ४७, ८१ मे ८४ तक अप्राप्त लि क हरिराम हलवद्रवासी रचना श. १७०६, १० स्थान भुजपुर । ५८वा पत्र अप्राप्त ।
२५	६२४६	कृत्यरत्नावली	रामचन्द्रभट्ट, विठ्ठलभट्टसुनु	१८वीं श.	६२	
२६	६३८०	गोदानत्रिधि	"	"	१६	
२७	६५८७	चंद्रशुक्लप्रतिपत्तिप्रिणय	जयसिंहकल्पद्रुमास्तंगंत रत्नाकर पुण्डरीक	१९वीं श.	८	लि. क गोपीनार ।
२८	६६२४	जयसिंहकल्पद्रुम	"	१८वीं श.	७५५	

॥ तिथि य ॥

॥ ३७ ॥ संध्यावदनावेष्टितिनदीषायकदाप्रना

॥ संवत् १७२२ वर्षे ज्ञानाप्रपदस्त्रिंशत् ॥ श्रीरामायनमनाश्रीगोवि
 दायनमः ॥ श्रीरामो जयति ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरुद्रो गायत्रे नमः ॥
 अशंभो यद्यथा स्वामे द्यौरकर्मणि मेथुने ॥ जते च मरणे चैव त ॥ लाल व्यापिनी द्विधि ॥ ॥ मन्वादि
 चयु ॥ दोषग्रहणे च त्रस्तयको ॥ व्यतीपात्रे वै धतो च साकालव्यापी भति द्विः ॥ २ ॥ राक्षसं
 संकीर्तो विनाशः ॥ यवद्विषु ॥ ज्ञानरानादिकं कुयो न्निनि काभ्यवतेषु ॥ ३ ॥
 शीपो सवकुनारा न्यादनी दुर्गनि आवणी ॥ एकादशी अगस्पथके त्रं स्रतके सदा ॥ ४ ॥
 मध्यगवां गोष्ठे विवाहे यमंडया ॥ राहो दर्शने फाले दुस्तकं न विधीयते ॥ ५ ॥ विवाहे
 तवंधे च चूडे पकरं ऐतथा ॥ दुर्गा होम सुते जाते अग्नि च के न दृष्य वि ॥ ६ ॥
 ॥ निबंधो संध्याको नैत्वति को ते स्नात्वा च मयथा विधौ जपदक्षयते देवते तः ॥
 ध्यां समाचरेत् ॥ यमः ॥ प्राणया मंत्रयं प्राताः लंगवे द्विगुलं चूरता ॥ मध्याह्ने त्रिगुलां प्रो
 ॥ मध्याह्ने चतुर्गुलां ॥ साध्याह्ने पंचगुलां कं सध्याति कुमला भवेत् ॥ १ ॥ निबंधो

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६	६६६३	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर गुण्डरीक	१६वीं श	४४१	अपूर्ण, त्रुटित
३०	६६५८	जातिविवेक	विश्वम्भरीयवास्तु शास्त्रास्तर्गत	१६०२	२०	विविध कर्मकार जातियोका वर्णन
३१	७०४१	जीवस्वित्क कर्त्तव्यनिर्णय	रामकृष्णभट्ट, नारायणसूनु, रामेश्वर पौत्र	१७४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२	४१२६	तिथिनिर्णय (तिथि दीधिति)	अनन्तदेव	१७५७	४८	* स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३३	४६१८ (१)	"	भट्टोजी दीक्षित	१८वीं श.	२७	लि क वीरदेव सवत्र (त्)
३४	४६०१	"	गगाराम भट्ट	१८३४	१२	नेपाले ८३४
३५	७५६५	"	शिवानन्द भट्ट	१७३२	३७	कतकि जीवनकालमे लिखित प्रति ज्ञात होती है
३६	४५३८	दत्तकदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श	१४	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३७	४६२६	दानचन्द्रिका	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१८६८	६८	लि क सदासुख शुक्ल
३८	७५६५	दानधर्म प्रकरण	हेमाद्रि	१६वीं श	३०१	आद्य १५ पत्र अप्राप्त
३९	४६४७	" खण्ड		१७६६	३३६	चतुर्वर्गचितामणिगत
४०	४६८४	दानवाक्यसमुच्चय	पुरुषोत्तम	१६१६	२७	लि. क. भगवतीदास
४१	४५४०	देवालयगृहादिवास्तुदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श	४२	* लि. क वामनशुक्ल
४२	५११३	धर्मप्रवृत्ति	रामेश्वरभट्ट, सूनु श्रीनारायणभट्ट	१८७६	१७५	लि क वैष्णव रामप्रसाद तक्षकपुर
४३	४६०५	धानतपद्धति (द्वादश्यादिसत-निर्णय)		१६वीं श.	६	*

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	६६५७	निर्णयसिन्धु	कमलाकरभट्ट	१८८२	३५०	लि. क हरिवास वैष्णव, जयपुर
४५	४५५३	निर्णयामृत	गोपीनारायणश्रीसूर्यसेन	१५३५	२३०	लि. क पाठक वानरसुत पाठक परमात्मा (अपूर्ण)
४६	४५८३	"	महीमहेन्द्र	१६७०	१८०	
४७	५१६४	नीतिमयूख	बलालदेव	१८वीं श.	५०	
४८	५७०६	प्रायश्चित्तकदम्बनिर्णय	नीलकण्ठभट्ट शङ्करसूनु	१६०७	५३	
४९	४१८४	प्रायश्चित्तमयूख	गोपाल न्यायपंचानन भट्टाचार्य	१६वीं श.	१०६	# पत्र ७, ६१, ६२, ७० से ७३ तथा अन्त्य पत्र अप्राप्त
५०	६४५४	पाराशरस्मृति सविवृतिक	विवृतिकार माधव	१५वीं श.	१५६	६६वां पत्र अप्राप्त
५१	४६२६	"	"	१८३३	५०८	लि क -रामनारायण मिश्र शाकभरीवासी
५२	७७७२	"	"	१७७१	१८६	अपूर्ण
५३	४५६३	"	"	१७वीं श.	१६०	#लि क -वीरेश्वर शुक्ल
५४	४४४६	मदनपारिजात	भट्ट विश्वेश्वर कौशिक (?)	१७८६	३८४	
५५	६५७५	मलमासनिर्णयादि	रूपनारायण	१६वीं श.	६	
५६	६००८	महादानपद्धति		१५७२	१४०	प्रथम पत्र अप्राप्त
५७	४६६०	महावत		१८वीं श.	१२	लि. क -श्रीशिवर
५८	६१२६ (१)	महावतकथा	गोविन्दपण्डित	१५४३	१३	जीर्ण, फटी हुई
५९	४४४४	महावतभाष्य	नीलकण्ठ	१७४१	३४	#
६०	४६८२	महाशांति		१८६६	६	लि क -सदासुल

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	६६८५	साधवीयकालनिर्णयकारिका	साधव	१८वीं श.	१२	#
६२	४५१६	मानवधर्मशास्त्रसंहिता	भृगुप्रोक्त	१८वीं श.	१३१	
६३	४५३७	यमप्रणीतधर्मशास्त्र	विज्ञानेश्वर श्रीपद्मनाभ भट्टो-	१८वीं श.	४	१ से ६ पत्र अप्राप्त
६४	४३८३	याज्ञवल्क्यस्मृतिटीका (मिताक्षरा- प्रथमाध्याय)	पाध्यायात्ज	१५७८	६२	
६५	४३८४	" द्वितीयाध्याय	"	"	१६३	४४ से ५४ पत्र अप्राप्त
६६	४६४५	" तृतीयाध्याय	"	१८वीं श.	४०	
६७	४३८५	" तृतीयाध्याय	"	१८वीं श.	१४१	आदितस्तृतीयाध्यायान्त
६८	५१६३	" प्रथमाध्याय	"	१८११	१४३	
६९	६४५१	" द्वितीयाध्याय	"	१७वीं श.	७५	
७०	६४५२	" तृतीयाध्याय	"	"	१३२	'शुक्लविक्रमेश्वरस्येदुस्तकम्'
७१	६४५३	"	"	"	१७६	"
७२	६५४६	"	"	१८६६	८८	१५०वां पत्र अप्राप्त लि.क.-वैकुण्ठनाथ, व्यवहार- खण्ड मात्र
७३	४६१६	" मूल	अनन्तदेव	१७८२	४७	लि.क. उद्धवजी नागोर
७४	४५४१	रजोदर्शनजातकशास्त्रविधि	अनन्तदेव	१६वीं श.	६७	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत प्रथम पत्र तथा पृ ६७ से आगे पत्र अप्राप्त, अपूर्ण प्रति
७५	४६३८	रजोदर्शनशास्त्र	गोविन्दपण्डित	१८६५	७	लि.क. सदासुखशुक्ल, जयपुर
७६	४३५०	रत्नसंग्रह	गोविन्दपण्डित	१७१२	५०	#

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, ५-धर्मशास्त्र]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७	६५०७	लघुपाराशरस्मृति	पराशरमुनि	१८वीं श	३३	तृतीयाध्यायपर्यन्त
७८	४५४२	व्यासस्मृति	शङ्कर नीलकण्ठ (तनय)	१८वीं श	५	लि क गङ्गाराम । लि स्या
७९	६६१५	” ” गृहस्थाह्निकम्		”	११	जयपुर । पत्र ५२ व ३८९से
८०	४९२६	व्रतांक		१८९२	५८३	३९४ तक अप्राप्त । प्रति मे वो
						तरहके पत्र हैं । ५१४ से ५७०
						तकके पत्र दूसरी प्रकारके व
						छोटे हैं तथा इनमें पत्र सं.
						१७० तक स्वतन्त्र सख्या भी
						लगी है ।
८१	५८२१	वार्षिककृत्य	कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य- मुत्त	१९वीं श	५५२	पत्र ४७, ४८, १८६ व २२०से
८२	४५८४	विश्ववादेश	कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य- मुत्त	१९७५	२०	२२३ तक अप्राप्त
८३	६७१९	विश्वेश्वरस्मृति	कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य- मुत्त	१८वीं श	७	११वा पत्र अप्राप्त
८४	४५३६	वृद्धवातातपधर्मशास्त्र	कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य- मुत्त	१८वीं श	३	
८५	६६१५	वैष्णवचर्चा	कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य- मुत्त	१९वीं श.	४	
८६	६१६७	वैष्णवधर्मतत्त्वचिन्तामणि	श्रीनिवासाचार्य	१८वीं श	४	
८७	६२६६	वैष्णवोपयोगीनिर्णय	श्रीनिवासाचार्य	१९०५	२०	रामार्चनचक्रिकादिके आधार
						पर सगृहीत
८८	४५३३	शङ्ख स्मृति (शाखशास्त्र)	शयप्रोगत	१८४१	११	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	४४४७	शालायनसूत्रभाष्य	वरदत्तसुत ?	१९०६	१५४	#
९०	४९४८	ज्ञान्तिमपूख	नीलफठ	१७७९	१५८	कीटविद्ध । 'ठाकुर नाथूरामस्य- पुस्तकम्' ।
९१	६०७५	"	"	१८७७	८७	पत्र ४६ से ५० व ८१ वा अप्राप्त
९२	४९३१	शातिसार	दिनकरभट्ट रामकृष्णात्मज	१८८७	६१	लि. क सवासुखशुक्ल, जयनगर
९३	४३८०	"	"	१९वीं श.	१२३	
९४	५००३	शिवरात्रिपूजनविधि	"	१९वीं श.	१५	जयसिंहकल्पद्वमोक्त
९५	५१४२	शुद्धिविवेक	रुद्रधरलक्ष्मीधरात्मज हल- धरानुज	१७६९	१४	लि क रामभक्त सारस्वत
९६	४९३४	शूद्रधर्मकमलाकर	भट्ट कमलाकर	१८९०	९५	लि क सवासुखशुक्ल, जयपुर
९७	५५७८	स्मार्तनिष्कृतिपद्धति	दिवकर भट्ट	१७०९शक	७१	पत्र ९ से १५, २३, २४ तथा ५२ से ६२ तथा ८७वा पत्र अप्राप्त
९८	४९६८	स्मृत्याम्बिक (स्मृतिसमुच्चय)		१७५८	२४	लि क सखारामभट्ट उल्लप नामक भाई भट्ट सुनु लि. क. ठा. लीलाधर लि स्या कोटा
९९	४५३९	स्मृतिकौस्तुभ-संस्कारदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं	६७	लि क. तिवाडी शिवजीराम
१००	४६१७	स्मृतिसार	याज्ञिकदीक्षित	१८१२	२२	दायमा, लि स्या. अमेर
१०१	४६३९	"	"	१७९७	२०	
१०२	६०९३	संस्कारकौस्तुभ	अनन्तदेव	१८वीं	१३५	पत्र ३४, ३५, ३६ अप्राप्त लि. लट्टू गवाधरसुत जयकृष्ण

राजस्थान पुरातत्त्वस्वध्वेषण मन्चिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ५-धर्मशास्त्र]

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७०४४	सस्कारप्रयोगसग्रह		१८वीं श	८१	अपूर्ण
१०४	७०४५	सस्कारपद्धतिसग्रह		"	२५	
१०५	५२५३	सग्रहश्लोका		१६२३	२१	
१०६	४५३५	सवर्त्तस्मृति	सवर्त्तऋषिप्रोक्त	१८४०	८	
१०७	४६७६	साण्डियविवेक	श्रीशूलपाणि	१७१६	५	लि क श्रीरत्नाकर भट्टात्मज भट्ट शकर । लि स्या काशी
१०८	५५४६	हारीतस्मृति	हारीतऋषिप्रोक्त	१८१०	६८	५१वा पत्र अप्राप्त ।
१०९	४५८६	हेसात्रिकालसिर्णय	भट्टोजीदीक्षित	१८वीं श	४५	लि क आशानन्द व्यास
११०	७७७०	त्रिशाच्छलोकीभाष्य		१८८४	३१	लि क. नाथूराम भालूक
१११	५३४२	त्रिशाच्छलोकीसटीक		१८५४	१८	
११२	४६३५	"		१८६६	१७	लि क सम्पतराम
११३	६६०३	ज्ञानभास्कर		१६वीं श	१३८	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ६-पुराण कथा-माहात्म्यादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६२८	अक्षयतृतीयाकथा	पद्मपुराणोक्त	१९३१	२	लि क देवकृष्ण दाधीच पुरो- हित चक्षुपुरे (चाकसू ?)
२	४४६१	अगस्त्यकथा	पद्मपुराणोत्तरखण्डोक्त	१९वीं श	८	लि. क रामचन्द्र
३	४६६४	" (अर्घ्यदानविधि)	भविष्योत्तरपुराणगत	१९वीं श	८	लि क केसोराम कायकुब्ज
४	६६७३	"	"	१८३१	४	ब्राह्मण नगर बोली
५	४२२०	अगस्त्यार्घ्यपूजाकथा	"	१८१४	८	
६	५३७६ (१४)	अनन्तनाथकथा	गोतमप्रोक्त	१८वीं श.	१६६ से २०२	
७	४१२२	अनन्तव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणगत	१९वीं श	१०	
८	६६७०	"	"	१८३२	८	
९	६६५४	अर्बुदमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१९०५	१३१	
१०	६८११	इतिहाससमुच्चय	वायुपुराणोक्त	१९४३	४६	
११	४१६०	एकलिंगमाहात्म्य	विश्विधपुराणसकलित	१९१३	१०४	लि. स्था.—उदयपुर अर्थ राजस्थानीमें है
१२	४०४४	एकादशीमाहात्म्यकथा साथे	"	१८१३	२८	लि. क रामचन्द्र ग्राम काणगी मेवाडदेशे
१३	५५५२	एकादशीकथासग्रह	"	१९०८	६१	लि क. यज्ञेश्वरदेव, आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४	६४०६	" (अपूर्ण)	"	१९वीं श.	१६	भाद्रपद से फाल्गुन कृ एका- दशी कथापर्यन्त
१५	६७२६	ऋषिपञ्चमीकथा	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८१६	७	
१६	६६६६	ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापन	भविष्योत्तरपुराणगत	१९वीं श.	७	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६५६६	कमलकावशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१६वीं श	४	कामदा एकादशी पुर्वधोत्तममास की एकादशी होती है
१८	६७०४	कामदेकादशीकथा	भविष्योत्तरपुराणोक्त	"	४	'रमा' एकादशी
१९	५४४४	कार्तिककृष्णैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त	१८४५	८	लि क घनश्याम
२०	४०९७	कार्तिकमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१६७७	४७	लि. क गोविन्दव्यास गुर्जरगौड अजयपुर
२१	४१०७	"	पद्मपुराणोक्त	१८५९	४५	लि क. नन्दूभाद्र विद्यार्थी
२२	४२०९	"	"	१८५१	५१	लि क गणविष्णु कात्यकुब्ज, बोली नगर
२३	४५५४	" (एकादशी कथा संग्रह)	मत्स्याद्यनेकपुराणोद्धृत	१८६१	७१	२०वा पत्र अप्राप्त
२४	६५४८	"	पद्मपुराणोक्तपुराणोक्त	१६वीं श	३८	लि क रत्नेश्वरव्यास, जयपुर
२५	६५९७	"	"	"	५१	-
२६	६६०७	"	ब्रह्मनारदीयपुराणोक्त	१८७९	५७	-
२७	६६०८	"	पद्मपुराणोक्त	१६वीं श	२२	-
२८	६५७८	कार्तिकशुक्लानवमीमाहात्म्य	वेदव्यास	१६वीं श	६	अक्षयनवमीमाहात्म्य
२९	४४४१	कूर्मपुराण	स्कन्दपुराणोक्त	१८४८	२००	१९५वा पत्र अप्राप्त
३०	४४४३	केदारखण्ड	"	१७९९	६७	लि क मोतीराम
३१	४६०१	गङ्गामाहात्म्य	"	१६वीं श	७	शैवप्रकरण जगेश्वरस्वयंपुरांतकम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४६०	गणेशचतुर्थीकथा	स्कन्द०	१६०४	५	लि क नन्दरामव्यास
३२	४२५४	गयामाहात्म्य	वायुपुराणोक्त वेदव्यास	१७४१	२८	लि क नृसिंह भट्ट तर्ककेशरी
३३	४५५५	गरुडपुराण	"	१६वीं श	८१	प्रेतमञ्जरी
३४	६६०६	गरुडपुराणसारोद्धार	"	"	६६	,
३५	६४१०	"	"	१६१६	३६	
३६	६६१०	गोपाष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१६वीं श	१	
३७	६६८५	गोत्रिरात्रतकथा	स्कन्द०	१८६६	४	
३८	५५०६	चातुर्मासमाहात्म्य (अपूर्ण)	'	१६वीं श	३३	
३९	६६१८	चान्द्रायणव्रतकथा	भविष्योत्तर०	"	२	
४०	६७०८	ज्योष्कृष्णकादशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्ड०	"	२	
४१	४४८६	जन्माष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१८५७	७	लि क व्यास रत्नदेवर, श्रीभिनमालमध्ये
४२	५४४२	जन्माष्टमीजयन्तीनिर्णय	"	१६०७	६	लि क. रामनारायण, हरि- वल्लभजीभट्टस्य
४३	६५८०	जन्माष्टमीव्रतकथा	"	१८६४	४	लि क देवकृष्णभट्ट
४४	५६६१	तत्त्वदीपभागवतम् (पूर्वखण्ड)	वल्लभ (विष्णुस्वामिमतवर्ती)	१७६४	११०	नवानगरे लिखितम्
४५	५६६२	" (उत्तरखण्ड)	"	"	८६	"
४६	७११६	तुलसीमाहात्म्य	पद्य०स्कन्द०विष्णुधर्मोत्तर०	१६वीं श.	३१	
४७	६७२२	तुलसीविवाहमहिमा	विष्णुपुराणोक्त	१६वीं श	६	
४८	६६२६	द्वादशीमाहात्म्य	गरुड०	१७७६	५	
४९	६६१२	दशावित्यव्रतकथा	स्कन्द०	१६वीं श	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	६४८६	वानभागवत	कुबेरानन्दवर्णि विष्णु०	१६वीं श १८५३	११२	लि क गङ्गाविष्णु कान्यकुब्ज बौलीनगर(जयपुरराज्यात्सर्गते)
५१	४२१८	वेवप्रबोधिनीएकादशीव्रतकथा	शह्याण्ड०	१८वीं श १८६५	६४-६६	गुटका-जिसमें रामगीता, राम- स्तोत्र, कर्मविपाक व पाण्डवगीता भी हैं
५२	५२०५ (१५)	धरणीशेषसवाव	लक्ष्मीधरपुत्र रामशिष्य ?	१६४५	१०१	साथुरराजद्वारकावास कारायित टिप्पणी
५३	६८३६	नासिकेतपुराण	ब्रह्मवैवर्त्त० पद्मपुराणोक्त	१८६१	४	लि क रामलाल
५४	५६५२	नित्यविहारलीला	" स्कन्द०	१८७७	७	
५५	६७०६	निर्जलकावशीसाहास्य	गरुड० वराह० नारदीय०	२०वीं श	११	लि क घनश्याम ब्राह्मण पाराशर
५६	४४८७	नृसिंहचतुर्वशीव्रतकथा	स्कन्द०	१६२३	११	१४वां पत्र अप्राप्त
५७	६६०१	"	स्कन्द०	१८६६	४३	लि क रामनारायण मिश्र
५८	६६७१	प्रदोषव्रतकथा	शङ्कराचार्य	१६वीं श.	४३	विष्णुसहस्रनाम
५९	४५४८	पञ्चपर्वसाहास्य	स्वन्द०	"	६	
६०	५५४२	पद्मपुराण (पालालखण्ड)	डी विवेकेश्वर	१७६५	८३	'गौडजातीयभट्टरामानन्दनात्मजेन वीरानन्दनेन लिखित व्यास क्षेत्रे' ३६वां ६२वां पत्र अप्राप्त
६१	६५६०	पुरुषोत्तमसासमाहास्य				
६२	६८०७	पुरुषोत्तमसहस्रनाम टीका (अपूर्ण)				
६३	७७७७	पुष्करणीपाख्यान				
६४	४६२२	पुष्करप्रादुर्भाव (सटीक)				

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६५	६५८६	पुष्करमाहात्म्य	पद्म०	१७६६	६६	लि. क. मोतीराम मथ, रूप- नगरमध्ये लालदासजीपठनाथे सलेमाबाद
६६	७०१७	"	"	१८३७	५६	आद्यपत्र अप्राप्त आद्य २ पत्र अप्राप्त
६७	७०३३	"	"	१८वीं श	२१	
६८	७६०६	"	"	१७६५	६०	
६९	४१०१	ब्रह्मवैवर्तपुराण (गणपतिखण्ड)	"	१८६१	६६	
७०	६६६०	"	"	१६वीं श	१०१	
७१	६६६३	"	"	"	६६	
७२	६६५६	" (प्रकृतिलखण्ड)	"	"	१७४	
७३	६६६१	" (अस्त्रखण्ड)	"	"	७७	
७४	६५१२	बृहन्नास्दीयपुराण	"	१७६८	१३३	लि. क. जतीलालजी सवाई जय- पुरे महाराजाधिराज सवाई जय- सिंहराज्ये चित्र सं० ६
७५	५२१२	भागवत (प्रथम से दशमस्कन्धपर्यन्त) सचित्र	श्रीधर स्वामी	१८वीं श.		
७६	५४६५	भागवत (प्रथम तीन स्कन्ध)	"	"	६७	
७७	४२३०	" (द्वादशस्कन्ध)	"	१८७१	११३	कलि क. घनश्यामपल्लीवाल
७८	४३१७(१)	" सजिन्द सटीक (प्रथम-द्वितीयस्कन्ध)	"	१६वीं श	५२	लिपि सुन्दर, आद्यन्त पत्रोपर चित्र
७९	४३१७(२)	" (तृतीयस्कन्ध)	"	"	१४०	"

राजस्थान पुरातत्वावेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ६-पुराण कथा-माहात्म्यादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	४३१७(३)	भागवत (चतुर्थस्कन्ध) (पञ्चम ")	दी श्रीधरस्वामी	१६वीं श	१-१२१	लिपि सुन्दर आद्यन्तपत्रो पर चित्र
८१	४३१७(४)	" (षष्ठस्कन्ध)	"	"	१-६४	"
८२	४३१७(५)	" (सप्तमस्कन्ध)	"	"	१-७८	आद्यन्त पत्र सचिवा, लिपि सुन्दर एक जिल्दमें
८३	४३१७(६)	" (अष्टमस्कन्ध)	"	"	१-७२	"
८४	४३१७(७)	" (नवमस्कन्ध)	"	"	१-६२	"
८५	७०२१	" (दशमस्कन्धपूर्वाङ्क)	"	"	१७७	"
८६	७०३२	" (दशम उत्तराङ्क)	दी०श्रीधरस्वामी	१७६८	११	लि स्या मालपुरा
८७	७०२७	" (दशम पूर्वार्ङ्क)	"	१८वीं श	६५	प्रथम स्कन्ध (अपूर्ण)
८८	७०२८	" (दशम उत्तराङ्क)	"	१८२६	८५	प्रति कीटभुग
८९	६४७७	" क्रमसन्वर्भंटीका (प्रथमस्कन्ध)	"	१८वीं श	८८	"
९०	६४७८	" क्रमसन्वर्भंटीका (द्वितीयस्कन्ध)	"	"	१७	"
९१	६४८६	" (चतुर्थस्कन्ध)	"	"	२१	"
९२	६४८०	" (सप्तम ")	"	"	६	"
९३	६४८१	" (अष्टम ")	"	"	६	"
९४	६४८२	" (नवम ")	"	"	६	"
९५	६४८३	" (दशम ")	"	१७६८	१०६	"

'ती सन्तोषयता सन्तो श्रीलरूप-
सनातनो । दाक्षिणात्येन भट्टे न
पुनरेतद्विचिद्यते "

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	६४८४	भागवत (एकादशस्कन्ध)		१८वीं श.	३६	#
६७	६४८५	भागवतक्रमसन्दर्भटीका द्वादशस्कन्ध		"	८	
६८	७८२२	भागवतके सचित्र पत्र	टी० श्रीधरस्वामी	१६वीं श.	१४०-१४६	चित्र स० १२
६९	६६२५	भागवत सटीक	"	१८वीं श.	५६६	
१००	६६६४	"	"	१६वीं श.	१५३	पञ्चमस्कन्धके चतुर्थ अध्याय तक
१०१	६७०६	" मूल	"	"		
१०२	६४७४	" (प्रथमस्कन्ध) सुबोधिनीटीका	टी० वल्लभाचार्य	१७६७	११६	
१०३	६४७५	" द्वितीयस्कन्ध	"	१७६८	६०	
१०४	६४७२	" सटीक द्वितीयस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं श.	५७	४८वां पत्र अप्राप्त
१०५	६५४६	" तृतीयस्कन्ध	"	१६वीं श.	११८	
१०६	६५५०	" चतुर्थस्कन्ध	"	१८०६	६७	लि. क. भूधरमहाजन भानपुर-मध्ये
१०७	६५५१	" पञ्चमस्कन्ध	"	१७८६	८३	लि. क. लुश्यालचन्द बघवाडा-आमे राजश्री वेदला डुगरसिंहजी राज्ये
१०८	६५५२	" षष्ठस्कन्ध	"	वीं श.	६२	पत्र २८ से ३० तक अप्राप्त
१०९	६५५३	" सप्तमस्कन्ध	"	१८१०	६७	२१वा पत्र अप्राप्त लि. क. गोवर्द्धनदास जती सवाई जयपुर मध्ये
११०	६५५४	" अष्टम स्कन्ध	"	१६वीं श.	५८	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तालिखित ग्रंथ सूची, भाग-२, ६-पुराण-कथा-माहुरस्याधि]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि नाम	पृथ संख्या	दिनांक उल्लेखनीय
१११	६५५५	भागवत नवमस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१९वीं श	५१	
११२	७२३४	" दशमस्कन्धके सचित्रप्रश्न		"	६	६ पत्रोंमें ११ निम्न
११३	५१७८	भागवत दशमस्कन्ध		१९६८	४०	जीने
११४	६४५०	"		१९८५	२६०	नि क देवकी स्वपुत्रनियन्त्री
११५	५१७९	"		१९वीं श	३	३१वा प्रयागनाम
११६	५१=४	"		१८वीं श	३६२	नि क कुम्भराज चण्डीप्रभट्ट पुत्र
११७	६४७३	भागवत दशमस्कन्ध रामपञ्चाव्यायी	द्विपणिकार विद्याभूषण	१९वीं श	५०	प्रथमें श्रीकृष्णमकरानाम श्रीर मण्डलदि १० व्र
११८	६४९०	वेणवतन्विनीटीका , दशमस्कन्ध प्रकरणसुगमिपुति- प्रकाश	विद्वन्वीरशिरा	"	३९	
११९	६४७६	" दशमस्कन्ध मुचोपिगीटीका	पञ्चभाषाय	१८वीं श	१२०	
१२०	६८१५	" भागवत दशमस्कन्धपूजा मटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१९वीं श	१११	
१२१	६८१६	" उत्तरार्त्त	"	१९६४	६८	नि क. पञ्चोपनिषत्
१२२	६४४९	" दशमस्कन्ध (उत्तरार्त्त) मटीक	टी० परमात्तर	१७५८	११०	दशमस्कन्ध भाष्यमतीरे
१२३	६४५६	" " (उत्तरार्त्त)		१९वीं श.	९२	
१२४	६४५७	" पुराणदिग्दर्शनमटीक	टी० श्रीधरस्वामी	"	१४५	
१२५	६४५८	" श्रावण " "	"	१८वीं श	१०	
१२६	६४९५	" दशमस्कन्धे कर्माचरणार्थ- प्रमाण	"	१९वीं श	११	पञ्चमस्कन्ध - दश पत्रकी १०००के मी-समाप्ति मय लिपि मये है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२७	६६१७	भागवतपुराणविषयशकानिरास	पुरुषोत्तम(वल्लभाचार्यचरणानुचर)	१६वीं श.	४	
१२८	४१०२	भागवतमाहात्म्य	पद्मपुराणोक्त	"	१८	लि. क ब्रजलालगौड, ब्राह्मण गुर्जरगौड, ग्राम खडारी
१२९	५५४१	भागवत माहात्म्य	पद्म०	१८वीं श	९	
१३०	५५५७	"	"	१६वीं श	२८	पत्र १० से १३ तक अप्राप्त
१३१	६५९८	"	"	१८५५	१५	लि. क. कवर कालूराम जयपुर मध्ये
१३२	७५-१	"	"	१८४५	२५	३रा पत्र अप्राप्त
१३३	६४८८	भागवतसन्दर्भे तत्वसन्दर्भ (प्रथम)	जीवक	१८२५	१३	लि. क लिषमीराम जोसी नेवटा नगरमध्ये
१३४	६४८७	" " भगवत्सन्दर्भ. (द्वितीय.)	"	१६वीं श	७८	#
१३५	६४८६	" " कृष्णसन्दर्भ: (तृतीय)	"	"	८०	
१३६	५२०५ (११)	भागवतानुक्रमणिका	भविष्योत्तर०	१८वीं श	४२-४७	
१३७	५७३७	भौमव्रतकथा	"	१८९९	३	लि क ब्रजवासी ज्योतिषिद
१३८	६७३९	मत्स्यदेशमाहात्म्य	"	१६वीं श.	१७	सारस्वतकुलोत्पन्न रीमा (रीवा)
१३९	७५९३	मथुरामाहात्म्य	आदिवराहपुराण०	१८६९	५०	आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४०	७३०७	" (अपूर्ण)	"	१६वीं श.	४९	
१४१	६६११	महालक्ष्मीव्रतकथा	भविष्योत्तर०	१९१९	९	
१४२	४५४९	माघमाहात्म्य	पद्म०	१८६२	६४	वसिष्ठ दिल्लीपसवाद

राजस्थान पुरातत्वावेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, ६-पुराण-कथा-माहात्म्यादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	वर्ती आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पग मक्या	विशेष उल्लेखनीय
१४३	६५६३	माघमाहात्म्य	पत्र०	१६वीं श.	३६	लि. क. रामसुत रामनारायण
१४४	६५६६	"	"	१८८६	४१	सवाईजयपुरमध्ये
१४५	५५७५	मार्गशीर्षमाहात्म्य	स्कन्द०	१८३१	३८	पत्र ३५, ३६ अप्राप्त लि. क. लालविहारी
१४६	६५६७	"	"	१६वीं श.	४	लि. क. निरिधारी
१४७	६७११	यमद्वितीयाकथा	लिङ्गपुराणोक्त	१८८७	६	लि. क. शंकरप्रधान जण्डेला
१४८	५८७२	रामनवमीव्रतकथा	ब्रह्मसंहितोक्त	१८६२	४	लि. क. रामनारायण
१४९	६६६७	"	स्कन्द०	१८८६	८	लि. क. रामनारायण
१५०	६५६५	रामायणमाहात्म्य	भागवतोक्त	१६१६	३	लि. क. कुमाराम
१५१	६७७८	रासक्रीडा	"	१८वीं श.	३४	
१५२	५१७३	रासपञ्चाध्यायी	वेदव्यास	१८१४	३७	
१५३	४६३७	लिङ्गपुराण	"	१६वीं श.	१८६	
१५४	६४६६	"	"	२०वीं श.	३	
१५५	६७४०	लोहारालमाहात्म्य	बराहपुराण	१७६६	६	
१५६	६६६८	वटनिरात्रिकथा	भविष्योत्तर०	१८६६	१२१	
१५७	५४६५	विष्णुपुराण (६ पण्ड)	वेदव्यास	१६वीं श.	५६	लि. क. रामनारायण
१५८	६५६४	वैशाखमाहात्म्य	स्कन्द०	१६१५	५६	लि. क. जैसूराम मगई जयपुर-
१५९	६६४७	"	पत्र०	१८४२	६३	मगई पत्राभिले राज्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	५४८५	शिवपुराण	वेदव्यास	१८१७	२०६	ग्राम खाचरोद में लिखित
१६१	४४८८	शिवरात्रिकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१८वीं श	४	लि क संभूकचन्द
१६२	६६०६	"	स्कन्दपुराणान्तर्गत	१९वीं श	२	लि क कँवर कालूराम
१६३	५४४५	शिवरात्रिव्रतकथा	लिंगपुराणोक्त	१८१६	१४	लिखित जयपुर मध्ये
१६४	६६१४	सक्रान्तिमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१८६०	१	लि क कँवर कालूराम
१६५	६६४६	सकण्ठचतुर्थीकथा	नारदीयपुराणोक्त	१९३७	४	लि क. जोशी मोडराम पाटोछो बूदी मध्ये
१६६	६७१२	संकटचतुर्थीव्रतकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१७३०	५	
१६७	५२५७	सत्यनारायणव्रतकथा	श्रीव्यास	१९३४	१२	
१६८	४१००	सत्योपाख्यान	भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत	१९वीं श	६५	लि क. ब्रजवासी सिल्लु: काश्याम्
१६९	५६७८	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत	१८६५	४	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७०	६४०३	हरितालिकाव्रतकथा	हितहरिवंशगोस्वामी	१९वीं श	३	
१७१	४६३८	हरिवंशपुराणरसकुल्याख्याख्या		१८३५	५२६	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ७-वेदान्त]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४५४५	अध्यात्मविद्योपदेशविधि (गीतागूढार्थ- वीपिका)	शंकराचार्य	१७६०	६	लि. क मयाराम लि. स्या मालपुरा
२	४५६४	अन्त करणबोधसविवृत्तिकविवृति	वल्लभ	१८वीं श.	१६	
३	४२४४	अनुस्मृति	महाभारतगत	"	१३	
४	४६४६	अनुस्मृति	महाभारतशास्त्रिपर्येषित	१६वीं श	६	
५	४५८८	अपरोक्षानुभूति	शंकराचार्य	१८वीं श.	७	
६	५२३२	"	"	"	१०	
७	६७१०	"	"	२०वीं श	६	
८	७७५७ (४)	"	"	१८५०	१७०-१८६	
९	५३५१	अभयप्रदानमार्	वरवाचार्य वैकटनायाचार्यशिव्य	१८६१	१५	
१०	६६४२	अर्जुनगीता	गोपवास	१८६६	१२	लि. क. शिवराजगिरि
११	५५४७	अर्थपञ्चकम् (रामानुजसम्प्रदायस्य)	गोपवास	१८३७	१०	लि. क. तुलसीदास वैष्णव पुस्तक मन्थे
१२	५५४३	अष्टावक्रटीका	विश्वेश्वर	१७१४	७४	लि. क. गोकुल चंरागी शाहगज
१३	५२१४ (२)	अष्टावक्रटीका (श्रवभूतानुभूति)	विश्वेश्वर	१८६०	३२	लि. क. हरिदेव
१४	६५६६	अष्टावक्रटीका (वापयसुधास्या)	"	१६वीं	४४	
१५	४६०४	अष्टावक्रसूक्त	अष्टावक्र	"	४३	
१६	४६०६	अष्टावक्रसूक्तसटीक (त्रिपाठ)	टीका—विश्वेश्वर	१८०५	२७	लि. क. रामेश्वर शिवात्मज
१७	७७५७ (७)	आत्मनिर्हण	शंकराचार्य	१८५०	२२०-२२२	
१८	४५६१	आत्मबोध	"	१७६६	७	
१९	४६११	"	"	१८वीं श	६	लि. क. ययावत

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०	७७५७ (६)	आत्मबोध	शकराचार्य	१८५०	२१०-२१६	
२१	६६७६	आत्मबोधप्रकरण	"	१६वीं श.	१७	
२२	६६२७	आत्मबोधव्याख्या (विठ्ठलजानानन्दवा- यिनी, बालबोधिनी)	शकराचार्यनारायणतीर्थ	१७७४	२३	लि. क. रामकृष्ण
२३	४१४१	आत्मबोधसटीक	शकराचार्य	१८वीं श.	१७	
२४	४६१२	आत्मबोधसटीक (प्रकाशिकाख्या)	टीका गोविन्दाचार्य	"	१६	
२५	५६१२	आत्मबोधसटीक	शकराचार्य	१६वीं श.	१२	
२६	६३५४	आत्मानात्मविवेक	रूपसनातन	१८वीं श.	६	
२७	६१५४ (२)	उज्ज्वलनीलमणि विवृति.	अश्वमेधपर्वगत	१८१४	१७६	
२८	४५७८	उत्तरगीता	शकराचार्य, टीका-भूधर	१६वीं श.	१४	
२९	५६१६	उपदेशपञ्चकव्याख्या	कृष्णदास, टीका-प्रबोधानन्द	"	४	
३०	५५०३	कणनिन्दसटीक (अर्थकौमुदीनाम्नी)	सरस्वती	१८०६	६३	रचनाकाल स. १६३५
३१	४५७७	कुम्भकपद्धति	रघुराम शिवरामसुत	१६वीं श.	२१	
३२	७०६६	कृष्णसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८२०	२४३	लि. क. व्यास हरिलाल जूनिया- वासी; पत्र २१, २२ अप्राप्त
३३	५६८५	"	"	१८वीं श.	१५६	
३४	४५६७	गर्भगीता	ब्रह्मज्ञानतत्त्वसार	"	६	
३५	७६१०	गीतासारोपनिषत्		१६वीं श.	४	
३६	६७८२	गोरक्षशतक	कृष्णदास	'	१२	लि. क. केशवदास
३७	५४०४	गोविन्दगुणानुवादसटीक		१६४६	३८	

राजस्थान पुरातत्त्वविशेषण मन्दि-र—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, ७-वैदान्त

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८	४५८७	चन्द्रोदयविलास	चन्द्रसिंह	१८वीं श	६४	रचनाकाल १६६४
३९	६२०१	चित्रदीपव्याख्यान	रामकृष्ण	"	३०	प्रति जीर्ण व कोटविह्व है
४०	६०६९	चित्रदीपस्टीक	"	१९वीं श	३०	
४१	६५६०	चैतन्यचरितामृत	वल्हभाचार्य	१९०१	४१	
४२	५२०५ (८)	जलभेद	कल्याणराम	१८वीं श	४०-४१	
४३	६५०६	जलभेदटीका		१७२८	८	
४४	४३८१	तत्त्वभागवत	पूर्णानन्द श्रीगोड	१८वीं श	१२७	अपूर्ण
४५	५५२६	तत्त्वमुक्तावली	गणेशदीक्षित	१८४६	६	
४६	५५९९	तत्त्वयाथार्यदीपनम्	जीवगोस्वामी	१९वीं श.	२३	
४७	७१६१	तत्त्वसम्बन्ध	ब्रह्मचरन्त्यमुनि	१८वीं श	१८	
४८	७७५७ (५)	तत्त्वसार	"	१८५०	१८९-२०९	
४९	५३८५ (१)	"	"	१६वीं श		
५०	६०५९	तत्त्वनयचूलिका	वरदाय	१८४७	१३	
५१	४५४६	तत्त्वानुसंधान	महादेय सरस्वती मुनि	१७६५	१५	लि क. मयागम
५२	६०७०	"	"	१९०१	३६	
५३	६१७३	"	"	१८वीं श.	४६	
५४	६४९२	"	"	१८८६	३०	
५५	६७०५	द्वावशमहायाकाविवरण	"	१८७५	३८	लि क हेरीराम इये भायनगर
५६	७७५७ (२)	द्वावशमहावायसिद्धात	गन्धरास	१८५०	५६-१४०	
५७	६८०६	वशहलीकीटीका (तत्त्वसारप्रकाशिनी)	रामकृष्ण मिश्र	१८२१	८	लि क हरचन्द्र, जगपुर
५८	६०६१	नाटकदीपाव्याख्या		१९वीं श	५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६	७११७	नारदगीता	वल्लभाचार्य	१६वीं श.	२	
६०	५२०५ (१०)	निरोधलक्षण	"	१७७६	४२वा	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
६१	७५७६	निरोधलक्षणटीका	डि० हरिराय	१८वीं श.	२७	
६२	५२०५ (४)	प्रबोधः	विट्ठलदीक्षित	१६वीं श.	३६-३७	
६३	५६५२	प्रश्नावली	जडभरत (माधवानन्दशिष्य)	१६वीं श.	८	
६४	५७२५	प्रस्थानभेद	मधुसूदनसरस्वती	"	१८	
६५	५४७२	प्रौत्तिसन्दर्भ (षष्ठः)	जीवगोस्वामी	१८२१	७१	लि. क. मोतीरामजोशी, जयनगर
६६	५४६६	प्रेमपतनाख्यसन्दर्भमटीका	रसिकोत्तम	१८वीं श.	८०	
६७	६७१६	पञ्चधाटीव्याख्या	डि० रामकृष्ण	१६वीं श.	४१	
६८	७०३१	पञ्चदशीटीका	"	१८६०	१२५	
६९	७७८७	पञ्चदशीसटीक	डि० विद्देश्वर	१८वीं श.	१५	लि. क. हरिदेव
७०	५२६४ (१)	पञ्चीकरणप्रकरण (अवधूतानुभूति)	डि० आनन्दगिरि	१६१६	१६	
७१	५७८२	पञ्चीकरणसटीक	योगेश्वर	१८८८	४२	
७२	६१५५	पद्यावली	जीवगोस्वामी	१६वीं श.	२७	लि. क. हरिलाल व्यास
७३	५३८५ (२)	परमात्मप्रकाश	विद्याविलास	१८२०	१३	प्राद्य २ पत्र अप्राप्त
७४	७०६८	परमात्मसम्बन्ध		१७२४	१७	
७५	६१३४	परिभाषावृत्तिः		१६वीं श.	१७	
७६	४२१४	पाण्डवगीता		१६वीं श.	८	लि. क. जयकृष्ण
७७	४२४०	"		१६वीं श.	८	
७८	४५५६	"		१६वीं श.	११	
७९	५११२	"		"	११	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	७७०६	पाण्डवगीता		१८०४	६	लि क. परशुराम व्यास
८१	७८१६ (४)	"		१८३३	३७-३८	लि क. वावा कृपाराम
८२	४२०५ (५)	पुष्टिप्रवाहमर्यादा	वल्लभाचार्य	१८वीं श	१६	लि क हरिलाल व्यास
८३	४४७०	ब्रह्मसंहितासटीक (पञ्चमाध्याय)	रूपगोस्वामी	१८२८	१३	
८४	४४६८	ब्रह्मज्ञान	महादेव	१६वीं श	३३-३६	
८५	४२०५ (३)	भक्तिप्रकरण	वल्लभाचार्य	१८वीं श	६४	
८६	४२६६	भक्तिरत्नावली	परमहंस विष्णुपुरी	"	१२३	रचना १५५१
८७	४२८६	" सटीक	"	१७५४	३०	लि० स्या० जोधपुर
८८	६१५०	"	"	१८२८	१२६	आद्यन्त पत्र सचिन
८९	४२६८	भगवद्गीता		१८वीं श	६७	चित्र सख्या ६
९०	४२६५	"		"	६६	
९१	५०८६	"		१८०५	८३	काशीमें लिखित
९२	५११०	"		१७११	१०२	अंतिम अध्याय के ३६वें श्लोक तक है
९३	६२६४	" (सभाध्य)	रामानुजाचार्य	१८वीं श	८३	पत्र १, २८, ३३, ३४ अप्राप्त
९४	४५८५	" सटीक		१५३८	२०५	लि. क. वैष्णव मयोराम
९५	४५४३	" पूढाभं दीपिकासहित	विजयेश्वर सरस्वती	१७६०	१०६	लि स्या श्री द्रव्यपुर
९६	५४८०	" सुयोगिनीटीका	श्रीधरस्वामी	१६२७	१०६	लि क गोरीशंकर पत्र ३, ४, ६, ८, ४६ अप्राप्त
९७	६३५६	"	"	१७६६	१२५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६८	७०६६	भगवद्गीता (पञ्चोली)		१६वीं श.	१४१	लि. क. पिरागवास
६९	४३१०	भगवद्गीता (भाषापद्यानुवाव सहित)	हरिवल्लभ	१८२०	१८८	स्था० नटवाडा
१००	६०७७	" सुबोधिनी व्याख्या	श्रीधर	१८४९	११३	लि. क. काशीनाथ भरतपुर
१०१	६०६५	भगवद्भक्तिरत्नावलीमटीकप्रिपाठ	त्रिणुपुरी	१८३४	६७	पत्र ६६वा अप्रान्त
१०२	६३२४	"	"	१८७६	२९	लि. क. नरोत्तमवास वैष्णव
१०३	६६१६	"	"	१८८०	३५	लि क. मनुलाल
१०४	७५२०	"	"	१९वीं श.	७४	लि क. जसुनावास, नाथद्वारा
१०५	६५९२	" सटीक	"	१९वीं श.	७४	लि क. वैष्णव गगावास, पल-सरा ग्रामे
१०६	७०१९	"	"	१८वीं श.	६७	प्रथमपत्रसचित्र
१०७	६१५४(१)	भक्तिरसामृतसिन्धुटीका (दुर्गास सग-मनी)	रूप सनातन	१८१५	१४७	
१०८	६२३१	भक्तिरसामृतसिन्धुसटीकपूर्वविभाग	"	१९२४	३३	
१०९	६४९४	भक्तिरसामृतसिन्धुबिन्दु	"	१९वीं श.	८	लि. क. सहजरासवैष्णव साहिपुरा
११०	६७९७	भक्तिरहस्य	सल्लिनाथ	१७७९	३४	लि. क. व्यास हरिलाल
१११	७०७०	भक्तिसन्दर्भ	जीवगोस्वाम	१८२०	६३	" "
११२	७०६७	भगवत्सन्दर्भ	"	"	५०	" "
११३	५२८१	भगवद्गीता	"	१८११	५६	लि. क. गोविन्द लक्ष्मरी
११४	६६६६	"	"	१७७९	७२	लि क शिवनाथ

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११५	६७५७	भगवद्गीता		१८८६	५४	लि. स्था. डेरावसी
११६	७६०२	"		१८५७	३५	लि. क. गोडजी शोभजी
११७	७८०५	"		१८वीं श.	११७	एकावश अध्यायपर्यन्त
११८	७७८५	" (पंचोली टीका)		१८४१	४४	
११९	५७०७	भगवद्गीतासभाष्य	शकराचार्य	१८वीं श.	११७	अपूर्ण
१२०	४५५१	"	"	"	११	
१२१	४३७२	भगवद्गीतासटीक	श्रीधर	१८७५	११३	लि. क. रामचन्द्र
१२२	६६४०	"	"	१८७३	१०६	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२३	६६५८	" (अर्थसप्रहटीक)	श्रीधर	१८वीं श.	११२	
१२४	६६६२	" सुबोधनीटीका	गोपालभट्ट	१८६७	६७१	
१ ५	६५०५	भगवद्भूषितविलासटीका		१८वीं श.	८१	लि. क. गोविन्दराम, जयनगर
१२६	६५२०	महावायार्थविवरण		१८६७	८१	अन्तिम पत्र खण्डित
१२७	६०६६	मीमांसा परिभाषा	कृष्णयाजी	१८१७	१७	लि. श्यामदास, मयुरा
१२८	६२८० (१)	मूलसूत्र	ऋत्सहितांगत	१६०६	१-६	लि. पुजारी हरदेवदास
१२९	६२६५	यतीन्द्रमतदीपिका	श्रीनिवामदास	१८वीं श.	२१	
१३०	५२६३	"	"	१८२३	५५	
१३१	५६५१	याज्ञवल्क्योपनिष		१८वीं श.	२८	
१३२	५५५१	युगत्तरितामृतकथा	यशोधर	१८वीं श.	२८	पत्र २५, ४५, ४६वां अप्राप्त
१३३	७३३६	योगदृष्टिसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रश्चेतमिशु	१७१६	२३	
१३४	७७५७ (३)	योगवासिष्ठसार		१८५०	१४०-१७०	
१३५	४५५२	" (सटीक त्रिपाठ)	महीधर, टी० विश्वेश्वर	१७८८	२७	लि. क. नारायणदास चंपणव स्थान युवायती

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६	४४३०	योगशास्त्र	श्री पतञ्जलि	१८११	१२०	
१३७	७३४६	योगशास्त्रप्रकाश	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श.	१०	
१३८	५९०१	योगशास्त्र (वृत्ति)	"	१६वीं श.	२८	
१३९	७३२८	योगशास्त्र (चतुर्थ प्रकाशपर्यन्त)	"	१७वीं श.	२९	
१४०	४३५३	योगशास्त्रद्वादशप्रकाश	"	१५३९	२४	
१४१	४३-६	,	"	१५६७	२०	
१४२	७४०६	योगशास्त्रप्रकाश (चतुर्थ)	"	१६७७	१४	लि. स्था. इलडुर्ग
१४३	५५९५	योगसूत्र (श्रिभिनवभाष्य)	भवदेवमहोपाध्याय	१९१६	३६	
१४४	५५९८	योगसूत्रभाष्य	पतञ्जलि	"	४३	
१४५	५६२०	योगसूत्रभाष्यवृत्ति	वाचस्पति	१९२३	०	लि क सावु श्रीराम, जयनगर
१४६	५५९६	योगसूत्रवृत्ति	धरिस्वर	१९१६	३५	
१४७	४४२९	योगाख्यान (योगतत्व)	याज्ञवल्क्य	१९वीं श.	४८	
१४८	४२५२	रामगीता		१८वीं श.	१५	
१४९	६६६५	"	महीधर	१८३६	६	लि पुरोधा देवकृष्ण
१५०	६२२४	रामगीताविवृति	"	१९००	१७	लि रामचरण
१५१	६५०३	"	"	१८१८	१७	लि. शुभराम
१५२	७७५७ (१२)	वज्रसूची	शकराचार्य	१८५०	२३३-२४४	लि भट्ट भाष्कर काश्मीरनिवासी
१५३	६२८० (३)	"	श्रीनिवासदास	१९०९	१९-२०	लि. पुजारी हरदेवदास
१५४	५३००	वज्रसूचीसदृशिनी		१८५१	३	लि घासीराम
१५५	५७३३	वाक्यधुवाप्रकरण	शकराचार्य	१९वीं श.	२७	
१५६	४५८०	" सटीक		१८३९	१४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सत्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	५३२३	वाक्यार्थसंग्रह (प्रमाणसार)	शठारि ?	१६वीं श	५७	
१५८	५३६३	वातमाला	कविराज भिक्षु	१८वीं श.	३१	
१५९	५२१४	विद्वच्चिन्तप्रसादिनीषट्पदीटीका	श्रीविठ्ठल	१९०८	६४	लि माखनलाल
१६०	५४०५	विद्वन्मण्डन	"	१९००	४९	लि शालिग्राम
१६१	६०७९	"	श्रीचिरजीव भट्टाचार्य	१८४६	३४	लि. जोशी जीवणराम
१६२	४१०९	विद्वन्मोदतरंगिणी	"	१९वीं श	४०	
१६३	५५९७	"	लक्ष्मणाचार्य	१८४३	३२	
१६४	५९५३	विरोधिपरिहार	श्रीरामानुजदास	१८वीं श	२२	प्रथम दो पत्र अप्राप्त
१६५	५८८९	विवेकत्रयरत्न	शंकराचार्य	१९वीं श	६	
१६६	५६१५	विज्ञाननौका	अनन्तराम	१९२१	३२	लि ललितप्रसाद पारीक
१६७	५५४५	वेदान्ततत्त्वबोध	रामानुजाचार्य	१९वीं श	२५	
१६८	७५८०	वेदान्ततत्त्वसार	शंकराचार्य	"	४	
१६९	७७०७	वेदान्तप्रश्नोत्तररत्नमाला	धर्मराजाध्वरीन्द्र	"	४७	
१७०	४६३१	वेदान्तपरिभाषा	परमानन्ददेव	१८८८	२५	लि रामनारायण
१७१	६४९३	वेदान्तरत्नावली	शंकराचार्य	१८५०	२३२-२३३	
१७२	७७५७ (११)	वेदान्तषट्पदी	सदानन्द	१९वीं श	१४	
१७३	४१०३	वेदान्तसार	"	१८वीं श	१७	
१७४	४११९	"	कृष्णानन्द	१९वीं श.	११	पत्र २, ३ अप्राप्त
१७५	४५७५	"	सदानन्द	"	१६	
१७६	४५९९	"	"	१८४१	११	लि कुगवित्त
१७७	४६२३	"	"			

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	५७०१	वेदान्तसार	सदानन्द	१९वीं श	१३	लि ठक्कुर नरहरबल्लाल
१७९	६२५१	"	"	१८३६	२३	लि रूपराममिश्र वल्लभगढ
१८०	६२८३	"	"	१८वीं श	१३	लि पण्डा शिवदत्त
१८१	६५१८	"	"	१७९७	२४	
१८२	७६१७	"	"	१९वीं श	१४	
१८३	४६२१	"	शकराचार्य	१८वीं श	१४	
१८४	४६४०	"	"	१९वीं श	२५	लि श्यामदास
१८५	४२७८	" (सुबोधिनीटीकायुक्त)	नरसिंहसरस्वती	१७२६		स्थान उरपत्तनग्राम
१८६	६१७२	वेदान्तसारटीका (सुबोधिनी)	"	१७४०	५१	
१८७	६५७९	वेदान्तसारटीका	"	१८८६	२९	लि रामसुख रामनारायण
१८८	६१५९	वेदान्तसिद्धांतसंग्रह (सटीक)	वनमाली	१८वीं श	१२३	
१८९	४५७९	वेदान्तसूत्र		१९वीं श	१९	
१९०	४५९३	वेदार्थसारसंग्रह	ब्रह्मानन्द	"	४३	
१९१	६१६५	वैकुण्ठगद्य	बाल्मीकि	१८९०	१६	
१९२	५७७३	वैराग्यप्रकरणम् (रामायणात्संगत)	बाल्मीकि	१८वीं श.	१२९	
१९३	४५५०	शतसूत्रीभाष्य	मू०शाण्डिल्यभाष्यस्वप्नेश्वराचार्य	१८३९	३१	लि व्यास रामरत्न
१९४	७६००	शारीरकमीमासा	शकराचार्य	१८४८	१३	
१९५	५९६४	शारीरकमीमासाभाष्य (प्रथमअध्याय)	"	१४२		
१९६	५९६५	" (द्वितीय अध्याय)	"	१२८		
१९७	५९६६	" (तृतीय अध्याय)	"	१३२		

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र मख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६८	५६६७	शारीरकमीमासाभाष्य (धनु अष्टयाय)	शकराचार्य	१८७४	५३	
१६९	६२२३	"	"	१७३१	२१८	
२००	६२३८	"	"	१८५१	२३७	लि. गिरधारीरामशार्मा गौड
२०१	६७८३	स्वयम्बोध	ईश्वरशोक्त	१६वीं श	१०	लि रामनारायण
२०२	६५८१	स्वरूपप्रकरण	शकराचार्य	"	३	लि बलूराम, वीरघपुर
२०३	६३६७	स्वरोवय	तन्त्रोक्त	१६१३	६	
२०४	६७३०	स्वात्मनिरूपण	नारवपाचारावतन्त्रोक्त	१६वीं श	२०	
२०५	५७८६	स्वात्मनिरूपणप्रकरणार्थाशितक	शकराचार्य	"	११	इस ग्रन्थमे १५६ आर्या छद हैं
२०६	४६४४	स्वात्मबोध		"	२१	
२०७	५२०५ (६)	सन्यासनिर्णय	वल्लभाचार्य	१८वीं श	३८-३९	
२०८	७५७७	सन्यासनिर्णयविवरण	पुरयोत्तम	१६१३	२४	
२०९	७५८३	सन्यासनिर्णयविवृति	गोपेश्वर	१६वीं श	२३	
२१०	५२०५ (७)	सर्वसिद्धान्तवाल्लबोध	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३६वा	
२११	६२९६	सर्वोत्तमविवृति	श्रीवल्लभ	१६३६	४६	
२१२	५६२६	समाधितन्त्र (वालावबोधिघन्तीटीका)	पर्वतधर्मार्थिकुन्दकुदाचार्यशिष्य	१७४६	७०	
२१३	४४६८	साख्यवृत्ति	कपिलोक्त	१८वीं श.	१५	पत्र १-३ अप्राप्त
२१४	६७६६	सामवेवरहस्योपनिषत्	विद्याभूषण टी० नन्दिभ	१८०३	२१	
२१५	६५६१	सिद्धातदर्पण	मधुसूदनसरस्वती	१६वीं श	१२	लि साधरामदास स्या मारोट
२१६	४५४७	सिद्धातविन्दु	"	१७६५	५५	
२१७	७३७०	"	वल्लभाचार्य	१८वीं श	३२-३३	
२१८	५२०५ (२)	सिद्धातसुगतावली	वल्लभाचार्य	१८वीं श		

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१६	७०७१	सेवाप्रकाशशतकन्याख्या	गोस्वामी श्रीव्रजलाल	१८२४	६३	रचनाकाल १७५५, लि. क श्वेताम्बर नातिगराम पत्र ७ से २६ तक अप्राप्त
२२०	५२०५ (६)	सेवाफलम्	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	४१-४२	
२२१	४५६७	हठप्रदीपिका	स्वाम्याराम योगीन्द्र	१६वीं श.	२२	
२२२	५८७३	"	"	१८६४	२६	
२२३	६०७६	"	"	१८६७	२७	
२२४	६७५६	"	"	१७६५	१७१	लि तुलाराम
२२५	७७५७ (१)	"	"	१८५०	१-५६	लि. काश्मीरनिवासीभास्करभट्ट पत्र ३०वां अप्राप्त
२२६	५८३३	हठरत्नावली	भट्ट श्रीनिवास	१६०४	३१	लि. ब्रजवासी रीमापुरे

राजस्थान पुरातत्त्वविशेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; द-न्याय-दर्शन]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६४०	अनुमानमणिदीधिति	रघुनाथ	१६०८	२१५	लि. मथुरानाथ शर्मा
२	६५१५	अनुमितिपरामर्श	रघुदेवभट्टाचार्य	१८४६	३४	
३	६१५२	आप्तपरीक्षा	विद्यानन्द	१६७८	१३३	लि जीवेश्वर
४	४४६६	कारिकानिबन्ध	विश्वनाथ	१८वीं श.	१३	
५	५६२२	किरणावलीसूत्र	उदयनाचार्य	१७०५	५२	
६	५८५६	खण्डनखण्डकाव्य	श्रीहर्ष	१६वीं श.	३४१	अपूर्ण
७	५६८६	"	"	"	२३२	
८	६६३६	जागदीशीन्यायव्याख्या	श्रीगणेश्वर	१६०६	११६	लि मथुरानाथशर्मा
९	४३४३	तत्त्वचिन्तामणि शब्दखण्ड	अमृतचन्द	१७वीं श.	१४५	
१०	६१८१	तत्त्वदीपिका	विश्वेश्वराश्रम	१८वीं श.	१०२	
११	४४६६	तर्कचन्द्रिका	भवदेव	१८१४	२१	लि शम्भूराम
१२	६८७४	तर्कप्रदीप	केशवमिश्र	१६वीं श.	६	
१३	६०२१	तर्कभाषा	गौरीकात्तभट्टाचार्य	१८११	२६	पत्र १६वा अष्टात्
१४	६०४२	तर्कभाषाटीका (भाषार्थदीपिका)	अन्नभट्ट	१८वीं श.	६२	
१५	४४६५	तर्कसंग्रह	"	१६वीं श.	६	
१६	४५००	"	"	१८०५	११	लि चंनराम, गीजगढ
१७	५३२५	"	"	१८३६	३	
१८	६०३७	"	"	१८वीं श.	७	
१९	६३६५	"	"	१६००	८	पत्र ६ठा अष्टात्
२०		"	"	१६००	२३	लि प पन्नालाल, लखकर
२१	६६६४	"	"	७३२	६	लि श्रीगोविन्दभट्ट

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	७७१२	तर्कसंग्रह	अन्नभट्ट	१८६२	६	लि. नजवासी सिल्लु:
२३	६१७१	तर्कसंग्रहतत्त्वदीपिका	मदनभट्टोपाध्याय	१८६४	२४	लि. गोस्वामी बलदेव
२४	६८६२	तर्कसंग्रहन्यायबोधिनीटीका	गोवर्द्धनसुधी	१८६१	२३	
२५	४४३६	तर्कामृत	जगदीशभट्टाचार्य	१०१५	१३	लि. रामनारायण मिश्र
२६	४३४१	न्यायरत्नप्रकरण	शशाधर	१६वीं श.	३८	
२७	६६६६	न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	चूडामणिभट्टाचार्य	१८८४	३१	
२८	५३३५	न्यायसिद्धान्तमञ्जरीतर्कप्रकाशाख्य- दीपिका	टी० शितिकठशर्मा	१८वीं श.	६२	
२९	५६०४	न्यायार्थमजूषा (न्यायग्रहद्वृत्ति)	हेमहंस	१५१५	६७	
३०	७२४५	नयचक्र	देवसेनपण्डित	१८१५	११	पथम पत्र अप्राप्त लि. साधु मुखरामदास शहर बेथममध्ये
३१	७३५७	नयचक्र (मुखबोधार्थमालापद्धति)	देवसेन	१८१३	६	लि. सुज्ञानसागर
३२	७५८६	नयचक्र	"	१६०३	४	लि. हमीरविजय
३३	७४१४	"	सिद्धसेन	१७८६	५	लि. ऋषिसुखदेव
३४	६५१६	निश्चयतत्त्वनिश्चित	रघुदेव तर्कालकार	१६वीं श.	८	
३५	५६२६	प्रमाणमजरी	सर्वदेव	१७वीं श.	८	
३६	५६२३	प्रमाणमजरीटीका	टी० श्रद्धारण्य	१६वीं श.	७	
३७	४४३१	पदार्थमाला	जयराम न्यायपचानन	१६६६	१५६	
३८	५१७२	भाषापरिच्छेद	भट्टाचार्य सिद्धान्तपचानन	१८२३	२८	
३९	६६५१	"	सिद्धान्तवागीश	१६वीं श.	८	
४०	६७१८	भाषारत्न	श्रीकणाद	"	४७	११वा पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता प्रादि ज्ञातव्य	लिपि समय	पग सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१	७७१४	मुक्तावलीकारिका	पचानन भट्टाचार्य	१८६२	६	लि व्रजवासी सिल्लु.
४२	५६३६	रत्नाकरावतारिकापञ्जिका	देवसूरि	१७००	२५	लि तीर्थचन्द्रगणि
४३	४४३८	शब्दनिरूपण पूर्वार्द्ध	हरिभद्रसूरि	१७वीं श.	१३१	
४४	७२५५	षडदर्शनसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रसूरि	१६१२	२०	
४५	७३६०	षडदर्शनसमुच्चयटीका	हरिभद्र	१७वीं श	२६	
४६	४३५०	षडदर्शनसमुच्चयसावधूरि	हरिभद्र	१७१०	६	लि. मुनिप्रकाशपाल
४७	७४८६	स्याद्वादमजरी	हेमचन्द्राचार्य	१५२१	६६	स्थान- सिरौही
४८	७३४८	"		१५वीं श	५३	
४९	४४१६	सन्देहदोलावलीसटीक	जिनदत्तसूरि	१६वीं श.	२०	लि नयनसुन्दरगणि
५०	४३४२	सप्तपदार्थी	शिवादित्य	१७वीं श	७	
५१	५६८८	"	"	"	६	
५२	५६००	सप्तपदार्थटीका	शेषान्तपण्डित	१७०४	२५	प्रथम पृष्ठ शोभन
५३	७१६०	सप्तपदार्थवृत्ति	बलभद्र	१७वीं श	६	प्रथम पत्र अप्राप्त
५४	५४४६	समासवाच	जयराम भट्टाचार्य	१६वीं श	११	
५५	५१३३	सिद्धान्तचन्द्रोदय (तर्कसग्रहटीका)	विश्वनाथ पचाननभट्टाचार्य	१८वीं श.	५६	प्रथम पत्र अप्राप्त
५६	४४३७	सिद्धान्तमुक्तावली	"	१६वीं श.	१२०	
५७	६६५५	"	"	१८८४	७३	
५८	५६६४	"	प्रकाशानन्द	१८१०	५७	
५९	६६३८	"	विश्वनाथ	१८६४	६५	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ६-व्याकरण]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१०२	अनिट्कारिका		२०वीं श.	३	
२	६११७	"		१६वीं श.	३	
३	६११२	"	हेमचन्द्र	"	३	
४	५६८१	अनुबन्धफलासावचूरिपचपाठ		१८वीं श.	१	लि. नन्दराम ब्राह्मण सर्वाइजयनगर
५	६६१६	अव्ययव्याख्या	हेमचन्द्र	१८वीं श.	५	
६	४३६३	अव्ययव्याख्यान	पतञ्जलि	१६वीं श.	४	
७	६७००	अव्ययार्थप्रकाश	पाणिनि	१८४०	७	
८	५०३२	अष्टाध्यायी व्याकरण	रघुदेव	१७६६	११२	लि. गणविष्णु
९	४३७३	आख्यातवादटीका	भट्टाचार्य शिरोमणि	१८८३	३५	लि. महता नागेश्वर श्रीदीव्य
१०	४३७७	आख्यातविवेक	हेमचन्द्र	१८८३	७	लि. रामलाल
११	७४३१	उणादिगणसूत्रविवरण	उज्ज्वलदत्त	१५वीं श.	४०	
१२	५२१६	उणादिवृत्ति (पचमपादान्त)	महेश्वर कवि	१७वीं श.	३२	
१३	७४७१	उणादिसूत्रसटीक		१७६२	१२	लि. रत्नसुन्दर
१४	४३६६	ऊष्मभेद		१८४७	१७	लि. चिमनराम तेरापथी
१५	५३८५ (४)	कातन्त्रव्याख्या (दोर्गासिंहवृत्ति)		१६वीं श.	१७७-१८६	
१६	५६५८	कातन्त्रविभ्रम	तर्कसिंह भट्टाचार्य	१७वीं श.	६	लि. शालिग्राम
१७	५८७१	कारकखण्डनमण्डन	"	१६वीं श.	६	लि. ज्ञानकल्लोल
१८	६१६८	"	मणिकण्ठ भट्टाचार्य	१७१६	४	लि. दीपचन्द्र
१९	७४५६	"	वररुचि	१८४७	८	
२०	६१६१	कारकचक्रम्	पशुपति राठीय	१८वीं श.	३३	
२१	६०३१	कारकपरीक्षा		१८वीं श.	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	४२८१	कारकविलास		१६२०	५४	
२३	७४७३	कारकविवेचन		१८वीं श	४	
२४	५४६२	कृदन्तप्रक्रिया (चन्द्रिका)	रामचन्द्राश्रम	१८६६	२४	लि बलदेव
२५	४३६४	गणरत्नमहोदधिसवृत्तिक	वर्द्धमान सूरि	१७वीं श	६६	१ से ६ पत्र अप्राप्त, रचनाकाल स० ११६७
२६	६५८३	गणपाठ (पाणिनीय)		१८६६	१४	
२७	५०८६	दशबलकारिकारूपोधातुपाठ		१७५६	२	
२८	७३११	धातुतरंगिणी (स्वोपज्ञधातुपाठ- विवरण)	हर्षकोति सूरि	१७वीं श	८५	
२९	६१००	धातुपाठ		१८६०	२१	
३०	६२७०	धारुरूपवली		१६वीं श.	६	
३१	५४८६	प्रक्रियाकौमुदी (प्रथमभाग)	रामचन्द्र	१७वीं श	६३	पत्र ६३, ८७, ८८, ९०, ९१, ९२ अप्राप्त
३२	७४६२	"	"	१७०१	१६०	
३३	५१४५	" सटीक (द्विध्वतप्रक्रियात्)	श्रीकृष्णनरसिंह सूरिसूनु	१८वीं श	३२१	
३४	५४८६	" सुवन्तप्रकरण	रामचन्द्र	१७वीं श	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
३५	५४८८	" तद्धितप्रक्रिया	रामचन्द्र	"	११४	पत्र ४२, ४६, ६१, ७३, ८१ से ८६ तक, ९३ वा अप्राप्त
३६	५४८७	" कृदन्तप्रक्रिया	"	"	८८	पत्र ७६ से ८६ तक अप्राप्त
३७	५००६	प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	१६०६	४२	
३८	५२५१	"	"	१६२०	४५	लि श्री नृसिंह गुसाई

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६	६५७०	प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	१६वीं श.	१६	
४०	५१५३	प्रौढमनोरमा (पूर्वाह्नवृत्ति	भट्टोजी दीक्षित	"	४४६	
४१	५१५४	" (तिङन्तकाण्ड)	"	"	१५३	
४२	५१४७	"	"	"	१४४	अपूर्ण
४३	४४७१	परिभाषासूत्र (सिद्धान्तकौमुद्या)		"	२	
४४	६६६४	परिभाषासूत्राणि	नागेश भट्ट	१६१६	८	लि. गोपीनाथ
४५	५१५५	परिभाषेन्दुशेखर	पाणिनि	१८००	१०३	
४६	५६२४	पाणिनीयव्याकरणसूत्रपाठः	"	१७वीं श.	२१	
४७	५५७६	पाणिनीयशिक्षा	" नागोजी भट्ट	१८वीं श.	२७	अपूर्ण
४८	६१६६	भाष्यप्रदीपव्याख्यान (प्रथमखण्ड)	"	१८५५	१८६	
४९	६१७०	" (द्वितीयखण्ड)	"	"	११२	
५०	६०५१	भोमसेनधातुपाठ	भोमसेन	१६३०	६	
५१	५६६६	भूधातुवृत्ति	क्षमा कल्याण	१८२६	३४	राजनगरे लिखितम्
५२	५१५०	मध्यकौमुदी (पूर्वभाग)	वरदराज	१८वीं श.	६८	
५३	५१५१	" (उत्तरभाग)	"	१८१२	६३	
५४	६४५६	" (विलासनाम्नीटीकासहित)	" डी. जयकृष्ण	१६वीं श.	११३	
		अव्ययपर्यन्त	"			
५५	६४६०	" (आख्यातप्रक्रिया)	"	"	८६	
५६	६४६१	" (कृदन्तप्रक्रिया)	"	१८३४	६८	पत्र ६६, ६७वां अप्राप्त
५७	५१४६	महाराष्ट्र (तृतीयचतुर्थध्यायी	पतञ्जलि	१८वीं श.	१६८	लि. जती चैनसागर, जैनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५५४८	लघुकौमुदी (उत्तरार्ध)	वरदराज	१६१२	५७	लि नन्दलाल
५९	६६७०	लघुशब्देन्दुशेखर	नागेश	१८वीं श	१६५	
६०	५१४८	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१६१०	७६	
६१	६१०३	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१६०४	६८	
६२	७६८६	"	"	१८७४	६०	लि उमाशंकर
६३	६८६५	लिङ्गानुशासन	हेमचन्द्र सूरि	१८वीं श.	८	
६४	७२०५	लिंगानुशासनविवरण (स्वोपक्त)	हेमचन्द्राचार्य	१६४५	७४	लि श्रीभा रत्न
६५	६५२१	व्याकरणलघुभाष्य (पूर्वखण्ड)		१६वीं श.	२८२	
६६	५३१०	वाक्यप्रवीण		१७वीं श	२५	अपूर्ण
६७	६३३२	विद्वद्यद्वेष	भूपतिमिश्र	१८६०	१४	वेरिनगरमध्ये लिखितम्
६८	६११५	विपरीतग्रहणप्रकरण		१६वीं श	२	
६९	७४५७	वैयाकरणभूषणटीका	कृष्णमिश्र	१८वीं श	१७	
७०	५१५२	वैयाकरणभूषणसार (स्फोटवाद)	कौण्डिभट्ट	"	५०	
७१	५१७४	वैयाकरणसार (शक्तिनिर्णय)		"	७	
७२	७४५१	शब्दप्रभेदटीका	म. महेश्वर टी ज्ञानविमल	"	११०	
७३	६०१४	शब्दभेदप्रकाश	पुरवोत्तमदेव	१८७६	२	
७४	५६२८	शब्दशोभा	नीलकण्ठ शुक्ल	१७२१	२६	रत्नकाल १६८६ सागानेर- मध्ये लिखित
७५	५२१७	शब्दसंचयः	केनचिज्जैनमुनिना सकलित	१७वीं श	१६	अपूर्ण
७६	७५१८	शब्दार्थसंग्रह		१८६१	३	लि वजवासी सिल्लू
७७	६५०८	पट्टकारकव्याख्यान	भैवानन्द	१८५२	११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७८	७४४४ (१८)	सारस्वत (पञ्चसन्ध्यन्त)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८६	३०३-३१०	लि. ऋषिचतुर्भुज उदपुरमेंलिखित
७९	५१४४	सारस्वतसूत्रपाठ	"	१९वीं श.	८	
८०	६७८०	"	"	१९२५	८	लि. किशोरदास हमीरगढमध्ये
८१	७६६४	"	"	१८५६	११	
८२	४४७०	" (कम)	"	१९वीं श.	८	
८३	४३९५	सारस्वत प्रथमावृत्ति (तद्धित प्रक्रियान्त)	माधव	१८४२	६६	लि. मथेरण सरूपचन्द मेखतानगर
८४	६६४१	सारस्वत (द्वितीयावृत्ति)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१७वीं श.	४६	लि. रघुनाथ
८५	६६४२	" (तृतीयावृत्ति)	"	१६६८	१२	अपूर्ण
८६	७६४९	" प्रथमसन्धिभाषाटीका	"	१९वीं श.	५६	लि. स्था.-सुवामापुर
८७	४४७२	सारस्वतप्रक्रिया	"	१७६१	२३	प्रथम पत्र अप्राप्त
८८	५२४१	" (पञ्चसन्ध्यन्त)	"	१९वीं श.	१२	
८९	५०४५	" (विसर्गसन्ध्यन्त)	"	"	७३	अपूर्ण
९०	६११६	"	"	"	९	अपूर्ण
९१	६८२३	सारस्वतप्रक्रिया (सार्य)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८वीं श.	१४	
९२	६९२३	"	"	१७वीं	५६	लि. महात्मा रामलाल नेवटा निवासी
९३	६५०४	मारस्वत (आख्यातप्रक्रिया)	महीदास	१८५७	५८	
९४	६९६५	"	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८८	५८	
९५	६८९३	" तद्धितप्रक्रियान्त	"	१७४२	४४	
९६	७५६९	" तद्धितप्रक्रिया	"	१९वीं श.	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	६८८६	सारस्वत (कृतप्रक्रिया)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७४७	४६	लि मुनि तेजपाल मिलीवदग्रामे
६८	७५८८	" (कृत्वत्प्रक्रिया)	"	१८५७	५५	लि. महात्मा रामलाल नेवटा
६९	७५९८	" "	"	१८१६	२७	
१००	७६३६	" "	"	१९वीं श.	११२	लि देवचन्द्र
१०१	६००४	सारस्वतमाघवीवृत्ति (शिद्धान्तरत्नावली)	माघव भट्ट	१८२५		
१०२	४१६५	सारस्वतसटीक	अनुभूति स्वरूपाचार्य दो पुञ्जराजनरेन्द्र	१६५४	६२	
१०३	४६५६	" पूर्वार्द्ध	"	१७वीं श.	५१	पत्र स० ३६ से ४२ तक अप्राप्त
१०४	६८६८	सारस्वतटीका	पुञ्जराज	१८वीं श.	१००	आद्य २ पत्र अप्राप्त लि भैरवककस
१०५	५५०२	सारस्वतचन्द्रिका	चन्द्रकीर्ति	"	२०८	व्यास केकडी में लिखित
१०६	६६५५	सारस्वत (चन्द्रकीर्तिव्याख्या)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७वीं श	१८४	पत्र ६३, ६४, ६५ अप्राप्त
१०७	६८८३	सारस्वतटीका	चन्द्रकीर्ति	१७४५	१७०	
१०८	६८८७	"	"	१८वीं श.	२४६	आद्य पत्र १ से १० तक, ११८, १३३वा अप्राप्त
१०९	७४२२	सारस्वतसटीक	"	१७वीं श	१८७	
११०	७२३६	"	"		१२८	
१११	७५११	सारस्वतवीपिका	चन्द्रकीर्तिसूरि	१६४४	६५	
११२	४१६६	सारस्वत (प्रसावटीकोषेत)	वासुदेवभट्ट	१८वीं श	७६	
११३	७४६०	सारस्वतवृत्ति (श्राव्यातपर्यन्त)	गोपाल	"	११८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	६०४७	सारस्वत (पूर्वार्द्ध) भाषाटीकासह	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१६वीं श	५२	
११५	६०४८	” (कृवन्तप्रक्रिया)	”	”	६०	
११६	५१४६	सारस्वतधातुपाठ	हर्षकीर्तिसूरि	१८०४	४२	लि स्था -मोलत्राण
११७	५२५१	”	”	१६६३	६२	लि मगलपुर
११८	५६८७	”	”	१७४५	४१	लि. ध्यानतमुनि
११९	६०२३	सारस्वतरूपमाला	पद्मसुन्दर	१८६०	६	सावतगजमध्ये लोहमण्डवी
१२०	६७६३	सारस्वतीप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८वीं श	५३	
१२१	६६६८	सारस्वतीप्रक्रिया (कृवन्त)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८८८	१७	लि रामदास
१२२	६७५८	” तृतीयावृत्ति	नरेन्द्रपुरी	१६०७	६३	लि ”
१२३	४२०१	सारसिद्धान्तकौमुदी	वरवरज	१८६६	२१	
१२४	४२०२	”	’	१८वीं श.	४६	
१२५	७२०८	सिद्धहेमशब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श	२५	
१२६	४३६८	” (दुर्गपदव्याख्या)	”	”	८	
१२७	५६१७	सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति (अष्टमोऽध्याय)	”	१६४५	३४	लि. प. बुलनिधानमूनि
१२८	५६२०	सिद्धहेमशब्दानुशासनाध्याय चतुष्कावचूरि	”	१६वीं श	२०	
१२९	५६१६	सिद्धहेमशब्दानुशासनषट्पादावचूरि	”	”	२७	
१३०	५६२१	सिद्धहेमशब्दानुशासनधातुपाठः	”	१८वीं श.	८	
१३१	५६७६	सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	”	”	११३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	५६१४	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श	१८	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थध्यायपर्यन्तम्
१३३	५६१८	"	"	१६वीं श	१५	
१३४	५६१५	" पञ्चमाध्याय	"	"	२६	
१३५	५६१६	" षष्ठसप्तमाध्यायो	"	"	२५	
१३६	५८६८	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्र	१५वीं श	३६	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थध्यायपर्यन्ता
१३७	५८६७	"	"	"	४७	तृतीयाध्यायद्वितीयपादागत
१३८	७१६०	"	"	"	२५	द्वितीयाध्यायद्वितीयपादपर्यन्त
१३९	७१६४	सिद्धहैमशब्दानुशासनमूत्रपाठ	"	१५३३	१०	लि प धर्ममगलगणि देलुलिग्राम
१४०	७१६८	"	"	१६वीं श	५	
१४१	५४६६	सिद्धान्तकोमुदी	भट्टोजीदीक्षित	१८३४	३१२	
१४२	७०७४	"	"	१८वीं श	३५	
१४३	४३७५	"	"	"	१२३	द्विरुत्प्रक्रियान्त
१४४	५५३६	"	"	"	७३	तिडन्तप्रकरण
१४५	४३२१	"	"	"	३०८	कुवन्तपर्यन्त
१४६	६७६०	"	"	"	४१	कुरप्रक्रिया
१४७	६८०८	"	"	"	२०६	
१४८	४२७६	" तत्त्वबोधनीव्याख्या	ज्ञानेन्द्र सरस्वती	१६वीं श	१२६	तिडन्तवाण्ड
१४९	६४६२	"	"	"	८७	कुवन्तमात्र
१५०	७१२४	" व्याख्या	भट्टोजीदीक्षित	१६वीं श	३-६४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४३७४	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजि नागेश	१६वीं श	३१२	समासाश्रयविधिपर्यन्त
१५२	४३७६	लघुशब्देन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ) सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजि नागोजी	"	१२६	तद्धितप्रक्रिया द्विरुत्तप्रक्रिया
१५३	६८६५	लघुपरिभाषेन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ)	रामचन्द्राश्रम	१७८०	६५	लि क प नरसिंह
१५४	६८६६	"	"	१६२३	१४५	लि क लक्ष्मीचन्द्र बलदेव
१५५	७०६२	"	"	१६वीं श	५६	
१५६	६७६८	" चुरादिप्रकरण	चन्द्रकीर्ति	१८वीं श	२५	
१५७	६८८८	" (कृतप्रक्रियान्त)	रामचन्द्राश्रम	१६२५	११२	लि. लक्ष्मीचन्द्र
१५८	५८८२	" सट्प्रिपण	"	१८७६	१४०	लि. चक्रपाणि
१५९	५८८३	" पूर्वर्द्धि	"	१६वीं श	६४	
१६०	७३५०	" सटीक	"	१८वीं श.	३०३	अपूर्ण
१६१	६५२२	" सुबोधनाम्नीव्याख्यापूर्वर्द्धि	सदानन्दराणि	१६वीं श.	१४२	
१६२	६२६५	" "	"	१८८३	६	
१६३	५६७१	सिद्धान्तरत्नशब्दानुशासन	जिनचन्द्र	१८८३	४३	
१६४	५३८५ (५)	'सिद्धोसूत्र' (पचसंधिपर्यन्त)	हेमचन्द्र	१६वीं श	१००	सवत् १६६१ मे जोधपुरमें
१६५	५८६६	हेमधातुपारायण	श्रीवल्लभराणि	१७वीं श	४४	श्री सुरसिंहके राज्यमें रचित
१६६	५६०८	हेमलिगानुशासनम् (दुर्गपदप्रबोध)		"		

राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रथ सूची, भाग-२; १०-कोषग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४८३	अनेकार्यध्वनिमञ्जरी	काश्मीरक महाक्षणक	१९वीं श	१३	
२	४४८४	"	"	१७१४	२१	
३	६३२५	"	"	१८२५	१३	
४	६३३३	"	"	१९वीं श	१६	
५	६२२६	"	"	१८४७	१७	लि क कन्होराम मिश्र
६	७००२	"	अमरसिंह ?	१८७४	१७	लि क. नाथूराम त्रवाडी पल्लीवाल
७	६५९६	"	हेमचन्द्र	१८८१	९	लि क रामनारायण
८	४३०५	अभिधानचिन्तामणिनाममाला	हेमचन्द्र	१७वीं श.	७०	
९	४३२२	"	"	१५३८	८१	आद्य पत्र नहीं । तृतीयमे पृष्ठकाण्ड तक
१०	४३२३	" टीका	टी वल्लभगणि	१७वीं श	२१४	सारोद्धार टीका
११	४४८१	"	हेमचन्द्र	१८वीं श.	३१	तृतीय फाण्डान्त
१२	६११८	" सटीक	"	१६२७	१४८	स्वोपज्ञ टीका
१३	७२१०	"	"	१६०२	२०७	श्री पत्तनमें लिखित
१४	५७३४	" (शेषसग्रह)	"	१८५२	५९	लि यशोविजय
१५	७१९५	" (सञ्चोपसटिप्पण)	"	१८वीं श.	४७	
१६	७२३७	" (बीजकसह)	"	१७८०	७०	लि क रामकरण ज्योतिवित् विष्णुदुर्गे (कृष्णगढ ?)
१७	७३३५	अभिधानचिन्तामणिटीका	"	१६वीं श.	१९६	स्वोपज्ञ टीका
१८	७४५९	" (व्युत्पत्ति रत्नाकर- नाम्नीवृत्ति)	डॉ. देवसागर रविवचन्द्रशिष्य	१९वीं श	४०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	४३२४	अमरकोश (अमरचन्द्रिकाटीका)	टी. परमानन्द विष्णुपुरी दण्डिपुत्र	१७८३	८७	
२०	४४७३	अमरकोश (प्रथमकाण्ड)	अमरसिंह	१८२६	३८	
२१	४४७४	" (द्वितीयकाण्डान्त)	"	१६वीं श.	६३	
२२	४४७५	" (तीनो काण्ड)	"	१८६३	२६	
२३	५४४६	" सटीक	टी क्षीरस्वामी	१६५६	८१	मधुपुरीमध्ये केशवराज्ये कालिन्दीतटे
२४	५४६३	"	अमरसिंह	१६वीं श.	१६७	१५२ वां पत्र अप्राप्त
२५	६१२६	" द्वितीयकाण्डान्त	"	१८वीं श.	३६	
२६	६०२६	" सुधाख्याटीका	टी भानुजी दीक्षित	१६वीं श.	२७७	
२७	६२६८	"	"	१८६५	११४	लि बलदेव गोस्वामी
२८	६४५६	" अमरविवेकाख्या	टी महेश्वर शर्मा	१६वीं श.	४८	प्रथमकाण्ड
२९	६४५७	"	"	"	१४२	द्वितीयकाण्ड
३०	६४५८	"	"	"	१०८	"पुण्यपत्तने पालशालाया
३१	६५१७	" तृतीयकाण्ड	अमरसिंह	१८६८	६६	शिलाक्षरयन्त्रे मुद्रितम् १७७३
३२	६६१३	"	"	१६वीं श.	४४	शाके" ऐसा अन्तमें लिखा है
३३	६७४४	अमरकोषटीका (द्वितीयकाण्डान्त)	टी. वृहस्पति	१७वीं श.	४२१	लि. क. वशीधर कवीश्वर
३४	६८८१	" सटिप्पण "	"	१७वीं श.	६६	५२वा व ६५ वा पत्र अप्राप्त जीर्ण प्रति

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	६८८६	अमरकोषटीका सटिप्पण (द्वितीयकाण्डान्त)	अमरसिंह	१८वीं श	५३	पृथ्वीवर्ग से द्वितीयकाण्डान्त
३६	६८९१	" (अव्ययवर्ग, सविवरण)	"	१७४२ (?)	३३	अपूर्ण
३७	७००४	"	"	१९वीं श	७६से१०६	
३८	७००५	" (द्वितीयकाण्ड)	"	१८६४	११६	
३९	७१३०	"	"	१८९३	११२	
४०	७७६९ (३)	अमरकोष	अमरसिंह	१८५६	९७	चित्र स० २
४१	७४६१	अमरकोशोद्धाटन	क्षीरस्वामी	१६वीं श	१५१	
४२	५९६८ (१)	एकाक्षरनामकोश	क्षयणक	१९वीं श	१-३	
४३	५४१४ (१)	एकाक्षरीकोष	"	१९वीं श	१-४५	
४४	५९४८	घनञ्जयनाममाला	घनञ्जय	१६१५	१७	
४५	५३८५ (३)	"	"	१६वीं श	२३	प्रदर्शनीय; चित्र २
४६	६११४	शास्त्रीया नाममाला	हर्षकीर्ति	१८वीं श	२८	लि क मोतीगर गाव लाभूडामध्ये
४७	६७५४	"	"	१८९९	१६६-१७७	लि क मोतीगर उदयपुरमध्ये
४८	७३७०	"	"	१८९४	१९	लि क ज्ञानसागर वाचनाचार्य
४९	५९५०	शिलोञ्छनाममाला	हेमचन्द्र	१६४५	३	लि क कुशलगणि वाचनाचार्य
५०	५९१०	शेषनाममाला	"	१६वीं श.	६	स्वोपज्ञ
५१	५९३७	हैमलिङ्गानुशासन सविवरण	"	१७वीं श	८०	
५२	६१७९	हैमलिङ्गानुशासन	"	१८वीं श.	९	
५३	६९८३	हैमीनाममाला	"	१७६३	६०	लि मोहनमुनि बाडोलीग्रामे

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; ११-ज्योतिष]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४७७१ (२)	अङ्कनिघण्टु	दंवल्लिलासगत	१८५०	४५-४६	
२	६८३३ (६)	अक्षतजोवानाश्लोक		१८३०	५०-५१	
३	६२८१	अक्षरचिन्तामणि		१-वीं श	८	
४	४४५२ (७२)	आ.यादिचतुर्भण्डफल		१८२७	१२२ वा	
५	४४४२	अद्भुतसागर	बल्लालसेन	१७८७	१७६	* प्रथम पत्र अप्राप्त
६	४६३०	अङ्कतसागर प्रथमखंड	"	१६वीं	१८४	लि. क. पुरोहित सदाराम
७	४३१४	अयनाशादिकरणविधि		१७३३	२४	लि. स्था शिवपुरी
८	४७६६ (१)	अर्घकाण्ड (साठसवत्सरीफल)	दुर्गादेव	१७७५	१० (११)	
९	५०६६	अर्घकाण्डम्		१६४२	२	
१०	५३१५	अष्टमलग्नपरिसर		१६वीं श.	५	
११	७०६६	अष्टादशयोगाः		१८वीं श	५	
१२	४८५२	अष्टोत्तरीदशाफल	गौरीजातकगत	"	६	लि. क जीवन
१३	४८७८	"		१६५८	११	
१४	७०६१	आकाशपुरुषचित्र	हर्षसौभाग्य सूर्यसौभाग्यशिष्य	१८६३	१	
१५	४८६१	आयप्रश्नग्रन्थ	विष्णुराज	१६वीं श	५	
१६	५६३८	आरम्भसिद्धिवातिक	उदयप्रभ वार्तिककारहरेमहसर्गाणि	१७वीं श	६७	
१७	५६२७	आरम्भसिद्धि सावचरि	वाचनाचार्य			
१८	५२६२	इष्टशोधनप्रकार	उदयप्रभ	१६वीं श	१४	
				१६वीं श.	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	५८२७	उडुदायप्रदीप (तद्युवाराशरी)	टी -लक्ष्मीपति कृष्णानन्दसुत	१६२१	५५	श्राद्ध दीपत्र अप्राप्त
२०	४७५३	उपवशाकोष्ठकानि	गौरीजातकान्तर्गत	१६८०	१०	लि क नरहरि
२१	७१०२	उपवशाफलम्	समरसिंह वृत्तिकार अज्ञात	१८वीं श	२	
२२	६२८५	कर्मप्रकाशिकावृत्ति		१८६३	१३	लि क केशवदाम
२३	७६११	कर्मविपाक (भर्तृहरि/ब्रह्मेश्वरस्वाव)		१८४४	४	गठ वदनोरमध्ये
२४	७६१५	कर्मविपाक (सूर्यण्वगत)	ब्रह्मनारद्वयाव	१८०६	५१	लि क शिवशङ्करस्वामि
२५	६२३५	कर्मविपाक	"	१८३२	४१	हम्बुर्गमध्ये
२६	४६६०	करणकुतूहल सस्तवक	"	१८५०	२१	लि क चतुरविजयगणि
२७	४८७३	करणकुतूहल	भास्कराचार्य	१७७८	११	पुष्पावतीनगरे प्रथमपत्र अप्राप्त
२८	४८८४	"	"	१७०२	२२	लि क श्रीधुम्बरज्ञातीय
२९	५७०५	"	"	१६वीं श	१६	विश्वेश्वरात्मज केवल
३०	६४३५	" (मूल)	"	१८४४	१०	श्रीपाटणनगरे हरजीसुत
३१	६८२४	करणसारिणी (अस्तुत्य)	"	१८वीं श	१६	सुरजीलियितम्
३२	५७११	कल्पवल्लीहोरा	विदुल	१८६४	५	लि क अजयमुहर नेरवामध्ये
३३	४८५६	किरणवली	सूर्यमिहान्तगत	१६वीं श.	३६	प्रथमपत्र अप्राप्त
						लि क प्रजवाली
						सिन्धु, ललिताग्रदे'काश्याम्
						प्रथम ४ पत्र गणित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ११-ज्योतिष]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	६०६४	कामधेनुपद्धति (कामधेनुजातक)	जयराम भट्ट	१८७६	७६	लि. क. जगन्नाथ व्यास पत्र ६६, ६७ अत्रापत्
३५	४६६२	कामधेनुसारिणी		१८४४	१६	लि. क. चतुरविजयगणि पोहकरणमध्ये
३६	५२४६	कालज्ञान		१६वीं श.	५	
३७	५५२६	केरलजातकरत्नावली		१६२५	२१	
३८	५७५८	केरलप्रश्न		१८वीं श.	५	
३९	६३७७	केरलप्रश्नशास्त्र	नन्दराम	१८२४	२७	
४०	७०२५	केशवीयजातकपद्धत्युदाहरण	विश्वनाथ देवज्ञ	१८वीं श.	२६	रचनाकाल १५४०
४१	६५४०	केशवीयपद्धत्युदाहरण	"	१७६०	२५	लि. क. उदयविजय
४२	५३१४	केशवीयपद्धति.	केशव	१८२८	२२	लि. क. स्वामीबालचन्द्र ग्वालियरमध्ये
४३	७१००	केशवीयसूत्राणि (जातकपद्धति.)		१८वीं श.	४	
४४	६०६५	कोष्ठक (नरपतिजयचर्यागत)	नरपति कवि चन्द्र	१६वीं श.	२	
४५	४८८०	खेटकर्म (करणकुवहलान्तर्गत)	भास्कराचार्य	१७६८	६	लि. क. गणि भाग्य सौभाग्य
४६	५७६६	खेटकुवहलोदाहृति	विश्वनाथ	१६वीं श.	६६	रचनाकाल १५३४ शाके
४७	६३८४	खेटकौवहलम्	सूरविप्र	१८वीं श.	२	रचनाकाल स० १६७६
४८	४७३१	खेटसिद्धि	विनकर	१६वीं श.	३०	रचनाकाल सवत् १६३५
४९	५७१२	ग्रहगोचरफल	मिश्र नन्दराम	१६वीं श.	३	* रचनाकाल सवत् १८२०
५०	४१०४	ग्रहणपद्धति		१८३२	५	स्थान-काम्यकवत

क्रमांक	प्रथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विवरण उल्लेखनीय
५१	४७६१	ग्रहणपद्धति	मिश्रनन्दराम	१६वीं श	६	
५२	५३२४	ग्रहभावविचार	विश्वनाथ	१८वीं श.	१०	
५३	४८५४	ग्रहलाघवटीका	गणेशदेवश टी. विश्वनाथ	"	५०	लि.क ऋषि भाणजी
५४	४६७७	ग्रहलाघवटीकोदाहरण	विश्वनाथ	१८४२	४१	
५५	७६६३	ग्रहलाघवसिद्धान्तग्रहस्योदाहरण	"	१६३०	१४१	
५६	५२१६	ग्रहलाघवविवरण	विश्वनाथ देवश	१६२४	६२	पत्र १७वा अप्राप्त
५७	५५३८	ग्रहलाघवाख्यसिद्धान्तग्रहस्योदाहृति	विश्वनाथ देवश	१८००	३८	लि.क कव्हा केसोराम
५८	४८६२	ग्रहसिद्धि	महादेव	१८वीं श	३	श्री रूपनगरसे लिखित
५९	७६७१	ग्रहान्तविचारतन्त्र	डुगसिङ्कर पाठक	१६वीं श	१	
६०	५१७१	गणकमण्डन	नविकेश्वर	१७६४	५२	
६१	४३६२	गणितनाममाला	हरिवत्त	१८वीं श.	४	क लि.क जीवकीर्तिगणि
६२	४७२०	गणितकौमुदी	नारायणपण्डित	१६वीं श	३७	लि स्या -तलवाडा
६३	४७७१ (१)	गणितलीलावती आदि	(नृसिंह देवसुत)	१८०५	५४१-४५	#
६४	७१११	गणितनाममाला	भास्कराचार्य	१८वीं श.	६	
६५	६७६४	"	हरिवत्त	१६०६	८	
६६	७६१८	गणमनोरमा	गणऋषि	१६वीं श	१०	लि.क गोपीनाथ
६७	६६०४	गणमनोरमा टीका	"	"	१४	" भगवानदास विक्रमपुरमध्ये
६८	७०७८	गुरुचार	"	१८८०	३७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	५६३६	गूढार्थप्रकाश पूर्वखण्ड (सूर्यसिद्धान्तकी टीका)	रङ्गनाथ	१६०६	१८६	
७०	५७७५	गूढप्रवेशप्रकरण (श्रमिताक्षरा व्याख्यासहित, मुहूर्तचिन्तामण्यन्तर्गत)	रामदेवज्ञ	१६वीं श.	१२	र. का भुज-भुजेषुचन्द्रोमिते शके (१५२२)
७१	६७६१	गोचरग्रहप्रकाश	श्रीपति भट्ट	१६वीं श	४	
७२	५६४६	गौतमीयजातक सटीक (त्रिपठ)	गौतम मुनि टीका-लक्ष्मीपति	१८८४	६	
७३	५८०८	चन्द्रसूर्यग्रहणविधि		१६वीं श	१६	
७४	४७४५	चन्द्रार्की		१८वीं श.	१४	
७५	४८७०	"	दिनकर	१८३६	३	लि.क. श्रीदुस्वर शिवानन्द वाटेजाख्ये ग्रामे रचना
७६	४८६३	चन्द्रार्की पद्धति		१८वीं श	३	
७७	५२६३	चन्द्रोन्मीलनदीपिका		१६२१	४३	
७८	४६७२	चमत्कारचिन्तामणि	नारायण	१६००	७	
७९	६८३३ (८)	"		१८५०	४०-५०	गोस्वामी भोलानाथजीकी पोथीसू लिखी कुण्णगढ मध्ये
८०	५५४४	" (श्रुटित)		१८३०	८	लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण
८१	४६६८	चमत्कारचिन्तामणिटीका श्रन्वयार्थदीपिका	नारायण, टी० धर्मेश्वरसालवीय	१६०१	२८	लि क सायलपुर वास्तव्य श्रीदीच्यज्ञातीय व्यास श्रीकेशवजी यादवजी, सरवर मध्ये
८२	५७७१	चमत्कारचिन्तामणिव्याख्या	मू० नारायण	१८४०	१६	लि क चन्द्र मिश्र

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र मख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६६२६	चमत्कारचिन्तामणि सटीक	नारायण	१८२८	३०	लिक क कवर विजयलालराम
८४	४६६४	" सस्तवक	राजविभट्ट	१८२४	१२	" प्रमोद विजय
८५	४६७२	" सार्थ		१८२१	२१	प्रति कीटविद्ध है
८६	५०५१	चौरयोगप्रकरण	कालिदास	१६०६	११	लिक महत्मा जोशी पन्नालाल
८७	६७७७	चौरासोदोषनामानि	" टीका-भावमुनि	१६वीं श	१	
८८	५६२४	ज्योतिविवाभरण	शेषनाग	१६०३	१००	रचनाकाल स० २४ (?)
८९	६६०४	ज्योतिविवाभरणटीका		१६वीं श.	२१८	अपूर्ण
९०	५७२१	ज्योतिश्शास्त्रभाष्य	महादेव (हीरामणिसुत, हेरम्बपौत्र)	१८७५	३२	
९१	६८३३ (७)	ज्योतिष के स्फुट श्लोक		१६वीं श	३७-३६	
९२	४६६६	ज्योतिषचन्द्रार्क		१८३६	५१	रचनाकाल स० १७८३
९३	५२६६	ज्योतिषनिबन्ध	अमरसिंहसुनुनन्दन	१८वीं श	४५-७५	लिक नन्दराम
९४	४८६६	ज्योतिषमकरन्द		"	६	अपूर्ण
९५	७०६७	ज्योतिषमाला	श्री श्रीपति	१८वीं श	२	लिक यति भवानीराम
९६	४२८६	ज्योतिषरत्नमाला	"	१७वीं श	१६	आमभरा मध्ये
९७	४४०५	"	टीका-वैजापडित	१६४६	३३	* प्रथम पत्र अप्राप्त
९८	४७६८	"	श्रीपतिभट्ट	१७५७	१०७	
९९	६८७७	"	"	१७५५	१७	लिक. राजसोम
१००	७०४६	"	"	१७४६	५७	" व्यास चतुर्भुज
१०१	७०६६	ज्योतिषरत्नमाला (युन्दावनशास्त्र)		१८वीं श.	३	विवाह सम्बन्धी लगनदोषादि का वर्णन

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	६३५०	ज्योतिषरत्नमाला षट्पचाशिका		१६२०	८२	योगिनीपुरमध्ये लिखित
१०३	६२७८	ज्योतिषसार भुवनदीपक आदि	श्रीपति	१६वीं श.	४४	
१०४	७८२५	ज्योतिषरत्नमालाव्याख्या	"	१८७१	६४	लि. क. गम्भीरचन्द खिलचीपुर
१०५	६६७२	ज्योतिषरत्नमाला		१६वीं श.	१५५	
१०६	५८१३	ज्योतिषसग्रह गुटका		१६वीं श.	६८	अपूर्ण
१०७	४८६१	" सस्तबक		१८वीं श.	२०	
१०८	४४०७	ज्योतिषसारसग्रह (सस्तबक)	अज्ञात	१७८६	२५	# लि. क. प० श्री खुसालसागर
१०९	४४१०	" (सार्थ)		१८वीं श.	२६	गुणविजय स्थान-नरायणनगर
११०	६५३७	" (सस्तबक)		१८१७	३३	* लि. क. नवनिघण्टविय
१११	५६३१	ज्योतिषसिद्धान्तसार	मयूरनाथ मालवीय शुक्ल			महिमापुरमध्ये
११२	४८६४	जगद्भूषण	हरिवत्त भट्ट	१७वीं श.	४	रचनाकाल शके १७०४
११३	४७१०	जगद्भूषणसारिणी		१८२६	६५	डालचन्द्र नृपाज्ञया ग्रन्थ रचना
११४	४७२७	"		१६वीं श.	६०	महाराणा जगतसिंह नामाङ्कित
११५	४७८७	"		१८वीं श.	५५	जगद्भूषण ।
११६	४८८२	"		१७३७	५३	रचनाकाल-स० १६६५
						रचनाकाल स० १७६८
						लि. क. माणिक्यविजय ज्ञान- विजयशिष्य चन्देलाग्राममध्ये

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	रिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११७	४४५२ (३७)	जन्मग्रहफल		१८वीं श	४०-४१वा	लि. क. प्रीतसौभाग्य
११८	६३६६	जन्मपत्रीप्रकार	जयमणि	१६वीं श	५१	* प्रथम पत्र अप्राप्त
११९	४६६५	जन्मपत्रीपद्धति	गोपाल ?	१८२०	८	लि. क. चतुरविजय
१२०	५२१५	"		१८वीं श	८	*
१२१	५६७७	"	लब्धिचन्द्र	१७५१	१०	प्राद्य के ४ पत्र खडित
१२२	६४२९	" (स्त्रीजातक) (अतर्दशाध्याय)				स्त्रीजातक ६ पत्र अतर्दशाध्याय
१२३	७०३९	जन्मपत्रीपद्धति		१८वीं श.	६८	४ पत्र अपूर्ण
१२४	७०८२	"	हयंकीतिसूरि	"	४५	कीटविद्ध प्रति है। इसमें सभी
१२५	४७५१	जन्मपत्रीपद्धतिसारोद्धार		१६वीं श	१४६	विषय संगृहीत हैं।
१२६	६३८६	जन्मपत्रीविचारेकालदष्टाचक्रादि		१८वीं श	३२	अपूर्ण
१२७	४४४०	जातकसंपद्धति	श्रीपति	१४८७	१६	लि. क. विखनाय
१२८	४६७४	"	"	१६००	७	" लीलाधर देराश्री
१२९	४७०४	"	"	१८३७	१५	पुरुषोत्तमसुत
१३०	४८६९	"	"	१६६१	९	अपूर्ण
१३१	५५१३	"	"	१८वीं श	४४	प्रथम पत्र अप्राप्त
१३२	६४३०	" (सव्याख्या)	"	१७४१	८२	लि. स्या बीकानेर
१३३	५८२५	' (प्रौढमनोरमाटीकासहित)	केशववैवश टी विद्याकर नृसिंहगणकसुत	१६वीं श.	१४१	प्राद्य २ पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३४	५५०६	जातकग्रहफल (जातकपद्धति)	महर्षिवेदवज्र	१७५२	२४	लि. क. कल्याणहंसगणि अवंरगाबाद
१३५	४६६१	जातकदीपिका	हर्षविजय	१८८६	७	लि. क. नरेन्द्रविजय राजस्थानी भाषार्थसहित
१३६	४६६६	"	"	१८४९	६	
१३७	४८४२	" (सस्तबक)	"	१८२२	१८	लि. क. त्रीकमजीशिल्प
१३८	४५२२	जातकदीपिकाभिधानपद्धति (सस्तबक)	"	१८६२	११	रचनाकाल स० १७६५ रचनास्थान नराकरपत्तन
१३९	४७०५	जातकपद्धति	केशव	१८१४	५	लि. क. ऋषि मेघजी स्थान पीचुमदपुर
१४०	४६६३	"	"	१८६६	६	लि. क. शिवलाल
१४१	७१६२	" (उदाहरण)	विश्वनाथ	१८३६	३७	
१४२	५४३३ (२)	जातकरत्न (जैमिनीयसूत्रसार)	मदनस्वामी	१६वीं श.	अपूर्ण	
१४३	५६१३	जातकसग्रह		१६वीं श.	२१३	रचनाकाल स० १६००
१४४	५०४७	जातकसार	विद्वन्नारायण	१८वीं श.	३ से १६४	अपूर्ण
१४५	६३६१	"		१८१७	११	राजस्थानी भाषासहित श्रीकृष्णगढ में लिखित
१४६	६३६३	(चमत्कारचिन्तामणिभाषाटीका)	"	१८२७	१७	राजस्थानी भाषासहित
१४७	६७६४	जातकाभरण	दुण्डिराज	१८७८	६०	लि. कल्याणपुरीमध्ये लि. क. रामवल्लभ
१४८	५३०६	जातकालङ्कार	गणेशदेववज्र	१६०६	३७	अपूर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६६	६२४२	ताजिकभूषण	गणेशगणक ढुडिराजात्मज	१८२१	३१	लि मनसारास उपाध्याय
१६७	७०५३	"	"	१७४३	४२	लि चतुर्भुज व्यास कृष्णगढमध्ये
१६८	७१२७	"	"	१८६१	४३	लि आत्माराम तिवाडी पत्र ६ से १३ अप्राप्त
१६९	५४५३	ताजिकभूषणटीका बालबोधिकाख्या	सुब्जादित्य	१६वीं श	४२	
१७०	४७७०	ताजिकसार जिणरस	हरिभट्ट	१८७१	६४	भाषाभूषणसहित अपूर्ण
१७१	४८४६	ताजिकसार	"	१८०५	१६	लि क मुनि गागजी मुनिजी धनजीशिष्य
१७२	६०५५	"	"	१७३६	२६	
१७३	६८७८	"	"	१७६५	२३	
१७४	६४२०	ताजिकसारवृत्ति	सामन्तहर्षरत्नशिष्य	१८वीं श	२३	*
१७५	७४५५	ताजिकसिद्धान्तसार	समरसिंह	१८६४	२५	लि फतेहचन्द सारोठ स्था सीकर
१७६	४६६०	ताजिकालकार	सूर्यकवि	१८४१	१०	लि उदयराम ब्राह्मण
१७७	७०६५	ताजिकालङ्कार	"	१८४६		लि. क शिवशङ्कर
१७८	५३५०	ताजिकोदाहरण	नीलकण्ठ	१६वीं श.	२३	अपूर्ण
१७९	५१२७	तात्कालिकऋजुचक्रविवरण	शाम्भुवर्धनाथ	१६००	१२	लि अखैराम
१८०	७५७६	ताराविलास	गणेशदेवज	१६वीं श	२	लि रामगोपाल
१८१	४७४४	तिथिकल्पद्रुम		१८वीं श	१५	राजस्थानी भाषासहित
१८२	४७६२	तिथिचिन्तामणि		"	१८	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	४७४२	तिथिसञ्जरी		१८वीं श	२२	राजस्थानी भाषासहित १६०३ शाके का उदाहरण है।
१८४	७५६६	द्वादशभावफल	(ताजिकरत्नान्तर्गत)	१८२३	३६	लि. क. सीताराम चांदसेणमध्ये
१८५	४७७२	द्वादशभावश्लोक		१६वीं श.	१४	
१८६	४७१३	दशाफल		१६२६	३	
१८७	४८६७	दीपप्रकाश (वृद्धपाराशरीय)		१६वीं श.	४५	लि. क. बाछूराम व्यास
१८८	७३८०	दीपपूज्या		१६वीं श.	१	जाट का कूवा जयपुर
१८९	५७५१	द्रुव भ्रमयन्त्र	नर्मदाप्रसादसुत	१६१४	६	राजस्थानी अर्थ सहित
१९०	५५५५	नरपतिजयचर्या	नरपतिकवि	१८वीं श.	१७७	लि. क. व्रजवासी, जयपुर प्रथम पत्र अप्राप्त
१९१	५८३०	(जयलक्ष्मीनाम्नीटीकासहित) नरपतिजयचर्या	"	१८६६	१२६	* ७३वा पत्र अप्राप्त
१९२	५६४०	"	"	१७५८	६०	लि. परमानन्द मिश्र चित्रयन्त्रयुक्त
१९३	६०६१	" (भूलयपर्यन्त)	"	१६वीं श.	४३	
१९४	६६१०	"	"	१८वीं श	६१	१ से १६ व ८४ से ८८ तक अप्राप्त
१९५	७१३२	"	"	१८वीं श	३६-८०	अपूर्ण
१९६	७८३६	"	"	१८४६	१२४	अपूर्ण, रचना १२३२ (?)
१९७	७५८७	नरपतिजयचर्याटीका		१६वीं श.	६७	पत्र ३, ६, २७, अप्राप्त
१९८	४७७१ (३)	नवग्रहयन्त्रविधि	महाभारतात्तर्गत	१८०५	४६-५२	
१९९	४८५१	नवरोजप्रकाश	शिवलालपाठक	१६वीं श	३	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२००	७८१८	नष्टजातक	(रुद्रसहितान्तर्गत)	१८वीं श.	७६	#
२०१	७०८८	नष्टोद्दिष्टविधि		"	२	
२०२	४७७१ (४)	नक्षत्रनिघट्ट, ग्रहनिघट्ट		१८०५	५३-५४	
२०३	७६५२	नाडीसमुच्चय		१६वीं श.	३	
२०४	७६६६	नारचन्द्र	नारचन्द्र	१८६६	१८	लि क. अमृतविजय
२०५	६८२१	" प्रथम प्रकरण	"	१७५६	११	लि क रतना तिलकधीरशिष्या जैतारणमध्ये
२०६	४७४७	"	"	१८वीं श	१४	#
२०७	७०१०	" य प्रकरण	"	१८०६	२७	लि स्था कोरटानगर
२०८	४३५२	नारचन्द्रयत्रकोद्धार सटिप्पण	"	१६५१	३०	
२०९	६६५०	नारचन्द्र सटिप्पण (प्रथम प्रकरण)	डी. सागरचन्द्रमूरि	१८वीं श.	२६	
२१०	६७७६	नारचन्द्रसूत्र	नारचन्द्र	१७६६	१६	राजस्थानी भाषासहित अपूर्ण
२११	५३३६	निबन्धचूडामणि	मिश्र यशोधर	१६वीं श	६६	
२१२	६२५२	"	फसारिमिश्रात्मज	१७५१	२०	
२१३	६७०३	प्रश्नकौमुदी (ताजिकमतानुसार)	"	१६२५	४८	
२१४	४८६८	प्रश्नग्रन्थ		१८वीं श	२२	
२१५	५०६३	प्रश्नचूडामणि		१६वीं श.	२३	
२१६	४६८३	प्रश्नचूडामणिसार		१६४३	७	लि. बुद्धिसागरगणि वाच्छेदेशमध्ये
२१७	५८११	प्रश्नतत्व	चक्रपाणि सत्यधरात्मज	१६वीं श	१६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१८	५५६७	प्रश्नतन्त्र	दुर्योधन	१८३८	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२१९	५२६०	प्रश्नप्रकरण	नीलकण्ठ	१९वीं श	५	
२२०	५७६८	" (ज्योतिषकौमुदीगत)	"	१८८८ से पूर्व	२८	
२२१	४८६४	"	काशीनाथ	१९वीं श	४४	आद्य पत्र खडित
२२२	४७१४	प्रश्नप्रदीपक	"	"	११	
२२३	५२६७	"	गर्ग	१८वीं श	८	
२२४	४७५५	प्रश्नमनोरमा	"	"	२	
२२५	५२६१	"	"	१९वीं श	४	
२२६	५७२४	" सटीक	"	१८वीं श	५	लि.क विद्यार्थी लोकमणि,
२२७	७५०१	प्रश्नभाण्डिक्यमाला	परमानन्द शर्मा	१९वीं श.	१७८	काव्याम्
२२८	४१८३	प्रश्नमार्ग	अज्ञात	"	१९६	अपूर्ण
२२९	५६३५	प्रश्नरत्न (मटिप्पण) (त्रिपाठ) (स्वोपज्ञ)	नन्दराम कामानियासी	"	४९	# अपूर्ण रचनाकाल १८२४
२३०	५३३८	प्रश्नरत्न (केरलीय)	नवराम मिश्र	१८३७	८	टीका रचना १८२७
२३१	५२३९	न वद्या	नारायणवास सिद्ध	१९वीं श	८	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३२	४७१९	प्रश्नवैष्णव	ब्रह्मवाससुत	१९१५	४७	लि.क. केवलचन्द्र गोविन्दजी
२३३	५२६९	"	"	१८वीं श.	३४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२३४	६४३२	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास सिद्ध बह्मदाससुत	१६वीं श.	२६	
२३५	७०५०	"	"	१८वीं श.	२७	
२३६	५५३४	"	"	१६वीं श.	३४	अपूर्ण
२३७	४६००	प्रश्नशत	भट्टोत्पल	१७६७	२३	
२३८	४७३६	" (प्रश्नज्ञान)		१७६४	४	यह ग्रन्थ ७० आर्या छन्दोमें आबद्ध है।
२३९	६५११	प्रश्नशास्त्र (बादरायण)	उत्पल भट्ट	१८५३	६	
२४०	४७४०	टीका चिन्तामणिनाम्नी	रुद्रमणि	१७१०	७	
२४१	५५०५	प्रश्नशास्त्रटीका		१६२४	१५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२४२	४६६५	प्रश्नशिरोमणि		१६वीं श.	८	
२४३	४८८५	प्रश्नसंग्रह		१८८१	८	
२४४	४८८३	प्रश्नसंग्रहसार, हसचक्र- अवधिविचार				
२४५	५२६६	प्रश्नसंग्रह	भट्टोत्पल	१६वीं श.	१७	
२४६	५५३२	प्रश्नसप्तति	जीवा गुर्जर याज्ञिक नरहरिसुत	१६०६	१७	लि.क. पुरुषोत्तम मिश्र
२४७	७७१५	प्रश्नसार	गोविन्दवैक्ल विष्णुदेवसुत	१८६२	३	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
२४८	६४६५	प्रश्नसार (सटीक)	लालमणि (जगद्रामात्मज)	१६२७	१३	राजस्थानी भाषा सहित
२४९	४६७०	प्रश्नसुधाकर	भट्टोत्पल	१६२७	८१	
२५०	५७४३	प्रश्नज्ञान (आर्यासप्तति)		१६वीं श.	४	
२५१	५४६४ (२)	प्रश्नोत्तरीरत्नमाला		१८७०	४	
२५२	५७३१	प्रासावमण्डन	सूत्रधार मण्डन	१६२८	२८	लि क गोपाल

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०६६	पञ्चतत्त्वविचार	रुद्रोक्त	१६वीं श	४	राजस्थानी भाषा सहित
२५३	५५३५	पञ्चपक्षी सटीक त्रिपाठ	टी कल्याणकर	१६२४	१५	लि.क. पुरुषोत्तम
२५४	५७६३	पञ्चपक्षीसट्पिण्य	महादेव	१६०८	२	लि.क. ब्रजवासी, मयुरा
२५५	४४५२ (३६)	पञ्चपक्षीप्रश्न		१८वीं श	४२-४३	* लि.क. प. प्रीतसोभाय
२५६	४५२३	पञ्चपक्षीशकुन		१८३१	२	स्था वणहेडा ग्राम
२५७	६५२४	"	बालकृष्ण	१६२४	११	लि.क. नागेश्वर
२५८	७६७२	पञ्चश्लोकीताजिक टीका		१८६३	५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५९	६५२४	पञ्चशर (पञ्चस्यरा)	परमसुखोपाध्याय	१६वीं श	६	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु
२६०	५७५३	पञ्चशरनिर्णय (पञ्चस्यर)	प्रजापतिवास	"	५	वाराणस्या ललिताघट्ट
२६१	५६४०	पञ्चशरविवृति (पञ्चस्यरा)	" अप्पय दीक्षित	१६७६ शके	१४	
२६२	५७३०	पञ्चस्यरा (द्वितीयाध्याय)	परमसुखोपाध्याय	१६वीं श	६	
२६३	५६८३	पञ्चसिद्धान्तमत (भास्वरयुवाहरण टीका)	शतानन्द गगाधर	१८६२	१२	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु
२६४	५७६६	पञ्चाङ्गसिद्धि	बाबावैवज, रामपुत्र, शिवानुज	१६०७	५	मण्डीमध्ये
२६५	६७५६	पञ्चाङ्गभिषयत्र (लग्नसाधनविधि)		१६वीं श	७	मुजजागेश्वरप्रीत्यै रचित
२६६	७७१६	पञ्चाशत्प्रश्न	शङ्कराचार्य	१६वीं श.	६	लि.क. ब्रजवासी काश्याम्
२६७	४७४८	पद्धतिप्रकाश	दियाकर	१८६२	६	राजस्थानी सहित
					६	लि.क. जोशी आशारास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६८	४८६३	पद्धतिप्रकाश	दिवाकर	१९वीं श.	८	#
२६९	४८६६	पद्धतिप्रकाशोदाहरण (गणिततत्त्वचिन्तामणः)	"	"	४९	
२७०	४६६५	पद्मकोश	गोवर्द्धन कण्डोलक द्विजरामसुत	"	१०	रचनाकाल १६०१
२७१	७६९६	"		१८७२	९	लि. क. धीरा, रूपनगर
२७२	६३०९	पद्मताजिक	ईश्वरप्रोक्त	१९वीं श.	१६	
२७३	५८१५	पवनविजयग्रन्थ	शिवप्रोक्त	१९०५	१८	
२७४	५७७६	पवनविजयस्वरोदय		१९वीं श.	१२	
२७५	७०९१	पत्रीमार्गदर्शन, योगसंग्रह		१८वीं श.	८४	अपूर्ण/राजस्थानीग्रथसहित/पत्र १-१४ व १६वा अप्राप्त
२७६	६२८४	पाराशरीहोरा	गर्गाचार्य	१९वीं श.	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२७७	४७३९	पाशाकेवली	"	१७९१	१०	लि. क. आ. नागरेण द्वारा
२७८	४७५२	"	"	१९वीं श.	६	लिखित हरिदत्तजी पठनार्थ
२७९	६२५७	"	"	"	१६	
२८०	६४३१	"	"	"	९	लि. क. अमरचन्द्र
२८१	६६२०	"	"	१९२७	११	"
२८२	४६७८	पैतामहीसारिणी	मधुसूदन देवस्य श्रीपतिशिष्य	१९वीं श.	३	#
२८३	६४२८	फलकल्पलता (वार्षिक)	करणकुसुहलगत	१७७४	५	लि. क. पुण्यविजय श्रीमत्पत्तनपत्तने
२८४	४७३५	ब्रह्मदुल्यगणितक्रम		१८८४	३५	लि. क. हेमसागरशिष्य गुमानसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८५	५६४२	अस्तुल्योदाहरण (कुलभाष्य)	शाक्यसहितागत	१९वीं श.	५२	आद्यपत्र अप्राप्त । लिपिस्थान काशी
२८६	५८२६	ब्रह्मसिद्धान्त	टी पम्नाभ नर्मदात्मज	"	४५	लि.स्थान मथुरा । लि.क. जटमलगौड
२८७	६१७८	" सटीक	श्रीलान्हिबत्सङ्घिज	१७००	७८	श्रीपतिपादपद्ममयुष
२८८	४८६५	वानवोगिनी		१९वीं श.	७	श्रीलान्हिदत्तोद्दिज
२८९	४२७७	बालावबोध	मुञ्जवित्तय	१७६९	१७	* लि क खरतरगच्छीय बालचन्द्र
२९०	४२५८	बालबोध	"	१८४७	३४	स्थान पारापुर/प्रथम पत्र अप्राप्त
२९१	४७२८	"	"	"	"	लि क गगाविष्णुकान्त्यकुब्ज
२९२	४८७६	"	"	१९वीं श.	१२	स्थान नगर बोली
२९३	७०३४	"	"	१८७६	४८	वकपुरमध्ये लिखितम्
२९४	७११२	"	"	१९वीं श.	२१	अपूर्ण
२९५	५६२६	दीर्घगणितबालबोधिनीटीका	हरिकर्ण	१८वीं श	२	*
२९६	६२१२	दीर्घवासनाभाष्य	भास्कराचार्य टी. कृपाराममिश्र	१८९४	९६	लि क वजवासी सिल्लु काशी
२९७	५७४७	बृहच्चिन्तामणिवासनाभाष्य (संज्ञाध्यायमात्र)	व्रजनाथसूनु मू गणेश देवज्ञ टी विष्णु वैवज्ञ द्विवाकरसुत वराहमिहिर	१७७६	१५४	रचनाकाल शाके १७१४
२९८	४१८६	बृहज्जातक	"	१९वीं श.	२१	* आद्य १९ पत्र अप्राप्त
२९९	४६५८	"	"	१९वीं श	६६	* पत्र ४३, ४४, ४५ अप्राप्त
३००	४६६७	"	"	१८६५	५८	लि क जोसी जीवणराम
				१८०१	२१	" सारङ्ग नरपति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०१	४६६७	बृहज्जातक	वराहमिहिर	१८३७	४६	लि.क. महाराजा प्रतापसिंहज राज्ये
३०२	४८८६	"	"	१७२३	५०	आद्यन्तपत्र खडित
३०३	४६७४	"	"	१८६६	७२	लि.क. सदासुख
३०४	६१०५	"	"	१८३५	१६	लि.क. स्वामीबालचन्द्र स्थान—नरवर
३०५	६२०६	"	"	१८६३	१८६	
३०६	७०५५	"	"	१८४१	५५	
३०७	७०१३	" (उपसहाराध्याय)	"	१७८५	१६	लि.क. स्थान—कृष्णगढ़
३०८	५३२६	बृहज्जातकटीका	भट्टोत्पल	१६वीं श.	६६	१, २, ३४, ४४ पत्र अप्राप्त
३०९	६२३६	बृहज्जातकविवरण	महीधर	१८५१	८४	
३१०	५५३१	बृहज्जातक (सटिप्पण)	वराहमिहिर	१६२२	३४	
३११	५८२८	"	"	१६वीं श.	४६	अन्तिम पत्र अप्राप्त
३१२	७६२२	बृहत्सहिता	"	१६वीं श.	१७४	
३१३	५५३६	बृहत्सारचन्द्रसारोद्धार	नारचन्द्र	१८वीं श.	१०	
३१४	५५४०	"	"	१७वीं श.	१८	
३१५	५६६८	बृहस्पतिकण्ड	शिवपार्वती सवाद	१६वीं श.	६	
३१६	४६८१	अमणसारिणी	माधव	१६वीं श.	१३८	लि. शिववास वाराणसी
३१७	५६४८	भाविवृत्ति	ताजिकभूषणगत	१६वीं श.	५	
३१८	४७६४	भावव्याय	रत्नसारान्तर्गत	१८६०	१८	
३१९	४७१८	"	"	१६वीं श.	१६	लि.क. ऋषि नागजी
३२०	४८५३	भाविशफल	"	१६वीं श.	१३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विवेचन उल्लेखनीय
३२१	५७३५	भविष्यफलध्याय	जातककामधेनुगत	१६०२	१५	लि क अजवासीसिल्लु रोमापुरे
३२२	६८६६	भास्वती	शतानन्द	१६०२	४	” ऋषि ताला लक्ष्मीचन्द्र
३२३	४६६३	भुवनवीपक	पद्मप्रभसूरि	१७०२	६४	” मुनि दामाख्य
३२४	५७०८	”	”	१६वीं श.		रचनाकाल—शाके पचरसाधने
३२५	४७५०	” सस्तक	”	१८वीं श	१०	राजस्थानी भाषा सहित
३२६	४४११	” सटीक	”	१६वीं श	५३	* टीका रचनाकाल-१३२६
३२७	४४५२(८१)	भंरवीचक्र	”	१८वीं श	१२३वां	स्थान—बीजापुर इस चक्रमें दिशानुसार भंरवीके बोलने पर शुभाशुभ फलका निर्णय किया गया है लि क आनवसिंह
३२८	६३०१	मकरन्दकारिका	कुपाराम	१६२२	६	
३२९	७५१६	मकरन्दभावविवृति	नीलकण्ठ	२०वीं श	५	
३३०	५७३२	मकरन्दविवरण	द्विवाकर नृसिंहसुत	१८६४	६	लि क अजवासी सिल्लु मणि- कर्णिकातीरे
३३१	७५१५	”	श्रीपतिभट्ट	१६३६	१२	
३३२	७५१६	”	द्विवाकर नृसिंहसुत शिवगुरुशिष्य	१६३६	२१	
३३३	६२७५	मकरन्दसाधनप्रक्रिया	चूगामणिवक्रवर्ती	१८६०	१२	
३३४	५७६४	मकरन्दोवाहरण (सूर्यसिद्धातमानुसार)	विश्वनाथ	१६वीं श	१६	
३३५	५८२२	मकरन्दोवाहरण	”	१८६७	२७	पत्र १ व नवा अप्राप्त
३३६	५८१०	मकरन्दोवाहृति	”	१६३६	५७	
३३७	६८५६	मकरन्दशान्तिपत्रक (खरडा)	”	१६वीं श.	१	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३८	६६४३	मयूरचित्र	नारदप्रोक्त	१८६८	२०	लि. क. मिश्र भवानीदास, जयनगर
३३९	४२८४	" (मयूरपदपूर्वक)	"	१८६७	१९	* लि. क. शीरपाणिपुत्रः
३४०	६२२२	मयूरचित्रक	वराहमिहिर	१८वीं श.	१०	
३४१	५७७२	मयूरचित्रकादि		१९वीं श.	२९	
३४२	४८४९	महादेशफल		"	७	
३४३	७१३६	महादेवीवृत्तिदीपिका	धनराजगणि भुवनराजगणीन्द्रशिष्य	१८वीं श.	९ से ३२	
३४४	४६८०	महादेवीसारिणी		१९वीं श.	९१	
३४५	४७४१	"		१८१४	१२६	आद्य स्तूप्लुठ सचित्र शोभन
३४६	४७८६	"		१८४९	१५२	रचनाकाल अनुमानतः १२३८ शक लि. क. खरतरगच्छीय, शोभा- चन्द्रजोशिष्य चन्द्र भाण स्थान—सुभटपुर
३४७	७४७०	मानसागरीपद्धति	नानाग्रन्थोद्धृत	१९वीं श.	७७	राजस्थानी भाषा सहित
३४८	६७१५	मासभावाध्याय	ताजिककल्पनोक्त	१७६८	८	लि. क. आचार्य किशोरदास श्रीदुम्बर मोढासावासी
३४९	४२८३	माससारिणी		१८वीं श.	१५	*
३५०	६४३९	मासेश-मासभावफल	ताजिकमतानुसार	१७८७	१०	लि. क. लब्धिसुन्दर कल्याण- सुन्दरशिष्य, फतेपुर
३५१	४७२३	मूल्याफल		१९वीं श.	१	
३५२	७८२८	मुष्टिज्ञान		१८वीं श.	२	राजस्थानी भाषार्थ सहित
३५३	४९७३	मुहूर्तगणपतिसार	गणपतिदेवज्ञ (रावल हरिशकर सुरिसूनु)	१८७३	५१	२४ वां पत्र अप्राप्त रचनाकाल १७५०

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५४	४८४३	मुहूर्तचिन्तामणि	रामवैज	१८००	४०	रचनाकाल-१५२२ शके लि.क. हनुमारायण गोड
३५५	७०११	"	"	१७६२	२६	रचनाकाल-१५२२ शके लि.क. प० गुणमूर्ति
३५६	४११०	" (प्रमिताक्षराटीकोपेता)	"	१८६६	१५६	लि.क. रामसुख, जयपुर
३५७	६२५८	"	"	१८३२	८२	पत्र ११ से १६, ७५, ७६, ८१ वां अप्राप्त
३५८	४६४८	" सटीक	"	१६०३	२१५	लि.क. व्यास बालकृष्ण नरवर- मध्ये
३५९	५६८६	" (पीयूषधारा सहित)	"	१६वीं श.	३६	शुभाशुभप्रकरण मात्र
३६०	५६८७	"	"	"	३६	नक्षत्रप्रकरण मात्र
३६१	५६८८	"	"	"	११	संक्रान्तिप्रकरण मात्र
३६२	५६८९	मुहूर्तचिन्तामणि सटीक (पीयूषधारा टीकोपेत)	"	"	८	गोचरप्रकरण मात्र
३६३	५६९०	"	"	"	३६	संस्कारप्रकरण मात्र
३६४	५६९१	"	"	"	६३	राज्याभिव्येकप्रकरण मात्र
३६५	५६९२	"	"	१६२०	८२	यात्राप्रकरण
३६६	५६९३	"	"	१६२१	२४	गृहारम्भप्रकरण मात्र
३६७	५६९४	"	"	१६२०	१७	गृहप्रवेशप्रकरण लि.क. अण्डाराम प्रसन्नोरा (मधुपुरी)

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६८	६२६३	मुहूर्तचिन्तामणि सट्बार्थ	रामदेवज्ञ, टी. चतुरविजयगणि	१८३०	१०२	रचनाकाल स० १७५७ पत्र १ से ८ तक अप्रान्त लि.क. जीवनविजयगणि
३६९	४७११	सस्तवक	रामदेवज्ञ	१८२७	५०	
३७०	५६६६	मुहूर्ततत्व दीपिकाटीकोपेत	केशवदेवज्ञ टी गणेशदेवज्ञ	१७६३	१०८	
३७१	४६४७	मुहूर्तवर्षण	ज्योतिर्विलालमणि जगद्रामसुत गगाराम पौत्र	१८२२		श्रीरक्षाग्रामवास्तव्यहयामजू- लिखितम्
३७२	४८७९	मुहूर्तदीपक	महदेव कान्हजीबाड़सुत	१६६२	१०	लि.क. परमानन्द
३७३	५७७०	मुहूर्तमञ्जरी	यदुनन्दन	१६०५		लि.क. अर्जुन पण्डित रचनाकाल १७०६ (?)
३७४	५३४८	सटीक	” टी. मनसाराम रामकृष्णसुत	१८५६	२१	” १७२६ # लि.क. वृचाराम गढ भरतपुर मध्ये
३७५	४६६४	मुहूर्तमार्तण्ड	नारायणदेवज्ञ अनन्ताख्य चातुर्भास्य पुत्र	१६००	२०	लि.क. श्रीदीच्यज्ञातीय देराश्री पुरुषोत्तमसुत लीलाधर
३७६	४७३२	मुहूर्तमार्तण्ड (मूल)	नारायण	१८३७	२६	रचनाकाल १४६३ शाके
३७७	४८८७	”	”	१८६०	२३	लि.क. विजयलाल श्रीबुम्बरज्ञातीय
३७८	५२४६	”	”	१८५५	२७	संश्रान्तिप्रकरणान्त
३७९	६७६५	”	”	१६०३	३५	लि.क. मोती
३८०	७०४८	”	”	१८६२	२७	लि.क. दयाशङ्कर व्यास मोतीरामसुत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८१	४६७१	मुहूर्त्तमात्संख सटीक	नारायण	१७८६	८२	लि.क. महाजन नरसिंह, जयपुर रचनाकाल स० १६२६
३८२	४७०६	मुहूर्त्तमात्संख टीका	"	१६वीं श.	७८	किंवदिवृणं
३८३	४७२६	"	"	"	१२१	रचनाकाल १६२६
३८४	६१३०	"	"	१८३७	५६	" १४६३ शाके
३८५	५५२५	मुहूर्त्तमात्संख (कलभास्या टीका सहित)	"	१६वीं श	४७	अपूर्णं
३८६	७३७१	मुहूर्त्तमुक्तावली (सटबार्थ)	हरिभट्ट	१८४६	१०	लक्ष्मणपठनार्थं करहेडा मध्ये
३८७	६३६४	" (सटिप्पण)	"	१६वीं श.	८	राजस्थानी भाषार्थं सहित
३८८	४७१७	" (सस्तबक)	"	१६६७	६	लि.क. श्रुति नानजी
३८९	४८७४	" (मुहूर्त्तप्रवीण)	"	१७०२	११	लि.क. मेवपाटजातीय जोशी
३९०	७६५१	"	"	१८४७	८	सुरजीकेन लिखितम् घोडेलावापाम मध्ये
३९१	५७१४	(प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित) मुहूर्त्तसर्वस्व	रघुवीर	१८वीं श	१६	लि.क. रत्तसागर समेणमध्ये
३९२	७१०४	मूलजातकविधान	"	"	२	रचनाकाल १५५७ शाके
३९३	६३६२	भेधमाला	वामीवर	१६वीं श.	१६	लि.क. मनसाराम
३९४	५६४६	यन्त्रचिन्तामणि	जगद्वैयज (?) टी रामद्वैयज	१६१८	६१	प्रथम पत्र अत्राप्त
३९५	५३१७	" सटीक	"	१८४५	१६	लि.क. राजवासी मिश्र, तलिताघट्टे काठिया
३९६	५६१६	यन्त्रचिन्तामणि टीका (यन्त्रदीपिकास्या)	"	१८६५	१३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६७	६१०८	यन्त्रचिन्तामणि सटीक	चक्रधर वामनात्मज	१८५४	२६	लि. क. लाला लक्ष्मीचंद
३६८	६८८५	" सटीक	टी. रामवैवज मधुसूवनात्मज	१६०३	३६	"
३६९	४१३२	यन्त्रराज	महेन्द्रसूरि	१८४७	१६	"
४००	५६८२	" सटीक	"	१६३६	५०	लि. क. सर्वेश्वर
४०१	६२५४	यन्त्रराज टीका	डी. मलयेंद्रसूरि	१६०१	४७	बुद्धयवन्जातक
४०२	७०१२	यवनजातक (जातकाभरण)	डुण्डिराज	१६१६	१०५	" लि. क. प. लिखसीराम
४०३	४४०६	यानयोगार्णव	शिवोदित	१८२५	२३	स्थान नेवय मध्ये (निवाई)
४०४	६५१०	युद्धकौशल	श्रीरुद्रः	१६वीं श.	७	
४०५	७६४२	"	गगाराम	"	१६	
४०६	६७७५	युद्धजयोत्सव	हुंकीत्तिसूरि बा नर्गसह	१८६६	१७	लि. क. सोतीगरु
४०७	६८६१	योगचिन्तामणि (सबालावबोध)	रत्नराज गणेशिष्य	१७२४	७३	लि. क. रङ्गविसल कालूग्रासे
४०८	५७४६	योगज्ञातक	बलभद्र	१६वीं श.	१२	
४०९	४८६३	योगार्णव	वैकदेश	"	१८	
४१०	५७३६	"	"	१६२१	१३	लि. क. ब्रजवासी सिल्लुः
४११	५७६६	योगावली	राजशुषि	१६-२०वीं श.	२०	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४१२	६०४०	योगिनीवशाकरण	खरगामलोकत	१८११	१२	लि. क. भैरवदास
४१३	४८६५	योगिनीवशात्तर्वशाफल		१८वीं श.	७	
४१४	४६५४	योगिनीवशाफल		"	७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१५	७६४५	रत्नप्रदीप		१८०६	१६	लिंक हरवल्लभ पारीक
४१६	५६०६	रत्नमाला	महादेव	१८६८	२३	जोसी भूधरजीसुत, ढाण्या
४१७	५८३१	रत्नमाला (विवरणनाम्नी टीका)	श्रीपति टी. महादेव लूणिय पुत्र	१६वीं श	२१४	लिंक भागीरथ ब्राह्मण
४१८	७५७२	रत्नग्रन्थ (रमलेन्दुप्रकाशसम्मत)		१८वीं श	२०	रत्नमाला ११८५ शाके
४१९	७५७५	" (विन्दुरमलाख्य)		१६वीं श	४६, ४७, ६१, २०	द्ववा पत्र अप्राप्त
४२०	४७५६	रत्नचिन्तामणि सज्ञातत्र (प्रथम)	चिन्तामणि पंडित	१८वीं श	११	ग्रन्थस्वामी भट्ट हरिवत्त
४२१	४७६०	" (प्रश्नतन्त्र) द्वितीय	"	"	१०	*
४२२	५१६५	रत्ननवरत्न	परमसुख उपाध्याय	"	३७	
४२३	५३०४	रत्ननवरत्नम्	परमसुखोपाध्याय	१८८८	२६	
४२४	५६०८	"	"	१६वीं श.	३५	रत्नमाला-१८६७
४२५	५७६७	रत्नविन्दु		"	११	प्रति के कोण खडित हे
४२६	४४५३	रत्नशास्त्र		१७८०	१२	भुजब्रगमध्वे लिखित
४२७	५३२१	"	राम	१७९५	७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४२८	५४७६	"	रामदेवता	१६वीं श	४६	लिंक लाला अमृतराम
४२९	६८३३ (१२)	"	"	१८४८	६-७	
४३०	७५७४	"	"	१६वीं श.	१७	*
४३१	६८३३ (११)	"	श्रीपति	१८५२	५५-६६	
४३२	४७६६	रत्नसार	रत्नघर त्रिपाठी	१८४२	१६	
४३३	४६५१	रत्नलेन्दुप्रकाश		१६वीं श	३४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३४	७५७३	रमलेन्दुप्रकाश	रघुधर त्रिपाठी	१८३८	२८	
४३५	५६०७	राजवल्लभ वास्तुशास्त्र	मण्डन सूत्रधार	१९०६	४४	
४३६	७५१२	रामविनोद	रामभट्ट	१७५५	१३	लिपिस्थान-नरायणा कूर्मवशो- द्वारा महाराजाधिराज श्री राम- दास की आज्ञा से रचित ।
४३७	५५६४	रेखागणित	जगन्नाथ सन्न्यास	१९२०	२६४	सवाईजयसिंहटुष्ट्य
४३८	७०६३	लग्नचक्रिका	काशीनाथ	१८वीं श.	३४	प्रथम पत्र शोभन
४३९	५५६८	” (जन्मपत्रीलेखोवाहरण)	श्री गिरधारी मिश्र सैथिल	१९वीं श.	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
४४०	७६०५	लग्नवाद	”	”	१	
४४१	४६८२	लग्नसाधनविधि	”	”	८	
४४२	६४२६	”	”	१८६८	६	
४४३	४७३०	लग्नोवाहरण	”	१९वीं श.	४	नागौर मध्ये लिखितम्
४४४	६४६४	लघुकामधेनुसारिणी	केशव	१८वीं श.	१०	लि.क. धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी
४४५	५५२३	लघुजातक	वराहमिहिर	१९१६	१७	लि.क. विप्र, रामगोपाल, केकड़ी
४४६	६३८२	”	”	१८१२	७	” पं. उदयसुन्दर श्रीवीकानगरे द्वितीय पत्र अप्राप्त
४४७	६८२२	”	”	१७वीं श.	९	
४४८	६९०७	”	”	१८४४		लि.क. उदयसुन्दर क्षमासुन्दर- शिष्य
४४९	७०६८	” (श्रिष्टाध्यायान्त)	”	१८वीं श.	३	आर्यापिद्यबद्ध ग्रन्थ है

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५०	४१८७	लघुजातक सटीक	वराहमिहिर	१६५४	५६	#
४५१	४६८४	" सवृत्तिक	" "मलिसागर उपाध्याय	१८८५	३०	
४५२	४७४६	" सटीक (त्रिपाठ)	वराहमिहिर, टी उत्पलभट्ट	१७२३	१६	लि. क. सन्तोषदास वणव
४५३	४७५४	" "	"	१८४२	१८	
४५४	७१०१	" सट्टिप्पण	पाराशर ऋषि	१८वीं श	२	
४५५	५६८५	लघुपाराशरी (योगाध्यायमात्र)	पाराशर ऋषि	१६३२	२	
४५६	७६४३	लघुपाराशरी	भैरवदत्त प हरिरामशर्मपुत्र	१६वीं श.	२६	पत्र १, २, ३, अप्राम्त
४५७	५७४६	(उडुदायप्रदीपोद्धोत)	पाराशर ऋषि	१८६४	६	लि. क. वजवासी सिल्लु मणि- कर्णिका तीरे अमृतपातालवेवालये
४५८	४७५८	लघुमातण्ड, मुहूर्तदीपक	नारायण देवज्ञ कौशिक	१६वीं श	१४	#
४५९	५६१३	लघुक्षेत्र समास विवरण	चन्द्रशेखर	१४८८	३२	लि. स्था चित्रकूट दुर्ग
४६०	५७४२	लम्पाकशास्त्र	पद्मनाभ	१८६७	८	लि. क. देवीचन्द्र ग्राम सल्हडी काठियाम्
४६१	५६३४	" सटीक (त्रिपाठ)	"	१६०५	३४	लि. वजवासी सिल्लु काठियाम्
४६२	६३७२	लल्लवाराही	लल्ल	१८वीं श	३	
४६३	५७२३	लीलावती	भास्कराचार्य	१६वीं श.	४२	#
४६४	५७०४	लीलावती विवरण	" टीका-रामकृष्ण			
४६५	४७६७	वर्षगणितपद्धति (विवाकरीपद्धति)	विवाकर नृसिंहसुत	१८४७	५	
४६६	६३११	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८३२	३०	लि. मन्तरूप व्यास

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६७	६५४५	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८७२	४७	लि क रतनविजय
४६८	४७०६	” सटीक	” दीन-विश्वनाथ	१७५२	३१	२७,२८ २६वा पत्र अप्राप्त
४६९	७१४२	वर्षसारिणी (वर्षफलपद्धतिसार्य)	वसन्तराज भट्ट	१८०२	१६	लि क. चिरञ्जी सीतर
४७०	४३५५	वसन्तराज शाकुन	”	१७७१	३७	* लि क विद्याविलास पाठक लि स्था श्री वेनातट नगर
४७१	६२०८	”	”	१८२३	६३	
४७२	६७८८	”	”	१९१२	१५७	
४७३	७८२९	”	”	१८४२	८२	लि क गङ्गाराम
४७४	५५९३	वसिष्ठसहिता	वसिष्ठप्रोक्त	१९१९	१३३	
४७५	६४२१	वामवेधफल	विश्वकर्माप्रकाशागत	१७९९	८	लि क देवचन्द्र, मण्डोवरमध्ये
४७६	५१३२	वास्तुशास्त्र	स्वच्छन्द शङ्कराचार्य	१९०६	७२	
४७७	४८७७	विशोत्तरीवशाफल	यज्ञेश्वर	१९५८	१०	
४७८	४६५६	विजयप्रशस्ति		१८२४	१३	* लि स्था जयपुर, रचनाकाल स० १७४२
४७९	५६३३	विरोधप्रकाश		१८९३	३	लि क ब्रजवासी सिल्लु:
४८०	४७१२	विवाहपटल		१८५६	६	राजस्थानी भाषार्थ सहित
४८१	५५३७	विवाहपटलटीका		१९१२	१२	काशिनारायणकृत शीघ्रबोधानुसार लि क इन्द्रमुन्दर
४८२	६३५२	विवाहपटलसस्तबक		१९वीं श.	१९	राजस्थानी भाषार्थ सहित
४८३	७६५०	विवाहपटल		१८१८	१७	लि क नवनिधिविजय
४८४	७६५८	”		१७८४	२०	राजस्थानी भाषार्थ सहित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८५	६४२२	विवाहमासनिर्णयदि	केशव	१८वीं श.	२	
४८६	४८५७	विवाहवृन्दावन		१९वीं श	२८	
४८७	६०९९	"	गणेश वैवक्त	१७१२	२०	लि.क कल्याण
४८८	६३३९	विवाहवृन्दावन टीका	केशवार्क, भाष्य-शिवशकर	१८६०	६२	
४८९	७०५१	विवाहवृन्दावनभाष्य		१८२१	५७	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४९०	६८३४	देगराजविवेकनिबन्ध (कर्मविपाक)	उपेन्द्र	१८७८	३८	लि क सुमतिसागर
४९१	४६५७	शकुनप्रदीपचूडामणि		१७९९	१२	लि क छवीलाराम अंगलपुरमध्ये
४९२	६३३०	शकुनसार		१९वीं श	२	
४९३	५४५२	शकुनावली	रङ्गनाथ	१९१०	८	लि क स्यात पुरुषोत्तम
४९४	७६३७	शरत्पद्धति		१७५३	५	स्थान-मयुरा
४९५	५२२२	शिवालिखित मुहूर्त	रुद्रयामलोक्त	१८वीं श	४	
४९६	४६५३	शिवालिखित "		"	६	
४९७	६४३६	शिवालिखित मुहूर्तमालिका	शिवोक्त	"	६	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९८	४१५५	श्रीब्रबोध	काशीनाथ	१९वीं श.	४०	लि क. रामचन्द्र ब्राह्मण
४९९	४७५६	"	"	१७९७	२९	
५००	५०५०	"	"	१८९९	३१	
५०१	५७३८	"	"	१८८५	४६	लि क देवीदयाल कायस्थ, काशी
५०२	६३९७	"	"	१८५१	३४	
५०३	७१५२	श्रीब्रबोध भडुली के दोहे	" भडुली	१८६१	६३	लि क यति प्रेमचन्द, हीरापुरीमध्ये
५०४	७६२५	श्रीब्रबोध	काशीनाथ	१८७३	७	" धीरविजय, कुष्णगढ़, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०५	४८७१	शुकजातक	शुकबुधोक्त	१८४२	३	लि.क. मुखजित्सुत दुर्गावित्त
५०६	४४०६	शेषवासना	कमलाकर	१७८६	४४	” रामकृष्ण कायस्थ
५०७	५१०६	षट्पञ्चाशिका	भट्टोत्पल	१८१८	६	” हरिकृष्ण आह्वरण, दवापुर-ग्राममध्ये
५०८	४६५०	षट्पञ्चाशिका सटीक	पृथुयशा; टी उत्पल भट्ट	१९वीं श.	२१	लि क जीवनविजय, बालीमध्ये
५१०	४६८७	” (सबालावबोध)	पृथुयशा	१८वीं श	१४	” ज्योतिर्विच्छभुराम
५११	४६९२	” सटीक	”	१८१९	२२	राजस्थानी भाषार्थ सहित
५११	४८४१	”	”	१८२२	१०	लि क कृष्णचन्द्र विजयराम
५१२	५७१३	षट्पञ्चाशिकावृत्ति	उत्पल भट्ट	१८३९	२२	” रामनारायण ब्राह्मण
५१३	६५९४	”	”	१८८४	१७	” ऊवा
५१४	६८१९	”	”	१६४५	१९	”
५१५	७५७८	षट्पञ्चाशिकाटीका	मनीराम	१७६९	११	”
५१६	४६७३	” सस्तबक	भट्टोत्पल	१९०१	९	” पुरुषोत्तमसुत लीलाधर देराध्री
५१७	४८००	” (होराध्यायान्त)	पृथुयशा;	१९वीं श.	४	”
५१८	७६२७	” सबालावबोध	श्यामल	१८१९	९	” दानसौभाग्यगणि
५१९	६८३३ (१०)	षष्टिसवत्सरफलम्	यवनजातकान्तर्गत	१८५२	५०-५५	लि व्रजवासी सिल्लु, काश्याम्
५२०	४८९९	स्त्रीजातक	”	१७९७	१०	” रावल जीवा सुत अबाराम
५२१	५७९१	”	प्रस्तावरत्नाकरोक्त	१८९५	११	”
५२२	४७६३	स्त्रीजातकपद्धति	”	१८५८	१२	”
५२३	६७४८	स्त्रीजातक (कुण्डलीफल)	”	१८५८	१	”
५२४	४५२५	स्वप्नाध्याय	”	१८वीं श	३	”

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२५	४६५५	स्वप्नाध्याय		१८०८	३	लि. क. वैजनाथ
५२६	५६१४	"		१६१६	७	लि. क. रामगोपाल
५२७	५६०६	स्वप्नाङ्क, तावर्तप्रकरण	शङ्खु, तसागरगत	१६वीं श	११	रचनाकाल १८२२
५२८	४१०५	स्वरपञ्चाशिका	मिश्र नन्दराम	१८३२	३	स्थान-काम्यकवन
५२९	५३१८	"	"	१८६५	४	लि. क. हरदेवलाल
५३०	५३२२	"	"	१७१५	७	
५३१	७१२३	स्वरोदय (सटीक)	शिवप्रोक्त	२०वीं श	४०	लि. क. नरहरिदास
५३२	४६७६	स्वरोदय शास्त्र	"	१६वीं श	२१	
५३३	४८६८	"	"	१८३३	१०	लि. क. बलतराम तिवारी, देवागढ़
५३४	४८६०	"	"	२०वीं श	२४	
५३५	५५१७	" विश्वम्भरी	जीवनाथ	२०वीं श	३६	
५३६	५४३३ (१)	सकेतकौमुदी	उमामहेश्वरसवायगत (प्रश्नोत्तरी)	१६१६	१-५४	
५३७	५८०२	"	हरिनाथ	१६वीं श	१८	
५३८	४६६६	सज्ञातन्त्र	"	"	२१	
५४०	५८०४	"	नीलकण्ठ	१८६६	२५	
५४१	६६६०	"	"	१६वीं श	२०	
५४२	५१८५	"	"	१६१०	५४	
५४३	५५३०	"	"	१६वीं श.	८६	
५४४	६०४६	सज्ञातन्त्रोदाहरणम्		१८२२	१०१	लि. क. काशीनाथ
५४५	५४७३	सज्ञात्रिविकविवृति (रसालाभिधा)	नीलकण्ठसुत गोविन्द वैज	१८६२	३८	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४५	५५८२	संज्ञाविवेकविवृत्ति (पूर्वार्द्ध)	नीलकण्ठसुत गोविन्ददेवज्ञ	१९वीं श.	१४४	रचनाकाल १५४४
५४६	५५८३	" (उत्तरार्द्ध)	"	"	१२३	
५४७	६०४६	संज्ञाविवेक टीका	भावचिन्तामणिराज	१८वीं श.	३६	
५४८	५७६४	सन्तानदीपिका		१८६४	५	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु; इसमें वर्षा सम्बन्धी योगो का वर्णन किया गया है
५४९	४४५२ (८८)	सप्तनाडीचक्र		१८वीं श.	१२८वा	लि.क. प. प्रीतिसीभाग्य स्थान--बरणहेडा ग्राम
५५०	५७२७	सर्वतोभद्रचक्र		१८६७	१२	
५५१	५६७५	सर्वार्थचिन्तामणि (पूर्वार्द्ध)	श्री वेंकटेशशिष्य अप्पय (?)	१९वीं श.	४६	
५५२	५६७६	" (उत्तरार्द्ध)	"	१६०६	५१	
५५३	५२८८	सर्वार्थचिन्तामणि	"	१८वीं श.	६२	
५५४	४१०८	समरसार	राम	१९वीं श.	७	#
५५५	४२७४	"		१७६७	११	# लि.क. हरिचयन सवाई जयपुर
५५६	४६६८	"	रामचन्द्राचार्य सोमयाजी	१९वीं श.	१०	
५५७	४८५६	"	रामवाजपेयी	"	१०	
५५८	५७७४	"	रामचन्द्र	"	१७	
५५९	६२४१	"	"	१८६२	७	
५६०	६३०८	"	"	१८वीं श.	४	
५६१	४७०३	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८६१	३२	
५६२	५८१६	"	"	१८६३	२३	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु; दवां पत्र अप्राप्त

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६३	५३८८	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८५७	३१	
५६४	६१०७	"	"	१८४०	४१	लि. क. ब्रजवासी,
५६५	७५०३	"	"	१६१३	३०	श्राद्ध पत्र इदित
५६६	७८२१	साधितग्रह कुण्डली सग्रह	समुद्र	१६वीं श.	गुटका	लि. क ऋषि मति कीर्ति,
५६७	४३६४	सामुद्रिक (पुरुष स्त्री लक्षण)		१६६४	६	स्थान-नादसमा ग्राम
५६८	४४०८	(१) सामुद्रिक, (२) नारचन्द्र (३) भावाध्याय		१७८६	१७	(१) पृष्ठ क से ७ तक, (२) ७ से १४ (३) १४ से १७ लि. क. वैरागी राजपाल स्थान-पालहणपुर
५६९	५६६८ (२)	सामुद्रिक		१६वीं श.	३-१६	
५७०	५३७३ (३)	" सटीक		१८०६	७४-६७	
५७१	४६५६	" सार्थ	नूपति भूपति	१७०८	१३	लि. क मिश्र रघुनाथ
५७२	७५१४	सारमञ्जरी पद्धति		१८वीं श	३३	" जयकृष्ण
५७३	४७३४	सारसग्रह	महादेव राजगुरु राजगुरु	१८८४	१२	" गुमानसागर, र.का. १७१८, स्थान-भुजपत्तन
५७४	६०१२	सारावली	कल्याण वर्मा	१८वीं श.	११८	
५७५	५३१३	सिद्धान्तज्योतिष स्फुटपत्राणि		१६वीं श.	१४-३६	
५७६	५६२२	सिद्धान्तस्व	त्रिविक्रमाचार्य	१८६५	७	लि. क. ब्रजवासी सिल्लु
५७७	५०४३	सिद्धान्तरहस्योदाहरण	विक्रमनाथ	१६वीं श	६२	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७८	६२२६	सिद्धान्तग्रहस्योदाहरण	विद्वानाथ	१८२२	५५	
५७९	५८०१	"	"	१७वीं श	७६	
५८०	५२६१	सिद्धान्तशिरोमणि	भास्कराचार्य	१८२८	३३	कुम्भेर क्षेत्रे लिखितम्
५८१	५२६२	"	"	१६वीं श.	३०	
५८२	५३३७	"	"	१८७७	५५	
५८३	५६६६	सिद्धान्तशिरोमणि मरीचि	श्री रगनाथ	१७वीं श	१८३	
५८४	५६२६	सिद्धान्तशिरोमणि वार्तिक (पूर्वार्द्ध)	भास्कराचार्य	१६वीं श.	८१	
५८५	५६३०	" (उत्तरार्द्ध)	"	"	५०	रचनाकाल-शाके १५४३
५८६	५७८७	सिद्धान्तशिरोमणि वासनाभाष्य	"	१८८२	१७६	लि. स्था० कलकत्ता
५८७	४७३३	सिद्धान्तसुन्दर	ज्ञानराज	१८४३	३१	लि क हरिसुख ब्राह्मण प्रथम आठ पत्र अप्राप्त लि क रामनारायण
५८८	५५४६	सुदर्शनचक्रम्	मिथुन शुक्ल	१६वीं श	७	
२८९	५७५०	सुश्लोकशतक		१६०३	२	आरम्भ के १० श्लोक नहीं हैं
५९०	४४५२ (८७)	सूतिकाज्ञान		१८वीं श.	१२६-१२७	
५९१	५२५६	सूर्यचन्द्रग्रहणसारिणी	दुर्गाशंकर	१६वीं श.	५	लि क. व्रजवासी सिल्लु*
५९२	५६५३	सूर्यग्रहादिसाधनसिद्धान्त	अज्ञात	१८६३	६०५	
५९३	४४५२ (८)	सूर्यपुरुषचक्रादि	मयासुर	१८वीं श.	१२४	
५९४	६३७४	सूर्यसिद्धान्त		१६२६	४७	लि. क. डालचन्द
५९५	६८६२	"	"	१८वीं श	१०	" देवसुन्दर
५९६	४५२८	"	"	१६वीं श	३४	"
५९७	५८७६	"	"	१८५५	१०	" बालचन्द्र स्वामी, भवालयर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६८	४६५२	सूर्यसिद्धात्त टीका	नृसिंह देवज्ञ	१८वीं श.	६१	लि. क. रामजीवन
५६९	५५६२	सूर्यसिद्धात्तोद्वाहरणव्याख्या	विश्वनाथ देवज्ञ	१९१२	१५०	" हेमर(जाचार्य, सर्वाईजयपुर
६००	४७५७	सौरवासना	कमलाकर	१८००	४९	
६०१	६५७४	हस्तरेखाप्रकरण		१९वीं श.	२	
६०२	६२१०	हस्तसजीवन		१९२३	१७	
६०३	५७८९	"		१९वीं श	३३	
६०४	४१८२	हायनरत्न	बलभद्र	१८३१	१०७	* लि. क. हरिप्रसाद
६०५	६८३३(४)	हायनसुन्दर		१९वीं श	२६-३२	
६०६	४८६०	हिल्लाजदीविका	नृसिंह	१९वीं श	१०	
६०७	५७१८	"	"	१८६५	१४	
६०८	४८८५	होराप्रदीप (कर्मविपाकोक्त)	उमामहेश्वर सवाद	१६३६	११	
६०९	४७६५	होरामकरन्द	गुणाकर	१८२४	२४	
६१०	५६७४	होरारत्न	बलभद्र	१९वीं श	४६८	रचनाकाल-१७१०
६११	४६११	त्रिपताकौचक्रादि	जातकार्णवान्तर्गत	१८२८	५	लि. क. चतुरविजयगणि, पालीनगरे
६१२	४२८५	त्रिकालज्ञानमनश्चित्तमणि	शिवोक्त	१९वीं श	८	*
६१३	४२८०	त्रैलोक्यप्रकाश (ज्ञानदर्पण)	हेमप्रभ सूरि	१७७२	२३	* लि. क. धीरसुन्दर गणि
६१४	४३५४	" (अर्थकाण्ड)	"	१७१५	२६	* आद्य दो पत्र अप्राप्त
६१५	७०३७	"	"	१७७५	३१	लि. क. प. विजयसोमगणि
६१६	५७५४	ज्ञानप्रदीप (प्रश्नदर्श)		१९वीं श	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त लि. क. सुखविजय, शाकम्भरीनगरे

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ११-ज्योतिष]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि शातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१७	४७७३	ज्ञानप्रदीप प्रश्नाधिकार		१६वीं श	२	लि.क. बालमुकुन्द
६१८	७६२४	ज्ञानप्रदीपिका		१६०६	३४	लि.क. गोवर्द्धननाथ, जयपुर
६१९	४४६४	ज्ञानमजरी (प्रश्नविषयक)	महर्षि ऋषिधर्मार्वायं सोमनाथ (रीवां निवासी)	१८७८	२६	रीवाभिधाने नगरे चतुर्वर्णसमा-
६२०	५६२१	ज्ञानमजरी		१६०४	१७	कुले । तत्रावसन् सोमनाथः करोमि ज्ञानमजरीम् ॥
६२१	७१३१	क्षेत्रसमासवृत्ति (श्रृणुं)		१७वीं	३३	२५, २६, ३१वां अप्राप्त
६२२	५०८८	"	म. सोमतिलकसूरि, अवचूरि-गुणरत्नसूरि	१७५३	१३	लि.क. दुर्गादास यति
६२३	४४२७	क्षेत्रसमासावचूरि		१६वीं	३२	

राजस्थान पुरातरवान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १२-छन्दःशास्त्र]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६२२५	छन्द.कौस्तुभ (सभाष्य)	राधादामोदरदास	१६०६	२७	लि क बलदेव गोस्वामी
२	५६६०	छन्द.पीयूष	भा. विद्याभूषण	१६०६	४४	लि स्या वृन्दावने श्रान्तदधट्टे
३	५५८१	छन्दोमञ्जरी	जगन्नाथ मिश्र	१६वीं श	३०	
४	४४३२	वृत्तमुक्तावली	गङ्गादास	१८वीं	१२	अलि क कालिंग वस्मणभट्टात्मज वराहग्रामस्थ
५	४३००	वृत्तरत्नाकर	धुरन्धरमल्लारि	१८२१	६	लि स्या. कर्णपुरग्राम
६	४४६४	"	केदार भट्ट	१६वीं श	१५	लि क लक्ष्मण, पहार
७	६६५६	"	"	१६२०	१०	लि क गुणाकर विद्यार्थी
८	४३३६	" (सटीक)	"	१५८२	३८	प्रति जीर्णं, दीमक खाई हुई
९	४४३३	"	टी भास्कर शर्मा	१८१३	३६	टीका का रचनाकाल चै.शु १ स १७३१
१०	४०३२	" सबालावबोध	टी मेरुसुन्दर	१८वीं	११	टी. गुर्जर भाषा में
११	५१४१	" सटीक त्रिपाठ	"	"	२०	अपूर्ण, टुटक
१२	५५५८	" सटीक	टी श्रीकण्ठ	१६वीं श	१५	
१३	६४४७	" (सेतु टीका सहित)	टी भास्कर शर्मा वायजिभट्टसुत	१६०३	३२	अक्षयल्लिहयभूमित्वर्षे टी रचना लि क. कन्हैयाराम
१४	७४८२	" सटीक पञ्चपाठ	टी सोमचन्द्र	१७वीं	२०	
१५	७५१३	" वृत्ति	वृ. सम्यसुन्दर सकलचन्द्रशिष्य	१७५५	३४	#
१६	४३५६	" सटिप्पण	टी क्षेमहस	१७वीं	१३	पत्र जीर्ण एव कीटविक्र
१७	६०४३	वृत्तरत्नाकर सटिप्पण	"	१८वीं	६	
१८	४४६२	श्रुतबोध	कालिदास	१७६२	२	लि क मुरलीधर श्रीसुम्बर,काश्याम्

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४४९३	श्रुतबोध	कालिदास	१८वीं	५	
२०	५१८०	"	"	"	७	
२१	६९७१	"	"	१९११	४	
२२	६०२६	"	"	१९वीं	३	
२३	५२१८	" (ज्योत्स्नाभिघटीकासहित)	टी माधन देवज्ञ गोविन्दसुत नीलकण्ठपौत्र गार्ग्यवसोद्भव	"	१४	टीका का रचनाकाल—भूतक- बाणेंद्रुमितेशकाब्दे १५६० शके (१६९५ वि०) अनन्तराजस्य राज्ये
२४	५६६३	सुवृत्तलिक	क्षेमन्द्र	२०वीं	२३	

राजस्थान पुरातत्त्ववन्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १३-संगीतशास्त्र]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६७४१	अनूपसंगीतरत्नाकर (द्वितीय- रागाध्यायः) रागमाला	भाव भट्ट जगन्नाथसुनु त्रजनाथदीक्षित पञ्चनवीय (गोकुलस्थ)	१८वीं	२५६	जीर्ण प्रति *
२	४१६६			१८६४	१०	*
३	५०६४	”		१६वीं	२	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १४-कामशास्त्र]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४७७४	कोकशास्त्र भाषार्थ सहित	कोक	१६वीं	१५	
२	५७२०	पञ्चसायक	कवि शैखर	१८वीं	३२	
३	४४२६	रतिरहस्य	कुक्कोक पण्डित	१६वीं	२८	
४	४७७५	”	”	१६८३	४२	

राजस्थान पुरातत्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रथ सूची, भाग-२; १५--काव्य-नाटक-चम्पू]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७०२६	अद्भुतरामायण	वाल्मीकिमुनि	१८६०	४३	लि क हरिलाल
२	४३७६	अध्यात्मरामायण (सुन्दरकाण्ड सटीक)	डी. श्रीराम वर्मा हिम्मतवर्मण पुत्र	१६२७	१७	लि क व्यास घासीराम
३	४५२०	अध्यात्मरामायण सटीक त्रिपाठ	"	१८वीं श	१७६	
४	५५८६	अध्यात्मरामायण (श्रयोध्याकाण्ड)	"	१६०४	३५	
५	५५८७	" (बालकाण्ड)	"	"	२४	
६	५५८८	" (सुन्दरकाण्ड)	"	"	१७	
७	५५८९	" (किष्किन्धाकाण्ड)	"	"	२८	
८	५५९०	" (अरण्यकाण्ड)	"	"	२६	
९	५५९१	" (युद्धकाण्ड)	"	"	५२	
१०	४३३१	अनघराघव	मुरारि	१७वीं श.	२०	डी. लीप्रालकुलोद्भव
११	६६६८	" , टीका	मू. मुरारि, टी महोपाध्याय रचिपति	१८वीं श	४१से१८६	वैजोलिया ग्रामवास्तव्य हरि- नारायण-पद-समलकृत महाराजा- धिराज श्रीगङ्करवसिहदेव- पोत्साहित
१२	६४०२	अन्यापदेशशतक	मधुसूदन	१८वीं श.	६	लि क दत्ते विश्वेवर गोलवाल जयपुरमध्ये
१३	७५१७	अभिशानशाकुन्तल	कालिदास	"	२१	पञ्चमोकपर्यन्त
१४	४३२५	अमरशतक सटिप्यण	श्रीशङ्कराचार्य (अमरक)	१८६१	३६	
१५	५६६५	अमरशतकम्	अमरक	१८२७	६	लिखित पद्धितवेवयत्तेन नाहटा जररूपपठनार्थम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६८१	अमरशतक (भावचिन्तामणि व्याख्यासहित)	अमरक, टी. चतुर्भुज मिश्र	१८६०	६२	लि. क. नंगसागर
१७	५१६८	उद्धवसन्देश	श्रीरूप गोस्वामी	१८वीं	८	खण्डित। ६ से ८ तक पत्र कीटविद्ध
१८	४३३०	ऋतुसंहार	कालिदास	१७६८	८	लि. क. मुनि श्रीराघव लि. स्था. हिसार
१९	७४९९	कर्णामृत सटीक	मू लीलाशुक, टी. चैतन्यदास	१८वीं	१८	१२वा पत्र अप्राप्त
२०	५१६७	कावम्बरी (पूर्वभाग)	बाण भट्ट	"	१८५	प्रति सुन्दर है
२१	६१७४	" उत्तरार्द्ध	बाण भट्ट तनय (पुलित्व)	१८१५	८२	लि. क. लालविहारी सायूर
२२	६६२९	" "	"	१८८०	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त लि. क. वैष्णव हरिदास जयपुरमध्ये
२३	६९७४	" पूर्वखण्ड	बाण भट्ट	१८व	१५९	
२४	४२०४	किरातार्जुनीयम्	भारवि	१८११	११८	
२५	५१२५	" सटीक	मू भारवि, टी मल्लिनाथ	१८२५	१३४	लि. क. चूडामणि सलावदनगरे
२६	६००१	" "	टी. अज्ञात	१७वीं	४३	आदितः श्रष्टमसर्गपर्यन्त, प्रथम पत्र अप्राप्त
२७	६३१३	" "	"	"	१३	पञ्चवशसर्गपर्यन्त
२८	६७९१	" सावबूरि	भारवि	१८वीं	५४	आद्य ८ पत्र अप्राप्त
२९	६६८२	" मूल	"	१७७१	९०	लि. क. 'साकवाटा (सागवाडा?) ग्रामस्थितेन रणावस्वोरस वसदादसात्मजेन देवछण्णेन- लिखितमिदम्, लवणपुरे'
३०	४३६५	कुमारविहारशतक	रामचन्द्र	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४३६७	कुमारसम्भव सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१६८४ १७५४	५०	लि.क उदयनिधान मुनि लि स्या. योधपुर, आदि के २ पत्र अप्राप्त, सप्तम सर्गपर्यन्त
३२	७५८६	"	"	१८३१	६६	लि क राधाकृष्ण, लि.स्या कृष्ण गठ १०वाँ पत्र अप्राप्त
३३	४१६७(१)	" मूल	कालिदास	१८४२	५४	सप्तम सर्ग पर्यन्त, लि क पुरुषोत्तम आचार्य
३४	६००५	"	"	१७वीं श	३८	सप्तमसर्गपर्यन्त, ३७वाँ पत्र अप्राप्त
३५	६८७०	" सवृत्तिक	"	१८वीं श.	७०	सप्तसर्गत्मिक
३६	५५१०	" सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१७१२	१११	
३७	४१६३	" अष्टम सर्ग	कालिदास	१६१४	५	लि क अलेश्वर नागर ब्राह्मण
३८	४४८५	" अष्टमसर्गपर्यन्त	"	१८६१	४६	लि क व्यास रतनेश्वर लि स्या जयपुर
३९	७००१	" सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१८वीं श	१३३	षष्ठसर्ग के ७४वें श्लोकपर्यन्त
४०	५१०७	" "	मू. कालिदास, टी. परमहंस परिवाजकाचार्य सरस्वतीतीर्थ	१७वीं श	३२	प्रथम पत्र अप्राप्त, प्रथम सर्ग के छठे श्लोक से पञ्चमसर्ग के २०वें श्लोक तक टीका है
४१	७७६४	कृष्णगणोद्देशवीपिका	हनुमत्कवि	१६वीं श.	६	
४२	५२७१	खण्डप्रशस्ति	"	१७५६	२८	लि.क. घमेश्वर अम्बावतीवास्तव्य
४३	४३३८	"	"	१८वीं श	३०	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	५६६८	खण्डप्रशस्ति	हनुमत्कवि	१६वीं श.	६	जीर्ण श्रौर प्राचीन प्रति
४५	४२७६	खण्डप्रशान्तिवृत्ति	वृत्तिकार गुणवित्तय	१८वीं श.	२०	
४६	५०६०	गीतगोविन्द	जयदेव	१६वीं श.	३४	
४७	५२०५ (१६)	"	"	१८वीं श.	६६से८६	
४८	६०६०	" (सटीक त्रिणठ)	" डी चैतन्यदास	१६वीं श.	४६	
४९	६७३४	"	जयदेव	१८१८	३४	
५०	६०६८	" सटीक	मू. " डी. चैतन्यदास	१८७७	५१	बालबोधिनी टीका, लि. मथुरामध्ये
५१	६७८६	"	जयदेव	१६वीं श.	६५	१२, ११, १२, १३, १४, १४, १६, २० ६३ वां पत्र अप्राप्त
५२	६८५७	"	"	"	७२	अपूर्ण, प्रथम पत्र शोभन
५३	७६२८	"	"	१८वीं श.	१०	
५४	७७५१	" सार्थ, पदसंग्रह	"	१६८३	१७७	गुटके के अन्तर्में सूरदास, हरदास परमानन्ददास, कृष्णजीवती, लच्छीराम आदिके पद व परशु- राम कविके दोहे तथा तुलसी बीजमन्त्रादि लिखे हुए हैं।
५५	७७५५	"	"	१६वीं श.	५७	
५६	५१५७	" सटीक	जयदेव, डी. शेष कमलाकर	१८३०	६२	साहित्यरत्नमालाख्या टीका लि. क. हरिचव मथेन (मथेरी) रूप नगरमध्ये
५७	६६८०	गोवर्द्धनसप्तशती सटीक	मू. गोवर्द्धन, डी. अन्तत्पण्डित	१८१२	३०५	टीका नाम 'व्यङ्ग्यार्थसंवायन' है

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	४४८६	घटखपर	कालिदास	१८०५	२	लि क भवानीशङ्करात्मज उदयशङ्कर
५९	५१६९	"	"	१८वीं श	४	
६०	६३०६	" सटीक	मू " टी अज्ञात	१८१६	६	
६१	५६४५	चौरपञ्चाशिका	चौर कवि	१८वीं श	३	
६२	६६२८	जयवशमहाकाव्य	सीताराम पर्वणीकर	१९४१	१३३	जयपुर के इतिहास से सम्बद्ध काव्य
६३	७७९३	दुर्जनमुखचपेटिका	रामाश्रम	१९वीं श	४	
६४	४४०१	द्रीपवीवस्त्रवानप्रबन्ध	गोवर्द्धन	१८१४	८	
६५	५६०२	घर्मशम्भुदय	हरिदचन्द्र (आर्द्रदेव कायस्थसुत)	१८२३	३९	
६६	५८७७	नलोदयकाव्य	कालिदास	१८५७	२०	चतुर्थशिवसपर्यन्त
६७	४०९२	नलोदयटीका	मू " टी मनोरथ कवि	१८वीं श	३८	विबुधचन्द्रिका टीका
६८	७४५८	"	मू " टी कविशेखर केशव	१८३५	३२	साहित्यदीपिकानाम्नी
६९	६१६३	" सटीक त्रिपाठ	मू " केशव नृसिंहाश्रम- कृत टीका सहित	१८५५	४८	विदुषा वधतरामेण लिपीकृतम् लिखितं भरतपुरमध्ये तृतीयोच्छ्वास के अन्त में कर्ता केशव लिखा है
७०	५९४५	नेमिदूतम् (विक्रमकाव्यम्)	विक्रम	१७वीं श.	५	कालिदासकृत मेघदूत काव्य के श्लोको के अस्यपावपूर्तियुक्त
७१	५१६२	नैषधीयचरित	श्रीहर्ष	१८वीं श	२२०	अन्त्य पत्र अग्रात
७२	७०४२	"	श्रीहर्ष	"	६९से १९०	पञ्चमसर्ग के १४वें श्लोक से नवमसर्गति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३	६२९१	नैषधीयचरित टीका (पञ्चमसर्ग)	टी. विद्यारण्य योगी	१८वीं श.	१९	
७४	४३८८	नृसिंहचम्पू	केशव भट्ट	१९वीं श.	१५	
७५	५१५८	प्रसन्नराघव	जयदेव	१८१५	७३	लि क जोशी रघुनाथ, जयपुर सवाईमाधोसिंहजीराज्यं लि.क चतुर्भुज मिश्र
७६	५३६४	"	"	१८५०	३८	
७७	७२९८	परिशिष्टपथं (स्थविरावली- चरित्र)	हेमचन्द्र	१८वीं श.	१२०	
७८	७२१९	पाण्डवचरित्र	देवप्रभ सूरि	१६४१	२४१	लि.क राव श्री दुर्गभाणजी विजयराज्ये, रामपुरामध्ये
७९	५९४२	ब्रह्मवत्तचक्रवर्तिचरित्र	हेमचन्द्र	१६६९	१३	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रा- न्तर्गत । लि क प० विद्याकीर्ति- पुण्यतिलकशिल्प्य
८०	७७८६	भट्टिकाव्य (तृतीयसर्गपर्यन्त)	जगन्नाथ पण्डितराज	१९वीं श.	८	
८१	५१६०	भामिनीविलास	नागराज टाकवशीय	१८११	३६	श्रुति सुन्दर प्रति
८२	५२४०	भावशतक	"	१८वीं श.	६	प्रथम पत्ररहित
८३	६६५३	"	गोवर्द्धन	१९वीं श.	१५	
८४	७१३५	मधुकेलिवल्ली	श्रीवेदव्यास	१९वीं श.	३७	पत्र ३ से १० अप्राप्त
८५	७०२२	महाभारत	"	१८३७	१७१७	लि क हरिदत्तनागर सावरमध्ये
८६	६८१०	"	"	१९वीं श.	२१५	अपूर्ण, खाण्डववनदाहपर्यन्त
८७	७४९५	"	"	१७वीं श.	३५९	
८८	७८३२	"	"	१७७३	३७१	लि क. हीरानन्द श्रीदीच्यजातीय

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विवरण उल्लेखनीय
८६	६२४४	महाभारत सभापर्व	श्रीवेदव्यास	१६६४	१४२	लि. क. गोवर्धन
८७	६०६७	" "	" "	१८१०	६६	लि. क. मनोहरदास
८८	६१८२	" "	" "	१८वीं श.	१६	
८९	६६११	महाभारत सभापर्व	" "	१६४५	१५१	लि. क. हरिदास व्यास गागात्मज माडलमध्ये
९०	७४६४	" "	" "	१६वीं श.	६२	
९१	६१८६	" मौशलपर्व सटीक	टी. नीलकण्ठ	१८वीं श.	१	
९२	५४७५	" ऐषिक, आश्रमवासिक, मौशलपर्व	श्रीवेदव्यास	"	ऐषिक ६ आश्रम ३५ मौशल १२	
९३	७४५८	" मौशलपर्व	" "	१६वीं श.	१३	
९४	६१८८	" आश्रमवासिकपर्व सटीक	टी. नीलकण्ठ	१८वीं श.	१	
९५	६१८६	" सौप्तिकपर्व सटीक	" "	"	१	
९६	६४७०	" " मूल	श्रीवेदव्यास	"	१५	
१००	७१२०	" " "	" "	१८२६	३२	रायचन्द्र ब्राह्मण को शक्तिसिंह- सुत भोपतिसिंह द्वारा प्रवस प्रति- ग्रान्त में लिखित 'जयश्री चतुर्भुज- रायजी', स्याम-सावर
१०१	६१८७	" आरण्यक पर्व सटीक	मू. " टी. नीलकण्ठ	१८वीं श.	३६	
१०२	५४६८	" " मूल	श्रीवेदव्यास	"	३४७	
१०३	६१६०	" विराटपर्व सटीक	टी. नीलकण्ठ	"	६	
१०४	६१६१	" उद्योगपर्व "	" "	"	३५	
१०५	७४५३	" " मूल	श्रीवेदव्यास	१५३१	१७६	

क्रमांक	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	५४८१	महाभारत कर्णपर्व	श्रीवेदव्यास	१८२८	२२५	लि. क. विद्याधर गुंजरगौड पचोली लिखायित भोपालसिंह शक्तावत, ३रा पत्र अप्राप्त
१०७	६१६२	" कर्णपर्व सटीक	डॉ. नीलकण्ठ	१८वीं	६	
१०८	६४७१	" " मूल	श्रीवेदव्यास	१७६३	११६	
१०९	५४७७	" भीष्मपर्व	"	१९वीं	३१९	
११०	७४९३	" "	"	१५वीं	१५४	२४वाँ पत्र अप्राप्त पत्र ५९ से ७१ तक तथा १३२ से १५४ तक स० १७५८ में लिखित, शेष १५वीं शती के हैं
१११	५५०१	" द्रोणपर्व	"	१९वीं	५५१	
११२	५४९२	" विशोकपर्व	"	१८२९	१२	
११३	५१६५	" आश्वमेधिकपर्व सटीक	डॉ. नीलकण्ठ	१८वीं	१२	
११४	६१६३	" शान्तिपर्व राजधर्म सटीक	"	"	१९	
११५	६१६४	" " आपद्धर्म "	"	"	६	
११६	६८९७	" " राजधर्म	श्रीवेदव्यास	१९वीं	११०	लि. क. साधु निरजनी उत्तमराम लि. स्था. सावर
११७	७१२१	" स्त्रीपर्व	"	१८२९	३५	
११८	६१६६	" सोक्षपर्व सटीक	डॉ. नीलकण्ठ	१८वीं (?)	८४	
११९	७४५२	" हरिवंश	श्रीवेदव्यास	१६३०	७०९	
१२०	६७००	महाराजमायण सटीक त्रिपाठ		१८वीं	१०९	त्रुटित
१२१	६५८८	महाराजमायणान्तर्गत (सीतारामात्रिलक्षणानुवर्णन)		१९वीं	५	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२२	५६७३	महारासोत्सव	हनुमत्साहितान्तर्गत	१८३६	१८	भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी रासलीला वर्णनपरक
१२३	६२३६	"	"	१८वीं	१४	"
१२४	५१६१	मिथ्याज्ञानखण्डन (नाटक)	रविदास	"	१७	श्रीद्वारकापते प्रसावार्थ-रचितमिदम्नाटकम्
१२५	४३९१	मुद्राराक्षस सटीक त्रिपाठ	मू विद्यालक्ष्मण, टी दुदियज्वा	१९वीं	८०	
१२६	६९०६	मूलरामायण	बाल्मीकि	१७९७	१३	
१२७	५०९७	मेघदूत	कालिदास	१६७४	१८	लि. स्था जोधपुर, व्यास साधव-मुत परमानन्द पठनार्थम्
१२८	५१६३	"	"	१६वीं	२ से १७	प्रथम पत्र रहित, लि क हरिकृष्ण
१२९	५७०६	"	"	१८६४	२१	
१३०	६१२३	"	"	१८वीं	११	लि क मुनि विनीतसागर भाव-सागरशिष्य सुरतमध्येलिखित
१३१	६२४८	"	"	"	१८	
१३२	६१३७	" टीका	"	"	२२	लि क मुनिवीरविजय सघ-विजयगणेशिष्य
१३३	७२३५	" वृत्ति	"	१६८३	४१	
१३४	४३८९	" सलीक	"	१८०१	२७	लि क चतुरविजय गण
१३५	४३९०	"	टी घनेश्वर	१७९३	२९	लि. स्था. श्री कर्णपुर
१३६	५१५६	"	टी. पूर्णानन्द यतीन्द्र	१७वीं	६२	लि क श्री दर्याब

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३७	५६२५	मेघदूत सटीक	मू. कालिदास, टी. अज्ञात	१७वीं	३०	
१३८	६०५३	"	"	१६वीं	२४	
१३९	६१९९	"	"	"	३६	
१४०	६८६६	"	"	१७५२	३१	लि. क. मुनि लालचंद पाटलिपुत्र पत्तने
१४१	५६४१	" सावचूरि त्रिपाठ		१७८६	२४	लि. क. फतेविजय गणि रगविजय-शिष्य, बिलाडास्थाने लिखितम्
१४२	६००३	" " पंचपाठ		१६वीं	६	विशिष्ट प्रति
१४३	७२९९	" सावचूरि	अवचूरिकर्ता श्री लक्ष्मीनिवास	१८०७	२२	लि. क. अमरहंसगणि कल्याण-हंसगणिशिष्य, विशिष्ट प्रति
१४४	५१८१	" सटिप्पण		१७वीं	१६	
१४५	६६९३	मोहमुद्गर	श्री शङ्कराचार्य	१७४३	३	लि. क. राघव शर्मा
१४६	५७५९	रघुनाथार्यरत्नमाला	मोहमुद्गल भट्ट	१९१२	५	लि. क. ब्रजवामी अलवरमध्ये
१४७	४१९८	रघुवंश	कालिदास	१८४९	१४२	लि. क. पुरुषोत्तम आचार्य स्था जयनगर
१४८	५१२४	"	"	१८३९	११६	लि. क. लाला मयाराम कुपाराम-सुत । लि. स्था. हिडिम्बानगर यति सुलानन्दपठनार्थ
१४९	६२११	"	"	१८४५	१२२	आरम्भ के कुछ पत्रों में टिप्पणियाँ हैं ।
१५०	६५९१	"	"	१८६८	८७	लि. क. मनीराम पण्डित कश्मीरनगरे

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	६७८६	रघुवंश	श्री कालिदास	१८वीं	८३	द्वादशसर्गपर्यन्त
१५२	६८४७	"	"	"	५	प्रथम सर्ग मात्र
१५३	६८६६	"	"	"	७४	
१५४	७०५२	"	"	१६३३	११६	पत्र १ से ६ अप्राप्त । लि क गोपाल व्यास, श्री रङ्ग- स्यात्मज नरसिंहदास, माण्धातु- पुरमध्ये, श्रीमदकबर पाल- साहिराज्ये
१५५		" सटीक (सुगमान्वयबोधिका टीका)	टी सुमतिविजय	१६०१	१६६ से ३४७	सर्ग १२वें से १६ तक
१५६	५४६६	रघुवंश सटीक	टी मल्लिनाथ	१८वीं	२२१	लि क. विरधीचद बीकानेरमध्ये
१५७	६७६२	"	"	१७वीं	१४२	पत्र ५४ से ५८ अप्राप्त
१५८	६८१४	"	टी समयसुन्दर	१६वीं	६१	चतुर्दशसर्ग के ७२वें श्लोकपर्यन्त
१५९	७३०२	"	टी धर्ममेरु गणि	१८३५	२०३	नवम सर्ग पर्यन्त
१६०	५४६१	" सटिप्पण पाठान्तरसहित		१८वीं	३८ से १८२	८१वा पत्र अप्राप्त
१६१	६६७६	" सटिप्पण		१५४७	१०६	लि क वाचक तिहुणकीति
						चारुचन्द्रशिष्य श्री मरुथलवेशे
						शुद्धदन्ती श्रीश्रीनगरे सातल-
						विजयराज्ये मन्नीश्वर बरणवीर
						दूला श्रीचैत्रगच्छे
						लि क वीरहस आद्यपत्र त्रुटित
१६२	४३२६	" साक्चूरि पचपाठ	राधागोविंद मिश्र, किशोरीरमण-	१६२६	११४	
१६३	७०८३	राधाकृष्ण प्रेमसम्पुट काव्य	शिल्प्य नवनन्दशर्मामृत	१८वीं	१७	
१६४	७५८५	राधामाधवलीला		२०वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५	५२७६	रामकृष्ण काव्य	सूर्यकवि	१६वीं श.	२	लि.क घनश्याम व्यास पाराशर
१६६	५६५७	" सटीक	"	१६२३	२६	सवाईजयपुरमध्ये
१६७	५६८४	रामकृष्णकाव्य सटीक त्रिपाठ	"	१६१६	१८	अव्ययदीपिकानाम्नी स्वोपज्ञ टीका
१६८	५६०६	" सटीक	"	१६वीं श.	६	लिपिकार ने भूल से सम्भवतः
१६९	५६०७	"	"	१७वीं श.	७	टीका का नाम 'अनूपदीपिका'
१७०	६२७३	रामरास क्रीडन (सुवर्णसहिताःतर्गत)	"	२०वीं श.	२४	लिख दिया है
१७१	४४००	रामहनुमसाटक	वाल्मीकि	१७वीं श.	८	लि.क हर्षहससुनि
१७२	७८३३	रामानुजचरित्र (प्रपञ्चामृताभिधान काव्य)	"	१८३२	१४६	लि क जोशी रघुनाथ
१७३	७०२०	रामायण	वाल्मीकि	१७६६	८३३	सवाईजयपुरमध्ये
१७४	५४७१	" बालकाण्ड	"	१८वीं श	६०	
१७५	५५१४	" (मूलरामायण मात्र)	"	"	१५	
१७६	४२५०	"	"	"	२०	आद्य पत्र सचित्र
१७७	५६६७	"	"	"	१२३	आद्यन्त शोभन
१७८	६२६१	"	"	१८६०	७४	"
१७९	७०२५	"	"	१८वीं श.	६३	"

[राजस्थान पुरातत्वावेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची. भाग-२; १५-काल्य-नाटक-चम्पू]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८०	६१४२	रामायण बालकाण्ड	वाल्मीकि	१६ वीं	२०३	तिलकव्याख्यायुक्त
१८१	६५००	"	"	"	१५५	"
१८२	५६६६	रामायण अयोध्याकाण्ड	वाल्मीकिमुनि	१८ वीं	२२५	तिलकव्याख्या सहित अपूर्ण
१८३	७०२६	"	"	१८ वीं	३३०	दोनो काण्ड एक ही लिख में है
१८४	६४६६	"	"	१६ वीं	२३१	
१८५	५४४७	"	"	१६ वीं	३४+२६	
१८६	६१४४	"	"	१६ वीं	१२३	तिलकव्याख्या सहित
१८७	५६७०	"	म. वाल्मीकि, टी. महेश्वर	१६ वीं	१७८	"
१८८	६१४३	"	वाल्मीकि	१६ वीं	११७	पत्र ६, ६६वा अप्राप्त, पत्र २६ से ८० तक प्राय नुदित, प्रति जीर्णशीर्ण, लि.स्थिता तू गानगर प्रायन्तपत्र शोभन
१८९	६५०१	"	"	१७६२	७६	
१९०	५०४२	"	"	"	१२७	प्रति अपूर्ण, अन्त के कुछ पत्र भोगे हुए हैं
१९१	५६६८	"	"	१६ वीं	१२२	तिलकव्याख्या सहित
१९२	६०१८	"	"	१६६६	१२१	
१९३	६२६०	"	"	१६ वीं	१५२	
१९४	६५०२	"	"	"	१००	भीकाजीलक्ष्मणस्यैव पुस्तकम् पत्र स० ११६ तक पत्र प्राचीन है और १८ वीं श. के प्रतीत होते हैं, स० ११७ से १२८ तक नये पत्र हैं
१९५	६२०४	"	"	१७६६	१३७	
१९६	६०१७	"	"	१८ वीं	१२८	
१९७	६१८४	"	"	१८ वीं		

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६८	५६७१	रामायण युद्धकाण्ड	बाल्मीकि मुनि	१८वीं श.	२८८	
१६९	६०१६	रामायण युद्धकाण्ड	"	"	२८६	
२००	७८०७	" "	"	"	१६६	
२०१	५६७२	" उत्तरकाण्ड	"	"	१६६	अमृतसरे लिखितम् लि. क. लक्ष्मण
२०२	६०२०	" "	"	१८६७	१२	
२०३	४५२१	रामायणसार	श्रीअग्निवेशमुनि	१६वीं श.	६	विद्वज्जनविनोदिनी टीका प्रति सुन्दर है
२०४	५३६६	राक्षसकाव्य सटीक त्रिपाठ	टी. सुरदेव भट्ट गोपीनाथसुत सुबन्धु	"	२	अपूर्ण
२०५	५६६२	"			६६	गोकुलचंद्र गोस्वामिना लिपीकृतम्
२०६	६००६	वासवदत्ता		१७५३	१००	लि. क. हृदयराम कायस्थ
२०७	५३०२	विवरधमाधव		१७५८	२६	प्रथम पत्र अप्रप्राप्त
२०८	५२३०	विप्रमुखपेटासस्तवक		६ वीं श.	६०	
२०९	६०६२	विश्वगुणादर्शचम्पू	वेंकटाचार्ययाजी काञ्चीनगर- वास्तव्य	१६१८		
२१०	४३३७	त्रेणीसहार	नारायण भट्ट	१७वीं श.	५४	
२११	६७१७	ज्ञातश्लोकी रामायण	अग्निवेश्यमुनि	२०वीं श.	११	लि. क. गोपीनाथ
२१२	५६१२	शत्रुञ्जय माहात्म्य	धनेश्वर	१५११	१८५	आशापल्ली में लिखित
२१३	७२५३	"	"	१६७१	२२५	
२१४	७०४०	शिशुपालवधम्	साधकवि	१६८३	१३८	आद्य २० पत्र अप्रप्राप्त
२१५	६००६	शिशुपालवध टीका	टी. वल्लभ (आनन्दवेवायनि)	१८वीं श.	२४३	प्रति सुन्दर है
२१६	७०८७	" सटिप्पण	साध वणिक् (?)	१५५२	१२८	* विशिष्टतम प्रति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१७	७६६०	शिशुपालवध टीका	टी मल्लिनाथ	१८वीं	१३१	नवमसर्गति, दो लिपियाँ मिल गई हैं
२१८	५१११	,, सटीक	"	"	३३	प्रथम सर्ग मात्र
२१९	७८०६	,, "	"	"	१२	
२२०	६५६८	शृङ्गारतिलक	कात्तिवास	१९वीं	२	
२२१	६१७६	शृङ्गारमाला	सुखलाल	"	७	रचनाकाल १८०१
२२२	४२९७	शृङ्गारवैराग्यमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	१७वीं	६	
२२३	५३०३	सक्तिप्रकाश	गोविन्द कथीश्वर	१९२२	२५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२२४	४१२६	सप्तशती (श्रायवृत्तबद्धा)	गोवर्द्धन	१८०७	५३	लि. क. जोसी परसराम
२२५	६०६३	सुन्दरमणि सन्दर्भ	मधुराचार्य	१७७९	४०	
२२६	४७१५	सूर्यशतक	मयूर कवि	१९वीं	१६	
२२७	५९५४	हसवृत्त सटीक	रूप गोस्वामी	"	२४	
२२८	५१६६	हनुमन्नाटक सटीक	टी. मोहनवास मिश्र, कमलापति- माथुरचतुर्वेदसुत	१८५९	१११	लि. क. पुजारी राघोवास
२२९	५५५३	,, मूल	सू. बोपदेव मधुसूदन	१८वीं	४०	३९वाँ पत्र अप्राप्त
२३०	७५०५	हरिलोला सटीक (भागवतानु- क्रमणिका)	सू. बोपदेव मधुसूदन	१७९२	३६	३५वाँ पत्र अप्राप्त
२३१	६१९७	हरिवंश टीका	टी. नीलकण्ठ	१८वीं	५३	भावायं प्रकाशाभिधान व्याख्यान
२३२	६९९९	हरिविलास प्रथम सर्ग	लोलिम्वरण	"	४	
२३३	५९४३	त्रिपण्डितशालाका-पुरुष-चरित्र (परिशिष्ट पत्र)	हेमचन्द्राचार्य	१४८६	७०	

राजस्थान पुरातत्त्ववेधरण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १६-रसालङ्कारादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६११३	अलङ्कारकौस्तुभ सटीक	मू लक्ष्मीधर, टी विश्वेश्वर	१६वीं	१२५	
२	४३६६	अलङ्कारचन्द्रिका (कुवलयानन्दटीका)	वैद्यनाथ	"	१२३	
३	७७८३	"	"	१६०२	१५७	
४	५६८३	काव्यकरपलतावृत्ति (कवि शिक्षा)	अमरचन्द्र	१६४८	१०२	सेरपुरामध्ये लिखितम्
५	५६६६	"	"	१७वीं	१२०	रायद्वनपुरे लिखितम्
६	५२७५	काव्यचन्द्रिका (समस्यापूरणोपाय)	न्यायवागीश भट्टाचार्य	१८वीं	६	लि क श्रीहर्षसोमगणि
७	५८७६	"	"	१८११	११	
८	६००७	काव्यप्रकाश श्लोकार्थदीपिका	गोविन्द ठक्कुर	१६५६	२५	लि क गोस्वामी नदात्मजबलदेव
९	५६५५	कुवलयानन्द	अप्यय दीक्षित	१८६५	४८	लि.क. केशवराज
१०	६२४६	"	"	१८६७	४६	लि.क. लक्ष्मीचद ब्राह्मण
११	४७०८	कुवलयानन्दकारिका	"	१८१५	१८	
१२	५१४०	कुवलयानन्द (अलकारचन्द्रिका)	मू जयदेव, टी. प्रद्योत्तम भट्टाचार्य	१८वीं	२१ से ५६	
१३	६०७३	चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)	मू जयदेव, टी. प्रद्योत्तम भट्टाचार्य	१८६६	३६	लि क. सालगराम
१४	६१६४	रसगङ्गाधर	जगन्नाथ पण्डितराज	१८वीं	२७६	किंचिदपूर्ण
१५	६१२४	रसचन्द्रिका	विश्वेश्वर लक्ष्मीधरपुत्र	१८३३	३६	
१६	६३०५	रसतरङ्गिणी	भानुदत्त	१६३१	५१	लि क चुन्नीलाल
१७	७७८०	"	"	१६वीं	३६	यह पुस्तक गुजरात पाटण वास्तव्य राव कान्हजी उमदे-सिंहजी ने अपने पढने के लिये जोधपुर में लिखाई
१८	७७८१	रसतरङ्गिणीटीका टीका	जङ्गुपनासक गङ्गाराम कवि	१६०२	१०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४३२७	रसदीर्घिका	विद्याराम	१८वीं	४८	र. का. स. १७०६, लि.स्था. कोटा
२०	६२९४	रसमञ्जरी	भानुवत् मिश्र	१९०४	२४	लिखित रामचरणेन
२१	६३१४	"	"	१८५३	३२	लि. क. मेघराज ऋषि
२२	६४०४	"	"	१७०५	५	
२३	६६३१	"	"	१९वीं	१७	
२४	६४६८	रसमञ्जरी टीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	मू. भानु कवि, टी. अनन्तपण्डित व्यम्बकपण्डितात्मज	१९०९ (?)	४९	काशिराज श्रीचन्द्रभानु- कुतूहलार्थं निमित्त पत्र १-२ अप्राप्त
२५	७५००	रसमञ्जरी सटीक	मू. भानु कवि, टी शेषचितामणि	१६२१	२४	
२६	७७८२	" रसिकरञ्जिनी टीका	मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट	१९वीं	७२	
२७	६९९७	" सटिप्पण	भानु कवि	"	४४	अपूर्ण
२८	७५०७	रसमञ्जरीप्रकाशस्वोपज्ञ टीकासहित	नागेश भट्ट श्रीकालोपनामक शिव भट्टसुत	१८३८	४२	लि.स्था कृष्णगढ
२९	७७८४	रसमञ्जरीव्याख्या अङ्गचार्यकौमुदी	अनन्त पण्डित व्यम्बकात्मज	१९०२	१७४	व्यास मोतीराम पठनार्थम् लि. क. साधु प्रभुवास वारहट पत्र कान्हजी उमेर्वसिहजी पाटणवासी वाचनार्थ जोधपुरे लिखितम्
३०	६२६३	रसिकमञ्जरी टीका रसिकरञ्जिनी	मू. भानु कवि, टी गोपाल भट्ट	१९वीं	३९	
३१	६००२	वाग्भटालकार टीका	मू० वाग्भट	१७वीं	१९	
३२	६८७२	वाग्भटालकार (पञ्चपाठ)	"	"	२०	
३३	७१९१	पदभजिका व्याख्या वाग्भटालकारसावचूरि	"	१६वीं	८	

0
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99

4
1

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99

•

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १६-रसालङ्कार]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	४३०६	वाग्भट्टालकारवृत्ति	धर्मदास	१६वीं	१५	२,६,७ और १३ पृष्ठ नहीं हैं
३५	६६४५	विदाधमुखामण्डन	"	१६५७	२८	सूर्याष्टमहीभयुंते विक्रमे
३६	६६४६	"	"	१८१२	३६	लि.क राघ(कृष्ण गुरजी
३७	७६८७	"	"	१८४२		शिवरामसुत
३८	७६६२	सहिष्णण	"	१६८२	१५	लि.क गङ्गदास हीरानन्द-
३९	६५१६	" सावचूरि	अवचूरिकर्ता अज्ञात	१८३६	४५	सूरीश्वर शिष्य पल्लीवरपुरे
४०	६३१०	वृत्तिवार्तिक	अप्यय वीक्षित	१७वीं	१६	(पत्नी—मारवाड)
४१	६६६६	"	"	१८वीं	१७	लि क शिवनाथ शिवजीरामसुत
४२	५६०३	श्रवणभूषण (विदाधमुखामण्डन टीका)	नरहरिभट्ट हरिरल्लालनन्दनः	१६वीं	८	
४३	५३११	साहियरल्लाकर (प्रथम तरङ्ग)	श्रीधर्मसुधी पर्वतनाथसुत पल्लमास्वागर्भज हारीत गोत्रज	१६वीं	१६	वाराणसी में रचित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १७-मुभाषितादि]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५६६२	उपदेशशतक (चारचयल्य)	क्षेमेन्द्र	१६३६	६	रसाम्यङ्कमुहायने लिखित गोपरामेण शुकृष्णोनिभूतियो
२	७२७२	एकषष्टियुतप्रश्नशत	जिनवल्लभ	१७४१	७	
३	४३४७	कर्मप्रकरणसावचूरि	मू हरिकवीश्वर टी जिनसागर सूरि	१६वीं	२५	
४	५६४७	"	सोमचन्द्र रत्नशेखरशिष्य	१५६७	२८	रचनाकाल १५०४ लि क सधमाणिष्यगणि लि स्या. चम्पकनेर महानगर अणहिलपुरमध्ये लिखित लि.क. सोमचन्द्रगणि लि स्या पत्तनगर (पाटण गुजरात)
५	५६५६	"	हरिमुनि वज्रसेनशिष्य	१५५८	५४	
६	७३६५	वृष्टात्तशतक (राज भाषायं सह)	तेजसिध गणि	१७६६	१६	
७	७३६७	" मूल	" लूकागच्छीय	१८वीं	१८	
८	७५४८	"	" "	"	६	लि क काहजो मुनि
९	४५३२	नीतिशतक सटीक	मू. भतुं हरि, टी धनसार	१८२२	२५	लि क गगाधर
१०	४४५२ (३४)	" सस्तबक	भतुं हरि	१८०७	१-१३	
११	४५६५	प्रश्नोत्तरमणिमाला	श्रीशङ्कराचार्य	१८वीं	५	
१२	७३७८	प्रश्नोत्तरमाला	विमलसूरि	१७५७	१	लि क. विनोवसागर लि. स्या. श्रीकृष्णगवूमध्ये प्रथम पत्र अप्राप्त
१३	७४३२	प्रश्नोत्तररत्नमालाविवरण	वेवेन्द्रसूरि	१६वीं	१३८	
१४	४४१५	प्रश्नोत्तरषष्टिशतक सटीक	जिनवल्लभसूरि	"	२३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५०५४	पद्यावली	विल्वमगलश्रावित	१६७६	४५	त्रुटित
१६	५१५६	भर्तृहरिशतक (वेराय शृ गार)	भर्तृहरि	१६वीं	२२	अपूर्ण
१७	४४८२	रत्नकोश	वैशम्पायनोक्त	१७४६	६	
१८	४६०७ (२)	लघुचाणक्य	चाणक्य	१८३७	२३-३४	
१९	४५७१	"	"	१८०५	४	लि.क सामन्त ऋषि
२०	६७५०	बृहत्चाणक्य	"	"	१६	स्था राजपुर
२१	६७७२	वेरायशतक	भर्तृहरि	१६वीं	६	लि.क बालकवास कवीरपथी
२२	४५६१	" सटीक	मू भर्तृहरि, टी धनसार	"	५१	
२३	४४५२ (३६)	" मूल	मू भर्तृहरि, टी धनसार	१८६०	२५ से ३६	लि क प्रीतसौभाग्य गणि
२४	५४३७	शतकत्रय	भर्तृहरि	१८०७	६२	स्था बणेडा ग्राम
२५	६१२७	"	मू भर्तृहरि, टी रूपचद	१८वीं	६३	
२६	७०८०	शृ गारशतक	भर्तृहरि	"	नीतिशतक	
२७	४४५२ (३५)	"	"	१७५६	१-२०	लि क किन्नोरदास मुरलीदास-
२८	६६६४	सभारजन सुभाषित	"	१८०७	२०	शिल्प्य
२९	४५७२	सभाशृ गार	भर्तृहरि	१६१४	१३ से २५	लि क प्रीतसौभाग्य गणि
					१७	स्था बणेडा ग्राम
					१४	१३वा पत्र अप्राप्त
						लि'क रामनारायण
						लि.क ऋषि धनजी
						स्था राजपुर नगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०	५२७७	संस्कृतमजरी	अमृतपण्डित	१८वीं	२४	
३१	५२७८	"	"	"	४	
३२	५५२१	"	"	१९१७	६	लि.क. रामगोपाल, स्था. बूढी
३३	६५७७	"	"	१९वीं	३	
३४	५९७७	"	"	"	३	
३५	६२५३	"	"	"	३	
३६	६४०५	संस्कृतविधि (ज्ञानक्रिया सवाद पत्र)	"	१७६८	१६	
३७	४५७४	सिद्धप्रकर	सोमप्रभ	१७वीं	५	लि.क प सुखानन्द
३८	६३८७	"	"	१६६४	५	लि.क वीरसुन्दरगणि
३९	७३१९	"	"	१५वीं	५	
४०	४४०४	सबालावबोध	मू. सोमप्रभ, टी. पाठकर राजशील	१८५२	६१	लि.क क्षमासौभाग्य लि.स्था श्रीवातानगर
४१	४४५६	" सटीक	मू. सोमप्रभ, टी. हर्षकीर्ति	१८वीं	१७	
४२	६२७६	" "	"	१८७२	४३	लि.क ऋषि नगराज गोपाचल मध्ये
४३	७३२९	" "	मू. सोमप्रभ, टी. पाठक राजशील	१८३०	५०	लि.क दौलतसौभाग्य श्रीविलाडानगरे
४४	७२६२	" " मूल	सोमप्रभ	१७५९	२२	लि.क लक्ष्मीचन्द्र जादवनगरे
४५	४३६७	" सावचूरि	"	१७६२	१४	१३वीं पत्र प्राप्त लि.क ऋषि भावशेखर
४६	४४१७	" "	"	१७वीं	१२	
४७	४५७०	" सस्तवक	मू. सोमप्रभ, स्त वीरसागरगणि	१८४७	१९	लि.क चोखाजी, बांकानेरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८	७१४६	सिंहूरप्रकरसूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभ	१८६०	७	लि. क. प्रमाणविजय स्था. पोहकरण
४९	७४४४ (१६)	" "	"	१८८६	३१०-३२४	
५०	५३५२	" सूक्तिरत्नकोश	"	१९०१	६	
५१	४८११	सुभाषित (प्रास्ताविक)		१८३३	१८	
५२	४४५२ (१०१)	सुभाषितरत्नलोकाः		१८वीं	१३६वीं	
५३	४५६६	"		१६वीं	८	
५४	७१५३	"		१९वीं		प्रतिलिपि योग्य, जीर्ण खरडा
५५	४३४६	सुभाषितसंग्रह		१४०८	२५*	लि. क. मुनिदाम शिष्य, राणपुर एक हजार से अधिक सुभाषितों का संग्रह, महत्वपूर्ण, विशिष्ट और प्राचीन प्रति
५६	७१०३	"		१८वीं	२	
५७	४३४८	सुभाषितमुक्तावली		१६८२	२७	लि. क. विमलहर्ष भीमजी- पठनार्थम्
५८	५६८४	सुभाषितार्णव		१७३६	६१	लि. क. सावल पण्डित
५९	६३२२	"		१८१०	२२	
६०	७७४१ (६)	सुभाषितावली		१७वीं	४३-७७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	४४१४	सूक्तावली		१५वीं	३५	
६२	६३६०	सूक्तिसूक्तावली (सित्तरप्रकरबालावबोध)		१८वीं	७६	
६३	५१३५	सूक्तिरत्नावलीव्याख्या		१९वीं	११	९२ श्लोकों की व्याख्यापथत्त, अपूर्ण
६४	७५६०	ज्ञानप्रकाश सस्तबक	तेजसिंघ	१८४२	४	लि क ऋ. मेघजी

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर —हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १८-कथा, चरित्र, आख्यानादि]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४३३२	श्रवणचरित्र	मुनिरत्नसूरि	१६४६	३१	
२	६१३२	श्रजापुत्रकथा	माणिक्यसुन्दर	१७१४	७	
३	७२५०	श्रमरसेन वज्रसेनकथा		१७६३	२१	लि.क. लक्ष्मण, जिहानाबादनगरे
४	७२७०	श्राविनाथचरित्र		१८वीं	७	लि.क. रगहर्ष, बाहड़मेर
५	७३३७	श्रामराजा लक्ष्मण-भट्ट-सूरि-धर्मकथा		"	३	प्रतिलिपि योग्य, अन्त में राज-स्थानी भाषा में स्तवन श्रादि लिखे हैं। (लिपिकर्ता का नाम मिटाया हुआ है)
६	५६४४	उत्तमकुमारचरित्र	पद्मसागरगणि	१६६७	१०	
७	४३३५	उत्तराध्ययनकथा (प्राकृत उत्तराध्ययनसूत्रगता)		१७वीं	११६	रचनाकाल १६५७
८	५६६३	"	"	१७२३	८४	पीपाडग्रामे, स. १६५७ मध्ये रचित
९	७२८१	"	"	१८५६	८२	लि.क. कुशलकल्याणगणि
१०	७८५२	कालकथा	नेमिप्रभ	१६वीं	८	रचनाकाल १६५७
११	५६६३	कालकाचार्यकथा		१७६२	१३	रचनास्थान पीपाडग्रामे चित्र सं० ७
१२	७८५३	"		१६वीं	६	चित्र सं० ५
१३	७८५४	"		"	१ से १० तक	चित्र सं० ७
१४	७०८१	चतुर्दशीलादिकथा (मेघनावतारः)		१८वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५३७६ (९)	चन्दनषष्ठीविधानकथा	बुद्धिविजय	१८वीं १८५३	१०७-११०	लि.क. रामविजय गण लि.स्था श्रीराधनपुरनगर (गुजंरप्रांत)
१६	४३८७	चित्रसेन पद्मावतीकथा			२३	
१७	७२९२	"	राजवल्लभ पाठक	१८वीं	१३	
१८	६९२०	" सटिप्पण	" महिमानिधान शिष्य	१८४६	५०	लि.क ऋषिचन्द्रभाण, बीदासर- मध्ये, रचनाकात् १७२२
१९	४३९८	" चरित्रसस्तवक	मू. राजवल्लभ, स्तवकार भक्तिविजय	१८५३	१५४	
२०	७१४५	दीपमानिकाव्याख्यान		१९वीं	६	
२१	५३७६ (१०)	गुधरसकथा		१८वीं	११०-१११	विशिष्ट प्रति
२२	४४३५	देवकुमारकथा		१५३४	७	मलानाग्रामे लिखित
२३	७३९६	धर्मवत्कथा		१६१२	१८	लिखित नन्दरवारनगरे
२४	७३६३	धर्मबुद्धि पापबुद्धिकथा		१७००	१४	लि.क जयविजय गण
२५	४४३४	धर्मबुद्धिमत्रिकथा		१६७४	६	स्था. भाहरजा ग्राम
२६	६४०७	धर्मवत्कथा	माणिक्यसुन्दरसूरि भैरतुग सूरिब्रिषिष्य	१६३३	१०	श्राद्ध पत्रद्वय श्राश्रान्त लि.क. ऊधोवास, हिंडोलीमध्ये
२७	६८२०	धर्मसंवाव (महाभारतीययज्ञकथान्तर्गत)		१७८६	१७	
२८	५३७६ (८)	निशाल्यकथा		१८वीं	१०५-१०७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६	६१५३	पापवृद्धिमन्त्रीकथा	भावदेव	१६वीं	६	लि क दाणाकृष्टि
३०	७२१३	पार्श्वनाथचरित्र	भावदेवसूरि	१७५६	१३६	समाणेनगरमध्ये
३१	५६३३	पार्श्वनाथचरित्र		१५०४	१४७	प्राचीन प्रति
३२	६३१८	मणिमजीराख्यान (बालमीकि- रामायण बालकाण्डान्तर्गत)		१६३०	२२	
३३	४५६०	मथुरामाहात्म्य सग्रह		१६०८	३३	
३४	६१४६	(गोपालोत्तरतापिन्यादिगत) मल्लिनाथचरित्र	सकलकीर्ति	१८१३	५२	लिखायित श्रीनथमलजी खण्डेलवाल, विलासा
३५	७७७६	साधवनाटककथा		१६१५	२६	लि क. नानूराम जोशी जोधपुरमध्ये
३६	५६६४	मुनिपतिचरित्र		१६वीं	२२	लि क. भावप्रसोद, जिनरत्नसूरि- शिष्य
३७	४३३३	युवराजकृष्टिचरित्र		१६६३	७	
३८	५३७६ (७)	रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्ति	१८वीं श.	६४, ६५ १००-१०५	
३९	४४०२	रूपसेनकथा		१७वीं	२६	
४०	५३७६ (४)	रोहिणीकथा गोतमावत		१८वीं	८०-८७	
४१	४४६०	वत्सराजकथा		१६४०	११	लि क पंकवर्धनशिष्य लाल- वर्धन, लि स्था पाडलाग्राम
४२	४४५८	वरदत्तगुणमर्जरीकथा	कनककुशल	१८वीं	३	लि स्था भेड़ता नगर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३	६७६६	वंतालपञ्चविंशिका	सकलकीर्ति	१६वीं	६८	२५वीं कथा अपूर्ण
४४	६१८२	श्रीपालचरित्र	अजितप्रभ सूरि	"	२५	पत्र ११, २१ और २३वां अप्राप्त
४५	४३३४	शातिनाथचरित्र	"	१६५१	६५	
४६	५६८०	"	"	१६५४	६२	
४७	७२७६	"	"	१६३३	१५३	प्रथम पत्र अप्राप्त
४८	७३२२	"	भावचंद्र (?)	१६वीं	१३३	
४९	७२६६	शालिभद्रचरित्र	धर्मकुमार	१६०५	२६	भोटापलीवासी हुम्बडजातीय शाहाविसहेन श्रीगुरुराणामुपदेशेन सत्री चापाकित लिखित कल्प- मेरुषु, प्रथमपत्र अप्राप्त (विशिष्ट प्रति)
५०	७३८८	"	"	१६वीं	१७	
५१	४३३६	" सावचूरि	"	"	१६	
५२	७३८१	सम्यक्त्वकौमुदी	"	१७०५	३२	लि क शिवचंद्रगणि, माणिक्य- चंद्रसूरिशिष्य प्राचीन प्रति
५३	७३५४	"	"	१४६६	३१	
५४	७३४२	"	"	१६वीं	३७	
५५	७४३०	"	"	१५वीं	४६	
५६	७०८६	"	"	१६वीं	२८	अपूर्ण
५७	४३२८	सागरचन्द्रकथादि	"	१७वीं	१-१२	इस प्रति मे तीन कथाएँ हैं प. १ से ३ तक (१) सागर- चन्द्रकथा पृ ३ से ६ तक (२) मङ्गलकलशकथा पृ. ६ से पृ १२ तक (३) सुवर्शन- श्रुतिकथा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	६४०६	सिंहासनद्वारिका	बल्लालसेन	१७७५	१४६	प्रथम पत्र अप्राप्त, जीर्ण प्रति
५९	५३४४	सौभाग्यपंचमीकथा	कनककुशल विजयसेनसुरिशिष्य	१८वीं	५	रचनाकाल स० १६५५ भूतेपुरसेन्दुवत्सरे
६०	७२६३	हरिश्चन्द्रचरित्र	भावदेवाचार्य	१६वीं	३२	पत्र १, २, २०, २१, २३, २४
६१	६७८७	हितोपदेवा	विष्णु शर्मा	१८वीं		श्रौर २७ से ३५ तक अप्राप्त

राजस्थान पुरातत्त्वविषय मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १६-आयुर्वेद]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६०६४	अञ्जननिदान	अग्निवेश	१८८८	६७	लिक चतुर्भुज
२	५२६८	अग्निवेशनिदान (सटीक)	"	१८५६	२६	स्थान-नेनवा
३	५८४२	अनुपातमञ्जरी,	पीताम्बर	१६०७	११	
४	५८५४	"	"	१६२८	४	लिक लक्ष्मीनारायण
५	४१६२	" सस्तबक	"	१६वीं	६	लिक खीमचन्द
६	५८६०	अमृतमञ्जरी (अजीर्णमञ्जरी)	काशिनाथ	"	३	
७	५११५	अर्कचिकित्सा	रावण	१८वीं	६३	रावण मन्दोदरीसवाद, इसमें गर्भ- रक्षण के उपाय बतलाये गये हैं
८	५८५०	अर्कप्रकाश	"	१८३६	३८	
९	५८५१	"	"	१६२६	२१	लिक. लक्ष्मीनारायण
१०	५४६०	अरिष्टनिदान (रागविनिश्चय)	त्रिमल्ल	१६वीं	५४	लिक सिल्लु ब्रजवासी
११	५६१०	ऋतुवर्या	वाग्भट	१८६५	५	
१२	६५१४	कल्पस्थान	शिवप्रोक्त	१७३५	१६	लिक रामविलास नायलावास्तव्य
१३	५७५२	कालज्ञान	"	१६०४	३६	लिक. लक्ष्मीचन्द्र
१४	६८६०	"	"	१८४३	४६	लिक. आत्मारण चतुर्भुज
१५	५८६८	कालज्ञानवैद्यक (सस्तबक)	अनेक	१८५१	१६२	लिक परसराम
१६	४१५०	" मूत्रपरीक्षा आदि	साधवपण्डित	१६२५	५	लिक भक्तावर
१७	५८५२	कूटमुद्गर (सटीक)	गोपालदास	१६२५	२	प्रथम व सप्तम पत्र अप्राप्त
१८	६८७६	गणपाठचिकित्साकलिका	लोत्सिम्बरज	१८वीं	७२	लिक लक्ष्मीनारायण
१९	७५०४	गोपालविनोद		"		
२०	५८६२	चमत्कारचिन्तामणि		१६३४	६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	६८६४	चिकित्सामहार्णव	वंगसेन	१८११	३६०	प्रथम पत्र अप्राप्त
२२	७४६८	ज्वरतिमिरभास्कर	कायस्थ चामण्ड	१७४३	५४	
२३	४७८०	ज्वरप्रतीकार (ज्वरघटमहिमा)	त्रिमल्ल	१८०५	३	लि क वैष्णव नारायणदास
२४	४७८२	द्रव्यगुणशातश्लोकी	"	१८५१	६	" रामनारायण, कृष्णगढ
२५	७६६१	"	"	१८५१	१६	
२६	६६६३	घातुरत्नमालाव्याख्या	नागार्जुन	१८वीं	१५	
२७	५२४५	नागार्जुनवैद्यक	नागार्जुन	१८वीं	६४	पत्र ८, २०, ३५, ६१ अप्राप्त
२८	७७२२(११)	नाडीपरीक्षा	मदनपाल भूपति	"	११५-११६	
२९	५४७८	निघण्टु	त्रिमल्ल	१६०६	१२५	
३०	५८४६	निघण्ट (धन्वन्तरीय)	त्रिमल्ल	१६वीं	३३	
३१	६८१२	"	मदनपाल	१८७०	५१	लि क भागीरथराम
३२	६८८२	"	मदनपाल	१७२५	११६	लि.क रामचन्द्र
३३	७०३६	"	वाचक दीपचन्द्र	१८वीं	४७	पत्र ४, ५, ६ अप्राप्त
३४	५६५८	पथ्यनिर्णयलघन	"	१६वीं	१०	लि क लक्ष्मीनारायण
३५	५८५७	पथ्यनिर्णय	"	१६२७	२	लि क भक्तावर
३६	७००८	पथ्यलङ्घननिर्णय	"	१६३७	२०	
३७	६६८७	पथ्यापथ्यविचार	"	१८वीं	२५	
३८	५६०४	पथ्यापथ्यविनिश्चय	केयदेव	१६१५	४६	
३९	५८४४	"	"	१६वीं	१६	लि क लक्ष्मीनारायण
४०	४०६६	पथ्यापथ्यविबोधक	"	१८८७	१६६	
४१	६८७१	"	"	१८वीं	१०३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	५८४०	बालप्रहचिकित्सा	रावण	१६वीं	२१	लि.क. लक्ष्मीनारायण
४३	५८६४	"	"	१६२८	२१	
४४	४२००	बालतन्त्र	कल्याण	१८वीं	३८	
४५	५८४१	"	"	१६वीं	२३	
४६	५८६३	"	"	१६२८	१२	लि.क. लक्ष्मीनारायण
४७	६६५७	"	"	१८६४	६०	लि.क. पोकरमल ब्राह्मण भालराषाटण
४८	५८३४	भावप्रकाश	भावदेव	१६वीं	३३४	
४९	६८०५	भावप्रकाश (मध्यमखण्ड)	भावांसिह	१८७२	१७६	लि.क. भागीरथ
५०	६८०६	"	"	१६वीं	३५०	
५१	७८०८	भावप्रकाश उत्तरकाण्ड	"	२०वीं	५७४	
५२	७०२३	मदनपालनिघण्टु	मदनपाल	१८८२	६८	लि.क. प. सतिमदिर, विक्रमपुरनगर
५३	५८३७	मदनविनोव (निघण्टु)	मदननृपति	१६०५	११५	
५४	६८०३	मदनविनोवनिघण्टु	मदनपाल	१६वीं	२-८१	प्रथम पत्र अप्राप्त
५५	६१२०	सधुकोश	वेद्य महामहोपाध्याय जयपारदीक्षित	१८५६	५१-६५	
५६	५८३८	साधवनिवान	साधव कवि	१८६०	११०	
५७	६७४३	"	"	१५६२	६८	
५८	७०२४	"	"	१७५३	३६	लि.क. महेश सुरि, बीकानेर
५९	५२८६	"	"	१७३६	१२२-१८४	
६०	६८१३	"	"	१८वीं	१७०	
६१	६०१३	" सटीक	" टी वाचस्पति	१८७३	२३७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५६२८	माधवनिदान सटीक	टी. वाचस्पति	१६११	२२६	लि.क. भगवान विप्र
६३	६८६८	" "	"	१८७४	२१६	लि.क. रामबुल मिश्र
६४	४०६८	योगचिन्तामणौषधकसारसंग्रह	हर्षकीर्ति सूत्रि	१६६६	४७	लि.क. जगजीवन
६५	४७६६ (३)	योगचिन्तामणि	हर्षकीर्ति	१७७५	१-१६८	
६६	५८४३	" "	"	१६२०	५०	लि.क. लक्ष्मीनारायण
६७	६४४१	" "	"	१८८	४३	७वा पत्र अप्राप्त
६८	६८७३	योगचिन्तामणि सटीक	हर्षकीर्ति	१८३१	१३७	
६९	४२६०	" गुर्जरभाषा टीकायुक्त	"	१८६६	४६	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त
७०	६८१७	योगतरंगिणी	"	१६वीं	४-२४	लि.क. भक्तावर शर्मा
७१	५८५६	योगज्ञान	"	१६२३	६	
७२	४७७६	योगशाक्तक	वैद्यनाथ	१७१२	१६	
७३	६६०३	"	"	१८५६	६	
७४	५८७५	" सवालावबोध	वैद्यनाथ	१८४२	२७	लि.क. चतुर्भुज गोपाल
७५	६३१२	योगसार (योगमालिका)	"	१८वीं	५	
७६	६८१८	रत्नसागर	अनन्तदेवसूरि	१६वीं	२-६२	आद्य पत्र अप्राप्त
७७	६८३२	"	"	१८८१	३१८	लि.क. चौधरी खूबकृष्ण
७८	७५६७	रसचिन्तामणि	अनन्तदेवसूरि	१८०३		प्रथम पत्र अप्राप्त, १५५ व
७९	५६४३	रसमञ्जरी	ज्ञानिनाथ	१६वीं	५२	१५६वा पत्र भी अप्राप्त
८०	६०८७	रसमञ्जरी तन्त्र	"	"	५०	लि.क. ब्रह्मर्जनसागर, नागपुर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता श्रादि शातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८१	७६४१	रसरत्नाकर तन्त्र	नित्यनाथ	१६वीं	३७	लि.क. लक्ष्मीनारायण
८२	५८५३	राजमार्तण्ड	भोजनरेश	१६४२	१६	
८३	५५७६	रामनिवान	राम	१८वीं	१८	
८४	६८०२	रोगविनिश्चय	विशाम	"	१-६६	
८५	४१६१	व्याधिनियह सस्तक	मिश्र चक्रपाणि	१८५३	४६	
८६	५८६१	विश्वरत्नभ	श्रीमद्देव	१६२५	११	लि.क लक्ष्मीनारायण
८७	६४५५	विश्वप्रकाश कोश	श्रीमद्देव	१७वीं	५५	
८८	५४७४	विषरोगपथ्यापथ्यविचार	राजमार्तण्ड	१६वीं	३६	
८९	७३८६	वैद्यकउद्धार	लोलिम्बरज	१६३४	१५	लि.क. शिवदास
९०	४७७६	वैद्यजीवन	"	१८१६	१०	
९१	४८४४	"	"	१७००	१६	
९२	५२६४	"	"	१८७६	२७	
९३	५८३५	"	"	१८६३	१५	लि.क लक्ष्मीनारायण
९४	५८८०	"	"	१८४८	५३	लि.क ठण्डीराम
९५	५५५६	"	"	१६वीं	१२	
९६	६०८१	" सटीक	डी. हरिनाथ गोस्वामी	१६०५	४१	पत्र १ से ३ तक अप्राप्त
९७	६२८८	वैद्यजीवन टीका	"	१६२२	५०	लि.क मिश्र कल्याण शर्मा
९८	६३२६	वैद्यजीवन सटीक त्रिपाठ	लोलिम्बरज	१८८६	५७	३२वा पत्र नहीं है
९९	४७७८	" सस्तक	"	१७३४	२७	लि.स्था बगडी
१००	५८८१	" "	"	१६वीं	१७	
१०१	६६००	" "	"	१८६८	२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	५२७३	वेद्यरत्न	शिवानव भट्ट	१८वीं	४४	लि.क राजविजयगणि
१०३	७८२६	वेद्यवल्लभ (सटबार्थ)	हस्तिरुचि	१७६८	२१	विबोरा नगरे
१०४	५३०८	वेद्यविनोद	शकर भट्ट	१८वीं	६६	आद्य दो पत्र अप्राप्त
१०५	५८३६	"	"	१९वीं	४७	लि.क. लक्ष्मीनारायण
१०६	५८४८	"	"	१९०४	८०	" " गोपालमहात्मा
१०७	६६०५	"	"	१९१२	७४	प्रतापसिंहसुत रामसिंहाज्ञायारचित
१०८	७८१३	"	"	१८५७	२४	"
१०९	७८१४	"	"	१९वीं	३८-११५	लि.क भक्तावर
११०	५८५८	वेद्यामृत	सोरेश्वर	१९२६	७	रचनाकाल (१६०३)
१११	५८४६	शतश्लोकी (सटिप्पण)	त्रिमल भट्ट	१९१२	१०	लि.क. लक्ष्मीनारायण
११२	५८५५	"	बोपदेव	१९२३	७	लि.क भक्तावर
११३	६९०१	"	"	१९वीं	३८	
११४	६६३२	"	"	१८वीं	७	
११५	६०८०	"	त्रिमल, टी कृष्णवत्त	१९०३	६१	पत्र १ से ४ व ६, १०, २१, २२, ३१, ३३, ३४ अप्राप्त
११६	६५८६	शतश्लोकी टीका	"	१९वीं	१०	
११७	४३०३	शाङ्गधरसहिता	शाङ्गधर	"	१३१	
११८	५५६३	"	"	१९०६	१७३	पत्र १ से १६ व १६५ से १६६ तक अप्राप्त
११९	५८४७	"	"	१८९१	१०१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	६०३०	शाङ्गधरसहिता	शाङ्गधर	१६७८	४७	राजल्लेखसरे लिखित
१२१	६७६५	"	"	१८६४	१२७	लिक रूपचन्द्र
१२२	६८६०	"	"	१७वीं	६६	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२३	५८२४	"	"	१६१०	४७१	
१२४	६०८४	" सटीक (प्रथमखण्ड)	" टी काशीराम	१६वीं	७५	
१२५	६०८५	" " (द्वितीय)	" "	,	१४०	पत्र १, २६, २५, ३६, ३७, १००, १०१ अप्राप्त
१२६	७७६५	" (षष्ठाध्यायपर्यन्त)	टी आठमल्ल	"	५७	
१२७	७०३८	" (अपूर्ण)	"	"	१२०	
१२८	५४१४(२)	शारीरनिबन्धसग्रह	"	"	१-७१	
१२९	४७८३	शोथनिदानचिकित्सा	"	१८वीं	३	
१३०	६६७२	सन्निपातचिकित्सा	"	१६वीं	११	लिक फतेचंद, जयपुर
१३१	६३००	सन्निपातप्रकरण	बोपदेव	"	१२	ब्राह्म पत्र शोभन
१३२	५७४५	सिद्धमन्त्रप्रकाश	"	१८वीं	२८	लिक. सेठ आवित्यराम
१३३	४१३७	" (सटीक)	"	१६वीं	८२	पत्र २१ से २३ व ३०वा अप्राप्त
१३४	६०८२	हिकमतप्रकाश (द्वितीयखण्ड)	शिव पण्डित	"	४४	
१३५	६०८३	" (तृतीयखण्ड)	क्षेम शर्मा	"	६२	
१३६	६८०१	हितोपदेश	"	१८७०	६२	
१३७	५६३२	क्षेमकुसुमल	"	१६वीं	६६	
१३८	७४६२	"	वास पण्डित	१८वीं	३६	लिक. देवीवत्स
१३९	६६३८	त्रिशक्तिका	"	१८५६	१८	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४०	५८४५	त्रिशती	शाङ्गधर	१६वीं श.	१३	
१४१	६६६१	” (सटिप्पण)	”	१७७०	५०	लि क मनसारास
१४२	६०८६	त्रिशतश्लोकी सटीक	”	१६वीं श	११०	पत्र ६, १२, १३, १६, २८ से ३१, ६६, ७६, ८३, ८५ व ८६वा अप्रान्त

राजस्थान पुरातत्त्वव्यवस्थापन मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५३ (१-१५)	अकपाटी		१८३७	१३-२६	# पाटियो के नीचे नीति विषयक "वृत्त" हैं
२	४६०७(१)	अकपाटी		"	१८-२२	
३	४६१६(५)	अकपाटी		१८वीं	१०८वीं	
४	४४५२(५२)	अगफुरकणविचार	हीररत्न	१९वीं	४३	चित्र सं ४३, प्रारम्भ के १० दृष्टे पुण्यसागर वाली प्रतियो से मिलते हैं
५	५८६३	अञ्जनाचौपई (सचित्र)		१८६८	२४	# सं १६८७ में रचित। लिपि-कर्ता ऋषि नोलचन्द, पोही ग्राम, ऊदावत राज्ये
६	६५२५	अञ्जनाचौपई	पुण्यसागर	१७०२	२०	अन्तिम पत्र द्रुहित
७	४८१८	अजनाचौपई	पुण्यसागर	१६२६	१३	
८	४१६४(१)	अजनासतीरास		१८४६	१७	
९	४०४०	अजनारास		१८वीं	२१	
१०	५०६३	अजनासतीनो रास		१९वीं	१८	अपर नाम पवनजयप्रिया
११	४०३६	अजनासुन्दरीचौपई	भुवन्कीर्ति	१८६१	३४	अजनासुन्दरी हनुमंत चरित्र चित्र सं ४०
१२	४३२६	अजनासुन्दरीचौपई (सचित्र)	भुवन्कीर्ति	१८वीं	१४	लि क आर्या हीरा
१३	७०४३	अञ्जनासुन्दरीचौपई		१८५०	२५	बीकानेर में लिखित
१४	७२१६	अञ्जनासुन्दरीचौपई	पुण्यसागर	१८६५		पोरबंदर में लिखित। बाई साकर पठनाय
१५	६३६२	अञ्जनासुन्दरीरास		१८८५	४-८७	जयपुर में लिखित
१६	५२०२(१)	अकबरनामा				

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	४६२०	अकबरनामो	भाव कवियण (?) गर्भगोत्रीय	१६वीं	१४	
१८	४२८७ (१०)	अदीतवारकी कथा	अमरवाल मल्लपुत्र	१८वीं	४६-७७	
१९	५३१२	अध्यात्मगीता	राजसिंह	१८८३	८५	अपूर्ण, प्रथम ८ पत्र अप्राप्त । पाली में लिखित
२०	७७४३ (१)	अध्यात्मरामायण भाषा		१७८४	१-३२	* बाई सिरेकवरीलिखित, सावर मध्ये
२१	७५२४	अध्यात्मविचार		१८२७	१६	श्रीगारियाधामध्ये लिखित
२२	५४१८ (१६)	अनन्तचतुर्विंशो कथा	ब्रह्मजिणदास	१६वीं	१२१-१२४	
२३	४६१४ (१८)	अनन्तव्रतरास	खेमो	१८७१	२१२-२१८	
२४	४०३६	अनाथीसधि		१८वीं	६	गीत दूहाबद्ध
२५	५१०८	अजदीप्रश्न		२०वीं	८	अपूर्ण
२६	५४१८ (३६)	अजदीपाशावली		१८वीं	१-१०	जैन विनतिसहित
२७	४४५२ (१६)	अभिसारिकावर्णन गीत आदि		१७००	१८वीं	१६०६ (?) में रचित । सारण- मध्ये ऋषि कचरा भाभण- शिष्यलिखित
२८	७१४१	अमरवत्त मित्रानन्दचरित्ररास	देवगुप्त चन्द्रसूरीश्वर		२८	सं १६०७ वै कृ ६ रवि-रचना काल
२९	४३६१	अमरवत्तमित्रानन्दरास	"	१६१७	१६	
३०	५११७	अमरसेनवीरसेनचौपाई	विजयहर्ष	१८४६	२०	

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि मय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६६०२	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह	१६वीं	२२८	पत्र २, ३, ४, ५ अत्राप्त
३२	६८३१	अमृतसागर	"	"	४६७	#
३३	५८३६	अमृतसागर	"	"	३३८	अपूर्ण
३४	४२०६	अमृतसागर	"	१८७६	२७८	रचनाकाल १७४१
३५	७१३७	अयवतीसुकुमाल चौपाई	शान्तिहर्ष	१६वीं	५	लि क धनरूपहंस, सऊपरा ग्रामे
३६	४०४८ (२)	अयवतीसुकुमाल स्वाध्याय	रघुनगस	१८६२	१६-२०	
३७	७७४४ (२)	अर्जुणगीता	विनीतविमल	१७५८	३-८	
३८	४४६१	अर्बु वाचलश्लोक	जिनहर्ष सूरि (?) (सुमतहंस)	१८वीं	२	
३९	४०३४	अरहस्रकमुनिचरित्र	नरहरिदास वारहठ	१६वीं	६	
४०	७७२४	अवतारचरित	"	१७८६	२६७	#
४१	७७२६	अवतारचरित	"	१६१८	६४६	
४२	७७३३	अवतारचरित	"	१६१४	४४५	वदनोर में हरिदास कवीरपथी द्वारा लिखित
४३	७३८७	अवन्तिगजसुकुमाल चौपाई	जिनहर्ष	१६वीं	६	रचनाकाल १७४१
४४	७७४५	अश्वपरीक्षा	उदयरत्न	१६४३	३६	लि क वर्जसिंह, पहला लख्या सो ब्रह्म रामगोपालजी का
४५	४७८४	अष्टप्रकारपूजागस	शुभचन्द्र	१८२६	६१	
४६	५४१८ (१६)	अष्टमीकथा	श्रीसार	१६वीं	१४०-१४३	
४७	४६१४ (२४)	अष्टाणीवरतनोदास (जठाई)	धर्ममन्डिर	१८७१	२३१-२३२	
४८	४८२३ (१)	आणदश्रावकसंधि		१८१६	१-६	
४९	५६०२	आत्मप्रकाश चौपाई		१८वीं	२३	रचनाकाल १७४२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	५४१८ (४)	आत्मसवोधरास	बनारसी	१८वीं	८८-९१	
५१	५९१४ (२०)	आदित्यकथावत	सूरजी शाह	१८७१	२२२-२२९	
५२	५३७६ (२)	आदित्यवारकथा			३१-४२	
५३	५३७६ (१३)	आदित्यत्रारकथा छोटी			१९७-१९९	
५४	४४२०	आनन्दमन्दिररास	ज्ञानविमल	१८वीं	२१३	ढाल दूहाबद्ध । अन्तिमपत्र अप्राप्त
५५	७०९४	आनन्दश्रावक	मुनि श्रीसार	१८७०	२२	लि.क साध्वी रतन
५६	४०४२	आनन्दसधि (अनाथीसधि)	"	१७५४	१५	बावडीनगर मध्ये
५७	५४१८ (३२)	आनन्दाके दोहे	"	१९वीं	१७१-१७३	लि.क आर्या रघमा
५८	४९११ (२)	आभूषणहृणा चिन्तावली	"	१८७६	४१-४२	४१ दोहे
५९	४०३५	आर्द्रकुमारचण्डालिया	समुद्र मुनि	"	३	लि.क भागवन्द
६०	४८२३ (२)	आर्द्रकुमाररास	मान कवि	१८१९	६-११	
६१	६०४५	आराधना प्रकरण	सोम सूरि	१८वीं	६	मुलिखित प्रति
६२	४४५२ (९)	आवडीजी आदिके छन्द	अनेक कवि	१८वीं	१३ वॉ	
६३	७३४४	आवश्यक विधिप्रकरण	जितवल्लभ गणि	१५वीं	६	
६४	४०५१	आषाढाभूत चतुष्पदिका	भावप्रभ	१९वीं	२	ढाल गीतबद्ध
६५	५४१८ (७)	आषाढाभूति चौपई	कनकसोम	"	९७-१०७	
६६	५१२१	आषाढाभूति धमाल		१८वीं	५	रचन(काल १६३८
६७	४५७३	इन्द्रियपराजय शतक		स १६२८	६	
६८	७२७३	इन्द्रियपराजय शतक		१७वीं	६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	४०४३	इलाकुमार चौपाई	ज्ञानसागर	१८४३	५	रचनाकाल १७१६ आसोज सुदि २ बुधवार
७०	६५३०	इलाकुमार चौपाई	"	१८वीं	७	
७१	४६१४(२८)	उणतीसी भावना		स १८७७	२४६-२४७	
७२	५६७४	उत्तमकुमार चौपाई	तत्त्वहस	१७६५	३१	जोधपुर से लिखित
७३	५०६८	उत्तराध्ययन गीत		१७२२	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
७४	४२८७(१३)	उपदेश को रासो	रामचन्द्र	१८वीं	६८-११४	स्वयं कवि द्वारा लिखित । रचनाकाल १७२६
७५	६१०६	ऋषभविवाहलो	सेवक	१७२२	२१	
७६	६१६६	ऋषिवत्सा चौपाई	चौथमल	१८७६	२५	बील मध्ये लिखितम्
७७	७३३३	ऋषिभाषित कुलक		१८वीं	२	
७८	४६१५(६)	एकलगिड दाढाळारी वात		१८८७	१३६-१३६	
७९	४४५२(५५)	एकलगर वारहरी वारता		१११-११३	२	अपूर्ण
८०	७२६१	एकविंशति स्यान प्रकरण	सिद्धसेन सूरि	स १७६६	१०	लि. क. सुमति हस
८१	७७४६	एकावशीकथा भाषा (गद्य)		१६१३	५१	२६ कथाओं का संग्रह
८२	४२६३(२)	एकावशीकथा संग्रह		१८७६	१८	२० कथाओं का संग्रह
८३	४०५५	एकांतरा तावरी वात	श्रावक चोयो		३	
८४	७४४४(२०)	कका सज्जाय			३२४-३२६	
८५	५२११	कधवाहोकी वशावली		१८८४	११४	
८६	४०४६	कनकावती चौपाई	जिनहर्ष	१६वीं	२३	अन्तिम पत्र अप्राप्त

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	७७२० (२२)	कण्डकुसूहल		१८वीं	६	* #
८८	४०४७	कपोतकपोतणीरी वारता		१८५४	१२	* #
८९	६६३७ (२)	कबीरजीकी बाणी	कबीर	१८११-	१०६-१८७	लिक रामदास, टीकोदासशिष्य निराणा ग्राम
९०	६७३६	कयवला चोपई	गुणसागर	१८१६	१०	लिक ऋषि भरथ
९१	४०४८ (१)	कयवला चौपाई	जयराग	१८६२	२२	रचनाकाल १७४१ वै शु ८ शनिवार
९२	४०४९	कयवला रास	सुन्दरसूरिचन्द्र (?)	१८वीं	५	आर्या हीरा, श्रीमानजीनी शिष्यणी द्वारा लिखित
९३	५६७६	कर्मग्रन्थ पत्रक बालावबोध	मतिचन्द्र	१८वीं	११२	
९४	४६१४ (३३)	कर्मविपाक काड	गुणकीर्ति	१८७७	२५१-२५५	
९५	४४२५	कलावतीचरित्र	विजयचन्द्र	१६७६	४	चौपाईबद्ध, दूसरा पत्र अप्राप्त
९६	४०२०	कविकल्पलता	श्रीसार	१८७८	६	* रचनाकाल स १६८६
९७	४४५२ (२६)	कवित्तबावनी	उदयराज	१८वीं	२४ से २६	
९८	४४५२ (६५)	कवित्त	उदयराज	"	१३१ वां	
९९	४४५२ (४५)	कवित्त सर्वया	गग, वृन्द	१८वीं	६१ वां	
१००	४४५२ (५४)	कवित्त	अनेक कवि	"	१०६-११०	५० कवित्त
१०१	४४५२ (१०३)	कवित्त बूहा आदि	केसरसिंघ आदि	"	१३६-१४१	
१०२	४६१५ (२)	कवित्त गीत आदि		१८८७	२०-४१	जगदम्बा आदि के छन्द हैं

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	४४५२ (७३)	कवित्त गीत आदि		१८वीं	१२२वा	वाडिम-फल,
१०४	४४५२ (६६)	कष्टावलीचक्र		"	१२६वा	मुहम्मद स्तुति आदि
१०५	४६१५ (१६)	कागदरी नकल	मानसागर	१८८७	३६८-४०६	वार और नक्षत्रों से बने योगों का फल-निरूपण
१०६	४०५१	कानड कठियारा री चौपई		१८वीं	८	# स्त्री, पुरुष आदि के प्रति पत्र
१०७	४०५०	कान्हण विवाहलो	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७०२	८	रचनाकाल १७४७
१०८	७३७७	कालज्ञान भाषा		१६वीं	७	लि.क आर्या हीरा
१०९	४०५२	कालीनागदमण पवाडो		१८वीं	७	
११०	५४३०	काव्यविधान		१६वीं	३३-४०	मन्त्र-साधनों को काव्य कहा गया है
१११	७७२२ (७)	कुतुबशाहरी वात		१७२०	६६-१०४	लि क मथेन माघा
११२	७७२१ (१०)	कुबदीन शाहजादारी वात		१८२५	१६६-१७७	
११३	५६६१	कुमतिविष्वसण चौपाई		१७वीं	७	रचनाकाल १६७७ कनकपुरी मध्ये
११४	६४२५	श्रीकृष्णजीरो व्याहलो	हीरकलश	१६वीं	४	
११५	७०३०	श्रीकृष्णजीरो व्याहलो	पदम कवि	"	६४	
११६	४८३८	कृष्णशक्तिमणी वेली सटीक	म पृथ्वीराज	१७४५	२४	लि क भाग्यविजय, तेजविजय-शिष्य, खीमेल नगरे
११७	४४५२ (४७)	कृष्णशक्तिमणी वेली सटीक	"	१८१७	८५-१००	लि.क. प्रीत सौभाग्य गणि बोहला
११८	७७६६ (४)	श्रीकृष्णलीला वर्णन		१८५६	२-७	ग्रामे मही उपकठे
११९	४६०४ (१)	कैरडावाली चौथ माताजीरी कथा		१८६१	१-३४	चित्र—१ लि.क कल्याण सौभाग्य

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	७१७२ (१)	केवाटराजाकी कथा		१६३६	२७	
१२१	५४१८ (३०)	खिचडीरासा		१६वीं	१६८-१७०	
१२२	४०६०	खीची अचलदासकी वात		१८वीं	६	
१२३	४६८८	खेटसिद्धि		१८४८	६	लि.क. चतुरविजय गणि पोहकर मध्ये
१२४	४६८६	खेटसिद्धि	महिमोदय	१८४८	६	लि.क. ज्ञानविजय, रचनाकाल स १७३१
१२५	४४५२ (१३)	खेजडला माताजीरी नोसाणी	मान कवेसर	१८०८	१६ वाँ	
१२६	४४५२ (८४)	खेतरपालजीरो छन्द	कवि देव	१८वीं	१२५ वाँ	
१२७	५२७६	ग्रहणविचार टीका		"	३	
१२८	६४३७ (२)	गजसिंहकुवर कथा		"	२४-४८	अपूर्ण
१२९	४०५६	गजसुकुमाल चरित्र		"	१८	श्रुति
१३०	६५४१	गजसुकुमाल रास		१८८७	८	लि.क. सरूपचंद
१३१	४६१४ (१४)	गजमूनिवीनती		१८७१	२०८ वाँ	
१३२	४४५२ (६६)	गणेशजी छन्द अमृतध्वनि		१८वीं	१२०	
१३३	६०४१	गर्भोत्पत्तिस्तवन	श्रीसार	"	३	
१३४	४६१५ (५)	गीत		१८८७	१३४-१३५	
१३५	४१३६	गीतगोविन्द सटीक	डॉ. चैतन्यदास	१८वीं	४७	श्रुत का पत्र अप्राप्त
१३६	४६१५ (१५)	गीतकवित्त		१८८७	३६५-३६७	
१३७	७५५६	गीतसञ्ज्ञाय		१८वीं	४	
१३८	४४५२ (६०)	गीत, सर्वथा आवि		१८वीं	१२८वाँ	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६	४६०४ (३)	गीतामाहात्म्य	जगमाल मालावत	१८५६	६५वाँ	
१४०	५४५८ (४)	गौडोलीकी वारता	ऋषि दीप	१८२१	१-२७	लि क आर्या नाथी
१४१	४०२२	गुणकरडगुणावली चौपाई	"	१९वाँ	२२	रचनाकाल स १७५७
१४२	४०५३	गुणकरडगुणावली चौपाई	दीप (?)	१८७४	२०	"
१४३	४८२०	गुणकरडगुणावली रास	दीप ऋषि	१८३६	१५	लि क प नवनिधिविजय,
१४४	६०२७	गुणकरडगुणावली		१८३३	३६	सथाणा नगरे
१४५	६५४२	गुणकरडगुणावली चौपाई				राबडियास ग्रामे लिखितम्
१४६	४०१३	गुणहरिरस	गजकुशल	१७६६	७	पत्र २ से ६ श्रीर श्रस्त्य अप्राप्त
१४७	५०६४	गुणावली रास	शान्तिहर्ष	१९वाँ	२६	रचनाकाल स १७१४
१४८	४०५५	गुणावलीचरित्र चौपाई	ज्ञानविमल	१८७४	२१	रचनाकाल स १५१३ आश्विन
१४९	५१०३	गुरुचेलारी कथा				कु ३, बडलू ग्रामे लिखितम्
१५०	७१८०	गुरुपरपरा ठाठ				त्रुदित
१५१	५४५८ (३)	गोतमरासा	जिनसूरि	१७वाँ	२	
१५२	७५६७	गोतमपृच्छा चौपाई	समयसुन्दर	१९वाँ	१२	
१५३	६१२८	गोतमपृच्छा बालावबोध	उदयवन्त	१८३८	४	
१५४	५४३६ (७)	गोतमलघुस्तवन		१८८३	६८	
१५५	५०६६ (२)	गोतमस्वामीरास		१९०६	३८-४०	
१५६	५४३६ (३)	गोतमस्वामीरास			३-८	
					१७-२६	लि क मुनि गङ्गजी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	४४५२(५)	गोरखपत्ता	गोरखजी	१८वीं	१० वॉ	१४ कृतियो का सग्रह
१५८	४१५१	गोराबादलकथा आदि गुटका	हेमरतन	"	६०	सावडीमें रचित
१५९	७७२२(६)	गोराबादल चौपई	जटमल	"	५७-६५	लि.क. जयसौभाग्य
१६०	४६२४(२)	गोराबादलरी बात		१७८७	६-१५	सिरियारी मध्ये
१६१	७४४४(११)	गोतमरासो		१८८५	२०५-२१२	उलूकके सम्बन्धमें शकुन-विचार
१६२	४४५२(७६)	घुघूचक्र		१८वीं	१२३ वॉ	श्रुतमें 'नाहरखान राजसिधो-
१६३	४६२४(१०)	घोडारा बषाण		१७६३	११-१२	तरो छद' है
१६४	४४५२(६३)	घोडारा बषाव		१८वीं	१३० वॉ	
१६५	४७२६	घटीज्ञान		१९वीं	१	
१६६	५१२३(२)	चक्रकेवली		१८वीं	२-११	र का. स १७८१
१६७	६६१२	चर्वासमाधान		१८१८	२३६	जीर्ण प्रति
१६८	७१५४	चतुःसुटचन्द्रकिरणरी कथा		१८७७	३१	
१६९	५३६(२१)	चतुर्विंशतिस्थानकसूची			२४३-२४८	
१७०	४६१५(१०)	चदकवररी बात		१८८७	३४८-३६०	रचनाकाल स १७४०
१७१	५३४१(२)	चदकवररी यात तथा स्फुट कवित्त		१९वीं	५८-६७	
१७२	७७५३(११)	चदकवररी बात	कलश कवि	१८३७	४७-६०	चित्र स १
१७३	५४५८(१)	चदकवररी वारता	सकलकीर्ति	१८३८	४	लि.क. प मनरङ्गसागर
१७४	४६१६(३)	चवकुमररी वार्ता	हंस कवि	१८७५	४७-५४	लि.क. प हुकमसौभाग्य

राजस्थान पुरातत्वाध्येषण मन्डिर—हस्तलिपित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २०- राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७५	४१४८	चवकुवरकी वात	कवि राय	१८१६ से	१८	*
१७६	४६११ (३)	चवकुवरकी वारता	भक्तिलाभ भद्रसेन मुनि शिष्य (?)	१८३० से १८३२ १८वीं १८६५	१-६ १ १०	लि क ऋषि उमेदचंद, स्थान-ओरगाबाद, लसकर मुगजादे मध्ये रचनाकाल स. १७४७ आ क्रु ६
१७७	७३७६	चवनबालाभगवती गीत	यशोवर्द्धन	१७८६	११	
१७८	४४२१	चवनमलयगिरि चौपई	भद्रसेन भद्रसेन	१८०६ १८३४ १८वीं १८३६	१०१-१०२ ८ ५ २६-३५	३४वां पत्र अप्राप्त, बीकानेर- कलमके चित्र
१८०	४४५२ (४८)	चवनमलयगिरिरी वारता	मोहनविजय	१६वीं	१५०-१५२	
१८१	६३३६	चवनमलयगिरि चौपई	विद्याशंघि	१८७७	२५६-२५७	
१८२	७०७६	चवनमलयगिरि चौपई	मोहनविजय	१७६६	४-२०	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त
१८३	५०८४ (२)	चवनमलयगिरिरी वात (सचित्र)	विद्याशंघि	१६वीं	१८५	अपूर्ण, प्रथम व अन्तिम पत्र अप्राप्त
१८४	५४१८ (२४)	चन्द्रगुप्तस्वप्न	मोहनविजय	१८०६	४१	रचनाकाल स. १७७७, सिरोही नगरे
१८५	४६१४ (३५)	चन्द्रप्रभविवाहलानी ढाल	मोहनविजय	१८१०	८२	रचनास्थान-राजनगर
१८६	४६१८ (१)	चद्रराजाकुमरकी कथा				
१८७	७०७२	चद्रराजाचरित्र				
१८८	६८५०	चद्रराजाचौपई				
१८९	४०५६	चद्रराजा रास				

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	६३४६ (२)	चदराजानो रास	मोहनविजय	१६०६	७०-३५४	लि क हरकचद पाण्डे
१६१	७२४६	चदराजानो रास	"	१८४७	६८	रचनाकाल स १७८३
१६२	७४२०	चदराजानो रास	"	१८४६	१२३	लि.क पृथीराज
१६३	७४०७	चद्वरखाचौपाई	मत्तिकुशल	१७७८	१८	
१६४	४०६०	चद्वरलेहाचरित्र चौपाई	"	१८०५	१६	रचनाकाल स. १७२८
१६५	४७६५	चद्वरलेहारास	"	१८वीं	२६	
१६६	४७८६	चद्वरलेहारास	"	१६वीं	२४	
१६७	५०६६	चद्वरायण कथा	"	१८वीं	२	
१६८	५३७६ (१८)	चद्वरायण कथा	ऋषि कर्मचद		२११-२१३	
१६९	४७४६	चद्वराकी	मलयकीर्ति,	१८वीं	११	
२००	४६१४ (५७)	चरित्र रत्नत्रयगीत		१८७७	३१२-३१३	
२०१	६३६३	चातुर्मासिक व्याख्यानपद्धति		१६११	२४	लि क टेकचद
२०२	५१०५	चार जणारी वात		१६वीं	३	
२०३	७२३१	चार भावना (गद्य)		१७वीं	११	
२०४	६२६२	चारिप्रत्येकबुद्धचरित्र	समयसुन्दर	१६७६	२७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०५	४४५३ (३)	चित्तोडगढकी गजल	खेतल	१८वीं	६	रचनाकाल स १७४८
२०६	४८०६	चित्तोडगजल	"	१६वीं	२	
२०७	४८२२	चित्तोडगजल	"	१७८३	५	तीसरा पत्र अप्राप्त
२०८	४४५२ (१००)	चित्रवधकाक	ज्ञानसागर	१८वीं	१३४-१३५	
२०९	४७६७	चित्रसभूति चौपाई	मनराज	"	३५	
२१०	४२८७ (१४)	चेतनगीत		"	११५-११६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२११	७८१०(३)	चेतनदासकी वाणी	चेतनदास	१८वीं	२३०-२६८	
२१२	४४५२(६१)	चोबौलीराणीरी कथा	जिनहर्ष	"	११८वीं	
२१३	७४४४(१३)	चौढालियो (वानशील तप सवाव)	समयसुन्दर	१८८५	२४५-२५३	बीलाडामें लिखित
२१४	४०६१	चौयमाताजीरी कथा	अमृत कवि	१८वीं	३	लि. क. भानुकीर्ति, जयनगरे
२१५	६०६७	चौबीसचौक		१८५३	७	
२१६	६६१८	चौबीस तीर्थकरोकी पूजाविधि		१६वीं	६६	
२१७	७४२५	चौसठसांगणाविचार	सागरचव	"	१३	
२१८	५०६१	छत्तीस अध्यनगान		१६४२	१५	लि. क. प. हर्ष, मुल्तानमध्ये
२१९	४४५२(७८)	छौकचक्र		१८वीं	१२३वीं	छौकके सबधमें शुभाशुभ फलका परिचय
२२०	४३०८(३)	छोतरदासजीका सर्वया	छोतरदासजी	"	४४७-४५५	३५ छव
२२१	४८४७	ज्योतिषवत्तरी		१८४३	३०	लि. क. श्यामि भाणजी
२२२	५५२८	ज्योतिषसार	कवि कुपाराम	१६०७	४७	लि. क. रामकुवार
२२३	४४५२(६४)	जगदेवपमाररा कवित्त	ककाळी भाटण (?)	१८वीं	११६वीं	
२२४	७१७२(२)	जगदेवपरमाररी वात		१६३६	१-३५	अपूर्ण
२२५	७७५२३(१४)	जगदेवपुवाररी वात		१८३७	७१-८८	
२२६	४६१६(१)	जगदेवरी वात		१८७५	४४	अन्त में ५ अन्वय गातएँ हैं ।
२२७	४४५२(७१)	जड भरथरा कल्या इलोक प्रावि		१८वीं	१२१ वीं	सवाई कूरम नरेश (जयपुर) की पराजय और मारवाडके वल्लत-सिंहकी विजयका वर्णन, युधसिंह हाडाका वर्णन भी है ।
२२८	४८४८	जन्मपत्रीगणित		१६वीं	२६	

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२६	४५२४	जन्मपत्रीगणितक्रम (अस्तुत्य)		१६वीं	२५	
२३०	६४३४	जन्मपत्रीप्रकार		१७५६	६	
२३१	७४२७	जम्बूगणरत्नमाल		१८८०	५८	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३२	६२६८	जम्बूगणरत्नमाल		२०वीं	३६	
२३३	४२७३	जम्बूगणरत्नमाल	आणद जेठूमल	१६वीं	४३	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३४	४१५७	जम्बूचरित्र रास	पदमचद मुनि	"	३३	लि.क परताबाई, स्थान-अजमेर
२३५	७०४६	जम्बूचरित्र		१८७२	५५	
२३६	७५३३	जम्बूचरित्र		१७६६	६०	
२३७	७६०३	जम्बूचरित्र		१८६१	११३	
२३८	५३७६ (३)	जम्बूस्वामी कथा			४२-८०	विहारी विप्रेण लिखित
२३९	६७३५	जम्बूस्वामी कथा		१८५६		लि.क. ऋषि माणकचद
२४०	६७८१	जम्बूसरकी कथा		१६वीं	४	
२४१	४०६३	जम्बूस्वामीचरित्र चौपई	पद्मचद	१८५६	३३	लि.क जीवनराम ऋषि, स्थान-नागोर
२४२	७३५२	जम्बूस्वामीकथा		१८६६	२०	चुरु मध्ये लिखित
२४३	६८८४	जयसुखवेद्यक		१७३३	८	लि.क. मतिविमल
२४४	५४१८ (१३)	जलगालणविधि		१६वीं	११४-११६	
२४५	४४५२ (३२)	जलाल गहाणीरी वात		१८०७	३५ से ४०	लि.क प प्रीतसोभाग्य गणि
२४६	४०६२	जलाल गहाणीरी वारता		१८६०	२०	लि.क. ऋषि टेकचद सरियारीग्रामे
२४७	७७६६ (५)	जलाल गहाणीरी वारता		१८५६	२-४२	
२४८	५८६५	जलालबूबनावारता सचित्र		१८वीं	३२	चित्र स १२

राजस्थान पुरातत्त्वविशेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४६	४०६४	जामवतीचौपई	सुरसागर	१८४७	७	वीकानेरमें लिखित
२४७	४८१७	जिणरस	वेणीराम	१८४१	१७	र का स १६५१
२४१	७१०७	जिनेश्वरपूजापद्धति	सोमसुन्दर सरिनिधय	१८वीं	१	"
२४२	५०७३	जीवक्यासज्जाय	प्रभुचत	"	१२१-१२६	" स १८५८
२४३	७४४४ (३)	जीवविचार		१८८५	२४२-२४४	अर्थ सहित पहेलियाँ भी है।
२४४	४६१४ (२६)	जीवसिखामण रास		१८७७	३१-३६	"
२४५	४६०५ (७-६)	जुवानीरा दूहा आदि		१६वीं	५३	"
२४६	५४५३	जैन्बोलसग्रह	जिनवास	१८७७	३००-३०२	"
२४७	४६१४ (५४)	जोगीरास	"	१६वीं	१४३-१४५	"
२४८	५४१८ (२०)	जोगीरासा	भगोतीवास	"	१५२-१५४	लिफ रामचन्द्र
२४९	५४१८ (२५)	जोगीरासा	जिणवास	१७२६	१४-१८	"
२६०	४२८७ (४)	जोगीरासो		१६वीं	१७०-१७१	"
२६१	५४१८ (३१)	टण्डाणा गीत		"	६६	रचनाकाल स १८५६
२६२	६८४१	ढाल, पट्ट आदि	चोयमल	"	१६	लिफ ऋषि खुशालचव
२६३	४०६७	ढालसार		१८६७	११६	वेशी रागोमें पव
२६४	६७३७	ढालसागर	केशराज	१८वीं	१०१	रचनाकाल स. १६७६ हरिवश-
२६५	६१२२	"	गुणसागर	"	७७	गाथा
२६६	७२२४	"	"	"		ढाल १५१
२६७	७३७५	"	"	१७६८	७६	
२६८	४०३३	ढालसागरप्रबन्ध	"	१७४०	१०४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६८	४०६६	ढालसागरप्रबन्ध	गुणसागर	१७५६	८६	लि. क. ऋषि जोधनजी
७०	५०८४(१)	ढोलामारु, सचित्र, अपूर्ण, त्रुटित		१८३६	१४	स्थान-मैदपाट श्रीसाहवा नगर चित्र स. ३६ बीकानेर में लिखित पत्र स. ४० पर ग्रन्थ का अन्तिम अंश है
२७१	७७२०(१)	ढोलामारुचौपई	कुशललाम	१७५६	१-२३	रचनाकाल स १६७३
२७२	६४३८	ढोलामारवणीचौपई	वाचक कुशललाम	१८वीं	२४	स्थान-जैसलमेर, अमरसरी पठनार्थ
२७३	५८६६	ढोलामारवणी दूहा, सचित्र		"	६१-११४	रचनाकाल स १५३०, चित्र स. ३३
२७४	७७४७	ढोलामारुनी घात	कुशललाम		५६	रचनाकाल स १६१७, भवरजी अजयसिंहजी पठनार्थ
२७५	६७२०	ढोलामारु दूहा		१६वीं	४७	जैसलमेर में लिखित ।
२७६	४६२४(१३)	ढोलामारु चोपई	कुशललाम	१७७०	१-३४	
२७७	७७४८	तर्कप्रबन्ध	सरूपवास	१६वीं	५७	
२७८	७००७	ताजिकसार	हरि भट्ट	१८५०	२६	
२७९	४८७५	तुरकशकुनावली (रमलग्रन्थ)		१७६६	३	लि. क. देवेन्द्र सौभाग्य
२८०	७५३५	तेर्जासिंहजीरा सवैया		१७४३	१७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२८१	४६१४(५०)	तेरहकाठिया		१८७७	२७६वाँ	
२८२	७६०४	तडुलवेयालियपहल	पाशचन्द्र	१८३३	४१	लि. क. ऋषि मोतीचंद डूगरसी

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२३	७२६५	थावन्चाचौपई सविवरण	सययसुन्दर	१८वीं	१८	रचनाकाल १६६१
२२४	४६०४ (२)	थावस्वेवतारी वात		१८६१	३५-६५	लि क कल्याणसौभाग्य
२२५	४०६८	यूलभद्रनवरसो	उदयरतन	१८४६	५	रचनाकाल स. १७५६
२२६	४८३२	यूलभद्रनवरसो	"	१८५२	८	लि क राजविजय
२२७	६२५५	यूलभद्रनवरसो	"	१८वीं	२	
२२८	७४४४ (१४)	यूलभद्रनवरसो		१८८५	२५३-२६०	
२२९	७४२१	वण्डक सस्तवक		१९वीं	६	
२३०	६५३१	द्रौपदीरास	कनककीर्ति	१९वीं	४१	जंसलेर में रचित
२३१	६३५६	द्रौपदीरास चौपई	"	१८१५	४०	जयपुर में लिखित
२३२	६४१६	द्वावशाभावफल		१९वीं	४	
२३३	७४४४ (५)	वण्डकप्रकरण सटवार्थ		१८८५	१३६-१४३	लि रु. नेमविजय
२३४	६४४६ (५)	वत्तलाल को कयको	वत्तलाल	१९वीं	५-११	स १८५४ में रचित
२३५	४६१४ (४६)	वर्धन वत्तीसी	वीप ऋषि	१८७७	२७७-२७८	लि. स्यान्-ग्रहपुर
२३६	६५४४	वशार्णभ्र चोढाळियो		१९वीं	३	लि क उपाध्याय पद्मउदय गणि
२३७	६३६६	दशावली		"	६	प्राच्यत पर शोभन
२३८	६६४८	वाडूजीका शव्व	वाडूजी	१८००	७८	गुटके में विविधि कृतियों का
२३९	६६२६	वाडूजीकी याणी श्रावि गुटका	वाडूजी श्रावि	१७८७	२६८	सग्रह है
३००	६६४६	वाडूजीकी साली	"	१८वीं	६६	लि क लक्ष्मणदाग
३०१	६६५०	वाडूजीकी साली	"	१८६६	६७	विभिन्न सन्तो के ४४४० पदों
३०२	४३०८	वाडूवाणी श्रावि	"	१८वीं	४१०	का सग्रह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०३	६६३७(१)	दाहूवाणी आदि	दाहूजी आदि	१८११-	१०६	लि क रामदास, निराणा ग्रामे
३०४	६६५४(१)	दाहूशब्द	"	१८१६ १९वीं	६५	दाहू, कबीर, सूर, मीरा आदि के पदों का संग्रह
३०५	४१४६	दाढाळारी वात	दशार्ण भद्रराज	१८१७	२३	
३०६	५४३६(६)	दानशील तपभावना	ऋषिकुशलशिष्य	१९वीं	४४वीं	
३०७	५४३६(११)	दानशील तपभावना	समयसुन्दर वाचक (?)	१६६२	४६-५६	
३०८	६८४५	दानशील तपभावनासवाद	समयसुन्दर	१९वीं	४५	सागलथर मझादि
३०९	५६६७	दानादिकसवाद	जिनसुन्दर	१९वीं	५	
३१०	५४१८(१७)	दानाधिकार	कवि ज्ञान	१९वीं	१२-१८	
३११	७७२०(२४)	दिलीपातसाहीरो विवरो	म. जसवन्तसिंहजी	१९वीं	२६	पुरुष-शु गार और स्त्री-शु गार के १६-१६ दूहा
३१२	४०१७	दिवालीकर्य बालावबोध		"	२००वा	हदिरस की प्रशंसा में रचित
३१३	४४५२(२८)	दूहा	रूपचद	१८५७	१२३वीं	लि क मानसिंह
३१४	७७२१(१३)	दूहो श्रीमहाराज जसवन्तसिंहजीरो		१९३१	९	
३१५	६०१५	देवकीरी चौपाई		१९वीं	१	
३१६	४४५२(७६)	देवीचक्र		१९वीं	१९	
३१७	७३७३	देशना शतक		१९वीं	१	
३१८	४८५५	दोषकेवली		१८७१	१६२-१६५	
३१९	४६१४(५)	दोहाशतक		१८७१	३८४-३८६	
३२०	४६१५(१३)	धमाळ		१८८७		

राजस्थान पुरातत्त्वविषयक मन्वि-हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	४४५२ (५१)	धमाल वसन्त	लालचंद	१८वीं	१०७ वीं	लि स्या जैसलमेर
३२२	७३६६	धर्मबुद्धि चौपाई	लालचंद	१७६०	१६	अपूर्ण
३२३	५४१८ (१५)	धर्मवत्तीसी		१६वीं	११६-१२१	र का सं० १७४२
३२४	७७५३ (१२)	धर्मवावनी		१८३७	६०-६६	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२५	४०६६	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपाई		१८२५	२५	
३२६	५२२३	धर्मोपदेश		१६वीं	१३	
३२७	४८०८	धामनो वर्णन		"	६	
३२८	५४३६ (१२)	नरक रो चौढालियो	गुणमागर	"	३	६८वा पत्र अप्राप्त
३२९	६६५४ (२)	नरमीमाहेरो	वसन्त	१८८८	६५-६६	
३३०	५२०२ (२)	नरमीजीको माहेरो	ममयसुन्दर	१८८५	८७-९१	रचनाकाल स १६७३
३३१	४०७०	नलदमयस्तीचौपाई		१८३६	२५	
३३२	६६१३	नवकारमन्त्रदान		१६वीं	१३५	
३३३	७६६७	नवकारवालीनी सञ्ज्ञाय	नदिघविगय	"	?	
३३४	६४१२	नवपवपूगा		१८८५	१५	
३३५	५४६१	नसीहतनामा श्रीर देवीवासके कवित्त		१६वीं	१३८	स्फुट
३३६	४४५२ (४)	नागदमण		१८वीं	७ से ६	
३३७	७०७३	नागदमणचौपाई	साईदाग	१८२५	६	
३३८	६३६०	नागदमण छव		१८वीं	४	
३३९	४६२८ (३)	नागदमणकथा		१७८७	१५-१८	
३४०	६४५० (२२)	नागमत्तर		१८वीं	२३ वीं	सांग-विग उतारनेके २० पत्र
३४१	५०६६	नागिना भयदेय रान	गमयसुन्दर	१७६१	५	वि क प ईन्दर, अष्टमवाबादे

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	४३१२	नाथियाका सोरठा	नाथिया (?)	१६वीं	११	१४० सोरठे
३४३	६६३७ (३)	नामदेवजीका सबव	नामदेव	१८११-१६वीं	१८७-२०१	लि.क रामदास, निरोणा ग्रामे
३४४	४८३१	नामप्रताप	रामचरण	१६वीं	१२	लि.क कायस्थ भावसिंह
३४५	७८१६ (३)	नारायणलीला	माधवदास	१८३१		
३४६	४४५२ (५०)	नासिकाविचार	वातिक नन्ददास	१८वीं	१०७वीं	
३४७	६७४६ (१)	नासिकेतपुराणकथा	नन्ददास	१६वीं	८८	
३४८	६११०	नासिकेतपुराण भाषा	स्वामी नन्ददास	"	५१	
३४९	४२६३	नासिकेतमहापुराण भाषा	स्वामी नन्ददास	१८३७	४४	लि स्या लालुवास प्रतापसिंहराज्ये
३५०	५४१८ (३३)	निर्वाणकांड	सूरज	१६वीं	१७३-१७५	
३५१	४४५२ (२५)	निसाणी	यशोदेवसूरिशिष्य	१८वीं	२४वीं	
३५२	५०७७ (२)	नेमराजीमती सञ्ज्ञाय	कवियण (?)	१८०२	१ ला	
३५३	४६१४ (३४)	नेमिनाथनी साली	समयसुन्दर	१८७७	२५५-२५६	र का स १६७० सूरतबदर
३५४	५३३०	नेमराजुलका सर्वया	"	१६वीं	२५	
३५५	७३०३	नेमराजुल बाराभास	कमलबधु	"	१	लिखित जैपुरमध्ये
३५६	६३०४	प्रत्येकबुद्धचौपाई	समयसुन्दर	१८६७	२४	लि.क. परमानन्द शिष्य जंतसी
३५७	६५२६	प्रत्येकबुद्धचौपाई	"	१८२५	२८	र का स १७२२
३५८	५२७०	प्रद्युम्नप्रबन्ध	कमलबधु	१८१३	२८	चूडामणिने लिखवाया
३५९	५२७४	प्रद्युम्नप्रबन्ध	समयसुन्दर	१७३६	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
३६०	५०६८	प्रदेशीरायचौपाई	समयसुन्दर	१८६०	२६	पाठणमध्ये लिखित

क्रमांक.	गथांक.	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६१	६०३३	प्रबोधचितामणिचौपई	धर्ममन्दिर गणेश	१८५८	७७	लिखित बीकानेरमध्ये
३६२	५१३७	प्रश्नोत्तरसाङ्गशतकनो बीजक	मगनीराम	१९वीं	५७	र का स १८८६
३६३	४६१५ (१४)	प्रश्नोत्तरीरत्नमाला	जिनहंप	१९वीं	३८६-३९५	आष्ट २ पत्र मसीवृत्त
३६४	५१०१	प्रहेली		"	५	
३६५	५३२६	प्रश्नशकुनावली	क्षमाकल्याण	१९०६	१२	लि क हररुचद पाडे
३६६	६३४६ (१)	प्रश्नोत्तरसाङ्गशतकनो बीजक	मोहनविजय	१८६८	७०	लि क बरतावर, गीजानेरमध्ये
३६७	६८५४	प्राकृतप्रबोधसग्रह	जनराज श्रावि	१८वीं	३	
३६८	४७६२	प्रास्ताविक दूहा	वृन्द श्रादि	"	३	
३६९	५३६५	प्रास्ताविक दूहा	"	१९वीं	३	लिखित राजपुरमध्ये
३७०	४८०६	प्रास्ताविक वोहरा		१८३६	३	पत्नी का पत्रि के प्रति श्रादि
३७१	४८१५	प्रास्ताविक वोहरा		१९वीं	३	
३७२	५३४५	प्रास्ताविक पत्र	उर्वरगज श्रादि	१८वीं	८	
३७३	४४५२ (६६)	प्रास्ताविक श्लोकदूहा यादि	समयमुन्दर	१३२-१३५	७	श्रुति भीरुमगोपठनारं
३७४	४७६३	प्रियमेलकचौपई	"	"	६	
३७५	४८२१	प्रियमेलकचौपई	"	१७वीं	६	त्रि क नगिकीति गणि
३७६	६८७५	प्रियमेलकचौपई	"	१९वीं	८	रागपुरमध्ये
३७७	५४१८ (२८)	पद्यगतिकी चेली	गृनि हर्षसोनि	"	१६५-१६७	र का म १६२३
३७८	५८५०	पद्यगानयनविधि भागा	मेघराज गण्डिप्रियाप्राप्त	"	२	र का. १७२३
३७९	४६१४ (५८)	पद्येन्द्रियकी चेली	डागुरसो	१८७७	३१३-३५	र. म. १५८५
३८०	५२६५	पद्येन्द्रियचौपई		१८७७	५	उर्जाप्राप्ते लिखित
३८१	५३४१ (१)	पद्मापीरमने यात		१९वीं	२ मे ५७	लि क जोरा गोरामण्ड

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८२	४६१५(४)	पद्मावीरमदेरा वात	शेरसिंह	१८८७	७६-१३४	७८वा पत्र खण्डित
३८३	७१६६(१)	पद्मावीरमदेकी वात	हेमरतन	१९७७	५१	गुटका
३८४	४८०७	पद्मिनीचौपई	हेमरतन	१८२७	३१	
३८५	४६१०	पद्मिनीचौपई	सकलकीर्ति	१९वीं	२०७वाँ	
३८६	४६१४(१०)	पद		१८७१	२४८-२४९	स्फुट
३८७	४६१४(३१)	पद		१८७७	२२	
३८८	४०७२	पदसमीपदसमावतीचौपई	मुनि माल	१८वीं	२२	
३८९	७७२१(५)	पनरबादाशाशकुनावली		१८२५	११८-११९	
३९०	४६१६(६)	पनरसी विद्या		१८८१	८४-९६	
३९१	४४५२(४६)	पनरसी विद्या स्त्री-चरित्र		१८०५	१०३से१०७	लि क प प्रीतसोभाय गणि
३९२	४०७६	परदेसीप्रबन्ध	ज्ञानचद	१८४८	३१	
३९३	७४१२	परदेसीप्रबोधचौपई	"	१७५५	२२	
३९४	४८२७	परदेशीराजारी चौपई		१८८५	२९	लि.स्था बड़ली
३९५	५४१८(२६)	परसादि (प्रभाव)	गोपालदास	१९वीं	१६७-१६८	
३९६	४०७३	पलकदरियावरी वात		"	३६	लि क. श्रबुजी
३९७	४०७४	पाडवचरित्रचौपई	लाभवर्द्धन	१७८५	५६	र.का १७६७
३९८	७७२३	पाडवविजय	सलूकदास	१९२६	३७७	लि.क जीताराम, फतेहपुर मध्ये
३९९	४६१४(५५)	पार्श्वनाथआदित्यवारकथा		१८७७	३०२-३११	स १६७० की प्रति से प्रति- लिपि की गई
४००	६४३३	पाशाकेवली	गर्ग ऋषि	१९६६		लि क रूपां साध्वी
४०१	७६७०	पाशाकेवली		१९वीं	५	जोधपुर में लिखित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रंथ]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४०२	५१२३(३)	पाशाकियली श्रवजवी	चन्द्र (?)	१८वीं	१२-१६	
४०३	६२८२	पाशाकियली श्रवजद		१६वीं	१६	चित्र स ७ प्र स ५४५७ के साथ सम्युक्त।
४०४	७८२३	पिङ्गलरो समीपो		१८वीं	८	यान्तानगरे, मालवसे लिखित
४०५	४४५५	पिङ्गलशास्त्र टीका	मुनि हर्ष	१८७१	२३	
४०६	७१४३	पुण्डरीककुंडरीकनी ढाढ	हर्षचन्द्र गणि	१६वीं	५	
४०७	५११६	पुण्यसारचरित्र		१८७५	३	र का स. १६६२
४०८	७५३०	पुण्यसारचौपाई	पुण्यकीर्ति	१८वीं	५	सागानेर मे रचित
४०९	६४३७(१)	पुण्यदरकुवरकथा	मातयेय	"	४८	जीर्ण शौर उद्धित प्रति
४१०	४८२६	पुण्यदरकुवरचौपाई	रतनविमल	१६वीं	४	
४११	४६७६	पुण्यमाविचार	चन्द्र कवि	"	३	
४१२	५३३२	पुण्येश्वरप्रवादी	"	"	१२६	
४१३	४६०३	पुण्यीराजरासो	"	"	६६	
४१४	७१२८	पुण्यीराजरासो	"	१७४७ मे		
४१५	७१५०	पुण्यीराजरासो	"	१७५३	१६२	जीर्ण मुद्रका
४१६	७१६४	पुण्यीराजरासो (पद्यावतीको समो)	"	१८वीं	७६	ति क चिरञ्जी युक्तमाल
४१७	७१६८	पुण्यीराजरासो आदि	"	१६४१		रेखी निपासी
४१८	७१६६	पुण्यीराजरासो आदि	"	२०वीं	११८	कई रचनाओं का मयूर
४१९	७१६६(२)	पुण्यीराजरासो (महोद्याको समो)		"	"	
४२०	४६१४(१६)	पोस्तोनी रास	ज्ञानभूषण	१६७७	"	
				१८७१	२१८-२२२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२१	४०७१	पोस्तीरा रासो	बल्लो	१८८२	४	
४२२	७७२२ (१२)	फुटकर श्रौषध		१८वीं	११६-१२५	बधिरता, बायगाठ आदि रोगों की श्रौषध
४२३	४६२४ (१८)	फुटकर कवितादि		१८वीं	२७-२९	
४२४	४६२४ (७)	फुटकर ज्योतिष		१७९३	१४-१५	पन्द्रह तिथियों के दोहे आदि
४२५	५२७२	फूलकुवर फूलकुवरीरी वात		१९१२	१४	र का स १८५२
४२६	५०८१	फूलकुवर फूलकुवरीरी वात		१८९०	७२	चित्र स ४५; र का. स १८३०
४२७	५५००	फूलजी फूलमतीरी वात		१८४९	२६	श्रुत में चौढाळिया आदि
४२८	४६१४ (३७)	ब्रह्मजिणदासनी वीनती	ब्रह्म जिणदास	१८७७	२५८-२५९	
४२९	७७४३ (३)	ब्रह्मनिरूपण	राजसिंघ	१७८४	४६-५३	लि क बाई सिरिकवरी
४३०	५८६७	बगसीराम प्रोहित हीराकी वात	कवि तेण	१९वीं	६५	*
४३१	७७५३ (७)	बामणवाडरो स्तवन	कमलकलश शिष्य (?)	१८३७	३९-४१	
४३२	४६१४ (६२)	वाई जतन नं लीलवणनी विगत		१८७१	३२१ वीं	
४३३	७१३९	वाईस परीक्षाकी चौपाई	ऋषि रायचन्द्र	१८२२	४	र.का. स. १८२२
४३४	४३२०	वातसग्रह		२०वीं	५२२	राजस्थानी भाषा की
४३५	७८१७	वादशाही हाल	चन्द्रकीर्ति	१९वीं	८-५०	चौबीस प्रकीर्ण वातश्री का सग्रह,
४३६	४६१४ (२७)	वारह अनुप्रेक्षा		१८७७	२४४-२४६	
४३७	४७२१	वारह पुनमरो विचार		१९वीं	१	
४३८	४७३७	वारह भवनफळ		१८४०	५	लि क सुमलिसागर

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पग सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३६	७४४४(१५)	वारहभारना	जयसोम शिष्य	१८८५	२६०-२७०	जैसलमेर में रचित
४४०	७७५४	वारहमासीसंग्रह		१९२२	१५	भरतराजाका वारह मासा रका स १८६०
४४१	(१,२,३)	वारहमासी	रामचन्द्र	१८वीं	११६-१२७	
४४२	७६२१	बालचन्द्रवत्सीसी	बालचन्द्र	२०वीं	७	
४४३	४१४२	दुहितेणचौपाई	तिलक सूरि	१९वीं	६६	
४४४	७५४२	बोलविवरण	प्राचायं केशवजी (?)	१७वीं	६२	
४४५	७७५३(१०)	भमरागीत	महमद	१८३७	४५-४६	
४४६	५८८५	भक्तसार	शालिग्राम	१९वीं	२२	
४४७	७७२१(१)	भङ्गीपुराण	हरवारा	१८२५	१-२५	रका न १८५५ शिव स्तुति, कई म्यानों पर चित्र भी है।
४४८	७७४४(४)	भजनसंग्रह	चंदा	१७५८	१८-२२	
४४९	५१२३(७)	भङ्गुली	भट्ट कवि	१८वीं	२६-४१	लि. क. चंनकुयरी
४५०	४४५२(१७)	भडतीरूहापचीगी	"	"	१९ वीं	
४५१	६७२८	भडतीपुराण	गण्ड कवि	१८८१	१२	
४५२	५१२२	भडतीरा रूहा	"	१८२८	३	
४५३	४४५२(६८)	भडतीवाष्य	"	१८वीं	१३२ वीं	१५ रूहा
४५४	५८००	भडतीवाग्य	"	१९१३	१५	लि. क. प्रजयानी पत्तपर
४५५	७६३०	भरताभिकार	"	१७६३	५३	लि. क. पौरुणी, पउमनामचे
४५६	४८३०	भयानीपुन्य		१९वीं	२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५७	४७६६(२)	भाषा लीलावती (पद्यानुवाद)	लालचन्द	१७७५	१ से १५	म रार्यासिंह, बीकानेर के अमात्य कोठारी नेणसी पुत्र जैतसी की प्रार्थना से उनके गुरु द्वारा रचित
४५८	७४१०	भुयनद्वारविचार		१९वीं	२०	
४५९	७७२२(१०)	भैरव आदि की बोलीविचार		१८वीं	१०७-११४	
४६०	६७०२	भोगलपुराण (उसामहेश्वरसवाद)	शान्तिहर्ष	१७७२	३०	लि.क टीकूदास
४६१	४८२५	मन्थोदरचौपई		१८४८	२३	लि.क क्षमा सौभाग्य
४६२	४७९८	मदनवार्ता	खुर्यालचन्द जालधरी	१८वीं	१०	
४६३	४४५२(१)	मदनशत (अपूर्ण)		,	२	
४६४	४३१५	मधुमालतीकथा	चतुर्भुजदास कायस्थ	१८८८	८१	लि क तुलसीराम कनौजिया, सवाई जैनगर
४६५	४९११(१)	मधुमालतीकथा	"	१८३२	१ से ४१	
४६६	५४५७	मधुमालतीकथा (सचित्र)	"	१९वीं	२-८७	चित्र स. ८७
४६७	५०७८	मधुमालतीकथा (सचित्र)	"	१८८१	२१६	चित्र स २२३
४६८	५०७९	मधुमालतीकी वात	चतुर्भुजदास	१८वीं	८८	लि.स्था. पालनपुर
४६९	४०८४	मधुमालतीचौपई	"	१९वीं	६०	चित्र स. ९०
४७०	५०८०	मधुमालतीरी कथा	"	१८वीं	१२५	लि क सेसमल्ल, कापरडा नगर
४७१	४९१५(८)	मधुमालतीरी वात	"	१८८७	१४१-१९९	हाडोती फल्लम के २७० चित्र
४७२	५४१८(१२)	मनभवरा गीत	कवि माल	१९वीं	११३-११४	लि क हररूप, जालोर
४७३	४९१४(२९)	मनोरथमाला		१८७७	२४८ वाँ	

राजस्थान पुरातत्त्वव्यवस्थापन विभाग—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. संख्या	विकीप उल्लेखनीय
४७४	७७२२ (४)	मयण भट्ट बृहदा	गोपालदास	१६वीं	४८-५२	३० पृष्ठ
४७५	४६१४ (४४)	मखेचीनी सुखडी	गान्धता	१८७७	२७२-२७४	र. का. १६६६
४७६	५४२७ (५)	मलयामुन्वरीचोपई	गङ्गवास पर्वतमुत्त	१८वीं	६४-१४८	
४७७	४४५२ (१८)	महावेवजीरो छन्द		१८७७	१६ वीं	
४७८	४६१४ (५३)	महापुराणनी दीनती		१६वीं	२५८-३००	२१
४७९	६८५१	महावतामलयमुन्वरीरास		१८वीं	८	
४८०	४७४३	महाराजा वीलतसिंहजीजन्मो- वाहरण		१६वीं	३३-३६	
४८१	५४३६ (५)	महावीरजीरो पारलो		१७६८	२	
४८२	७३५६	महावीर बगोठण जीमणवार विगत				
४८३	७०५८	महासती सीताचरित	पुद्द कथि	१८७१	८८	ति म्या गयोप्यापुरी र. का १७७३ (?)
४८४	४६५२ (१०)	माताजीरो चरवा	वीरानजी	१८वीं	१३ वीं	
४८५	४४५१ (१२)	माताजीरो गीत	कनि सारग	१८०८	१६ वीं	ति रु प्रीतसोभाग
४८६	४४५२ (११)	माताजीरो छन्द	चानण लिखियो	१८०७	१६-१६	ति रु प्रीतसोभाग, वजेडा गाम
४८७	४४५२ (८५)	माताजीरो छन्द		१८वीं	१७६ वीं	
४८८	७७२१ (११)	माताजीरो छन्द	कुदासलाभ	१६३१	१७७-१७६	ति क अमरसिंह लिखियो
४८९	६६११ (४)	माययागल कामकन्वलाचोपई	"	१८३०	६	विजयपुरमन्ने चिनिग
४९०	६६२४ (१६)	"	मोहनचिगप	१७६२	१-२२	मनहसपुर पाठण, बुर्गाना राठोड राज्जे रचित
४९१	५११८	मानवुन मानपतीचोपई		१८वीं	२१	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	६१३८	मानसुङ्ग मानवती रास	मोहनविजय	१८०६	४४	र.का. सं १७१०
४६३	६१३६(१)	मानसुग मानवती रास (सचित्र)	"	१८७८	६५	चित्र सं ८८
४६४	६२६७	मानसुग मानवती रास	"	१६१४	३६	लि क आलमचद मकसूदाबाद,
४६५	६३३५	"	"	१८२४	५०	अजीमगजमछ्ये
४६६	६५३४	"	"	१८७६	७६	
४६७	७३६६	"	अभयसोम	१८२८	११	र.का सं १७२०
४६८	७५२८	मानवती रास	मोहनविजय	१८६२	८४	
४६९	७५५७	"	"	१७६७	३५	र स्या अणहिलपुर पाटण
५००	४४५२ (८०)	मासधिवक्र	"	१८वीं	१२३ वा	बोलने के फलाफल का विचार
५०१	६५२६	मुनिपति चरित्र (गद्य)	"	१६वीं	२१	
५०२	६३५५	मुनिपति चरित्र बालाबबोय	"	१७६६	३१	
५०३	५४३६ (४)	मुनिमालिका	"		२६-३३	
५०४	६२७२	"	कल्याण	२०वीं	२०	र का सं. १६३६
५०५	५८६१	मृगलोखाचौपाई (सचित्र)	मुनि सागरचन्द्र	१८३८	५३	चित्र सं ४८
५०६	६७४५	मृगाङ्क, लेखाचौपाई (सचित्र, अपूर्ण)	"	१६वीं	३६	चित्र सं ४२
५०७	७०५७	मृगावतीचरित्र	समयसुन्दर	१८वीं	३८	र का सं १६२८, प्रथम पत्र अप्राप्त
५०८	४०८६	मृगावतीचरित्र चौपाई	"	१८वीं	२४	र का सं १६६१ (?)
५०९	६५३३	"	"	"	२३	
५१०	६२५०	मृगावतीचौपाई	"	"	१३	
५११	६८३८	मेघकुमार चौडाळियो आदि	"	१७३८-४६	५३	जीर्ण प्रति, १२ कुतियोका संग्रह

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर-हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२, २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पग सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१२	४२८२	मेघमाला		१६वीं	५	लि.क. भगवानवास
५१३	४६१४ (१६)	मेरुजयमाला		१८७१	२०६वीं	
५१४	४४५२ (६०)	मेघसक्रांति आवि		१८वीं	११७वीं	
५१५	६६२२	मंणरेहा चौपई		१६४६	७	लि.क. मुनि केशरीचन्द
५१६	५१०२	मोती कपासिया वाव	श्रीसार	१८वीं	५	लि.क. मुनि नित्यसागर रोडामध्ये
५१७	७०७७	मौनएकवासीकथा (गौतममहावीर- संवाद)		१८२४	५	
५१८	६७६२	मोहमखराजाकी कथा (पद्य)		१६५३	१३	लि.क. गरीबवास
५१९	५६०१	मोहविद्येक चौपई	धर्ममन्दिर	१७६८	६६	लि.क. भीमविजय
५२०	६४००	योगवृत्तिस्थाध्याय	नयविजय	१६वीं	५	योगक से कटे जोर्ण पग
५२१	५४१८ (१८)	योगमारके दोहे	योगतन्त्र मुनि	"	१३४-१६०	१०७ दोहा
५२२	५४५०	योगासनमाला (मन्त्रि)		१८४६	११०	लि.क. स्वामी शो-भाराम पानीपुरामध्ये
५२३	६०३८	रत्नसुमाररास	महजसु.२२	१८वीं	११	
५२४	४०८७	रत्नचूड चौपई	कालनिधान	१८१८	१२	रत्ना म, १७३८
५२५	४८१६	रत्नपालरास	मोहनविजय, बुधन्पणिविजय	१८६७	५४	लि.क. त्रिमोभाय भामा- मोभायदिष्ट
५२६	६०५७	"	सूरविजय	१६००	७६	
५२७	४६१४ (३०)	रत्नपग		१८७७	२४८वीं	
५२८	६५३२	रत्नपालरास	मेयक सूर	१८२७	३२	रत्ना म. १७२२, लोडी पाट- माये, पपम पग सशस्त्र

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२६	४८३३	रतन महेशदासोत्तरी वचनिका	खडियो जगो	१७४१	७	लि.क प्रमोद मुनि, रोहितासपुरे
५३०	४६१५ (३)	रतनाहमीररी वात (पद्यबद्ध)	कवियण (?)	१८८७	४२-७५	२०० पद्य, लि.क. प्रभुदान
५३१	५४१८ (२६)	रविकथा	तिहुरा गिरिनिवासी गंगोत्रीय	१६वीं	१५४-१६३	लि.क रामसागर
५३२	५४१८ (२७)	"	म लूकपुत्र (?)	"	१६४-१६५	
५३३	७४४४ (१६)	रागपदबहोत्तरी	भानुकीर्ति	१८८५	२७०-२६४	लि.क नेमविजय
५३४	४२८७ (६)	रागपदसग्रह	आनन्दधन	१८वीं	१७-२८	
५३५	५१००	"		१६वीं	३	
५३६	५४१८ (३४)	रागरासाष्टक		"	१७५-१७६	
५३७	७७२० (२३)	रागानामोपरि विरहसुभाषित	रसिक (?)	१७६५	६-११	
५३८	४६०६ (२)	राजसभारजन		१७६८	१-२५	# र.का स १७५६, ३७० दोहा
५३९	४६१५ (१७)	राजाचवरी वातरा दूहा		१८८७	४०६-४१०	
५४०	४६१६ (२)	राजाभोज, माघपडित नं डोकरीरी वात		१८७५	४५-४६	लि.क सौभाग्य गर्ण
५४१	७७२१ (६)	राजा रत्नरी वचनिका	खिडियो जगो	१८२५	११६-१४१	
५४२	७७२० (२१)	राजावली			७ वीं	स १२६७ से १७७० तक के
५४३	४७६६	राणारी वशावली			१	सीसोदिया राणाओका वंशपरिचय
५४४	४६१४ (८)	राजुलपवीसी चारहमासी	राजुल	१८वीं	१६७-१६८	नामघरानरेश से अमरसिंहपुत्र
५४५	५४१८ (३५)	राजुलपत्रीसी	आनन्दचद	१८०६	१-६	सप्रामसिंह तक

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४६	७१४४	राजुलपचीसी	लालचव	१८५८	४	लि क सरूपा, आगरामध्ये
५४७	७२४३	राजुलपचीसी	"	१९वीं	२	
५४८	५१०४	राडोड रतनमहेस्वामीतर वचनिका	खिडियो जगो	१८०२	३७	लि क धर्मसुन्दर, प्रथम पत्र अप्राप्त
५४९	४४५२ (९१)	राठोडारी वशावली	गाडण माधोदास	१८वीं	१२९ वीं	१११ राजाओं के नाम
५५०	४८३४	राठोड नाहरखानरो छन्द		१९वीं	१	*
५५१	६४४६ (७)	राधाजीकी बारहखडी		"	१४-१६	
५५२	७७४४ (३)	राधाविलास		१७५८	८-१७	
५५३	४४५२ (१६)	रामकिशनजीरो छन्द	तावण्यकीति	१८वीं	१६ वीं	
५५४	५६०३	रामकृष्णचौपाई	रामनाथ	१७११	३०	र का स १६७७
५५५	६४६७	श्रीरामचन्द सवारी (गद्य)	रामनाथ	१९वीं	६	
५५६	७८१० (२)	रामचरणवासजीका कृतिसग्रह	रामचरणदास	१८वीं	२६-२३०	७ कृतियो का सग्रह
५५७	६८५३	रामजसरसायन		१८६४	११४	र का स १६८७
५५८	७७४४ (१)	राममञ्जरी	गोविन्ददास	१७५८	१-२	
५५९	६३५७	रामयशोरसायन	केश राज	१७६४	८६	
५६०	६७४६ (२)	रामरक्षाभाषा	रामानन्द	१९वीं	८८-९२	
५६१	७६०६	रामरक्षामत्र	"	"	३	लि क केशवदास
५६२	४६२४ (५)	रामगुणरासो	माधोदास वधवाडिया	१७८८	१-३२	लि क जयसोभाग्य गणि
५६३	७७२१ (२)	रामरासो	"	१८२५	२५-६६	
५६४	७७३५	रामरासो	"	१८वीं	८१	गुटका, स्रपूर्ण
५६५	७१४०	रायप्रदन्तेश्वरीमध्ये ईग्यारह प्रश्न		२०वीं	७	
५६६	७७२२ (८)	राव सनसालरो मीत		१८वीं	१०५ वीं	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६७	४४५२ (७५)	रासभचक्र	धर्मसमुद्र	१८वीं	१२३ वाँ	गद्य के विषय में शकुन-विचार
५६८	४४५७	रात्रिभोजन चऊपई		१७२३	७	लि.क. भक्तिविशाल
५६९	४६१४ (४३)	रात्रिभोजन रास		१८७७	२६८-२७२	
५७०	४६१४ (४१)	रात्रिभोजन सज्जाय	कवियण	१८७७	२६६ वाँ	
५७१	४६१४ (४२)	रात्रिभोजन सज्जाय	नर्वदो चारण	१८७७	२६७-२६८	
५७२	४६०५ (१, २)	रीसालुकुवररी बात स्फुटदोहा		१८७५	१-२५	लि क अनूपविजय
५७३	७१२२	रुक्मिणीमगळ (कृष्णको व्याहलो)		१६वीं	१२-४२	अपूर्ण
५७४	६६७५	रुक्मिणीव्याहलो		१८६७	१३२	गुटका, स. ४८ से ६४ तक के पत्र अप्राप्त
५७५	४०७६	रुक्मिणीवेली (सवालभावबोध)	सू पृथ्वीराज, टी. कुशलधोर गणि	१८२६	४३	लि.क जीवणदास, रेवा ग्राम
५७६	४०७७	रुक्मिणीवेली (सस्तवक)	स पृथ्वीराज, टी. लब्धिविज्ञान विनिधान	१७८६	२८	
५७७	७१६५	रुक्मिणीवेली, नागवमण आदि		२०वीं	गुटका	जीर्ण
५७८	४०७८	रुक्मिणीवेली (राजस्थानी अर्थसहित)	पृथ्वीराज	१८वीं	२७	
५७९	५२२१	रुक्मिणीहरण रास		१६वीं	१५	पत्र १, १२ अप्राप्त
५८०	५८६४	रूपसेनकुमार रास (सचित्र)		१८वीं	१३	लि क साध्वी मेरुश्री, चित्र स. १६
५८१	६६३७ (४)	रेवासके पद	रेवास	१८११-	२०१-२०६	लि क रामदास, निराणाग्राम
				१८१६		
५८२	४०२७	रोहिणीतपस्तवन आदि	श्रीसार, राज आदि	१८वीं	२२	
५८३	६११६	लीलावती चौपाई	लामबख्त	१७४२	१४	पत्र १ से ३ अप्राप्त
५८४	६३७८	लीलावती चौपाई	"	१६वीं	३६	
५८५	६०५६	लीलावती भाषा	लालचन्द	१७८३	२०	र.का. स. १७३६

राजस्थान पुरातत्त्वव्यवस्थापन मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२६	४२३६	लीलावती रास	उदयरतन	१२०७	१६	लि क मुनि जेठा
५२७	५२२६	लीलावती रास	"	१६वीं	१२	र का स १७६७
५२८	४६१४ (२५)	लूकामतनिराकरण प्रतिमास्थापन रास	सुमतिकीर्ति	१२७७	२३४ से २४२	लि क रूपविजयजी नातानगर
५२९	४०२८	वच्छराजहंस चौपाई	जिनोदय	१२६१	३३	
५३०	४७२१	ब्रह्माकल्प	सूर्यमल्ल	१२१४	४	
५३१	७७२६	वज्राभास्कर	"	१६४३	१२४	लि.क बारहूठ वातावसजी, ग्राम हणूत्या, काशी नग प्र सभा में ग्रन्थमाला के सस्थापक
५३२	७७२७	वज्राभास्कर	"	१६४०	१२४	
५३३	७७२१ (३)	वमेकवारतारी नौसाणी.	"	१२२५	६६-११०	लि क श्वेताम्बर पञ्चायण
५३४	७१५१	वषाश्रितुका कवित्त आदि	"	१२७६	७५	लि क भैरुवास, जोधपुरमध्ये
५३५	४७१६	वर्षोत्पत्ति	"	१६वीं	२	
५३६	५३७६ (२०)	वारसेनमुनिकथा	अभयसोम	१६वीं	२२६-२४२	खण्डित
५३७	६७३२	विक्रमखोपरा चौपाई	हेमानन्द	"	२७	
५३८	६४१४	विक्रमचरित्र (वैतालपचीसी)	उभयसोम	१२६५	११	र का स १७२४
५३९	६६१५	विक्रमचरित्र (चौबोलीसतीचौपाई)	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७६२	५५	र का स १७२२
६००	७०१४	विक्रमादित्यभूपालपञ्चदण्डकचरित्र	धर्मदेव (?)	१६७७	६	लि स्या देवगढ
६०१	६४१५	विक्रमादित्य नावणी	तालचद	२०वीं	३	र का स. १२६१
६०२	७६२०	विजयसेठ विजयरोठानीलावणी	जिनहृप	१२२६	१२	
६०३	६१११	विद्याविलास चौपाई	शृपभनागर	१६वीं	७०	र.का. स. १२१०
६०४	४०६६	विनयभट्ट श्रेष्ठिपुत्रकथा				

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०५	४६२४(६)	वशेक (विवेक) वाररी नीसाणी	केशवदास	१७६३	१-१४	लि क जयसौभाग्य, श्राठपहररा तुहा आदि भी है ।
६०६	४४५२(४१)	विमलशाहजोरो सिलोको	शांतिविमल	१८वीं	४५-४८	
६०७	४१४५	विमलसाहाको सिलोको	पंडित विमल	१९वीं	१४	
६०८	४४५२(५३)	विषहरा विचार	अचलकीर्ति	१८वीं	१०६वां	
६१०	४६१४(४)	विषापहार स्तोत्र		१८७१	१६०-१६१	
६११	६३३४	विषापहार स्तोत्र		२०वीं	१३	
६१२	७७२२(१४)	वीरम देईडरिया आदिके कवित्त		१८वीं	१५२-१५६	* लि क आणदराम
६१३	७७६६(१)	वीरमदे पत्नीरी वार्ता (सचित्र)		१८५६	१-३७	चित्र सं० १८
६१४	४१३६	वीरतेन राजकथा आदि	राजसिंघ	१९२४	८	लि क प० जीवो
६१५	४४५२(६२)	वृद्धजुवानको भगडो		१८वीं	११८वां	लि क. प० प्रीतसौभाग्य
६१६	७७४३	वेदस्तुति भाषा		१७८४	३३-४६	* लि क बाई सिरेकवरी, सायरगढमध्य
६१७	५३६८	वंतालपच्चीसी	म अनूपसिंह	१९वीं	४०	लि स्था -जोधपुर
६१८	६४४३	वंतालपच्चीसी	शिवराम	१८६१	४४	लि क पुरुषोत्तम व्यास
६१९	७०४४	वंतालपच्चीसी		१७२६	५२	६१ कवित्त
६२०	७७२२(२)	वंतालपच्चीसीरा कवित्त		१९वीं	३७-४५	
६२१	७४४४(८)	श्रावक अतिवार		१८८५	१८०-१९०	
६२२	७१२२	श्रावक कथाकोश भाषा (अपूर्ण)	जिनहर्ष	१९वीं	२१	
६२३	७७५३(८)	श्रावकरी सज्जाय		१८३७	४२-४४	
६२४	७८१६(१)	श्रीधरलीला		१८३१से	४८	
		श्रीपालकथा	रत्नबोखर	१८३३	२६	लि.क. शांतिलाभ, जेतारणमध्ये
				१७२७		

रागस्थान पुरातत्वायुपेपण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २, २०-गजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२५	६२०५	श्रीपालचरित्र चौपाई	परमल	१८५८	१००	लि.क ब्राह्मणगुलाब, भगवत्तगढ़मध्ये
६२६	४००२	श्रीपाल चौपाई	जिनहर्ष	१८२३	२५	
६२७	६६१६	श्रीपालचरित्र	सुजसविजय	१६२८	७८	लि क मगूमल, प्रगमपत्र अग्राप्त
६२८	६३५१	श्रीपालचरित्र भाषा	ग्यानसागर	१६१७	१०२	
६२९	६५२७	श्रीपाल चौपाई	जिनहर्ष	१७६१	३४	र का स० १७२६
६३०	४१३८	"		१८६४	३५	
६३१	७२४८	श्रीपाल नरेन्द्रकथा	हेमचन्द्र, रत्नखोरविष्य	१६वीं	३१	लि क. गोडीचन्द्र
६३२	७०८६	"		१८२३	१३७	
६३३	४४६३	श्रीपाल रास	ज्ञानसागर	१७३२	१३	र का. स० १७२६
६३४	६५२८	"	विनयविजय	१८५७	५५	र का १७३८
६३५	६७४६	"		१८७७	गुटका	र का. १७३८
६३६	५३७३ (५)	श्रीपाल रास (अपूर्ण)		१८०६	१०६-११८	कुत्तेके कान फडफडानेके विषय
६३७	४४५२ (७७)	स्वानचक्र		१८वीं	१२३ वीं	में फलाफल-विचार
६३८	६८६३	शकुनवीपिका चौपाई		१६वीं	८	
६३९	४४५२ (६२)	शकुनरा कवित्त तथा जैसिह सवाई-		१८वीं	१२० वीं	
६४०	४४५२ (३०)	बल्लतसयुद्ध		१८वीं	३१-३२	
६४१	४४५२ (७)	शकुनरी चौपाई (अपूर्ण)		"	११ वीं	
६४२	४१६०	शकुनविचार		१७वीं	२	४ यत्रो का फल
६४३	५१२३ (४)	"		१८वीं	१६-२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४४	४६८६	शतसत्सरी		१६वीं	६	
६४५	४७२५	"	हेम कवि	१६वीं	४६	
६४६	४४५२ (६५)	शनीसरो गुरुछन्द		१८वीं	११६ वीं	लि क प्रीतसौभाग्य
६४७	४१६६	शार्दूलकथा (स्नेहलीला) आदि		१८४०	२१	लि क गोपाल-मिश्र, पीरागपुरा वाला
६४८	४७८८	शार्दूलचर कथा		१६वीं	६	
६४९	४८२४	"		१८३६	२	आसोपनगरे लिखितम्
६५०	६३०७	शार्दूलचर छन्द		१६वीं	२	
६५१	६३८६	शत्रुञ्जयउद्धार	भानुसेन	१६६७	६	# र का. स० १६३८
६५२	५४३६ (२)	शत्रुञ्जय रास		"	५-१७	
६५३	६५३८	शत्रुञ्जयोद्धाररास	नयसुन्दर	१८वीं	६	लि क. दानविजय, आविका लाडमरेपठनार्थम्
६५४	५८६०	शान्तिनाथ रास		१८५४	२२०	१०४, १०५ पत्र अप्राप्त
६५५	७७२० (७)	शारदाष्टक		१८वीं	४५ वीं	
६५६	४०२४	शालिभद्र चरित्र	मत्तिसार	१८वीं	१२	र का स० १६७८
६५७	४८०४	शालिभद्र चौपाई		१८वीं	१२	
६५८	५०६५	शालिभद्र चौपाई		१८४३	१८	लिखित सवाईजयपुरमध्ये
६५९	६१३१	"		१७७५	२५	लिखित ग्वालियरमध्ये
६६०	६१४०	"		१८१८	४८	
६६१	६५४३	"	"	१८५१	२३	लि क शिवदत्तसागर
६६२	६८४६	"	"	१८२८	१७	लि क खुश्यालचव

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६३	७५६३	शालिभद्र चौपाई	मतिसार	१७७२	१३	लिक ऋषि चापो
६६४	७५६४	"	"	१८०६	२६	लिक कृशाल, वेगमपुरमध्ये
६६५	५४५८ (५)	शालिभद्र श्लोक		१८५६	१-१०	
६६६	४७७७	शालिहोत्र		२०वीं	६०	
६६७	६८२६	"		१६१५	१०५	पत्र १ से ३ अप्राप्त
६६८	७७३०	शालिहोत्र ग्रन्थ (गुटका)		१६४३	३४	लिक राव जयसिंह-दत्तोर, फतहबुर्जमध्ये
६६९	७७६७	शालिहोत्र (सचित्र गुटका)	महाराज नकुल पंडित	१६वीं	१३६	चित्र सं० ११८
६७०	७८३७	शालिहोत्र (सचित्र)		"	६-७२	चित्र सं० ४८
६७१	७७२२ (१३)	शिवरात्रि कथा		१७२७	१२५-१५२	लिक. कासटीहा
६७२	५२६६	श्रीयलबावकी		१६वीं	२	५८ दोहे
६७३	४०७१	शीलरास (नेमिनाथ रास)	विजयदेव सूरि	१७६२	७	लिक लब्धिसागर
६७४	५४१८ (२३)	शीलरासा	कवि जैत	१६वीं	१४६-१५०	
६७५	४०१०	शकबहोत्तरी	देवीदान	१८६६	४७	लिक विजयसमुद्र, जैसलमेर
६७६	४४१६	"	देवदत्त	१७६०	५०	प्रथम पत्र अप्राप्त
६७७	७०१८	षट्पञ्चशिका भाषा	मूल-पृथुयशा, टी उत्पल भट्ट	१७६६	१५	
६७८	५३७६ (६)	षोडश कारण कथा	शुद्धकीर्ति	"	६०-६४	
६७९	५३७६ (१७)	"	सकलकीर्ति	"	२०६-२११	
६८०	५३७६ (१६)	षोडश कारण रासा	दाहूजी	"	२०३-२०६	
६८१	६६३७ (६)	सर्गांगी	समयसुन्दर	१८१६	२६३-४३०	लिक मनि सुन्दरसौभाग्य कृष्णदुर्गमध्ये
६८२	६५३६	साम्बप्रद्युम्न चौपाई		१७२४	१६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६८३	७४०१	साम्बप्रद्युम्न चौपाई	समयसुन्दर	१६७३	३१	लिखितं आर्या मरुपठनार्थम्
६८४	४६१८(२)	सावलिगा सदैवच्छकी वात		१७६६	२१-५२	लिक प्रोहित जोधा, मनोहरपुर का
६८५	७१७३	सावलिगारी वात		१६७६	२७	लि.क. मथुरालाल
६८६	७७२२(५)	सावलिगासूरी वात		१६वीं	५३-५६	६८ पद्योभे रचित
६८७	५४५८(२)	सदैवच्छसावलिगारी वात (सचित्र)		१८३८	१-५४	चित्र स० ७
६८८	४६२४(१)	सदैवच्छ सावलिगारी वात		१७८७	१-८	जीर्ण प्रति
६८९	४६१६(४)	"		१८७५	५४-७२	लि.क. सौभाग्य गण
६९०	४१४७	"		१८१६	३६	
६९१	६६८६	"		१८५६	१६-१०८	लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण
६९२	७७२०(२०)	"		१८वीं	१-७ १६-२५	
६९३	७७६८	सदैवच्छ सावलिगारी वात (सचित्र- गुटका)		१८५४	७५	चित्र स० ७७
६९४	७८४५	"		१८४८	७-८४	चित्र स० १४
६९५	५२०२(७)	सदैवच्छ सावलिगारी वात (अपूर्ण)		१८८५	१२३-१४१	
६९६	४६१५(११)	साहजादा कुतुबुदीनरी वात		१८८७	३६१-३७६	
६९७	४४५२(६६)	सिखामण	सिद्धिविजय	१८वीं	१३१ वाँ	७३ शिक्षाके वाक्य
६९८	७२४७	स्यूलभद्र स्वाध्याय	"	१६वीं	१	
६९९	४६२४(१४)	स्यूलभद्र सज्जाय	देवचन्द्र	१८वीं	३५-३६	
७००	७४४४(१२)	स्तात्रविधि		१८८५	२१२-२४५	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७०१	४४५२ (७४)	स्यालचक्र		१८८५	१२३वाँ	सियार के बोलने का शुभा- शुभ विचार
७०२	५१२३ (८)	रफुटज्योतिषचक्रादि		१८८५	४१-४६	गौरखचक्र, धातुचक्र आदि
७०३	७७५३ (१५)	रफुटपद्य		१८३७	८६-१०६	सोरठ, राजुल आदिके दूहा, पद आदि
७०४	४४५२ (८२)	सक्रान्तिफलचक्र		१८वीं	१२४वाँ	
७०५	४६७५	सक्रान्तिविचारआदि		१६वीं	५	
७०६	४६८५	"		१८वीं	५	
७०७	७३३२	सस्तारकप्रकीर्णकसबालाबोध		१७वीं	१६	
७०८	४६१५ (१२)	सज्जनप्रमसूहा		१८८७	३३७-३८४	११० दूहा है
७०९	७४४४ (१)	सज्जायसग्रह		१८८६	३२७-३७३	
७१०	७५३८	"		१८वीं	४	लि क ऋषि रामाजी
७११	६२८६	सत्तरभेदीपूजा	साधुकोति	१८५३	१४	
७१२	७४८०	सत्तरीशयठाणप्रकरण	गजकुशल	१६२३	४०	
७१३	४०५४	सतीगुणावलीचोपई	सन्तदास	"	१२	र का स० १७१४
७१४	७८१० (१)	सन्तवासकीवाणीआदि		"	४-२६	आद्य ३ पत्र अप्राप्त
७१५	६७४७	सन्तवाणीगुटका		१८६४	६६७	जीर्ण प्रति
७१६	७०६०	सन्ध्याप्रतिक्रमणविधि		१६वीं	१४	
७१७	४४५२ (६)	सन्ध्यासीरादशानाम		१८वीं	१०वाँ	
७१८	५११६	सन्तकुमारप्रबन्धचौपई		१८४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
७१९	४६१४ (५१)	सन्धोषसन्तानू दूहा	वीरचन्द लक्ष्मीचन्दशिष्य	१८७७	२७६-२८३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२०	४७२४	समयरे राजारो फळ (वर्षपतिफल)		१६वीं	१	
७२१	५३७६ (१५)	समाधि रास		१७६१	२०२-२०३	
७२२	४६१४ (३)	सम्मैद शिलर निर्वाणकाड		१८७१	१५८-१६०	
७२३	४८०२	सरस्वती छन्द		१६वीं	३	
७२४	४२८७ (१६)	सवाई जैसिधजीकीजोधपुर चढाई		१८वीं	१२७-१३०	
७२५	४४५२ (८३)	सवैयासग्रह	श्याम, काशीराम आदि	"	१२४ वां	
७२६	७७५३ (१३)	सवैया		१८३७	७० वां	
७२७	४२८७ (३)	सवैया इकतीसा	बनारसीदास	१७२६	१२-१३	स्वयं बनारसीदास के श्रक्षरो मे लिखित ५ पद्य
७२८	४०८१	सवैयावावनी	राजसी	१६वीं	५	
७२९	४६०६ (४)	"	राज कवि	१७६८	२५-३४	लि क केवलसौभाग्य
७३०	४४५२ (१४)	सवैयासग्रह	प्रताप, ब्रह्मगुलाल आदि	१८वीं	१७ वां	लि क प्रीतसौभाग्य
७३१	४४५२ (२०)	सवैया, सपखरो आदि		"	२० वां	
७३२	५५२४	सत्रह भेद पूजा	साधुकीर्ति	१८६४	६	र का १६१८, लालमण डोलीरी पोशाळमध्ये
७३३	५४१०	साठी सवच्छरी आदि		१८वीं	८३	प्रश्नाधली और मुहरंम के चाद आदि का फल
७३४	४६२४ (१२)	सात वारारा विघडिया		१७९०	१३-१४	लि.क जयसौभाग्य गणि
७३५	४६२४ (११)	सात सखीरो सवाद		१७६३	१२-१३	
७३६	४४५२ (६४)	सात सखीरो सवाद (प्रहेली)		१८वीं	१३० वां	
७३७	७३०५	सिद्धान्तबोल		१६१०	४७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३८	७५४६	सिद्धातसारोद्धार	लावण्यसमय	१७७६	५६	अन्तिम तीन पत्र त्रुटित
७३९	६३८३	सिरो सालणी भास	समयसुन्दर	१८वीं	२	सा चन्द्रावलि पठनार्थ
७४०	४००६	सिंहलसुत चौपाई	"	१७६४	६	लिक कुशलहर्ष
७४१	४८२८	सिंहलसुत चौपाई	"	१७वीं	६	
७४२	६५३६	सीताराम चौपाई	जिन हर्ष	१८वीं	६२	
७४३	७७५३ (२)	सीतासज्जामाय	जिन हर्ष	१८३७	३०-३१	
७४४	५३७६ (१)	सुदर्शनसेठकी कथा	नन्द (?)	१७६१	१-३१	र का स० १६६३
७४५	४००७	सुदर्शनसेठरा कवित्त	दीयो कवि	१८८०	२१	लिक ऋषि इन्द्रभाण
७४६	४०८६	सुदर्शनसेठरा कवित्त	"	१८८४	२०	लिक वाई चपा
७४७	६२७४	सुबाहुचरित्र आदि	जिनमाणिक्य सूरि	१६वीं	८	
७४८	६३८८	सुबाहुचरित्र	मानसागर	१८वीं	६	र का स १६००, जैसलमेरमध्ये
७४९	४००८	सुभद्रासतीरो चौढाळियो		१८७६	५	लिक स्थाविरजी श्रीचैतन- रामजी ६५ पद्य हैं
७५०	४६१२	सुभाषित	वनवारीदास	१६वीं	४	
७५१	५४१८ (३)	सुरतपवनी कथा	धर्मवर्धनवास	१६वीं	१-८७	
७५२	५६३०	सुरसुन्दरी चौपाई	"	१८४२	२८	पत्र स० २० से २३ अप्राप्त
७५३	५६७५	सुरसुन्दरी चौपाई	"	१७८२	२५	लिक नेमचन्द
७५४	४००६	"	शुभशील	१६वीं	१७	
७५५	७२४४	"	धर्मवर्धन	१८४८	२१	
७५६	४८०१	सुरसुन्दरी रास	नयसुन्दर	१६८८	२६	लिक. राघवकेशव, राजकोटमध्ये
७५७	७३७४	सूषितसुक्तावली	केशरविमल गणि	१६वीं	२५	लिक इष्टहस

राजस्थान पुरातत्त्ववैपण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७५८	६४१८	सूरजजीरो सलोको	करणीदानजी	"	२	र का स १७८७
७५९	७७२५	सूरजप्रकाश	गोविन्दराम (?)	१८४१	३००	लिपिस्थान-बदनौर
७६०	६७५२	सेऊसमनकी परची		१९२९	३	लि क जीवणराम
७६१	४०११	सोमवती प्रभावसरो वार्ता		१८४३	४६-४८	४३ हुहा
७६२	७७२२(३)	सोरठरा हुहा		१८वीं	१४७-१४९	
७६३	५४१८(२२)	सोलह कारण का रासा		१९वीं	२७४ वा	
७६४	४९१४(४५)	सोलह स्वप्न वीनती	जिनरग	१८७७	२५	
७६५	६३५८	सौभाग्यपचमी चौपई	जिनोदय सूरि	१८वीं	४४	र का स० १६८०,
७६६	५८९२	हसरान वच्छराज चौपई (सचित्र)		१८३५		चित्र स. १०३
७६७	५४३१(२)	हसरान वच्छराज चौपई (अपूर्ण)	जिनोदय सूरि	१६१०	६४ से ६६	१४३ पद्य
७६८	७४०२	हसरान वच्छराज चौपई	"	१८६६	३४	लि क ऋषि वृद्धिचन्द्र
७६९	६५३५	"	"	१९वीं	४२	
७७०	७२२७	हसरान वत्सराज रास		१८८३	४६	र.का स १६८०
७७१	५२०९	हसवत्स चौपई (सचित्र)		१८वीं	६२	चित्र स ६५
७७२	५४३१(१)	हसावली (अपूर्ण)		१६१०	१५-६४	
७७३	४४५२(७०)	हणमतरो धन्द	नरहरदास	"	१२० वां	
७७४	७७२१(१४)	हनुमान धन्द	कवि महेश	१९३१	२०१-२०२	लि क पाडे नाथूराम गौड
७७५	४९०२	हम्मीर रासो	"	१७८७	५९	लि.क मनसाराम ब्राह्मण
७७६	५३८४(१)	"	"	१९४४	१-७०	

राजस्थान पुरातत्त्ववेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२, २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७७	७१६७	हमीरहठ वार्ता		१८६७	६६	गुटका
७७८	६४४६(४)	हरजस	जिनहर्ष	१६वीं	१-४	लिक प क्षेमाब्धि
७७९	४०१२	हरिचंद रास	कनकसुन्दर	१८८२	२५	रका स १६६७
७८०	४८२६	"	रतनहमीर	१८८५	१७	
७८१	७७२१(६)	हरिजस नाममाळा		१८२५	१४४-१६५	
७८२	४६०५	हरियालीरा बूहा आदि		१६वीं	३६-३८	
७८३	(१०,११,१२) ४६२४(८)	हरिरस	ईसरवास	१७६३	१-१०	अंतिम पत्र पर सोलह श्रु गारो की सूची
७८४	७७२१(१२)	"	"	१६३१	१८०-१६६	लिक फूलगिरि
७८५	७७५०(१)	"	"	१८६०	१-२१	लि.स्था. वीरवार
७८६	५३४३	" आदि	"	१८वीं	५	
७८७	४६१४(२)	हरिवशपुराणनो रास	ब्रह्मजिणवास	१८७१	७-५७	लिक चक्रकीर्ति, एहमदाबाद-नगरे
७८८	४४५२(६२)	हाथियारा बलाण	नाहरखान राजसिंहोत	१८वीं	१३० वॉ	रोमकव द्यन्दो में वर्णन
७८९	४६२४(६)	हाथीरा बणाव		१७६३	११वां	
७९०	४४५२(२४)	हिंगुलाण्टक		१८वीं	२४ वॉ	
७९१	७४१७	हिंडोलण आदि	रामसरण (?)	१७वीं	१	लिक प खेतसी
७९२	४१६८	हीर राक्ष्या को तमासो		१६५४	३२	लिक नाथूनारायण शर्मा
७९३	४८३६	क्षेत्रसमास	रत्नशेखर सूरि	१७८२	७१	पत्र स. १,२ अप्राप्त, जैसलमेरनगरे लिखित
७९४	७३६७	"		१७वीं	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६५	७४०३	क्षेत्रसमाप्त		१८५१	६	र.का स. १५३६
७६६	७५२३	" गणित		१८३६	१२	तास्त्रिब ग्रामे लिखित
७६७	४४२४	" चौपाई	मतिसागर	१६८२	१४	र.का स १५६४
७६८	४०२१	" प्रकरण सबालावबोध	रत्नशेखराचार्य	१८२१	२०	र.का स. १६८६ (?) उदयपुर नगरे

राजस्थान पुरातत्त्वविशेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४५२(१०२)	श्रकडमचक्र	हीर	१८वीं	१३६वीं	
२	४०३८	अगद वसीठी सर्वैया	कवि भान	१९वीं	३	अगद रावण सवाद का वर्णन है
३	७७२०(६)	अध्यात्मछत्तीसी	बनारसीवास	१८वीं	४३-४५	
४	४९१४(६)	अध्यात्मबत्तीसी	"	१८७१	१६६-१६७	
५	७७२०(५)	"	"	१८वीं	४२-४३	
६	५३९२	अध्यात्मरामायण भाषा (बालकांड)	भगवान अर्जुन नागा शिष्य (निरजन्ती)	१८वीं	३२	रचनाकाल स० १७४१
७	५३९३	अध्यात्मरामायण भाषा (अयोध्याकांड)	"	"	४८	
८	५३९४	अध्यात्मरामायण भाषा (वनकांड)	"	"	३७	
९	५३९५	अध्यात्मरामायण भाषा (किष्किवाकाण्ड)	"	"	३१	
१०	५३९६	अध्यात्मरामायण भाषा (सुन्दरकांड)	"	"	२१	
११	५३९७	अध्यात्मरामायण भाषा (युद्धकाण्ड)	"	"	६५	
१२	५३९८	अध्यात्मरामायण भाषा (उत्तरकाण्ड)	"	१७८३	३९	* रचनाकाल स० १७२८ लि.क. मेघा, नागपुरमध्ये
१३	४२१६(३)	अनेकार्थी	नन्दावास	१८५९	१६२-१६६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	६७५३	अमृतधारा	भगवानदास निरजनी	१८२२	५६	अपूर्ण
१५	४८०३	"	"	१६वीं	५२	
१६	७४६१	अलङ्कारदीपक	शम्भूनाथ मिश्र (सुखदेव शिष्य)	"	२८	
१७	४०३७	अलङ्कारमाला	सूरत मिश्र	१८वीं	५	र.का सं १७६६ आगरा में रचित
१८	४२७०	अलङ्काररत्नाकर	दलपतिराय	१६वीं	६०	वशीधर कवि की व्याख्या सहित
१९	६६५३	अष्टावक्र प्रकरण भाषा		१८६४	१४	लि क बुधराम दाहूपथी
२०	४२८७ (१)	अक्षरवत्तीसी	सुन्दरदास	१७२६	१-४	लि क रामचन्द्र
२१	४२८७ (१२)	अक्षरवावली		१७२८	६३-६८	"
२२	५६८०	आत्मप्रकाश	आरमाराम (दीलतरामजी शिष्य)	१६वीं	३६२	
२३	६२४०	आत्मानुशासन भाषा	गुणभद्र	१८८८	१३८	लि क ताराचंद ब्राह्मण
२४	७७२० (१७)	आरमाराम गीत		१८वीं	५१ वा	झागरवाडा का, नगर महुवा मध्ये
२५	५४१८ (६)	आदीश्वर के रेखते		१६वीं	१०५-१०६	
२६	४६१७	आनन्द विलास	महाराजा यशवन्तसिंह	१७४३	११	
२७	६७२१	इतिहाससमुच्चय भाषा	लालदास	१८१२	८६	
२८	४२६३ (३)	इस्क दरियाव	रसराशि	१८८२	६-१६	कवि जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह का आश्रित था
२९	४२६३ (४)	इस्कफव	"	"	१७-१६	
३०	४६२४ (१७)	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्व	१८वीं	२२-२७	लि क. जयसीभाग्य गरिण

राजस्थान पुरातत्वावेषण मन्दिर-हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६३२३	उपवेश बावनी	कृष्णदास	१६वीं	१०	र का सं १७७२
३२	५१६६	उपाख्यान सहित दश लीला	लाला सुन्दरलाल	१६२१	३-२६	लिक ब्राह्मण धालमुकुन्द, मयुरा मध्ये
३३	४३१३	ऐन पचीसी	कृष्णजीवन लच्छीराम	१८६७	८	जयपुर में रचित
३४	५४०१	कर्मविषाक	सुन्दरदास	१६०७	२५	लिक. हरिदास
३५	७७४४ (५)	कृष्णाभरण नाटक	केशव, गङ्गा	१७५८	२३-५१	लिक चैनकुवरी
३६	७७५६ (२)	कालको अंग	खेमचव आदि	१६वीं	२२-३७	
३७	४४५२ (२७)	कवित्त कुण्डलिया	आनवधन	१८वीं	२६वां	
३८	४४५२ (२१)	कवित्त बावनी	जगदीश कवि	"	२१-२२	
३९	५३७४	कवित्त सग्रह	आनवधन	१८४६	५६	५३२ कवित्त है
४०	५३८२	"	जगदीश कवि	१८६३	१६३	४१०० कवित्तों का सग्रह
४१	४२१७ (२)	कविप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	पत्र सं ७६ से ८४ अर्थात्
४२	५३८० (१)	"	"	१८४६	६६	
४३	७०६४	"	"	२०वीं	१६६	
४४	६६७६ (२)	काव्य सिद्धांत	सूरति मिश्र	१८६०	७४-८८	
४५	४१४०	"	"	१६०१	३१	लिक कृपि देवराज
४६	४२६४	किशोर कल्पद्रुम	शिव कवि	१८वीं	१६६	प्रथम पत्र अर्थात्
४७	५२०१	किम्सा गुलबकावली		१६वीं	३-७६	
४८	७७४४ (७)	कृष्णजीकी रसोई		१७५८	५७-६२	
४९	६८२८	कृष्णसागर		१६वीं	२००	
५०	५४१७	कृष्णायन कथा चौपई		"	१७५	१८४६ पत्र १ र का सं १८३६ म्यान-आगरा

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१	५३७१ (५)	केनोपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	१-२४	लि क इन्द्र मिश्र
५२	५४२० (७)	कोकमजरी	कवि आनन्द	१९१२	१०७-१११	लि.क विजय गणि
५३	७७५२	"	आनन्द कवि	१८१३	४१	लि स्था रतनाम
५४	४१५८	कोकसार	"	१९०९	११	लि क. प्रीतिसौभाग्य गणि
५५	४४५२ (२९)	"	"	१८०४	२७-३१	
५६	४९२२	खिल प्रकरण (योगवासिष्ठान्तर्गत)		१८५३	४८	
५७	५११०	खालिकवारी		२०वीं	३	
५८	५३७०	गङ्गा आगमन कथा	रस आनन्द	१८९३	९	स्वय कवि द्वारा भरतपुर में लिखित
५९	६३४३ (२)	गङ्गा लहरी	पद्माकर	१८८९	१२-२७	
६०	५४०२	गणितसार	हेमराज	१७९४	७	कोटा में लिखित, त्रुटित
६१	५८७४	गणेशपुराण भाषा	मोतीलाल	१९वीं	१६	
६२	५४०६	गीतगोविन्द टीका	चित्तामणि	"	४०	चन्द्रकुलसभूत पहाडसिंहप्रोतये
६३	४२८८ (४)	गीता भाषा (पद्यानुवाद)	हरिवरलभ	१८८९	११३	आद्य २ पत्र अप्राप्त
६४	७१७१	गीतामृत सार	मकरन्द	२०वीं	१७३	
६५	४९०५	गुरुवे को श्रग	सुलसागर	१९वीं	२५-३१	
६६	६४४६ (३)	गुरुस्तुति		"	४१-४२	
६७	५८६६ (३)	गुलजार इस्क अनवर इकबाल का फिर्सा		"	१२-८२	
६८	५२०४	गुसाईजी की वन-यात्रा	वृन्द आदि	"	४१	
६९	४९०६ (५)	गुढार्य दोहरा	तुलसीदास	१७९८	३४-४५	
७०	७७४४ (८)	गोपाल लीला		१७५८	६२-६६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७१	६६८८	गोपीजनवल्लभोत्सव प्रकाशिका		१६वीं	४२	जयपुर के गोपीजनवल्लभ मंदिर की निम्बार्कीय पूजा प्रणाली
७२	७७२० (१६)	गोरखचरित्रिका		१८वीं	५१वीं	वदनोरमध्ये लिखित
७३	७७३४	गोवद्ध ननाथजी की प्राकट्य वार्ता	कृष्ण कवि	१६२३	४८	र का स० १८६३, कवि गोपाल-
७४	५३६७	गोविन्दविलास		१८६७	११६	सुत, ग्वात्तियर वासी
७५	५३८१	गोविन्दानन्दधन	गोविन्द नाटाणी	१६वीं	३०	कवि जयपुर वासी
७६	५३८३	चक्रता पातशाही की परपरा		"	१४१	र.का. स० १८५८
७७	५३४७ (१)	चन्द्रमुकुट चन्द्रकिरण रात्रीकी वात		१८३७	१-३०	लि क लाला तुलसीराम सेनवशी
७८	६३४६	चरनाई की पाटी प्रावि	नन्ददास	१८८७	८५	
७९	५४३८ (५)	चिन्तामणि माला	रामेश्वरदास आदि	१८६०	६२-६६	
८०	४९१३	चितावणी सग्रह	वनारसीदास	१६वीं	५१-५२	र.का म० १८०८
८१	७७२० (१८)	चेतन सुमति गीत		१८वीं	२७०	रूपनगर मे उम्मेदकुवर
८२	७११५	चौरासी वैष्णवो की वार्ता		१६वीं	७१	वाकावती ने लिखवाई
८३	५३८२ (२)	छक पत्नीसी	जगदीश कवि	१८६३	१८६-१९३	लि क भट्ट श्यामसुन्दर
८४	५३७७	छद्मपयोडगी	गुन्दायनहित	१८६०	१०	राधाकृष्ण लीला वर्णन, गुन्दायनमें लिपित
८५	६७६३	छन्दरत्नावली	हरिराम	१६२०	३१	र का स० १८२५, पुरनगर में लिपित
८६	५८१६	छन्दलता	चिन्तामणि	१६०६	३१	लि क. प्रजवाती, गुन्दायन मध्ये

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	४२१३	धृव विचार	सुखदेव मिश्र	१८७६	२५	लि क सगम कवीश्वर
८८	५३७६ (२२)	ज्येष्ठजिनवर कथा	विश्वभूषण	१८वीं	२४८-२५३	
८९	६३०३	जिनवत्चरित्र चौपई	उदय (?)	१७६६	७१	
९०	७७४६ (१)	जोग लीला	सुन्दरदास	२०वीं	१-७	
९१	४२८७ (७)	तर्क चिन्तावनी	श्रीकृष्ण भट्ट	१७२८	२६-३३	लि क आनदराम
९२	५३७१ (२)	तैत्तिरीयोपनिषत् भाषा				
९३	७७२० (१०)	वसदान				
९४	५४०७	दक्षानविलास	दक्षन कवि (अहमदउल्लाह, बहरियाबाद के)	१८वीं	३४	
९५	४३१६	वानलीला	कृष्णदास	१८६४	३७	र का स० १७२२, राधाकृष्ण के भृगार का वर्णन
९६	५४३८ (४)	"	परमानन्ददास	१८२८		
९७	४२६३ (१५)	डुखहरण वेलि	म प्रतापसिंहजी	१८६०	५६-६२	
९८	४३०६ (१०)	"	"	१८वीं	३४, ३५	
९९	७४४१ (११)	"	"	१९वीं	१६, २०	
१००	५३६१	दोहासार	"	१९१४	५६, ६०	
१०१	५४५५ (१)	ध्यानमञ्जरी	अग्रदास	१८८४	१०३	सग्रह समय-१७२०, भरतपुर में लिखित, प्रथम पत्र अप्राप्त
१०२	६०८८	"	"	१९वीं	१६	
१०३	६३६४	"	"	"	५	
१०४	४२८८ (२)	ध्रुवचरित्र	गोपाल	"	६	
१०५	५४१२ (२)	"	ज्ञानाथ माथुर (सोमनाथ)	१८८६	१७-४५	
				१८५७	१-२०	र का स० १८१२, कवि भरतपुर वासी

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	७१५८	ध्रुवचरित्रादि	मनोहरदास सोनी	१८०५	८८	आद्य पत्र अप्राप्त
१०७	६३१६	धर्मपरीक्षा	प० शिरोमणिदास	१८६०	८७	र का स० १८११
१०८	६३१६	धर्मसार चौपाई	विलास	१९वीं	३४	र का स० १७३२
१०९	६१४५	नयचक्र भाषा		१९०७	४७	र का स० १८६७ करौलीमध्ये लिखित
११०	७३५१	नयत्स्वविचार सार्ये	नयनसुख केशवपुत्र	१९वी	११	
१११	७७६६ (२)	नयनसुख (बंधमनोत्सव)		१८५६	१-४४	चित्र स० २
११२	७००६	नयनसुख		१८८४	२६	
११३	६८३५ (१०)	नवकारमंत्र		१८६६	३	
११४	७४४२ (१)	नवत्स्वभेद		१७६४	१-४६	
११५	७७२० (८)	नवतुर्गाविधान		१८वीं	४५ वीं	
११६	७७२१ (७)	नवरत्नकवित्त	बनारसीदास	१८२५	१४१-१४२	
११७	६८३५ (५)	नागोरीगण्ड्यषट्टावली		१८६६	१	
११८	७७२० (६)	नाम्निर्णयनिघान		१८वीं	४५-४६	
११९	६३४३ (४)	नामजरी (मानमजरी)	नन्ददास	१८८६	४२-६६	
१२०	७७६७	"	"	१८१३	१८	लि क उदयराम ब्राह्मण
१२१	६८३३ (१)	नायिकाभेव		१८४८	२-५	अपूर्ण, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२२	५४१६	नासिकेतकथा भाषा	नन्ददास	१८८५	४७	लिखित जिगनीमध्ये
१२३	४५५७ (१)	नीतिमजरी	म. प्रतापसिंह	१९वी	१-१३	लि क महात्मा ज्ञानीराम
१२४	७४४१ (१)	नीतिमज्जरी	"	१९१४	१-२	लि स्था उदयपुर, सेठ गभीरमल पठनार्य
१२५	७७४६ (१)	"	"	२०वीं	१-१३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२६	५३७२	नेहृनिदान	रस भ्रान्तव	१८६६	१२	स्वय कवि द्वारा भरतपुर में लिखित
१२७	४४५२ (४०)	नैनबत्तीसी	वृन्द कवि	१८वीं	४४-४५	र का स० १७४३
१२८	७७२१ (८)	प्रकीर्ण कवित्त	वनारसीविलासास्तर्गत	१८२५	१४३-१४४	
१२९	७७२० (१९)	प्रकीर्ण पद	वृन्द कवि	१८वीं	५२ वीं	
१३०	५४०८	प्रतापविलास	पद्माकर भट्ट	१९वीं	१९	काव्यप्रकाश पर आधारित रस-ग्रन्थ
१३१	६२६२	प्रबोधपचाशिका	सुन्दर कवि	१८६३	२०	
१३२	४८०५	प्रबोधपचीसी	गोपाल	१९वीं	२	कवि खरतरगच्छीयशातिदास-का विषय है
१३३	४२८८ (३)	प्रल्हादचरित्र	श्रीकृष्ण भट्ट	१८८९	४२-८८	
१३४	५३७१ (३)	प्रज्ञोपनिषत् भाषा		१८वीं	३५-६४	
१३५	७७२० (१२)	प्रास्ताविक सर्वया	म. प्रतापसिंहजी	१८वीं	४७-४८	
१३६	५२२४	प्रास्ताविक सर्वया (प्रश्नोत्तर)	"	१९वीं	६	५१ सर्वया है
१३७	४३०९ (१२)	प्रीतिपचीसी	रसरामि	"	२३-२७	
१३८	७४४१ (१६)	"	म प्रतापसिंहजी	१९१४	७५-८०	
१३९	७७४९ (६)	"	रसरामि	२०वीं	१-५	
१४०	४२६३ (११)	प्रीतिलता	म प्रतापसिंहजी	१८वीं	१०-१६	
१४१	४३०९ (६)	"	"	१९वीं	१०-१३	
१४२	७४४१ (८)	"	"	१९१४	४६-५२	
१४३	४२६३ (८)	प्रेमतरङ्गिणी	मुरलीधर भट्ट	१८वीं	१-२३	कवि म प्रतापसिंहका आश्रित था

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	४२६३ (१२)	प्रेमप्रकाश	म प्रतापसिंह	१८वीं	१७-२०	
१४५	४३०६ (४)	"	'	१९वीं	६-८	
१४६	७४४१ (१३)	"	देवीवास	१९१४	६३-६६	
१४७	५३४७ (२)	प्रेमरत्नाकर		१८३७	३०-४०	र का सं १७४२, म कु रत्तन-पाल, करौली प्रशस्ति परक
१४८	४७६४	पचाध्यायी	नन्ददास	१८वीं	१७	
१४९	५२०२ (६)	पचाध्यायी (भाषानुवाद)	वशीप्रती	१८८५	११४-१२३	
१५०	४२६५ (१)	पचाध्यायी	नन्ददास	१८४३	१०-२६	
१५१	७७५६ (१)	पञ्चेन्द्रियोपदेश	सुन्दरवास	१९वीं	३१	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१५२	४२६२	पदमुक्तावली	श्रीनागरीदासजी	"	६२	त्रुटित
१५३	५३७८	पदसंग्रह	किशोरीप्रती गोस्वामी	"	२१२	जलविहार भ्रमर गीत, सांभो
१५४	५४४०	"		"	६६	आदि से सम्बन्धित पद
१५५	६८४२	"		"		निम्बार्क सप्रदाय सम्बन्धी पद हैं
१५६	७८१५	"		"	११०	जैन धर्म सम्बन्धी पद
१५७	७८३६	"	रसनायक	१८८६	१२८	वल्लभ सप्रदाय के पद
१५८	५१७७	"	नन्ददास आदि	१९वीं	५६	३०८ पद
१५९	७७३८	पाण्डवशोन्मुचन्द्रिका	स्वरूपदास	१८वीं	५५	
१६०	७७४२	"	"	१९२३	१३६	लि क पठान उमेवला, बदनोर राज्ये लि.क वैष्णव हरिवास

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६१	७७३६	पाण्डवयज्ञोद्बुद्धिचन्द्रिका	स्वरूपदास	१६४१	३६६	लि. क. वैष्णव सीतारामदास
१६२	६३३१	पातसाहनासोपरि रसल	भूधर	१६१२	३	र का स० १७८६,
१६३	६१७७	पार्वतीथपुराण भाषा	भूधर बुध	१८०१	६५	आगरा में रचित
१६४	६६२१	"	मोहन	१६वीं	६४	पत्र स० ४०, १५ अप्राप्त
१६५	७१०८	"	श्रीवल्लभाचार्य	१७२५	८६	र का स० १७८२
१६६	५६६६	पारासोमल की क्रिया	म प्रतापसिंह	१६वीं	६	रजत आदि धातुओं की निर्माण-विधि
१६७	६३४३ (३)	पिगलसार	श्रीवल्लभाचार्य	१८८६	२७-३८	
१६८	५२०५ (१८)	पूजाविधि	म प्रतापसिंह	१८वीं	८८-९१	
१६९	७७४४ (१०)	पूरणमासी कथा	"	१७५८	७२-११५	
१७०	४३०६ (१३)	फागरंग ग्रन्थ		१८६६	२८-३१	
१७१	७४४१ (४)	फाग रंग		१६१४	३५-४०	
१७२	५१२३ (६)	फालनाम फारसी	अनेक कवि	१८वीं	२८-२९	४२५ कवित्त है
१७३	४२६४	फुटकर कवित्तसंग्रह	म. प्रतापसिंह	"	११८	
१७४	४३०६ (१५)	व्रजसिगार	"	१६वीं	४५-५०	
१७५	४२६३ (१०)	व्रजशु गार	"	१८वीं	१-६	
१७६	७४६०	व्रह्मविलास	भगवतीदास	१८४६	१२४	र का. स० १७५५, कर्ता आगरा-निवासी लालजी कदारिया का पुत्र
१७७	५३७१ (१)	व्रह्मसूत्र भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	१-२७	लि. क महात्मा श्योजी (शिवजी)

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	४७८५	बनारसीविलास	बनारसी गंग, श्रमवाल	१८वीं	११५	र का स० १७७१, पत्र ८६ से ६६ श्रमवाल
१७९	७४४२ (२)	बनारसीविलास भाषा	बनारसी गंग, श्रमवाल	१७६४	१-११६	
१८०	५४२८	बलभाष्या	गोपालदास	२०वीं	५३	
१८१	५३८७	बहत्तरी	मोहनदास	१७९७	८	लि.क नरसिंह श्रमवाल
१८२	५२०२ (५)	बारहखडी	बत्तलाल	१८८५	१०९-११४	भाषा पर पजाबी प्रभाव है
१८३	५४२० (४)	"	"	१९वीं	९७-१०३	
१८४	५४२६ (१)	"	विष्णुदास ठण्डीराम शिष्य	"	१-१२	
१८५	५४२६ (३)	"	दत्तलाल	"	२६-३५	
१८६	५४२६ (६)	"	भञ्जनी	"	४९-५३	
१८७	५४२६ (११)	"	"	"	१-५	
१८८	५४२६ (४)	" प्रह्लादजी की	"	"	३५-३८	
१८९	५४२६ (५)	" परमेश्वरजी की	कुशला	"	३८-४२	
१९०	५४२० (६)	" रामायण की	रामरत्न	"	१०३-१०७	
१९१	५४२० (५)	" विरह की (बह्मस्नेह बारहखडी)	"	"	१०३	
१९२	५४०३	बारहखडी सुरत की	सुरत, देवधरशिष्य	"	८	
१९३	५४२६ (६)	बारहमासी	मुरलीदास	"	४२-४७	
१९४	५४२६ (७)	"	भवानि (श्रवधपुर वासी)	"	४७-४९	
१९५	५४२६ (८)	"	सुरदास	"	४९ वीं	
१९६	४७९०	बावनी संवधा	जसराज	"	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६७	४३०७(१)	बिहारीसतसई	बिहारी	१७८७	६६	लि क यति कुसला मालपुरामध्ये
१६८	४४१२	"	"	१८१२	५०-६१	लि क. प्रीतसौभाग्य गणि, खारिया ग्रामे
१६९	४६०७(३)	"	"	१८३७	३५-१३५	श्रंत में होराचक्र श्रीर स्फुट कवित्त है
२००	६३४२(४)	"	"	१९वीं	१३२	अपूर्ण
२०१	४१४४	बिहारीसतसई सटीक	डो. कृष्ण कवि	१८०२	७२-१६०	लि क सुनि मनोहर
२०२	४२१६(२)	बिहारीसतसई टीका	बिहारी कवि जान	१८५६	५६	लि क भूकणू वासी विरामण रामघन
२०३	६३१५	"	"	१७६६	१५	प्रथम पत्र खण्डित
२०४	४४१२	बिहारीसतसया	मुकुन्ददास	१८६८	२००	
२०५	४२६१	बुद्धिसागर	"	१८६८	१२-२६	
२०६	५४२६(२)	भ्रमरगीत टीका, प्रेमरसपुञ्जनी	नन्ददास	१९वीं	१७	
२०७	६७२६	भैवरगीत	रसिकराय	२०वीं	१-६	
२०८	७७४६(५)	भैवरगीत	मू नाभादास, डो प्रियादास	१७५८	५१-५७	
२०९	७७४४(६)	"	"	१९वीं	१६५	
२१०	५४००	भक्तमाल टीका	"	१९००	३०६	र.का. स० १७६५, नूदी में लिखित
२११	५४७६	भक्तमाल टीका रसबोधिनी	"	१७६६	१४१	लिखायित्त माजी जोधपुरीजी
२१२	५४०६	भक्तमाल टीका	"	१७६६		

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१३	६७५५	भक्तमाल टीका	लालदास	१८६३	१०४	लि क हेमवास, कवीरशाह को साधक
२१४	६६३६	"	लालदास	१८७०	१६८	लि.क. गोपालदास श्रवन्तीमध्ये शेषशायीमन्दिरे
२१५	६५७१	"	प्रियादास नारायणदासशिष्य	१८६४	११६	र का स० १७६६
२१६	६०५४	भक्तमाल टीका रसबोधिनी	प्रियादास	१८वीं	२०५	लि क रामकृष्ण महाजन
२१७	६४४८	भक्तमाल सटीक	प्रियादास	"	२७६	
२१८	७७३२	"	लालदास	१६२५	१६५	र का १७६६
२१९	७८३१	"	लालदास	१८५६	१३२	लि स्या० बदनीर लि क शिवरामदास, गङ्गापोल, जयपुर
२२०	६५७६	भक्तमालमाहात्म्य	कृष्णदास	१६वीं	४	
२२१	५४२४	भक्ततरङ्गिणी	चरणदास	१६४१	४०	लि क इन्द्र मिश्र, स्थान नगर
२२२	६८२६ (१)	भक्तिपदार्थ		१६०२	१-१४४	ग्र.त में भजन है
२२३	५४१३	भगवद्गीता भाषा पद्य		१६००	८६	लि क हरिदास ब्राह्मण, बंराठ
२२४	७५०८	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद		१७७४	८८	लि क डालचव ब्राह्मण, शाहगज विल्ली
२२५	६१४८	भद्रबाहुचरित्र चौपाई	किशनसिंह मागानेर के	१८२७	४७	र का स० १७७०, कई स्थानो पर प्राचीन पत्रों के स्थान पर नये पत्र लिखे हुए हैं
२२६	६१५१	"	किशनसिंह सिधवी	१६०६	३६	लिखित भ्रतवरसरहमध्ये
२२७	६१५६	भद्रबाहु चरित्र भाषा	किशनसिंह	१६०६	४०	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२८	५४२० (३)	भर्तृहरिशतकत्रय भाषा पद्यानुवाद	म. प्रतापसिंह	१६वीं	६५-६७	१०५ छन्द है
२२९	४३०८ (४)	भरथचरित्र	जन्मगोपाल (?)	१८वीं	४५६-४६७	
२३०	६०१०	भविष्यवत्स चौपाई	ब्रह्म रायमल	१६वीं	४७	
२३१	६६३७ (५)	भागवत, एकादशस्कन्धानुवाद	चन्द्रदास	१८११	२१०-२६३	लि.क. रामदास, निराणा ग्राम
२३२	४२५६	भागवतचरित्र नारायण लीला	माधवदास	१८वीं	३६	लि.क. जती जीवणसागर
२३३	७१७०	भागवत दशमस्कन्ध की भाषा	हरिवल्लभ	१६८०	६१	गुटकाकार
२३४	६८३०	भागवत भाषा	कविराय मोतीराम आणूदसुत	१६वीं	१०३	जीर्ण प्रति
२३५	६०६८		हरिवल्लभ	१७८६	६५	लिखित रूपावास मध्ये, ब्राह्मण केशवरायजी
२३६	६०६०	भागवतभाषानुवाद (द्वितीय स्कन्ध)	नागरीदास	१६वीं	३३	पत्र सं ५, ६, १७ अप्राप्त
२३७	४२६५ (२)	भावपञ्चाशिका	वृन्द कवि	१७६३	४-१४	लि.क. डालूराम
२३८	४८१३	"	"	१८३६	६	लि. स्या०-लींबडी
२३९	४६०६	"	"	१७६८	१३	र.का. सं १७४३
२४०	५४३२	भाषाभरण	सरस्वती (वैरीसाल)	१६वीं	२५	लि.क. केवलसीभाय
२४१	५०४८	भाषाभूषण	म. जसवन्तसिंह	,	२६	लि.क. गोपाल ब्राह्मण
२४२	६६७६ (१)	भाषाभूषण टीका	नन्ददास	१८६०	१-७३	
२४३	४२६३ (६)	भाषासरोवय	रसराशि	१८८२	२५-२६	
२४४	५३०६	भास्करवशाप्रवीपिका	तेजसिंह	१८वीं	५३	
२४५	४०८२	भीषमबावनी	भीषम	"	१०	
२४६	४१७६	भोगल्पराण	रूपचद	१६वीं	२०	
२४७	५४१८ (५)	मङ्गल गीत		"	६१-६६	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	४७२२	मतिचन्द्रिका	मतीराम	१९वीं	४	मोहरंम और वारों का विचार
२४९	४३०९ (१)	मतीरामपचीसी		१९०२	५१	
२५०	६८३५ (७)	महावीरस्तवन		१९६९	१	
२५१	६८३५ (११)	"		"	२	
२५२	७११५६	साखन लीला	नन्ददास	१९१४	४३	
२५३	५३७१ (४)	माण्डूक्योपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१९वीं	१-२०	
२५४	७६४८	मातृकाक्षरबावनी कवित्त-सग्रह	सार कवि	१८वीं	८	अन्तिम पत्र त्रुटित
२५५	४२१६ (६)	मानमञ्जरी नाममाला	नन्दराम	१८५९	३६०-३७०	
२५६	४९१५ (१)	"	"	१८८७	२-१९	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५७	४२६३ (२)	मानमञ्जरी नौका	रत्नराशि	१८८२	२	
२५८	४२६३ (५)	मालिकमुकाम	"	"	२०-२४	
२५९	७७२० (११)	मिथ्यात्ववाणी		१८वीं	४६-४७	
२६०	४३०९ (५)	मुरलीविहार	म प्रतापसिंहजी	१८९९	८-९	
२६१	७४४१ (१०)	"	"	१९१४	५७-५८	
२६२	४४५२ (१५)	मुहूर्तचक्र	"	१८वीं	१८वीं	लि.क प्रीतसोभाय
२६३	५४१९	यदुराज विलास	रघुनाथ द्विज	२०वीं	२२५	र का सं १९३३
२६४	७५९४	याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा	गुरुप्रसाद	"	२१	लि.क. गोविंदाय शर्मा
२६५	४३७१	योगवाशिष्ठसार भाषा पद्य	कवीन्द्राचार्य सरस्वती	१८वीं	२०	
२६६	४३०९ (१६)	रग चौपाई	म. प्रतापसिंहजी	१९वीं	५०-५६	
२६७	७४४१ (१४)	"	"	१९१४	६६-६८	
२६८	६७७९	रत्नपरीक्षा	रत्नसागर	१९वीं	२१	र का. सं १७५५

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६६	४३०६ (८)	रसकम्भक बत्तीसी	स प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५-१६	
२७०	७४४१ (६)	"	"	१६१४	४२-४३	
२७१	४६६६	रमलज्ञानशकुनावली	शेख आलम	१६वीं	४	
२७२	५४३४	रसकवित्तसंग्रह	सोमनाथ आचार्य	२०वीं	१५४	
२७३	५४२२	रसवीयूषनिधि	नन्ददास	१८५५	१३३	र का स १७६४
२७४	४६२३ (२)	रसमजरी	प्रधान पुहकर	१७२८	१८-२४	
२७५	६३३७	रसरतन काव्य		१८५०	२३२	आद्य पत्र अप्राप्त, सं १७२३ में रचित
२७६	४२१६ (६)	रसराज	मतिराम	१८५६	२६४-३१८	
२७७	६३४२ (२)	रसराशिपञ्चीसी	रसराशि	१६वीं	१०-१६	
२७८	७०६२	रससमुद्र	चैतराम, (भोलानाथपौत्र)	१८६१	१३६	र का स १८६१, मूल प्रति
२७९	४४५२ (२)	रसिकप्रिया	केशवदास	१६वीं	३-५	द्वितीय प्रभाव तक, अपूर्ण
२८०	४०१४	रसिकप्रिया	"	१७६६	६८	र.का स १६४८
२८१	५३८० (२)	रसिकप्रिया	"	१८४६	१-६६	
२८२	७७२० (३)	रसिकप्रिया	"	१७५६	१-४०	लि क लखमीचंद, गढ हर्णोरमध्ये
२८३	४६२५ (१)	रसिकप्रिया, राजस्थानी भाषा में अर्थ सहित	"	१८२६	१-१७५	
२८४	७०६३	रसिकप्रिया टीका जोरावरप्रकाश	जोरावरसिंह	१६२१	१५४	लि क कवि मन्नालाल
२८५	४२१६ (५)	रसिकप्रिया टीका	"	१८५६	१६२-२६४	
२८६	४२१७ (१)	रसिकप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	पृ. ७६ से ८४ तक अप्राप्त
२८७	४२६३ (१)	रसिकपञ्चीसी	रसराशि	१८८२	१-६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०४	४२२२	रामचरितमानस (बालकांड)	तुलसीदास	१८४०	१२५	लिक वैष्णव भगवानदास
३०५	६६२२	" "	"	१८०३	११३	लिक काशीराम, जयपुरमध्ये
३०६	७७६६	" "	"	१६वीं	१३१	लिक काशीराम, जयपुरमध्ये
३०७	६२१४	(द्वितीय सोपान)	"	१८६५	१३५	लिक ब्राह्मण तुलसीराम, वरीमध्ये
३०८	४२२३	(श्रयोध्याकांड)	"	१८२८	१७८	लिक नरेन्द्र सौभाग्य
३०९	५१८८	" "	"	१८३८	६५	वृन्दावन में लिखित
३१०	६६२१	" "	"	१८०३	१०३	लिक काशीराम, जयपुरमध्ये
३११	७८००	" "	"	१८४४	८१	लिक मिश्र मोहनलाल
३१२	६२१५	(तृतीय सोपान)	"	१८६५	३६	
३१३	६२३४	" "	"	१६वीं	२७	
३१४	६२६७	" "	"	१८४६	३३	लिक सहजराम मिश्र, कुम्हरमध्ये
३१५	५४६४(१)	(श्र.का से सु का)	"	१८७०	६३	लिक क.महात्मा बकसीराम, जयपुर
३१६	६२१६	(सु का)	"	१८६५	२८	
३१७	६६२३	(श्र का और सु.कां)	"	१८०३	४७	लिक काशीराम, जयपुर
३१८	४२२४	(श्र का)	"	१८११	३८	
३१९	५१८६	" "	"	१८३८	२७	
३२०	४१५६	" "	"	१८८१	२८	प्रथम पत्र चूटित
३२१	५२८०	" "	"	१८००	५०	लिक गोविन्ददास, भरतपुर का विरक्त अखाडा
३२२	७८०१	" "	"	१८४४	२५	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दि-हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रंथ]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२३	४१२७	रामचरितमानस (कि का)	तुलसीदास	१८६६	४६	लि.क. परमानन्द कायस्थ
३२४	५१६०	" "	"	१८३८	१८	लि.क. नरेन्द्र सौभाग्य
३२५	४२२५	(सु का)	"	१८३२	२४	
३२६	६२००	" "	"	१९१०	४३	लि.क. हरदयाल
३२७	६७३१	" "	"	१९वीं	२४	मिश्र मोहनलाल
३२८	७८०२	" "	"	१८५५	६२	दो प्रकार की लिखावट है
३२९	६०७२	(ल का)	"	१९वीं	६८	लि.क. सरदारसिंह विद्यार्थी
३३०	६३२१	" "	"	१७८०	३९	लि.क. काशीराम व्यास, भोखा
३३१	६६२४	" "	"	१८०३		की पोथी सू
३३२	७८०३	" "	"	१८४४	७२	लि.क. मिश्र मोहनलाल
३३३	६२१७	(यु का.)	"	१८९५	६३	
३३४	४२२६	" "	"	१८२१	७८	लि.क. कृपाराम पुरोहित
		(सू का)	"			जयनगरे
३३५	६२१८	" "	"	१८९५	६८	
३३६	६२४५	" "	"	१९११	४८	
३३७	४२२७	(उ का) चातकसोलसी	"	१८२७	७६	लि.क. वैष्णव भगवानवास
३३८	४२२८	(उ का)	"	१९वीं	६५	
३३९	६६२५	" "	"	१८०३	३८	लि.क. काशीराम अतिमपत्रवृद्धित
३४०	६९६६	" "	"	१८८३	६९	लि.क. बलवैष
३४१	७६२३	" "	"	१८७९	१२५	

लेसले मतिमेदतुलसी दसह ॥ या योपरसवि आमराम समानष मुजाही कहै ॥ दोहरा ॥
 मोसमदीनल दीनहि ततुमसमानर घुवीर ॥ त्वसवि चारि रघुवसमनिहहृदिविषम
 भवमीराणाफामिहिनरिपियारिजिमिलोमिहिखियेजिभिदाम ॥ तिमिरेघुनाय
 लतरि धियला गौमुहिरमा ॥ २२ ॥ इति श्री राम चरित्रमानसेसकालकीलिकेकु
 र्वाधिधिसिने अघिर लभक्ति सवाइतीनामससमोसाधान ॥ १ ॥ अममस्त ॥
 इति ॥ उत्तर कारउ समास ॥ यदसयुसिकेइस्वातहेसलिवितसया ॥ यारु
 इतरउ फुडाम रोशोनरावते ॥ अथअमसचत्सरा ॥ २ ॥ समसेमागशरमा
 सेकसापदवचम्यासोमवासरहसात्तरउयाध्यापलिभइ स्वयंविचारपाथ ॥

२२८

३२८

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	७८०४	रामचरितमानस (उ का)	तुलसीदास	१८४८	४०	लि.क मिश्र मोहनलाल, यह प्रति ग्रन्थांक ७७६८ की, बलभद्र उपाध्याय द्वारा लिखित, स० १७३७ की प्रतिलिपि है # लि क बलभद्र उपाध्याय लि.क मिश्र आनन्दनारायण
३४३	७७६८	"	"	१७३७	३७	
३४४	७५७१	वेरायसदापन नाम द्वितीयसर्ग	"	१८८६	५	
३४५	४२५७	राम चरित्र	सुन्दरदास	१८वीं	८	
३४६	४२३५	रामनखशिखवर्णन	माधोदास	"	३	
३४७	६०७१	रामनौरत्नसार संग्रह	रामचरण	१६वीं	३१	सम्बन्धित ग्रन्थो से सप्रहोत
३४८	४८४५	रामविनोद	रामचन्द्र मुनि	१७६३	७८	र का. स १७५०, आद्य पत्र ११ खण्डित
३४९	६१३६	रामविनोद वैद्यक	कालिदास	१८३२	८६	
३५०	४२७१	रामविलास काव्य	रामप्रसाद सोतापतिशरण	१६व	१०	कृति के अत मे ' हनुमान छंद' है
३५१	५४११	रामस्त्वराज भा.डी	तुलसीदास गोस्वामी	२०	६६	र.का. स १६०१
३५२	४२४३	रामस्तुति गीत	"	१८वीं	४	
३५३	४२४२	रामस्तुति पद	मनोहर, कविकलानिधि	"	२	लि क. युगलकर्ण मिश्र
३५४	५३६२	रामायण (यु का)	"	१८२०	२६३	* प्रतार्पासिहाजया निर्मित
३५५	५३८६	रामायण (यु का)	"	१८३७	३४१	लि क रामसेवक, पत्र १-७६, २१०-२३१ अप्राप्त
३५६	७११३	रामायण (यु का.) सीताराम रामायण	कश्चित्, शर्भसिंह निर्वेशित	१६वीं	१३८	५० पत्र रिपुरदाह श्रीर ८८ पत्र युद्धकांड सम्बन्धी है

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २, २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमांक	गथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५७	६३७३	रामाना	तुलसीदास	१८वीं	३६	
३५८	७७४६ (१७)	"	"	२०वीं	१-२१	
३५९	६८२८ (२)	राव हमीरकी वारता	म प्रतापसिंहजी	१९वीं	७	
३६०	४२६३ (१७)	रासकी रेखता	"	१८वीं	४०-४२	
३६१	४३०६ (६)	"	"	१८वीं	१७-१८	
३६२	७४४१ (१२)	"	"	१९वीं	६१-६३	
३६३	५२०२ (६)	रासपञ्चाध्यायी	वशीश्री	१८वीं	११४-१२३	
३६४	५३६६	"	नन्ददास	१९वीं	१२	
३६५	४६२३ (१)	रूपमञ्जरी	"	१७वीं	१-१८	* लि क मुरलीधर मिश्र ३०० पद्य हैं भाषा पञ्जाबी प्रभावित है
३६६	५२०२ (४)	रेखता	डेडराज (जनराज)	१८वीं	१०८-१०९	
३६७	५४२६ (१०)	रेखता लैलामजनुका	डेडराज (जनराज)	१८वीं	५३-५६	
३६८	६८३५ (२)	लघुवाणक्य	कवि खेतसी	१८वीं	२	
३६९	७७२८	लीलाललित्तविनोव	कवि खेतसी	१८वीं	२७७	लि क ऊकारनाथ व्यास, रामद्वारा उद्वेपुरमध्ये *
३७०	५८६६ (२)	लैलामजनुका किरसा	प्रजयासीदास	१७वीं	६६-७२	चित्र स १७
३७१	७७४४ (६)	मजनागरी	प्रजयासीदास	१८वीं	१६३	
३७२	६६७८	ब्रजविलास (सचित्र)	म. प्रतापसिंहजी	१८वीं	६८-७५	* भाषाकार सुन्दर के पुत्र मुनालचन्द्र, लक्ष्मीदासका शिष्य है
३७३	७४४१ (१५)	ब्रजशृङ्गार	श्रुतसागर	१८वीं	६२	लि क. मतसुख कवोई, चौकानेर
३७४	६०१६	व्रतकथाकोश भाषा	गुंन	१८वीं	४६	
३७५	४१४३	गुंनमतसङ्घा	गुंन	१८वीं	४६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७६	५२१६(४)	वृन्दसतसई	वृन्द	१८५६	१६७-१६१	
३७७	५६१६	वनपर्वकी कथा	नथसल, शोभाचन्द का पुत्र	१८६६	१३	
३७८	६२३२	वररामनृतचरित्र भाषा		१८२७	७४	
३७९	५२०५(१)	बल्लभाचार्यविरचित और स्तोत्र नामावली		१८वीं	२-३२	
३८०	६०७८	विक्रमविलास	गंगेश मिश्र	१८६६	१०२	# र का स १७३६
३८१	५४१५	विक्रमाविर्यचरित्र (पचदडकथा)	वैद्यनाथ, कवि सोमनाथका वंशज	२०वीं	५-३३	र का स १८८४ आद्य ४ पत्र अप्राप्त
३८२	६६५२	विचारमाला		१८६३	५	र.का. स. १७२६
३८३	६१५७	विजयमुक्तावली(महाभारतअनुवाद)	छत्रसिंह श्रीवास्त्व	१८६५	२३१	अट्टरपुर (भदावर) के राजा कल्याणसिंह के राजसे स १७५७ में रचित
३८४	५३७५	विजयसुधानिधि	कविवर रामलाल	१६०३	१४१	कर्णपर्व से आगे पद्यानुवाद है
३८५	६३४१	विदुरप्रजागर	कृष्ण कवि	१८६५	६४	ब्रजेन्द्र बलवर्त्तसिंह के लिए रचित स १७६८ में राजा आयासल्ल की आज्ञा से रचित, स भा. उद्योग पर्व का अनुवाद
३८६	७७४०(१)	विदुरप्रजागर भाषा	गणपति मिश्र	१६३७	१-४६	
३८७	७५६२	वित्तपत्रिका	गो तुलसीदास	१६१४	८२	लि क हरिदास कबीरपंथी, बदनोरमध्ये
३८८	६०८६	"	"	१६वीं	८१	

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८६	६२१६	वित्तयपत्रिका	गो तुलसीदास	१८६०	५८	लि क वंष्णव गोविन्ददास
३६०	६२३३	"	"	१८६४	१०६	लस्कारी, स्थान विरवत अखाडा, भरतपुर
३६१	५२०३	विरहगुलजार इरक अन्नवर कथा अपूर्ण	म. प्रतापसिंहजी	१६वीं	४२	
३६२	७४४१ (१७)	विरहपदकी टीका	"	१६१४	८०-६६	
३६३	४२६३	विरहसल्लिता	"	१८वीं	३६-६३	
३६४	४३०६ (११)	"	"	१६वीं	२१, २२	
३६५	६६७३	विविधसग्रह	"	"	८८	रामचरित चौपाई, गुरुमहिमा, सुदामावारहखडी, नारव गीता आदि
३६६	४२८७ (८)	विवेकचिन्तावनी	सुन्दरदास	१७२८	३३-३८	लि क आनन्दराम
३६७	४६२५ (२)	बृन्दविनोद (बृन्दसतसई)	बृन्व (बरवरज)	१८२६	१७५-२०७	६६४ बोहे है
३६८	७४४१ (१८)	बृन्वसतसई	"	१६१४	६७-१३४	
३६९	४२८८ (१)	बृन्वावनशात	"	१८८६	१७	
४००	५२०२ (३)	"	माधो (भागवत हरिवासशिष्य)	१८८५	६१-१०८	र का स १७०७
४०१	५२०६	बंदाकसार	नयनसुत, केशव मिश्रसुत	१८वीं	६१-१५१	
४०२	५४२३	बंदाकमनोसच	"	१६वीं	६८	
४०३	६६३७	"	जनादेन गोस्वामी	"	४०	
४०४	६०२२	बंदाकसार	"	१८८४	३६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४०५	४३६६	वैद्यविनोद, (शाङ्गधर भाषा)	रामचन्द्र	१८११	६६	र.का स १७३६
४०६	७७२० (१३)	वेदनिर्णयपञ्चाशिका	बनारसीदास	१८वीं	४८-५०	र. स्था०-मरोटकोट
४०७	६६४३	वेदान्तपरिभाषा	मनोहरदास निरञ्जनी	"	२०	र.का स १७१७
४०८	६७७०	वेदान्तमहावाक्य भाषा	"	१८५२	२०	र.का स १७१७
४०९	४५५७ (३)	वेरायमञ्जरी	स प्रतापसिंहजी	१६वीं	२४-३८	
४१०	७४४१ (३)	"	"	१६१४	२२-३५	
४११	७७४६ (३)	"	"	२०वीं	१३	
४१२	८१०७	वेरायशतक भाषानुवाद	हरदयाल	१६५४	६०	लि.क प्रोहित दीनानाथ
४१३	६७२५	शतकत्रयभाषानुवाद	स प्रतापसिंहजी	१८६५	१२०	लि.क. मङ्गाविष्णु
४१४	७८३८	शतकत्रयमञ्जरी (सचित्र)	"	१६वीं	६५	चित्र सं १
४१५	६७६८	शतप्रश्नोत्तरी भाषा	मनोहरदास निरञ्जनी (?)	१८५२	२४	
४१६	४१६४ (२)	शानिकथा	मुता रामदान	१६२६	१०-१३	पद्यबद्ध कथा है
४१७	५४२५	शब्दावली (अपूर्ण)	रसानन्द	१८७१	६-४५	सन्त शब्द-वाणियो का सग्रह
४१८	५३६६	शिलानलवर्णन	"	१८६३	२४	* र.का स. १८६३, स्वयं कवि के हस्ताक्षरो मे लिखित
४१९	४५४७ (२)	शृङ्गारमञ्जरी	स प्रतापसिंहजी	१६वीं	१३-२४	
४२०	७४४१ (२)	"	"	१६१४	१२-२२	
४२१	७७४६ (२)	"	"	१६वीं	१३-२४	
४२२	६४६१	षट्प्रश्ननिर्णय	मनोहरदास निरञ्जनी	१८२६	३३	लि.क. सेसराम, कुणोरमध्ये
४२३	६७६६	"	"	१८५२	७५	लि.क. महात्मा जयदेव जोबनेर-वासी

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२४	५४३६	सिखनखवर्णन	बलभद्र	२०वीं	२४	
४२५	५४२१(१)	सिद्धान्तके पत्र	वृन्दावनदास	१६वीं	१-२५	
४२६	७४४१(७)	स्नेहबहार	म प्रतापसिंहजी	१६१४	४३-४६	
४२७	४४५२(३१)	स्नेहलीला	"	१८वीं	३३, ३४	
४२८	५२३४(१)	"	कवि गिरिधरराय	१६११	१-१०	
४ ९	५४३८(३)	"	विष्णुदास	१८६०	४०-५६	
४३०	६७४६(३)	"	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	६२-१०५	
४३१	७४४१(६)	स्नेहसंग्राम	"	१६१४	५२-५७	
४३२	४६२३(३)	स्फुट कवित्त आदि	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१-१४	
४३३	४२२६	स्फुट कवित्त, रेखता आदि		"	३३	
४३४	६३४२(१)	स्फुट कवित्त		१८८६	१०	
४३५	६३४३(१)	स्फुटोक्ति	सूर आदि	१७४२-	१२	
४३६	६६६२	स्फुट पदसंग्रह		१७४४	६८	
४३७	६८२३(६)	स्फुट राग पत्र		१८५२	३५-३७	
४३८	७७५३(६)	स्फुट संवैया	म प्रतापसिंहजी	१८३७	३८-३९	
४३९	४२६३(१३)	स्नेहसंग्राम	"	१८वीं	२७-३०	
४४०	४३०६(२)	"	"	१६वीं	१-३	
४४१	४२६३(१४)	स्नेहबहार	"	१८वीं	३१-३३	
४४२	४३०६(३)	"	"	१६वीं	४, ५	
४४३	६३२८	स्मरणदर्पण	रामचन्द्रवाग	"	८	

* ति क वद्वीनाय व्यास

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४४	७१३३	स्वरोदय	गोरक्षोक्त	१९४६	११	लिक प्रभु पुरोहित नागोर का
४४५	५७१७	स्वरोदय भाषा	लालचंद्र	१८वीं	१४	
४४६	५९५७	स्वरोदय टीका	सोमनाथ, नीलकण्ठात्मज	१९वीं	६	
४४७	५७८५	संग्रामवर्षण	कुलपति मिश्र	१९१५	३४	र का सं १७८६, ग्रन्थान्त में कविकुल-वर्णन है
४४८	७७३६	संग्रामसार, द्रोणपर्वका अनुवाद		१९५७	१९५	म रामसिंह की आज्ञा से निर्मित लि.क. कृष्णचंद्र, बूंदी
४४९	७७३७	"	"	१९वीं	१५२	
४५०	७८१९	संगीतवर्षण भाषा	हरिवल्लभ	१८३१	३-७९	आद्य २ पत्र अप्राप्त
४५१	४००५	सयोगद्वित्रिशिका	मानकवि	१८४८	४	
४५२	६४१७	सयोगवत्तीसी	"	१९वीं	२	
४५३	७७२१ (४)	"	"	१८२५	१११-११८	
४५४	५३४९	सत्यनारायणव्रत कथा	हरिवास	१८२५	२४	र का सं १९२२, लि क प्रताप मिश्र,
४५५	५२४२	सत्यनारायणकथाका अर्थ		१९वीं	१४	
४५६	७८१६ (२)	संपन्त्रादि	मनोहरदास	१८३१	९	फतहचंद्र, गणपति, भोलानाथ आदि द्वारा रचित पद्य
४५७	६९८६	सदाशिव भट्ट प्रशस्तिपरक पद्य		१८४१ से पूर्व	७	
४५८	५३८४ (२)	सनेहलीला	रघुराम कवि	१९०४	७०-८२	
४५९	७६०७	सनकाविबीजमंत्र	रघुराम कवि	१९वीं	१	लिक केशवदास
४६०	४९०८	सभासार आदि	रघुराम कवि	१८५२	११४	लिक सगनीराम ब्राह्मण, माडलगढ़मध्ये
४६१	४००३	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४५	२०	रा का.स १७५७ स्था सारंगपुर, अहमदाबाद

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्चिर--हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	४०२८	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४२	१६	* लि क ऋषि किशोर, सीभक्त प्रथम पत्र अत्राप्त
४६३	५४२१ (२)	समयप्रबन्ध	वृन्वाचनदास	१९वीं	१-३११	लि क प्रीत सीभाय
४६४	४४५२	समयसार नाटक	बनारसीदास	१८१२	६२-८४	र.का स १६९३
४६५	४७९१	"	बनारसीदास	१८वीं	६९	
४६६	४८१६	"	बनारसीदास	१८०२	१३६	
४६७	४८१२	"	"	१८६०	१२५	लि क. मोहन,
४६८	६४४२	"	"	१८२४	६०	रचना स्या० आगरा ।
४६९	७७२० (२)	"	बनारसीदास, आगरानिवासी	१७२५	१-५४	लि क मतिवर्द्धन, हमीरगढमध्ये दोस श्री थावा पठनार्थम्
४७०	६३५३	समयसार नाटक भाषा	"	१९	८६	र.का. स० १६९३
४७१	६८४४	समयसार भाषा नाटक	बनारसीदास	१७५३	११७	
४७२	५३७३ (२)	समयसार नाटक, सिद्धान्त भाषा	"	४-७३		
४७३	५३७६ (१२)	"	"	११२-१९७		
४७४	७४४२ (३)	समयसार भाषा	बनारसीदास	१७६४	१-७१	
४७५	७४४३	समयसार नाटक भाषा	"	१९१३	१३२	लि क दवे अमरचव
४७६	५३८० (२)	समरविजय	"	१८४६	१९	प्रल्हाददास वैष्णव पठनार्थ
४७७	६७६६	सरसरस	राय शिवदास	१९वीं	१५	
४७८	६८३५ (३)	सवा सी सील	बालपुरी	८६९	४	
४७९	४४५२ (२३)	सवैया		१८वीं	२३ वीं	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८०	४४५२(३३)	मवैया	चद कवि आदि	१९वीं	४० वॉ	लि. क. प्रीत सौभाग्य
४८१	४४५२(६३)	"	दुलसीदास	"	११८ वॉ	
४८२	६२२७	सियरघुवीरखिवाह	कृष्णदास	"	९	
४८३	५०३५	सिंहासनवत्सी (अपूर्ण)	चन्द कवि	१८९९	९३	लि. क. काशीराम पचौली
४८४	५८६५	"	कवि बालक (चन्द ?)	१९वीं	१०२	*
४८५	६०११	सीताचरित्र चौपाई	अग्रदास	१७४७	१२३	जीर्ण प्रति
४८६	६१४६	सीताचरित्र चौपाई		१८९८	१००	र. का स १७१३
४८७	७७५९(१)	सीताराम ध्यानमञ्जरी		१८६४	१-२३	गोगावत कुलावतस, शर्मासहा-
४८८	६९३१	सीताराम रामायण (शयो काड, वनवास काड)		१९वीं	१५९	ज्ञया प्रणीत
४८९	६९३२	सीताराम रामायण		"	५९	
४९०	६९३३	सीताराम रामायण (आर. काड, सीतापहरण काड)		"	५९	
४९१	६९३४	सीताराम रामायण (फि का कपिमित्र का)		"	६२	
४९२	६९३४	सीताराम रामायण (सु का. रिपुपुरदाह का)		"	४७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९३	७१५५	सुखदेव लीला	मुरलीदास	"	१२-१४	
४९४	६४४६(६)	सुदामाकी वारहखंडी	नरोत्तमदास	"	१-१३	
४९५	५४१२(१)	सुवामाचरित्र	खुवाल गाडिल्य विप्र	१८९३	१२	
४९६	५९४७	सुदामाचरित्र (कवका प्रणाली) सुन्दरवासकी माखी	सुन्दरदास	१८वीं	५६	

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९७	६९४७	सुन्दरदासजीके शब्द	सुन्दरदास	१८८६	४५	लि स्या फतेहपुर
४९८	४३१३ (२)	सुन्दर भक्तियिलास	लाला सुन्दरलाल	१८९७	६-७१	लि स्या. जयपुर
४९९	४२१६ (८)	सुन्दररङ्गार	सुन्दरदास	१८५६	३३३-३५६	
५००	४३०७ (२)	"	"	१८३७	८७	लि क वेणीराम
५०१	४८१४	"	सुन्दरदास	१८१३	२३	लि क श्रीकमजीशिव्य डाह्याजी
५०२	४८३५	"	"	१७८६	२१	लि क मुनीलाल सूरत चन्दरे
५०३	४०२६	"	"	१७४२	२२	र फा स १६८८
५०४	६३१७	"	सुन्दर कवि	१९वीं	४०	र फा स १६८०
५०५	६९४४	सुन्दरसंवासाग्रह	सुन्दरदास	१८८३	७६	लि स्या फतेहपुर
५०६	६९४५	"	"	१८०४	४४	लि क प्रेमदासशिव्य भिलारी- वास
५०७	७७२० (१६)	सुमतिकुमसिसवाद (फहरामामाकी चाली)	स प्रतापसिंहजी	१८वीं	५०वां	
५०८	४३०६ (७)	सुहागरेन	"	१९वीं	१४, १५	
५०९	७४४१ (५)	"	"	१९१४	४०-४२	
५१०	५४३५	सूरजपुराण	सूरदास	१८९२	२२	पद्मपुराणोक्त
५११	६३४२ (३)	सूरसागर पद	"	१९वीं	१६-२४	लि क मनसाराम कायस्य
५१२	७७२२ (१)	सूरसारङ्ग (अपूर्ण)	"	१८वीं	१-३६	१७२ पव है
५१३	५८६६ (१)	सौदागर वच्चेका किरमा	तुलसीदास	१८वीं	१-१०	
५१४	६२०२	हनुमानवाहुक	लक्ष्मणदास चारंड	१९१७	१४	
५१५	७७३१	हयगणप्रकाश प्रश्नोत्तर		२०वीं	५२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१६	७८११ (५)	हरबोलचितावणी	सुन्दरदास	१८वीं	१८-१६	
५१७	४२६३ (७)	हरिकीर्तनमाला	रसरशि	१८८२	३०-४४	
५१८	४४६५	हरिनाममाला	सुन्दरदास	१६वीं	१	
५१९	४२८७ (६)	हरिबोलचितावनी	लालचद	१७२८	२३-२५	लि क आनदराम
५२०	६३४०	हरिवंश भाषा		१६वीं	१५४	आदि के १५३ पद्य ऋतित
५२१	५३६०	हरिवंशपुराण भाषा		१७१६		लि स्था अबावती, पत्र १ से ७
५२२	६१५८	"	सालवाहण	१७८४	५८	अप्राप्त
५२३	६१७५	"	शुशालचन्द्र	१८४२	१६७	पत्र ४ से ६, ७, १६, १७, ३०, ३४
५२४	७१३४	हितहरिवंश जन्मोत्सव	व्यास हरिलाल	१८३७	७	४२ से ४६ नहीं हैं
५२५	५३७६	हितामृतलतिका	राम कवि	१६वीं	१३३	लि क स्वय रचयिता, बृन्दावन मध्ये
५२६	४२१६ (१)	हितोपदेश टीका	विष्णु शर्मा	१८५६	३७०	ब्रजेन्द्र बलवन्त सिंहाज्ञया रचित
५२७	४०१५	हितोपदेश पचास्थान	"	१८५६	७२	लि क ऋषि टेकचद्र
५२८	४३१६ (१)	हितोपदेश भाषानुवाद	"	१८६४	१५८	
५२९	४६१५ (६)	हितोपदेश भाषा	कोविद मिश्र	१८८७	२००-३४७	लि क मुशी पन्नालाल, जोधपुर
५३०	५०८२	हितोपदेश (सचित्र)		१८वीं	१७६	* चित्र सख्या ४७, कोटा कलम
५३१	६३४४	हितोपदेश (पद्यानुवाद)	विष्णु शर्मा	१८८८	७८	बुन्देलखड के महाराजा पृथ्वी- सिंह की आज्ञा से रचित
५३२	४१६५ (३)	हितोपदेश (चतुर्थ तत्र तक)		१८०१	१५-१६७	लि.क. डालूराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि-समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५३३	७७४० (२)	हितोपदेश भाषा पद्यानुवाद	श्रीपति भट्ट	१९३७	४६-१२५	लिस्था लोचनपुर (बूढी)
५३४	६२५६	हिम्मतिप्रकाश	सवाई प्रतापसिंह	१९०८	४५	र.का.स १७३०, प्रथम पत्र अप्राप्त
५३५	४३०९ (१९)	होरीबहार पद टीका	ब्रजजीवन	१९वीं	३२-४४	
५३६	६३४५	द्वय्याभरण कवित्त	कृष्णदास	१८६१-६२	१८२	
५३७	६९५१ (२)	ज्ञानचरणवाचिका	वनारसीदास	१८९१	२०	
५३८	६२०६	ज्ञानप्रकाश	"	१८८०	४	गोपालदासजी पठनार्थम्
५३९	४९१४ (७)	ज्ञानपचीसी	मनोहरदास निरञ्जनी	१८७१	१६७-१६८	
५४०	७७२० (४)	"	"	१८वीं	४१-४२	
५४१	६९५१ (१)	ज्ञानमञ्जरी	"	१८९१	२०	लि.क.दूल्हेराम मिश्र, हन्तेडा मध्ये
५४२	६७६७	ज्ञानमञ्जरी भाषा	"	१९वीं	२६	र.का.स १७१६
५४३	४०६५	ज्ञानवचनचूर्णिका	"	१८५५	१८	लि.क.सहजराम दादूपथी
५४४	६७७१	"	"	१८५२	२२	
५४५	४०५७	ज्ञानशृङ्गार	सुमति रग	१८५०	२२	र.का.स १७२२ मुलतानामध्ये
५४६	६९०८	ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	१९०७	३१	लि.क.वलदेव ब्राह्मण ६०० छन्द है
५४७	४३०८ (२)	ज्ञानसमूह	सुन्दरदास	१८वीं	४१०-४४६	
५४८	६८३७	"	"	"	६१	र.का.स १७१०

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २२-जैन स्तोत्र]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४६०६	अतरिक्षपार्वना छन्द	भाव विजय	१८४५	३	लि क हर्षविजय
२	५०७०	"	"	१८११	२	
३	४१४६	" स्तव	"	१६वीं	७	
४	४३४६	अजितशक्तिस्तव सबालावबोध	सकलकीर्ति	१७वीं	४	
५	४६१४(३६)	आराधना		१८७७	२६२-२६४	
६	५६६०	" चौपई		१५६२	१८	
७	७७५३(६)	इलापुत्रस्तवन	सिद्धि विजय	१८३७	४४-४५	
८	४३६२	एकादशगणधर स्तवन	भावकवि	१७वीं	५	
९	४४५२(६८)	ऋषभजिनस्तवन		१८वीं	१२० वीं	
१०	४६१४(२३)	ऋषभनाथजीनो छन्द		१८७१	२३०से२३१	
११	४६१४(६०)	"	मूला मयाराममुत	१८७७	३१७से३२०	
१२	७३७२	ऋषभदेवजीरो छन्द	धर्मसी	१६वीं	१	
१३	४६१४(१७)	ऋषिमडलस्तोत्र		१८७१	२१०से२१२	
१४	७५५०	कल्याणमन्दिरस्तोत्र (राजस्थानीटचार्यसहित)		१७५७	१२	लि क. घनजी
१५	५३७३(१)	" मूल		१८वीं	१-३	
१६	५६८२	" (सटीक, त्रिपाठ)	कुमुदचद्र	१७वीं	१२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७	६२५६	"	हर्षकीर्ति	१८४८	२५	लि क हेतराम यती श्रीमोचद की पोथी सू राजराजा रणजीतस्यधजी ने लिखी
१८	७३६८	" (राजस्थानीभाषार्यसहित)		१८वीं	८	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	६९१४	कल्याण मन्दिर स्तोत्र	साधुकीर्तिगणि	१७८२	१८	
२०	४०३०	राजस्थानी भाषार्थ सह		१७वीं	३	लि क समयकीर्तिसुनि
२१	५०६९ (७)	कायस्थिति स्तोत्र (सबालावबोध)	साधुकीर्तिगणि	१९०६	१३ वां	
२२	५०६९ (१)	गौडीयपार्ष्वस्तुति	साधुकीर्तिगणि	१९०६	१९३	
२३	५०६९ (४)	गौडीयपार्ष्वनाथ चौढालियु	साधुकीर्तिगणि	१९०६	१० से १२	
२४	५०७७ (१)	छन्द	साधुकीर्तिगणि	१८०२	१ला	पत्र का कोण कटा हुआ है
२५	४३६३	गौडीपार्ष्व स्तवन	साधुकीर्तिगणि	१६८५	६	
२६	४३६६	गौतमदोवाली का स्तवन	साधुकीर्तिगणि	१५२४	५	लि क धोरमूर्ति गणि शिव्य लि स्या श्री भगपुर महानगर
२७	६३२९	स्तुति	साधुकीर्तिगणि	१७८२	६	लि स्या. मसूदा
२८	७२७५	स्तुति (सावचूरि, पचपाठ)	वपु अट्टिसूरि	१६वीं	४	
२९	४२८७ (५)	चतुर्दिशतिस्वयभूस्तोत्र	वपु अट्टिसूरि	१७२६	१९-२२	
३०	४९१४ (३२)	चैत्यवदन चौपाई	वीरचन्द्रमुनि	१८७७	२४९ से २५१	
३१	४९२४ (४)	चैत्यवदन चौपाई	वीरचन्द्रमुनि	१७८७	१	
३२	५४३६ (१)	चैत्यवदनादि जिनस्तवनसग्रह	वीरचन्द्रमुनि	१८५३	१ से ३	लि क दीलतराम मुनि लि स्या मारोट
३३	५४४१	चैत्यवदनादि जिनस्तवनसग्रह	वीरचन्द्रमुनि	२०वीं	२४२	
३४	७४४८	चैत्यवदनादि जिनस्तवनसग्रह	वीरचन्द्रमुनि	१९१५	१२६	लि क अमरचद ? स्तवविण- यक ३१ कृतिपो का सग्रह
३५	५०७२	चीनीस जिनस्तवन	गुणविजय	१८वीं	५	
३६	७५९९	भाषा	महानन्द मुनि	१९वीं	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र मख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	७४४४(१)	चौबीसी	आनन्दधन	१८८५	१-५३	इस गृहके मे १६ कृतियों का संग्रह है
३८	४६१४(३८)	चौगसी लाख जीवयोनिवीनती	ज्ञानभूषण	१८७७	२५६से२६२	
३९	४६१४(५६)	"	हर्षकौलि	१८७७	३१५से३१७	
४०	७३६६	जयतिष्ठयण (सात्रचूरि)	अभयदेव	१८८२	५	लि. स्या जंसलमेर
४१	७४०६	" (सवालावबोध)	"	१६६५	६	लि क भुवनसुन्दर
४२	५४३६(१८)	जिणकुशलसूरिवृद्धिस्तवन	जिनकीतिसूरि	१९वीं	३	दो स्तवन है
४३	५४३६(१६)	जिणकुशलसूरिलघुस्तवन	जिनसेनाचार्य	"	१	
४४	६३८५	जिननमस्कार	भूधर	१८वीं	४	
४५	४२८७(११)	जिनाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र	भूधर	"	७८से६२	
४६	४६१४(४०)	जीवदया छन्द	भूधरवास	१८७७	२६५-२६६	
४७	६१८०	जैनचैत्यस्तव (सरस्वतीस्तोत्र)	ब्रह्मगुलाल	१९वीं	५	
४८	५३७३(४)	जैनशतक	प्रभाचद्र	१८वीं	६७से१०६	रचना स० १७८१
४९	५४१८(८)	तिरेपन क्रिया		१९वीं	१०१से१०५	
५०	५४१८(१४)	"		"	११६से११६	
५१	४६१४(५६)	तिरेपन क्रिया वीनती		१८७७	३११-३१२	
५२	५४३६(६)	तीर्थबिलीस्तवन		१९वीं	३६-३८	
५३	७०८४	दण्डकविचारषट्त्रिंशिकासूत्र सटिप्पण	गजसारसाधु धवलचद्र महोपा- ध्यायशिष्य, टि. क. यश सोम	१८वीं	१०	
५४	५४३६(१७)	दाहेजीरा म्त्वन		१९वीं	११	
५५	५४३६(८)	नवकारमत्रमहिमालघुस्तवन			४०-४३	
५६	७२६०	नवकारमहोमत्रस्तवन	जयवल्लभसूरि	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७	५४३६ (१४)	नवकारमहिमास्तवन		१६वीं	३	
५८	५४२७ (१)	नवस्मरणस्तवन		१८७१	१-३१	
५९	४९१४ (२१)	नीगोवनी वीनती		१८७१	२२९-२३०	
६०	४८३७	नेमनाथसिलोको	उदयरतन	१८७१	४	लि क फतेचद्र लाघडामध्ये
६१	४९१४ (१२)	प्रभाती	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वीं	
६२	७२५७	प्राचीनकर्मस्तवटीका	गोविंदगणि	१७वीं	१७	
६३	५४३६ (१३)	पचकल्याणस्तवन		१८७१	२	
६४	४९१४ (१)	पचकल्याणीक	रूपचद	१६३५	१-७	
६५	४२९८	पचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ	समयराज मुनि	१६३५	४	श्रीपाशवंताथसप्तसंस्कृतस्तव भी साथ में है, लि क नयनकमलगणि
६६	६२९९	पचमगलस्तवन	रूपचद	२०वीं	८	
६७	४९१४ (१५)	पचमेरु शब्दक	सुवर्शनविजय	१८७१	२०८-२०९	
६८	५४३६ (१५)	पचसवरस्तव		१८७१	२	
६९	५०६९ (५)	पद्यावतीछन्द	हर्षसागर	१९०६	१२-१३	
७०	४९१४ (४६)	पद्यावतीवीनती (१)	पुजराज	१८७७	२७५ वीं	
७१	४९१४ (४७)	" (२)	"	"	२७५-२७६	
७२	४९१४ (४८)	पद्यावतीस्तोत्र (शब्दक)	जिनसागर देवेंद्र कीर्तिशिय	"	२७६-२७७	
७३	५१३१	पद्यावतीस्तोत्र		१९वीं	२	
७४	७४४४ (१७)	पनरे तिथिरी युई		१८८५	२९४-३०२	लि क नेमविजय मानविजयशिय गोषूदा नगर में लिगित
७५	७४४४ (९)	पांच तिथिरी युई		"	१९०-१९४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता यादि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	७२६४	पार्ष्व जिन यमकमयस्तुति		१७वीं	१	
७७	५४३६ (१०)	पार्ष्वनाथजिनलघुस्तवन	भुवनकीर्ति	१८७७	४४-४६	
७८	४६१४ (५२)	पार्ष्वनाथजीनो छन्द	श्रमयसोम	१८०५	२८३से२८८	लि.क प्रीतिसीभाग्य, लि. स्था. नीबिडा र का. वि० १५३५
७९	४४५२ (६६)	पार्ष्वनाथजी पाढगत छन्द			११६ वाँ	
८०	७४०४	पार्ष्वनाथ तथा साधारण जिनस्तवन	प्रेमविमल	१९वीं	१	
८१	६६८४	पार्ष्वनाथस्तवन		१८वीं	७	
८२	७७५३ (५)	पार्ष्वनाथस्तवन	कीर्तिप्रभ	१८३७	३७-३८	
८३	७५६५	पुद्गलपरावर्त्त स्तवन सवालावबोध		१७वीं	१	
८४	५४३६ (१६)	बीसवहिर्मानस्तवन		१९वीं	१	
८५	७१३८	बीसस्थानकस्तुति	हरिदास	२०वीं	१८	
८६	५२६८	भक्तामर बालबोध टीका	मानतुग (हिमराज)	१८वीं	१८	कमलमपुरमध्ये रचित ४६ पद्या
८७	५४१८ (२)	भक्तामर भाषा			८	
८८	७१०६	भक्तामर भाषा कालभैरवाष्टकादि		१८वीं	८८	इस गुटके मे आबूस्तवन, स्थूल- भद्र सज्भाग्य, साधुवन्दना संग- लाष्टक चतुर्विंशतितीर्थकर स्तव सरस्वती श्रष्टक आदि विविध रचनाओं का संग्रह है र का स० १७४७
८९	६३४७	भक्तामर महाचरित्र भाषा	विनोदीनाल	१८२८	२६३	
९०	५४२७ (२)	भक्तामरस्तोत्र		१९वीं	३१से४५	
९१	४०२५	” प्राकृत वार्तिक सहित	मानतुग सूरि	१६८६	२२	प्रथम पत्र श्रप्राप्त । लि क शिव- दास वसताणी, स्था देशलहरान, श्रीफतेपुरमध्ये
९२	४३६०	” सवालावबोध	”	१७वीं	५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६३	७२७१	भक्तामरस्तोत्र	मानतुग सूरि, बाला. मेरुसुन्दर	१७००	१४	लि.क रूपचद
६४	७४०८	"	मू. मानतुग	१८२६	१६	
६५	५६०५	भक्तामर टीका	गुणाकर	१६वीं	३२	लि.क रामचद्र
६६	४२८७ (२)	भक्तामरस्तोत्र	मानतुग	१७२६	५-११	लिपि सुन्दर है
६७	६०००	भक्तामरस्तोत्र पचपाठ	अमरप्रभ सूरि	१७वीं	७	
६८	६०३६	"	भा विनयसुन्दर	१८वीं	१६	लि. स्था तूगा
६९	६२७१	"	मू. मानतुग, भा. शंकरराज श्रीमाल	१७८४	२४	लि. स्था. अमदा नगर
१००	६२७७	"	हेमराज	१६४१	१६	# कृतियों के नाम परिशिष्ट मे
१०१	७४५०	भक्तामर भाषा आदि विविध कृतियाँ		२०वीं	२३२	देखिये
१०२	६२८६	भक्तामरस्तोत्र सटीक	मानतुगाचार्य	१८वीं	६	
१०३	६३६१	भक्तामर सटीक त्रिपाठ	टी कनककुशल	१६२८	२४	लि. स्था विराट नगर
१०४	७१८४	" (मुखबोधिका)	टी अमरप्रभ	१७वीं	५	
१०५	७३८१	" वृत्ति (सुबोधिका)	वू का समयसुन्दर	१८२१	७०	रचनाकाल-सत्तवसु श्रुगावसति
१०६	७७६४	भवारिवारणस्तोत्र सटीक पचपाठ	जिनवल्लभ सूरि	१७वीं	५	१३८७ (?) पत्तने नगरे
१०७	४६१४ (११)	मदिरस्वामीनी वीनती	सकलकीर्ति	१८७१	२०७-२०८	
१०८	५४३६ (२०)	मरोटकोटमण्डण, दावेजी श्रीजिन- कुशल सूरिजीरी नीशाणो		१८५३	८	
१०९	५०७१	राणपुर मण्डन वीरजिनस्तवन	मानदेव आचार्य	१८वीं	२	लि.क दौलतराम मुनि
११०	७८२७	लघुशांतिस्तव सटीक		"	१६	र का १६११

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	७४३७	ललितविस्तरा पञ्जिका (चैत्यवन्दना वृत्ति)	मुनिचन्द्रसूरि	१५वीं	४०	
११२	७३५५	वर्षमानस्तुति	कनककुशलगणि विजयसेन सूरिशिष्य	१६५७	१	लि. क. साहू हरथ (ब), ग्राम-हालीवाडा
११३	५०७६	वासुपुज्यस्तवन	प्रेमविजय	१६वीं	७	
११४	४३४४	वीतरागस्तोत्र	हेमचन्द्रसूरि	१७वीं	८	
११५	५६३५	वीतरागस्तोत्र सावचूरि पचण्ठ	हेमचन्द्र सूरि	१६वीं	६	सहजातिशयनामक द्वितीयस्तव श्रावणीस्तवे विंशतिप्रकाश
११६	५६३६	"	"	"	१०	
११७	५४१८ (११)	वीरजिणन्द	वीरविजय शुभविजयशिष्य	१६वीं	११२-११३	
११८	५०७४	वीरस्तवन सस्तवक		१८५८	१०	
११९	६४४६ (२)	वीरस्तुति	जिनसागर सहजसागर	१८वीं	४०-४१	लि. क. खेमधर्म, लि. स्या. पीपाड- नगरे
१२०	७३७६	वीस विहरमान गीत, पुरोहितपुत्र स्वाध्याय			६	
१२१	५०६६ (३)	बद्धचैत्यवन्दन	मूला वाचक	१६०६	८-१०	
१२२	४३४५	श्रीशृषिमडलस्तवन	धर्मधोष सूरि	१७वीं	११	
१२३	४१५६	श्रीदेवीछद शनैश्चरस्तुति	हर्षरचि	१६वीं	३	
१२४	५०७५	शार्वेश्वरपाशर्वछद	गुणसार	"	३	
१२५	७७५३ (४)	शातिनाथस्तवन	वनारसीवास	१८३७	३४-३६	
१२६	७७२० (१५)	शातिनाथ त्रिभङ्गी छन्द	सिंहनिन्द	१८वीं	५०-५१	
१२७	५३८५ (७)	श्रीतलनाथस्तोत्र		१६वीं	१८६वीं	
१२८	४५११	श्रीभनस्तुति	धनपाल पंडितवाग्धव	१७वीं	६	
१२९	७४७२	" पचपाठ		१६३४	१०	लि. क. पूरणमल नाथुर कायस्थ लि. स्या. गढ रणयम्भोर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३०	७२७८	शोभनस्तुति सटीक	शोभन	१६वीं	११	
१३१	४८४०	स्तभनपार्श्वनाथस्तवन जम्बुकुमार स्वाध्याय	कुशललाभ कवियण हरिविजय- शिष्य	१८२८	३	
१३२	६८३६	स्तभन पार्श्वनाथस्तुति आदि		१६वीं	७२	* लि स्था सागानेर, इस गुटके की अन्य कृतियों का विवरण परिशिष्ट में देखें
१३३	४६१४ (१३)	स्तवन (मुजरा)	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वीं	
१३४	६१६०	स्तवन (स्वयभूस्तोत्र)	समतभद्र स्वामी	१८वीं	१६	इस प्रति में २४ स्तोत्र हैं
१३५	७५६८	स्तवन (शातिजिन)		"	३	
१३६	७४४७	स्तवनसज्जाय पवसग्रह		१६१६	१७०	लि क अमरचंद्र, सेठ गभीरसल- पठनाथम्
१३७	७४४६	" आदि		१६११	२००	
१३८	७४४४ (१०)	स्तुतिस्तवन		१८८५	१६४-२०५	* इसमें पजूसणरी थुई, सेत्रुजाजोरी थुई, पाचमरो तवन, आठमरो तवन, इग्यारसरो तवन है
१३९	६८२५	स्तोत्रसग्रह		१६वीं	४	* इसमें ५ स्तोत्र हैं, नाम परि- शिष्ट में देखिये
१४०	७४४४ (६)	सप्तस्मरण	नानू ऋषि	१८८५	१४४-१६८	
१४१	५४२७ (३)	"	ब्रह्महस	१८८७	४५-४६	
१४२	४६१४ (३६)	सात वसणनी वीनती	जयानन्द, भ्रव. वानर ऋषि	१८८७	२५७-२५८	
१४३	७३६४	साधारणजिनस्तोत्र (सावचूरि)		१७५८	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	५०७७ (३)	साधारण स्तवन	मोहनविजय रूपविजयशिष्य	१८०२	१ला	
१४५	५४१८ (२१)	साधुवन्दना	बनारसीदास	१९वीं	१४५-१४७	
१४६	५११४	सीमंघरवीमती		१८वीं	२१	
१४७	४९१४ (२२)	सीमंघरस्तवन	भक्तिलाभ	१८७१	२३० वां	
१४८	७७५३ (३)	"		१८३७	३२-३४	
१४९	६८४०	" आदि (विशतिविहार स्तवनादि)		१९वीं	२२६	फुटकर ढाल, भक्तामर, तथा घटाकर्ण स्तुति आदि कृतियाँ हैं

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २३-जैनागम]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७२५८	अन्तकृद्देशाविवरण तथा अनुत्तरो- पपातिकविवरण		१७वीं	११	संस्कृत-श्राकृत
२	७६४०	अन्तकृद्देशाङ्ग सूत्र		"	१२	श्राकृत
३	७५३४	अन्तकृद्देशाङ्ग सूत्र (प्रा० राजस्थानी- भाषासहित)		१७६६	६२	प्रा. रा. लि. क. ऋषि श्रीकम, राणङ्गपुरे
४	७२५४	अन्तगडवशा (राजस्थानीभाषाय- सहित)		१६३६	३८	अ. प्रा., लि. क. श्री-जिया अमराजीशिष्या
५	७४६४	अनुत्तरोपपातिकसूत्र		१८वीं	१०	श्राकृत., लि. क. ऋषि हरजी
६	७६३८	अनुत्तरोपपातिकसूत्र (राजस्थानी- भाषायसहित)		१७७३	१६	प्रा. रा., लि. क. ऋषि धनजी
७	७२१२	अनुत्तरोववाइसूत्र		१६वीं	४	प्रा. अ.
८	७२०२	अनुयोगद्वारवृत्ति	श्रीहेमचन्द्रसूरि मलधारी	१६६६	१०४	संस्कृत, लि. क. गणनन्दन मुनि विशालकीर्ति, लि. स्या. पुष्क- रिणीनगरी (पोहकरण)
९	७४११	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध, राज- स्थानीभाषायसहित)		१७वीं	१०१	प्रा. रा.
१०	७४१५	"		१६वीं	६६	"
११	७५५१	"		१७२७	५६	" लि. क. मुनि मनोहर लि. स्या. वीरसग्राम
१२	५६३२	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध याला- यबोध)	वा. पासचन्व साधुर्ललाध्य	१५८६	१४२	पा. रा., लि. क. रतनभट्ट गुजर- गौड लि. स्या. तोमलपुर, आद्य पत्र अप्राप्त
१३	५६३१	आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध आलायबोध)	"	१७६६	८१	प्रा.

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	७३५८	आचारारङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध राज-स्थानीभाषार्थसहित)		१६२३	६५	प्रा. रा. , लि क गोडा अमरदत्त
१५	७५४०	आचारारङ्गनिर्युक्ति	श्रीजिनहसूरि	१७वीं	१४	प्राकृत
१६	७२४०	आचारारङ्गप्रदीपिका	शीलाङ्क	१६६५	२१६	स प्रा.
१७	७२२२	आचारारङ्गवृत्ति		१६वीं	२८१	"
१८	७२७४	आचारारङ्गसूत्र		१७वीं	११५	प्राकृत
१९	७४२६	आवश्यकनिर्युक्ति		१६वीं	६१	" प्रथम पत्र अप्राप्त
२०	७४३६	" "		"	४७	प्राकृत
२१	७४४०	" "		१६२२	८१	" लि क ऋषि बाथा
२२	७७६६	" "		१६वीं	११६	प्राकृत
२३	५६४६	आवश्यकनिर्युक्तिसूत्रम्		१५४६	१२७	" लि स्था अणहिल्लपुर-पत्तन
२४	७२०४	आवश्यकवृहद्धृत्ति	श्रीहरिभद्रसूरि (?)	१६३१	४०५	सस्कृत, लि क लक्ष्मणमुनि लि. स्था जैसलमेर
२५	७४००	" "		१७वीं	५४६	सस्कृत, प्रति में ५४७, ४८, ४६वें पत्र खण्डित हैं
२६	७३३४	आवश्यकसूत्र (सटीक, वृहद्धृत्ति)	हरिभद्रसूरि	"	२०१	सस्कृत
२७	४३५८	आवश्यकसूत्र (सबालावबोध)		"	१६	* प्रा रा
२८	७५५४	आवश्यकसूत्र		"	४	प्राकृत, लि क प० धर्मकीर्तिमुनि
२९	७१८८	आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति (सचित्र)		१५०१	६८	प्रा , चित्र सख्या २, लि क जिन-दास, लि स्था माण्डली नगर
३०	७११६	उत्तराध्ययनसूत्र		१५४८	३५	प्राकृत, अद्येह श्रीघोषविला-कूले माणिक्येन लिखितम्

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्विर-हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, २३-जंजागम]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	७३१४	उत्तराध्ययनसूत्र		१६४७	६५	प्राकृत, लि.क प उदयतिलक
३२	७३६१	" "		१६वीं	१७६	प्राकृत
३३	७४८७	" "		१७वीं	१३६	"
३४	७७६५	" "		"	७५	सस्कृत
३५	७२८०	उत्तराध्ययनसूत्र (राजस्थानी-भाषार्थ सहित)		१८१८	१६८	प्रा.रा., लि.क लोकवल्लभ वाचक, उदरामसर(बीकानेर)मध्ये
३६	७३१३	" "		१८३२	१६१	प्रा रा, लि क हस्तिसागर एवं विमलसागर, प्रति का अर्द्ध- भाग सवत् १८३२ से भी प्राचीन है
३७	७३४१	" "		१८३५	२३१	प्रा रा, लि क दौलतसौभाग्य, श्रीबीलाडा नगरे
३८	७३६२	" "		१८५२	२६०	प्रा रा, लि.क कुसुवगतसागर, तातोटी नगरे, ठाकुर गुलाब- सिंहजी कँवर सवाईसिंहराज्ये
३९	७४२८	" "		१७२७	१६२	प्रा रा
४०	७५७०	" "		१८वीं	११६	प्रा रा
४१	७६५५	" "		१६वीं	१५७	प्रा रा, अपूर्ण
४२	४४१८	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध)		१६३७	३८३	* प्रा रा स, १६५, १६८, १६९ तथा २१७ वें पत्र अप्राप्त
४३	६६१६	उत्तराध्ययनसूत्र (सस्तवक)		१७वीं	२२८	प्रा रा, प्रति जीर्ण-शीर्ण तथा चुदित है

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	७७६२	उत्तराध्ययनसूत्र (सस्तक)		१७६२	२४३	प्रा.२।, प्रति के आद्यन्त पत्र शोभन हैं, लि क धनजी, राजपुरग्रामे
४५	७३१२	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, पञ्चपाठ)		१७वीं	३१७	प्राकृत-अप भ्रंश
४६	५६०६	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, त्रिपाठ)		१६वीं	१४६	प्रा सं, प्रति अति सुन्दर लिखित है, इसके स्वामी का नाम ऋषि तेजपाल, गोवर्धन, आशकरण है प्रा स., लि.क पं. तेजपाल, देवराजपुर
४७	७२८२	उत्तराध्ययनसूत्र (सटीक)	डी कमलसयम, जिनभद्रसरिनिधय	१६५६	३०२	प्राचीन राजस्थानी, आद्य तीन पत्र चिपके हुए हैं तथा प्रति जीर्ण-शीर्ण है
४८	६८४६	उत्तराध्ययनसूत्र-परीसहाध्ययन-कथा		१८वीं	५६	प्रा सस्कृत
४९	७३४०	उत्तराध्ययनसूत्रसुबोधवृत्ति		१६६७से पूर्व	२६३	* संस्कृत, लि स्या. चित्रकूट
५०	४३५७	उत्तराध्ययनावचूरि		१४६७	४७	संस्कृत-प्राकृत, र.का. १४८५
५१	७३६३	" "		१६१२	६४	(रत्नगजमदमितेऽब्दे) लि.क. गोपी, आचार्यवेणुसुत, सारङ्गपुर. मध्ये
५२	७४३४	उपासकदशाङ्ग (सटीक)		१७वीं	४१	प्रा. स.
५३	७४३८	" "		१६१२	३०	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४	७२८६	उपासकवशाङ्गविवरण	शिवचन्द (कल्याणसूरिशिष्य)	१६४७	२०	संस्कृत, लि.क मुनि लक्ष्मण, जिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये
५५	५२२६	उपासकवशाङ्गसंग्रह		१७१३	४७	रा प्रा, लि.क. छीतर (शिव- चन्द्रशिष्य वैराठकुर्गे, आसन्दी ग्रामे, पाचवां पत्र अप्राप्त प्रा रा, लि.क लालसागर
५६	७३१८	उपासकवशाङ्गसूत्र (राजस्थानी- भाषार्थ सहित)		१७५२	५३	प्रा रा.
५७	७६३४	" "		१६८०	६६	प्रा रा.
५८	७२२८	उववाइसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ- सहित)		१८६६	८६	प्रा.रा, लि.क ऋषि हुकमचन्द, राणावासनपरमध्ये
५९	७४१६	उवाइसूत्र		१६८४	६५	प्राकृत, प्रथम पत्र अप्राप्त
६०	७४८५	श्रीघनियुं कित		१६वीं	२३	प्राकृत
६१	७५५३	श्रीपपातिकोपाङ्गसूत्र (सस्तक)		१७वीं	११५	प्रा रा.
६२	६८५२	कल्पवार्ता	स्त पार्वचन्द्र (सीधुरत्नशिष्य)	१६वीं	१५२	रा, अपूर्ण, पत्र १०, ३८, ३९ तथा ११४ से ११८ तक अप्राप्त
६३	४३१८	कल्पसूत्र (सचित्र)		१३१	१३१	प्राकृत, चित्र स ३४
६४	५३५६	" "		१६वीं	८५	स प्रा., राजस्थानी कलम के चित्र
६५	५३५७	" "		१५वीं	७२	प्रा, चित्र स. १६
६६	५३५८	" "		"	५३	प्रा., चि स. १४
६७	५३५९	" "		१५०२	६१	प्रा, चि. स. ४०
६८	७८४१	" "		१४वीं	१३३	प्रा, चि स ३६

श्री कंठसूत्र

श्री कंठसूत्र
 ७११
 श्री कंठसूत्र
 ७११

ति स ह दु स्का ग सं त क र ता ता । आ न्द्र य आ न्द्र य आ न्द्र य आ न्द्र य आ न्द्र य आ न्द्र य ।
 जी ति ख उं ति सु च ति पि वि नि वा इ ति नि ख न्द्र का ग द ति द्वा र ति अ ल र
 इ या ता च गे ना न व र ग द्वा गे म् सि म् ति जा द्वा र ति न र भि । आ न्द्र य आ न्द्र य
 द्वा गे इ शु गे ना इ च्च म् ति । आ । त गे का ले पा न गे । सा । म य र स म
 गा र म गे म द्वा वी र य म् ति । आ । त गे का ले पा न गे । सा । म य र स म
 न्द्र गे म गे ना । व द्वा गे म गे ना । व द्वा गे म गे ना । व द्वा गे म गे ना ।
 व य गे ना । व द्वा गे म गे ना । व द्वा गे म गे ना । व द्वा गे म गे ना ।
 वी गे म । म द्वा गे म । व द्वा गे म । व द्वा गे म । व द्वा गे म ।
 द्वा गे म । व द्वा गे म । व द्वा गे म । व द्वा गे म । व द्वा गे म ।
 उ र य । स वा र गे । व द्वा गे म । व द्वा गे म । व द्वा गे म ।
 सु य स्का स पा द्वा स व गे । का य म् स म्ता । आ । य द्वा स स्था श्वा ।
 स । न्द्र य आ न्द्र य आ न्द्र य आ न्द्र य आ न्द्र य आ न्द्र य ।
 म य र स म गे ना । व द्वा गे म गे ना । व द्वा गे म गे ना ।
 । सार म्द्र य ।



५५

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	७८४२	कल्पसूत्र (सचित्र)		१४वीं	१०३	प्रा., चि. स. ८
७०	७८४६	" "		१५५० से पूर्व	५०	प्रा, चि. स २८
७१	७८४७	" "		१५३१	१०	प्रा., स्फुट पत्र, चित्र स १०
७२	७८४६	" "		१४८५	६	प्रा., त्रुटित, वि स. ३, सुप्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य सोमसुन्दरसूरिके आदेश से श्रालेखित
७३	७८५०	" "		१४६०-	३६	प्रा., त्रुटित, वि सं ७
७४	७८५१	" "		१४६० के मध्यवर्ती	४	प्रा, प्रति में पत्र ८, १७, २३ व ८२वें ही प्राप्त है
७५	७३८६	कल्पसूत्र		१५५० के लगभग	५४	प्रा, लि क सत्तोषचन्द्र मुनि, नागौरमध्ये
७६	७३६०	कल्पसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८३३	१७२	प्रा.रा. १ से १० पत्र अप्राप्त, लि क ऋषभविजय, बृहत्सप्त-च्छदी (बड़ी सावडी, मेरुपाट-देशे) नगरे
७७	७४१३	" "	भा. गुणविजय	१८वीं	१३१	प्रा रा, प्रति के श्रान्त में जिन-धर्मप्रवक्तक विद्वानो की जन्म-तिथि, विभिन्नगच्छो की स्थापना, नामकरण का समय एव विविध आचार्यों की कृतियों का परिचय लिखित है, अन्तिम पत्र अप्राप्त प्रा रा, प्रथम पत्र अप्राप्त
७८	७४२६	" "		१८४५	१७५	

क्रमांक	गन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	७३६१	कल्पसूत्र (राजस्थानीभाषासहित)		१८३६	१३६	प्रा रा, लि स्था फलोधी
८०	७५५५	"		१७२६	८८	प्रा रा, लि क मुनि मनोहर, बलूदा ग्रामे
८१	४४१३	कल्पसूत्र (सस्तबक)	स्त सोमविमल	१६७२	१०६	* प्रा रा.
८२	७५२६	"		१७२६	६१	प्रा रा, लि क मनोहरऋषि, अहमदपुरमध्ये
८३	७०७५	" (सद्विष्णु)		१८वीं	६६	प्रा अ, अपूर्ण प्रति किन्तु प्रद्वान्तीय
८४	५३५४	" (सावचूरि, सचित्र)		१५६३	१३६	प्रा स, चि स. ३६, भिन्नमाल में लिखित
८५	७८४०	" " "		१५२३से पूर्व	१०५	प्रा., चि स २४, धनेश्वरसूरि द्वारा लिखापित, इस प्रति को स. १५२३ में आचार्य को भेंट करने का उल्लेख है
८६	७४८६	" (सावचूरि)		१४१६	१११	प्राकृत-सस्कृत
८७	७८४४	"		१६२१	६५	" "
८८	५३५५	" (सटीक, सचित्र)	टी सुमतिहससूरि	१७३४	११५	प्रा.स, चि स ८६, सोजत में लिखित
८९	७२४१	कल्पसूत्रकिरणवलीटीका	टी धर्मसागरराणी	१६७६	३२२	स प्रा, प्रथम पत्र अप्राप्त लि क कमलसी, महतवसीसुल, ईवलपुरा (अहमदाबाद) स्थाने संस्कृत
९०	७२२६	कल्पसूत्रटीका		१६वीं	११८	

राजस्थान पुरातत्त्ववेषण मन्विर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २३-जैनग्राम ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	७५५६	कल्पसूत्रटीका	लक्ष्मीवल्लभ (लक्ष्मीनिधि)	१६वीं	१११	स. प्रा. रा.
६२	६०३२	कल्पसूत्रबालावबोध	शिवनिधान	१७६४	१२८	राजस्थानी, लि क प हरराज, श्रीश्रीमनगरे
६३	७५५८	" " (सप्तमवाचना)		१७१२	२२	प्रा रा., लि क मानविजय, मालपुरामध्ये
६४	६६१७	कल्पसूत्रभाषा		१६३३	१२७	राजस्थानी, लि क. ऋषि केश- रीचन्द्र, विक्रमपुरमध्ये
६५	६८४८	कल्पसूत्रसिद्धान्तवाचना		१६५७	१६६	राजस्थानी, १-२ पत्र कीट- विद्ध, लि क ऋषि लक्ष्मीचन्द सरूपचन्द, रेवासी (पालणपुर, गुजरात) मध्ये
६६	७३१०	कल्पान्तवाच्य		१६६२	५४	प्रा स, लि. क. सौभाग्यविसल, श्रीसिरोहीनगरे, रचनाकाल १५७० (?)
६७	७२६०	कल्पान्तरवाच्यटीका		१७वीं	५०	प्रा स
६८	७४६६	चन्द्रप्रज्ञितिसूत्र		"	३६	प्राकृत
६९	४३०४	चित्तसभूति (ऋषीश्वराध्ययना- नन्तरम्)		१५वीं (?)	७	प्रा रा
१००	७२०१	जीवाभिममवृत्ति	वृ श्रीमलयगिरि	१६वीं	२६२	प्रा सं
१०१	७२१४	ठाणाङ्गसूत्र		"	७७	प्राकृत
१०२	७२२६	ठाणाङ्ग (स्थानाङ्ग) सूत्रवृत्ति		१६०८	१८२	प्रा रा

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण सर्विदर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २३-जैनागम]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७२३२	दशवैकालिकसूत्र		१७वीं	२७	प्राकृत
१०४	७४२४	"		१८७८	२०	लि क श्रबु
१०५	७४८८	"		१६६६	२६	लि क. हरजी (ललित प्रभशिव्य)
१०६	७६३६	"		१७७७	२५	प्राकृत, लि क. ऋषि घतजी, कालावडनगरे
१०७	७३१७	दशवैकालिकसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१७वीं	५८	प्रा.रा
१०८	७५५२	दशवैकालिकसूत्र (सावचूरि)		१६२३	३७	प्रा स
१०९	४४५६	" (सटबाय)		१८वीं	५४	प्रा रा, ३६वां पत्र अप्राप्त
११०	७३२३	दशवैकालिकसूत्रटीका	दो सुमतिसूरि (बोधकशिव्य)	१७वीं	५४	सस्कृत, टीकाकार ने अपनी पुष्पिका में हरिभद्राचार्य की एक टीका का भी उल्लेख किया है
१११	७४७४	दशवैकालिकसूत्रटीका (शिष्य बोधिनीनाम्नी)	हरिभद्रसूरि	१६१७	१२४	सस्कृत, लि क जितचन्द्रसूरि मुनिराज, अणहिलपुरपत्तने
११२	७२८७	दशवैकालिकसूत्रावचूरि		१५वीं	१६	सस्कृत
११३	७६५४	दशाश्रुतस्कन्ध		१६७०	२६	प्रा , लि क मुनि महावजी, खीसपुरनगरे
११४	७४८४	नन्वीसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
११५	७२५६	निरयावलीका (राजस्थानी भाषार्थ महित)		१८६७	६२	प्रा रा, लि.क मूल० सुमतिहस, भाषा उमदहस, कोसाणामध्ये

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११६	७३०७	निरयावलिकासूत्र		१६६५	२६	प्रा, लि क वच्छा
११७	७३६५	निरीयसूत्र (लघु) (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८३२	७७	प्रा.रा, लि क. कपूरविजय, हरचन्द, पीपाडनगरे प्राकृत
११८	७४८१	निरीयसूत्र		१७वीं	१६	"
११९	७४४१	"		"	२३	" प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०	७०८५	प्रतिक्रमणसूत्र		१९वीं	२३	प्रा, अपूर्ण, १६वां पत्र अप्राप्त
१२१	७४४४ (७)	"		१८८५	१६८-१८०	प्राकृत
१२२	७४४५	" आदि		१८८७	४६१	* विविध भाषा, जरी के कपडे के जिल्दबन्ध गुटके में आठ कृतियों का संग्रह है
१२३	७४४६	"		१९२२	६६	* वि भा, सुन्दर जिल्दबन्ध गुटके में १० कृतियों का संग्रह है
१२४	५९७३	प्रतिक्रमणसूत्रवालावबोध	सहजकीर्ति	१८८६	६१	प्राचीन राजस्थानी
१२५	६८५६	प्रश्नव्याकरण		१५६८	४३	प्रा., द्वितीय पत्र अप्राप्त
१२६	७२५६	"		१७वीं	२६	प्राकृत
१२७	७२११	प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका		१६०२	८३	सस्कृत
१२८	७३४५	"		१५वीं	४८	* सस्कृत
१२९	७५४७	प्रश्नव्याकरणाङ्गसूत्र (सवालावबोध)		१७वीं	६५	प्रा रा
१३०	७३१५	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (सवालावबोध, पचपाठ)	अभयदेवसूरि	१६५४	११२	प्रा अपभ्रंश
१३१	७३४६	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित)		१७५६	७३	प्रा रा, लि क ललितहस तत्व-हस शिष्य, सप्तसवी नगर मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	७१८१	प्रज्ञापनासूत्र		१७वीं	३२०	प्राकृत
१३३	७५४५	"		१६५६	२२७	" १-२ पत्र अप्राप्त
१३४	७१९७	प्रज्ञापनीपाङ्ग (सटीक, पञ्चपाठ)	मू श्रीश्यामाचार्य ? दो श्रीमलयगिरि	१७वीं	४२९	प्रा संस्कृत
१३५	७२८३	प्रज्ञापनीपागसूत्र		"	१७१	प्राकृत, १-२ पत्र अप्राप्त
१३६	७६६८	वाक्षिकसूत्र		१९वीं	१४	प्राकृत
१३७	७४८३	पिण्डनियुक्ति		१७वीं	३२	"
१३८	७२३३	भगवतीसूत्र		१६२५	४५७	प्राकृत, सवत् १६ आषाढादि २५ वर्षे काल्पुन वदि द्वादशशाय- तियो भगवतीसूत्र लिखितम्
१३९	७२८९	भगवतीसूत्र		१६०२	३०४	प्राकृत, लि स्या अप्रणहलपुर
१४०	७२०३	" टीका	अभयदेवसूरि	१७३०	३४२	संस्कृत, लि स्या जैसलमेर
१४१	७२२०	" वृत्ति	"	१६वीं	४१०	राजल श्रीश्रमरसिंहजीराज्ये
१४२	७५६६	राजप्रश्नीयसूत्र		१६७०	८३	संस्कृत लि क वासुण जीवा
१४३	७६३५	" (राजस्थानीभाष्यसहित)	भा० मेघराजवाचक	१७वीं	२०९	प्रा रा
१४४	७३००	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सटीक, पञ्चपाठ)		१४१५	८१	प्रा स, प्रवर्धनीय प्रति
१४५	७२८४	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सवालाव- बोध, पञ्चपाठ)		१७०२	७७	पा. रा, लि. क मुनि मानसिंह
१४६	७५२९	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी- भाष्यसहित)		१७वीं	१३९	प्रा रा.

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र मख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४७	७६३१	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी भाषार्थसहित)		१७५६	६२	लि क मुनि मनोहर, बीटाव-ग्रामे
१४८	७२२५	"	भा० मेघराज वाचक	१६१२	११८	प्रा रा, ऋषि रूपचन्द्र पीहीमण्ड्ये
१४९	७३१६	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्रवृत्ति	वृ मलयगिरि	१७वीं	७७	संस्कृत
१५०	७१८५	न्यवहारसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
१५१	७४६६	"		१७वीं	१४	"
१५२	७१८७	विपाकसूत्र (सटिप्पण)		१५१३	२४	" लि क. वाछाक
१५३	७७६३	विपाकाङ्गसूत्रटीका	टी अभयदेवाचार्य	१५६१	१६	प्रा. स
१५४	७३८४	श्रमणसूत्र (सवालभावबोध)		१८वीं	८	प्रा अ, लि क. मुनि मिरक
१५५	७२३८	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	श्री रत्नशेखरगणि	१६५५	१८५	भाऊणजीशिष्य
१५६	६१३५	पडावश्यकबालावबोध	बा हेमहस	१८वीं	१२१	प्रा स, सशोधनकर्ता श्रीलक्ष्मीभद्र
१५७	७४२३	पडावश्यकसूत्र		१६८८	१३	अ स
१५८	७२६६	स्थानाङ्गसूत्र		१६७२	७७	प्राकृत
१५९	५६७८	स्थानाङ्गसूत्र (सवालभावबोध, त्रिपाठ)		१७८७	२०६	" लि स्था शुजाउलपुर प्रा रा लि स्था बीकानेर
१६०	७२२३	समवायाङ्गवृत्ति	अभयदेवसूरि	१६१८	८४	अ स. प्रा., रचनाकाल ११२० वि-
१६१	७१८३	समवायाङ्गसूत्र		१६५८	५०	प्रा पातशाहप्रकरणराजन्- लिपीकृतम
१६२	७२१५	"		१६६७	३३	प्राकृत
१६३	७४६५	"		१६वीं	५०	,

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर - हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२, २३-जैनागम]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६४	७४६७	समवायाङ्गसूत्र		१६६२	६८	प्राकृत
१६५	७५६१	" "		१८१४	१६५	प्रा. रा, लि क हीराचन्द्र भावचारी, लोबडीमध्ये
१६६	६४४५	सूत्रकृताङ्ग (तटीक)		१८वीं	७३	प्रा स, अपूर्ण
१६७	७१७८	सूत्रकृताङ्गसूत्र		१६वीं	५७	प्रा, लि क माणिक्यचन्द्र, नागेन्द्रगच्छे
१६८	७२०७	" " (द्वितीय स्कन्ध, सस्तबक, पञ्चपाठ)	स्त. पाशचन्द्र (श्रीसाधुस्तनत्रिष्य)	१६५०	४८	प्रा. रा, लि क लूणिया- पोमसी पुत्रेसासूरताण, जैसलमेर- मध्ये
१६९	७२०९	सूत्रकृदङ्गटीका	श्रीलाचार्य (बाहरिगणसहोयेन)	१६वीं	२४५	प्रा स
१७०	७४३९	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध		१७वीं	३५	प्राकृत
१७१	५९९६	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (सबालावबोध)		१६०१(?)	५१	प्रा. रा
१७२	७४३३	" " (पञ्चपाठ)		१७वीं	३४	" "
१७३	७५३१	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (राज- स्थानी भाषार्थसहित)		१६५३- १६६७	७३	" " म १६५३, भाषा- १६६७, लि क ऋषिभाए
१७४	७५३२	" "		१६६८	८४	प्रा. रा.
१७५	७३०१	ज्ञातार्थकथाङ्ग		१६७५	१८६	प्रा लि क ऋषिवाणायग पूजा, केसोयामध्ये
१७६	७३५६	" " (राजस्थानीभाषार्थ- सहित)	भा प्रेमजीगणि	१८४८	२२७	प्रा रा, लि क जीवनराम, नागोरमध्ये
१७७	७३९८	" "		१८६९	२९८	प्रा रा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	७४३५	ज्ञाताधर्मकथाङ्गवृत्ति	वृ. अभयदेवसूरि	१६३८	७०	प्रा स, प्रथमपत्र अप्राप्त
१७९	७१९२	ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र		१६वीं	१३६	प्राकृत
१८०	७२३४	" "		१७वीं	१५०	" "
१८१	७४७८	" "		१४८३	६४	" "

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २४-जैनप्रकरण]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१२५	अङ्गचूलिया	माणिक्यसुन्दरसूरि	१८वीं	२१	अपभ्रंश
२	७५६१	अन्तससाधि		१६०६	७	राजस्थानी
३	७२६७	अष्टप्रकारप्रकारपूजाकथा (स्नात्र-पचाशिकावृत्ति)		१६४८	४०	संस्कृत, रचनाकाल १४८४, लि स्या अणहल्लपुरपत्तन
४	७५२५	अष्टान्हिकव्याख्यान (पर्यूषणादि)	आगमसारोद्धारगत	१८८८	१०	संस्कृत
५	७५३७	आगमवाणी आदि	देवचन्द्र (खरतरगच्छीय)	१८वीं	१४	राजस्थानी
६	६१६२	आगमसार		१६वीं	५६	हिन्दी-रा, र का १७८३ लि क मुनि कुर्गदास, जालोरमध्ये, पत्र ५६-७६ तक भिन्नलिपि है
७	७०१६	आगमसारोद्धारभाषा	देवचन्द्र	१८६०	७६	* हि रा र का १७७६ लि क मयेन जसकरण, कुण्णगढनगरमध्ये
८	७३३१	आगमसारोद्धाररास	„ मुनि	१८३२	२८	हि रा, लि स्या पुष्पावतीनगरे
९	७२७३ (३)	आदिनाथदेशनोद्धार		१७वीं	१२-१६	प्राकृत
१०	४७६६	आदिपुराण	सकलकीर्तिभट्टारक	१८वीं	२०४	संस्कृत, अन्तिम पत्र अप्राप्त
११	७११०	आराधनासूत्र (साथं)		१७३६	६	प्रा रा, प्रथम पत्र अप्राप्त, अन्त्य पत्र शोभन
१२	५६३४	उपदेशवालावबोध	सोमसुन्दर	१७वीं	७६	स प्रा
१३	७३०८	उपदेशमाला (सावचूर्णि)	श्रीरत्नशेखर	„	२३	प्राकृत-संस्कृत
१४	४०१८	उपदेशमालाप्रकरणकथा (सवा-लावबोध)	धर्मवासगणि (वृद्धिविजय ?)	१८५६	२१८	प्रा स रा, लि क विजयचन्द्र स्थविर, पार्लीपुरी
१५	५६६०	उपदेशमालासूत्र (सटिप्पण)		१६६३	३६	प्राकृत, लि क मुनि कल्याण-सुन्दर, लिपि सुन्दर व प्रदर्शनीय

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	४३०२	ऋषभपचाशिका		१७वीं	७	* प्राकृत
१७	७४६३	ऋषिमण्डलप्रकरण		"	१२	प्राकृत
१८	७२६८	" " (सावर्चुणि पञ्चपाठ)		"	१६	प्रा. स.
१९	७२४२	ऋषिमण्डलवृत्ति	शुभवद्वैतगणो, (श्रीसाधुविजय- गणेशिष्य)	१८वीं	३५३	" लि. स्था रामगढ़
२०	७३०६	कर्मग्रन्थपञ्चकावचूरि		१६वीं	४३	स प्रा
२१	७२८८	कर्मग्रन्थषट्क (स्वोपज्ञटीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि (?), मलयगिरि	१७वीं	२९२	" १ से ५ तक स्वोपज्ञटीका तथा ६ठे की मलयगिरिकृत टीका है
२२	७२३९	कर्मग्रन्थषट्कसूत्रवृत्ति (स्वोपज्ञ, सटीक, त्रिपाठ)	देवेन्द्रसूरि, मलयगिरि	१६४९	२२५	" "
२३	७२६७	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्र सैद्धांतिक	१६०२	१२	प्रा, लि. क लक्ष्मीरत्न
२४	५४१८ (१०)	कर्मपचीसी		१९वीं	१०९-११२	हिन्दी
२५	५०९०	कर्मविपाक (सट्टिपण, सप्ततिका पर्यन्त)	नेमिचन्द्र सैद्धांतिक	१८वीं	४७	अप्रभ्रश
२६	६८८०	कर्मविपाकग्रन्थव्याख्या	मतिचन्द्र (गुणचन्द्रशिष्य)	१९वीं	५६	स प्रा रा
२७	७८५५	कालकसूरिकहणय (सचित्र)		१६वीं	९	प्राकृत, चि स. ६
२८	५३६१	कालकाचार्यकथा (सचित्र)		१५वीं	१२	" " ५
२९	७८४८	" "		१५३१	६	" " ३, त्रुटित, अपूर्ण
३०	५३६०	कालकाचार्यकथानक (सचित्र)		१५वीं	२५	" " १२, पत्रा ७९-१०३ तक

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४२२	कालिकाचार्यकथा	रत्नशेखरसूरि	१७वीं	१६	प्रा रा
३२	७२५१	गुणस्थानकवृत्ति	"	१६८८	१४	सस्कृत
३३	७३६४	गुणस्थानविचार	"	१६वीं	३	"
३४	५४२७ (६)	गुणसख्या (१०८ गुणोकी सख्या)	क्षमाकल्याणसुनि	१६वीं	१४८-१४९	प्राकृत
३५	६०२८	गुर्वावली	"	१८७२	२८	सस्कृत, रचनाकाल १८३०
३६	६३३८	गुरुचारगूढाष्टपचाशिका आदि	"	१८वीं	६२	हिन्दी, गुटका
३७	७७४१ (४)	गौतमपृच्छा	मतिवर्द्धन	१७वीं	३८-४१	प्राकृत
३८	७२४६	गौतमपृच्छावृत्ति	"	१७५७	३१	प्रा. सस्कृत, र का. सिद्धीरामे मुनीचन्द्रे (१७३८) लि क ऋषि रत्ना
३९	७५२७	"	" (पाठक)	१८वीं	४३	प्रा. स
४०	७३०४	चउसरण (सबालावबोध)	"	१७वीं	१०	प्रा. अ
४१	७३८५	चउसरणप्रकीर्णक	"	"	६	प्रा, मोडजातीय जोशी माहव (माघव) लिखितम्
४२	७१२६	चतुर्विंशस्थानकविचार	"	१७७५	१९	अ, लि क निहालचन्द्र, पाडली- पुरे, पत्र १५-१८ तक अप्राप्त
४३	५०६२	चतुर्विंशतिषण्डकसूत्रम् (सबालाव- बोधम्)	गजसागरगणी (घवलचन्द्रशिष्य)	१६६८	५	प्रा अ, लि क सोभायगणि शिष्य, भट्टनेरकोटमध्ये
४४	७५९०	चातुर्मासिकव्याख्यानपद्धति	"	१६०४	७	सं प्रा, लि क हमीरविजय, कृष्णगढ़मध्ये
४५	७४६८	ज्योतिष्करण्डकसूत्र	"	१७वीं	११	प्राकृत

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६	६१०४	जम्बूअध्ययन (जम्बूचरित्र)		१६८७	१६	अपभ्रंश, प्रथम पत्रा अप्राप्त
४७	५३२७	जिनदर्शन (जिनरक्षितजिनपालको चौढालियो)		१६३६	२	संस्कृत
४८	५१३६	जिनप्रतिमापूजापद्धति	तिलकाचार्य	१७वीं	२६	स प्रा, अपूर्ण
४९	७१८६	जीतकल्पवृत्ति		१६वीं	४०	संस्कृत
५०	७१८६	जीवविचार (सस्तवक)		१७५८	१०	प्रा अ, लि क मोहनविमल
५१	७२३०	जीवविचार (सटीक)		१५८१	२	प्रा स, लि स्था शमीग्राम, सौभाग्यनन्दिसूरिविजयराज्ये
५२	६८४३	जैनपूजाविधि, स्तुति आदि		१६वीं	२३७	विविध भाषाके इस गुटकेमें तीर्थङ्करोकी पूजाविधि, आरती, स्तुति, क्षेत्रपालपूजादि सग- हीत है
५३	५३३४	तत्त्वार्थाधिगमसूत्र	उमास्वामि	१६०१	२५	स, लि क देवचन्द्र
५४	६३०२	” ” (सटिप्पण)		१८वीं	७	” ” विमलदास
५५	४६१४ (६)	” ” (सार्थ)		१८७१	२०१-२०७	सं रा
५६	७७६१	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रटीका	सिद्धसेन	१६३१ (?)	४४४	संस्कृत
५७	७७६०	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रभाष्य	उमास्वामि (मि)	१६३१	६६	” लि क प नाइया, श्री अचलगच्छेश्वर श्रीधर्ममूर्ति सूरीश्वर विश्वदीपदेशात
५८	६२६६	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रभाषाटीका		१८वीं	१०४	सं रा, ऊपरके पत्र पर सुत्राजीकी टीका लिखा है
५९	६०३५	द्रव्यमण्डग्रहवृत्ति	मू नेमिचन्द्र, वृ ब्रह्मदेव	१६३१	६१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पथ संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०	६२७६	दीपमालिकाकल्प	जिनप्रभसूरि	१८२३	२२	स, प्रतिका शोधनकर्ता ऋषि सुखदेव है
६१	७६३२	दीपमालिकाकल्प, दीपमालिकाकल्प बालावबोध		१८११	२०	स रा, र का 'शरयुग शिवि- शशिवर्षे (१६४५)'
६२	७३६२	दीपालीकल्प (दीपमालिकाकल्प)	जिनसुन्दरसूरि (सोमसुन्दरसूरि- शिष्य)	१८वीं	१५	लि क कुष्णाजी भ्राड् धडामध्ये स, लि क हेमविजय 'सवत्सरे- ऽनिद्विपविहवसमिते'
६३	६०३६	दीपोत्सवकल्प		"	६	अपभ्रंश
६४	५४२७(४)	देवमहिमादि		१६वीं	४६-६४	स रा अ, प्रतिमापूजन एव स्त्वन भी लिखित है
६५	५६४६	धर्मप्रश्नोत्तरमहाग्रन्थ	सकलकीर्तिभट्टारक	१६१३	७४	स इसमें १११६ प्रश्न हैं तथा ७२वें पत्र की लिपि नूतन है।
६६	४५६२	धर्मोपदेशश्लोक (सार्थ)	महावीर भगवदुद्यत अ भीमविजय	१८४६	८०	प्रा र, पावलित्तनगरे शत्रुञ्जय- तीर्थलिपीकृतम्
६७	४५६६	धर्मोपदेशश्लोका'	जैनपुराणोषत	१६वीं	६	४ संस्कृत
६८	५३७६(१६)	नृद्युगकथा (स्नपनकथा)		१७६१	२१८-२२६	संस्कृत
६९	४०१६	नवकारबालावबोध		१८२१	४	प्रा रा, लि स्था जंशलमेर
७०	६३२०	नवकारग्रन्थ आदि		१६वीं	६१	हि, इस गुटके में जिनवशन, श्रीपातदर्शन, पार्श्वनाथस्तोत्र, वारहभावना जैनशतक' भयता- मरवालावबोध (हेमराजकृत) भी लिखित है।
७१	७४४४(४)	नवरात्र (सद्यार्थ)		१८८५	१२६-१३६	प्रा रा, लि क नैमविजय

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२	४०१६	नवतत्त्व (सबालावबोध)	पद्मचन्द्रशिष्यः कश्चित् (खरत्तर-गच्छीय)	१८०३	५२	स प्रा.रा, र का १७६६, लि.क
७३	४०६१	"	श्रेष्ठसुन्दरसूरि (श्रीगच्छेवा)-शिष्यः कश्चित्	१६५२	७१	ऋषिदेवचन्द्रादि, लि स्था आगरा प्रा रा, लि.क कैशराज, श्रीरामपुर
७४	४४६२	"	वा पार्श्वचन्द्र	१७वीं	१०	प्रा रा, लि.क. हसविजयगणि
७५	७६५६	"		"	८	प्रा रा
७६	७५२१	नवतत्त्वटीका		१८७७	६	स प्रा, लि क नेमच.द्र, फलौवीग्राममध्ये
७७	७५३६	नवतत्त्वप्रकरण (सबालावबोध)	सोमसुन्दरसूरि, अ मू देवेन्द्रसूरि, अ सोमसुन्दरसूरि	१८०७	१३	प्रा स, लि क विजयगणि रामसेणनगरे
७८	४४२३	नवतत्त्वविचार (सबालावबोध)		१६वीं	६	प्रा रा
७९	६२३०	नेमिपुराण		१८८६	२१२	स, लि क हेतराम
८०	७४७६	प्रत्याख्यानभाष्यत्रयावचूरि		१६वीं	२३	प्रा.स
८१	७४७६	प्रत्याख्यानसूत्रभाष्यत्रय (सावचूरि, त्रिपाठ)		१६५७	१६	प्रा स
८२	७५४४	प्रत्येकबुद्धचरित्र		१७वीं	१०	" लि क धर्मकोति
८३	७८२४	प्रतिष्ठाकल्प	जयशेखरसूरि	१८वीं	१५	स.प्रा
८४	७२००	प्रबोधचिन्तामणि		१५३३	७२	*संस्कृत, र का.-१४६२
८५	७३२१	प्रवचनसारोद्धार	सिद्धसेन	१७वीं	४४	प्राकृत
८६	७३४७	" (सटीक)		१६५०	३७६	*प्रा स
८७	७२७६	पञ्चनिर्ग्रन्थप्रकरण (सावचूरि, पञ्चपाठ)		१७वीं	५	"
८८	७३०६	पञ्चनिर्ग्रन्थिसूत्र (सावचूरि)	मू अभयदेवसूरि	१७८०	७	" लि क प कल्याणवन्द

राजस्थान पुरातत्वावेषण मन्वि-हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २४ जैनप्रकरण]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८६	७१६३	पञ्चपरमेष्ठिपूजनप्रकार		१६वीं	३६	संस्कृत, अपूर्ण
८७	६२८७	पञ्चेन्द्रिय चौपाई		१८५३	६	हि र का. १७६१
८८	५१३०	पद्मावतीकल्प		१७वीं	२	संस्कृत, त्रुटित एवं आद्य पत्र अप्राप्त
८९	६४०१	पर्यन्ताराधनासूत्र	सोमसूरि	१७४०	७	प्रा स, लि क ऋषि छीतर, विराटनगरे, पातसाहिश्रीराग-विजयराज्ये
९०	७७४१ (३)	परमात्मप्रकाश		१७वीं	१२-३८	प्राकृत
९१	७१५६	पार्श्वनाथपूजाद्याभिषेकान्त आदि		१६वीं	१२१	स हि रा, अभिषेकनामक कृति अभयनन्दि द्वारा रचित, र का १५६७, इस गुटकेमें तत्वार्था-धिगमसूत्र, भक्तान्तरस्तोत्रादि अनेक कृतिया भी लिखित हैं। प्रा स.
९२	७१८२	पिण्डविशुद्धि (सावचूरि, पञ्चपाठ)	मू. जिनवल्लभ, वृ श्रीचन्द्रसूरि	१७वीं	१२	प्रा प्रति के कोण भग्न हैं।
९३	७२०६	पिण्डविशुद्धि		१६वीं	४	प्रा विविधभाषा के इस गुटकेमें चौबीस एव बीस तीर्थङ्करोकी पूजाविधि तथा वशवंकालिक, तत्वार्थाधिगमसूत्र एव विविध स्तोत्रादि संगृहीत हैं।
९४	६६०६	पूजाविधि (जैनतीर्थङ्करपूजाविधि)		१६वीं	११३	प्राकृत, लि क कवीन्द्रसागर
९५	७४१८	पोषधाविधि		१८७५	६	संस्कृत, इसमें लघुशास्त्रिका, दण्डकवृत्ति, नवग्रहस्तोत्रवृत्ति एव विद्याविलासकथा लिखित है।
९६	७५२२	वृहच्छान्तिटीका आदि		१६०१	२७	प्रा रा, लि स्था श्रीनारचपुरी, लि क गुणलाभागणि
१००	४३०१	वृहवाराधना		१५६०	१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०१	५२८७	भक्तामरपूजापद्धति	श्रीहेमचन्द्रसूरि	१९वीं	१८	संस्कृत
१०२	७३३६	भगवत्यङ्गवीजक	हेमचन्द्रसूरि मलधारी	१७वीं	६	प्राकृत
१०३	६०५०	भद्रबाहुसहिता	"	१९वीं	६६	संस्कृत
१०४	७१६६	भवभावना (मूल)	"	१५६८	१८	प्राकृत
१०५	७१६६	"	"	१७वीं	२६	"
१०६	७२८५	भवभावना (मूल)	"	"	६	प्राकृत
१०७	७३२०	भवभावनामूलप्रकरण	"	१८६७	२५	" अन्तिम पत्र अपेक्षाकृत नवीन है, उसी पर उक्त सवत् लिखा है, किन्तु मूल प्रति इससे पूर्वकी प्रतीत होती है
१०८	७२५२	भवभावनासूत्रप्रकरण		१७वीं	३७	प्राकृत
१०९	७२७३ (२)	भववैराग्यशतक	रूपचन्द्र	"	६-१२	"
११०	५४१८ (६)	भवसिन्धुचतुर्विंशो	लक्ष्मीहर्ष	१९वीं	६६-६७	हिन्दी
१११	४०८५	मङ्गलकलशचौपाई		१८१६	२७	* अ. प्रा, लि स्था खीविसर-ग्राम, रचनाकाल १७१६, स्था.-काकदीनगर
११२	५१२०	मङ्गलकलश तथा द्वितीयवाचना	मं कलकसोम	१७वीं	१०	प्रा द्वितीयवाचना पत्र १-५ तक में लिखित है, मङ्गलकलशका र.का १६४६ है, उक्त वीनो ही प्रतिया अपूर्ण है
११३	५३०१	महापुराणसग्रह	गुणभद्राचार्य	१९वीं	१३८-१८१, १८४-२५८	संस्कृत, अपूर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	७१०५	मौनएकावदी	नयविलास (जिनचन्द्रसूरिशिष्य)	१८वीं	३	स प्रा
११५	७२६३	मौनएकावशीकथा	नयविलास (जिनचन्द्रसूरिशिष्य)	१७वीं	२	सस्कृत, लि.क पं० सोमनन्वन
११६	५०८७	लोकनालाख्यबालावबोध	नयविलास (जिनचन्द्रसूरिशिष्य)	१८वीं	५	"
११७	७२६४	दन्वाकवृत्ति	नयविलास (जिनचन्द्रसूरिशिष्य)	१५५६	७८	" अन्तिम पत्र के अक्षर उड गये हैं
११८	७३४३	वनस्पतिसित्तरीश्रवचूरि	प्रज्ञापनीपाङ्कसूत्रगत	१६वीं	३६	प्राकृत
११९	६०३४	वर्द्धमानदेशना (गद्यबन्ध)	कोटिगणि	१८६०	१०६	सस्कृत
१२०	६२२०	वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्ति	१७६८	१४६	" लि क गुणविजय
१२१	४२६६	विंशतिस्थानकविचारामृतसंग्रह	जिनहर्षगणि (श्रीजयचन्द्रसूरि-शिष्य)	१७वीं	६६	* प्रा स, प्रथम पत्र अप्राप्त, रस्था. वीरप्राम, र का १५०२
१२२	७४७७	विचारामृतसंग्रह	कुलमण्डनसूरि	१५वीं	३१	* स प्रा, र का १४४३
१२३	७१७६	विवेकविलास	जिनवत्ससूरि	"	२१	सस्कृत
१२४	७०७६	विशेषणवती	जिनभद्राचार्यगण क्षमाश्रमण	१८वीं	६	प्राकृत
१२५	६१८३	श्रावकातिचार	देवेन्द्रसूरि	१५५८	१०	अपभ्रंश
१२६	५६७०	शतकर्मग्रन्थबालावबोध	देवेन्द्रसूरि	१८वीं	१८	" लि क. ऋषि विश्राम परगारायपुरे
१२७	४०२६	शीलोपदेशमालाबालावबोध	मू जयकीर्ति, बा मेरुसुन्दर	"	१५०	* प्रा रा, लि क गुणपति-सागर
१२८	४०३३	" "	" "	१६११	१६५	प्राकृत
१२९	७३३०	षडशीतिकशतककर्मग्रन्थ (स्वोपज्ञ-टीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि	१६५४	११०	सस्कृत
१३०	७४१६	षष्टिशतक	देवेन्द्रसूरि	१६वीं	४	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३१	५६८६	षष्ठिशतकबालावबोध	देवदत्त दीक्षित (हर्षसागरात्मज)	१८वीं	१६	प्राकृत
१३२	७३५३	स्थविरावली	देवभद्रसूरि	१९वीं	४१	प्रा. स
१३३	६३२७	स्वर्णाचलमहात्म्य	श्रीचन्द्रमुनि (हर्षपुरीय)	१८४७	६७	स, लि स्था भरथपुर
१३४	७२२१	सङ्ग्रहण्यवचूरि		१४६६	२०	संस्कृत
१३५	७३२५	"		१६वीं	२३	"
१३६	६१३३	सङ्ग्रहणी		१६२४	१७	प्रा, लि स्था अलवर, प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१३७	७४०५	" (मूल)		१८६६	४०	प्राकृत, लि.क. ऋषि वृद्धिचन्द्र, चूरुनगरमध्ये
१३८	७५४६	"		१७२२	८	प्रा., इसमें दण्डक भी लिखित है। लि क यशःसागरमुनि, सावडीमध्ये
१३९	७४७५	" (सटीक, त्रिपाठ)	श्रीचन्द्रसूरि, श्रीवेचन्द्रसूरि	१६६०	५१	प्रा.स, लि क नयनगणि जीव- कलशगणिशिष्य
१४०	७५६२	सङ्ग्रहणीप्रकरण (सस्तवक)	स्त. वच्छराज	१७१०	३१	प्रा रा
१४१	७६३३	सङ्ग्रहणीप्रकरण	उत्तमऋषि	१८वीं	३५	" रचनाकाल अष्टचतुर- शीतिके आगरास्थे महानगरे
१४२	४३५६	सङ्ग्रहणीबालावबोध	शिवनिधानगणि	१८३७	८५	* प्रा रा., लि क ऋषि आनन्दचन्द्र, श्री बेनातपुर
१४३	५६७२	" "	"	१८३६	६२	प्रा. रा., लि.क शिवराज, श्रीबलभा (भी) पुर
१४४	७३२६	सङ्ग्रहणीवृत्ति	देवभद्रसूरि (श्रीचन्द्रसूरिशिष्य)	१८७७	१०१	संस्कृत, ३४ वा पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४५	४००४	सङ्ग्रहणीसूत्र (सघेणनो रासछन्द)	मलिसार	१८४५	२५	* राजस्थानी, प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क प्रमोवतिलक, राजनगरे
१४६	४०३१	सङ्ग्रहणीसूत्र (सस्तबक)	लेख(श)सूरि	१६६२	२७	* प्रा अ, लि कत्रो-आर्याश्री ५ सज्जनजीरी शिष्यना आर्यसू- वट, बीलाडाग्राम
१४७	५३५३	" (सचित्र)		१८वीं	६७	प्रा रा., चि स. ३२
१४८	६१४१	" "		१८३०	४७	हि रा अ, लि स्या डोडवाना
१४९	७१७५	" "		१८२१	६४	प्रा अ, चि स ३५
१५०	७८४३	" "		१६७५	२४	प्रा, चि स ५
१५१	७२७७	सङ्ग्रहणीसूत्र		१७वीं	२०	प्राकृत
१५२	७३२४	"		१८६०	२२	" लि क सुन्दरहम, राणा- वासमच्ये
१५३	७३२७	" (सबालावबोध, पञ्च- पाठ)	देवभद्रसूरि	१६७८	३१	प्रा. अ
१५४	७४४४ (२)	" (सटबार्थ)		१८८५	५४-१२०	" लि क नेमविजय, गोघु- न्वाग्राममें त्तिखित, टिप्पणीका नाम रूपाली है
१५५	४१४३	सप्तशिशास्त्रबालावबोधविवृति	मतिचन्द्रसुनि	१७वीं	६२-१८३	स, अ रा, प्रति सुन्दर किन्तु अपूर्ण है
१५६	६२०७	सप्तस्थसनकथासमुच्चय	भारामलसधी (परसरामसुत)	१८७८	६२	हिन्वी, लिखित महाचन्द्र श्रीमालवती पापडदाफा पटवारी
१५७	७५४३	सप्तस्मरणसूत्र (राजस्थानीभाषार्य- सहित)		१८४३	३६	प्रा. रा., लि क रूपसोम

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५८	७०१५	सत्समव्याख्यान		१८वीं	१७	स अ, इसमे ऋषभदेव, आदि- नाथ आदिके चरित्रका व्याख्यान है, प्रतिके पन्ने चिपके हुए हैं
१५९	७६६९	सम्बोधसत्तरीप्रकरण	देवदत्त दीक्षित	१९वीं	७	प्राकृत
१६०	६२०३	सम्भेवशिखरमाहात्म्य		"	८१	* संस्कृत
१६१	७११८	समवस्तुतिपूजा		,	४०	" अपूर्ण
१६२	७२१७	समाधिशतकटीका	प्रभावन्द्र	१६६५	२५	* " लि क-प केशव
१६३	७१९३	साधुसमाचारी		१८वीं	६	प्रा अ, लि क कमलविजय साध्वी श्रीसौभाग्यश्रीपठनकृते, प्रति सुन्दर व चित्रित है
१६४	७२१८	साढ्दशतकवृत्ति	धनेश्वरसूरि	१६वीं	७०	स अ, आद्य ४ पत्र अप्रान्त, प्रतिके कोण खण्डित
१६५	५१३४	सारोद्धार (पचखाणा, सटिप्पण)		१७वीं	४०	प्रा. अ
१६६	७३८२	सिद्धान्तसार		१७६३	६५	प्रा स.रा, लि क लालसागरगणि
१६७	६१४७	सिद्धान्तसारप्रदीपक	सकलकीर्ति	१८११	१२६	स., लि क. पं मयारुचि, जय- सिंहपुरामध्ये (साधवसिंहराज्ये)
१६८	७२६९	सिद्धिविण्डिका		१६वीं	४	प्रा.
१६९	७५३९	सूर्यप्रज्ञप्ति		१७वीं	९२	"
१७०	६१०९	सस्तारकप्रकरण (सवालभावबोध, पञ्चपाठ)		"	१०	अपभ्रंश
१७१	५९११	हरिवंशपुराण	जिनसेनसूरि	१६वीं	२९९	* संस्कृत

राजस्थान पुरातत्वावेषण मन्दिर -- हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग--२, २५--प्रकीर्णग्रन्थ]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७४१ (१)	अपभ्रंशसुटपद्य		१७वीं	१०-१२	
२	७७४१ (५)	"		"	४२-४३	
३	६०२५	इयारसितपसुलतकथा		१८वीं	४	अपभ्रंशमें यह एक प्रकारका पञ्चनामा है जिसमें जयपुरके महापण्डितों एव राजगुरुओंकी मूल सम्मतियों अंकित है।
४	५२०७	श्रीदुम्बरवशापरिचय		१६०८	१	इस गुटकेमें श्रौषधिके नुस्खे, यंत्रमंत्र, शकुन श्राविका सग्रह है इसमें अष्टवृद्धनगकी श्रौषधि ब्रह्मव्य है
५	६८२७	श्रौषधसग्रह श्रावि		१६वीं	१६३	प्राचीनसंस्कृतमिश्रित हिन्दी
६	७७२२ (६)	"		१८वीं	१०६	
७	५१२३ (१)	गगास्तोत्र		"	१	
८	४४५२ (४२)	चण्डिकादेवीचित्र		"	४६ वां	
९	४४५२ (४३)	"		"	५० वां	
१०	४४५४	चन्द्रायणा, कवित्त		"	१	२३ दोहे. २ कवित्त राजस्थानी एव वजभाषा
११	७१७७	जन्मपत्र (सचित्र गोलक)				नवग्रहोंके सुन्दर चित्र अंकित हैं
१२	६६६०	जयपुरराज्य एव सदाशिवभट्टसे सम्बद्ध टिपणिया श्रादि				कामदारी लिपिमें इतिहास
१३	७०६०	ढाईहीपका पटचित्र				
१४	७०५६	"				प्रकीर्ण पत्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	७८०६	तात्रिकयन्त्र (भूगोलपटचित्र)		१६वीं	१	
१६	४८१०	तारतम्य (गद्य)		"	६	श्रीकृष्ण विषयक व्रजभाषागद्यमें
१७	१५०६	द्वात्रिंशदपराधा, दशमहापराधा, माघमासोत्सवादि		"	४	संस्कृत, राजस्थानी इसमें वसन्त पञ्चमी के दिन भगवत्प्रतिमा के शृङ्गार की विधिदृष्टव्य है
१८	५३७६ (५)	दशलाक्षणिककथा	शुद्धकीर्ति	१८वीं	८७-९०	प्राकृत
१९	७७४१ (७)	प्रकीर्णपद्यानि		१७वीं	८०	संस्कृत अपभ्रंश
२०	७०००	प्राकृतगाथाकोशटीका	मू शालिवाहन दा गङ्गाधरभट्ट	१९वीं	१६	प्राकृत संस्कृत अपूर्ण
२१	७३३८	पुष्पमालाप्रकरण	सोमलिलकसूरि	१५वीं	१४	प्राकृत
२२	४४८१	बृहत्क्षेत्रसमास		१७८५	१९	विषय ज्योतिष, लि. क. दौलत- सागरराणि
२३	६३६८	बलिवानपद्धति.		१६	६	तन्त्रोक्त
२४	६८५५	भागवत (मराठी अनुवाद)		१६वीं		प्रकीर्ण पत्र एकादशस्कध ध्यन्त
२५	४०८३	मजलस		१८५२	३	प्राचीन हिन्दीगद्य, जिनमुबसूरि प्रशस्ति, लि. क. प. गोडिदत्त स्थान पालीप्रास
२६	१४५४८ (१)	मोक्षवेडा	बनारसीदास	१६वीं	१-३	पजावी में
२७	५४८४	रामविजयमहाकाव्य	श्रीधर	१८५२	५६४	र.का. शक स. १७१७, मराठी भाषा में, लि. क. वालाजी भीखाजी, रेवाटटे राजराजेश्वर सन्निधी
२८	५७५०	"	"	१८वीं	६८	आर.भसे लेकर दशम अध्याय तक

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २५ प्रकीर्ण ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६	७११६	"		१८६१	३६७	र.का १६२५ शाके(१७६० वि.) अध्याय ११ से ४० तक स. ५५५० और ७११६ की प्रतियोंको मिलाकर ग्रंथ पूर्ण हो जाता है
३०	५३७६ (११)	रोसहकीजयमाला		१७६२	१११-११२	लि क डालचन्द नथमलसुत लि स्था दरियावाव
३१	६०६२	विष्णुमहोत्सवमाला		१८६५	२४	प्रा रा गु, लि क मनोहर
३१	५२३७	वैराग्यशतक	केसरीकवि वालकृष्णभट्टसुत	१७४५	१५	इन्द्रजीत शिष्य
३३	६६७७	पद्मकनिरूपणखरडा		१६००	१	
३४	५२३६	त्रैलोक्यसाधना		१६७६	१२	लि क धर्मकीर्ति उपाध्याय मागलो र मध्ये
३५	७१७६	ज्ञानवाजीकापटचित्र		१६वीं	१	

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थो का विशेष परिचय]

१-स्तुतिस्तोत्रादि

८. ४२३४^१

अहल्यास्तोत्र

आदि- ॐ ततो हृष्ट्वा रघुश्रेष्ठ पीतकौशेयवाससम्,
वनुर्वाणधर राम लक्ष्मणेन समन्वितम् ।

अन्त - ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुष स्तेयी सुरापोऽपि च
आता रा [ग्रा] मर्वाहिसकोऽपि सतत भोगैकवीधा (वद्धा) तुर
नित्य स्तोत्रमिद जपन् द्युपतित भक्त्या हृदिस्थ स्मरन्,
व्यायेन्मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ त्वाचार्य्युक्तो नर ॥ २८

इति श्रीअध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसवादे बालकाण्डे अहल्यास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

९ ४२५४

अज्ञानविमोचनस्तोत्र

आदि- ॐकारे आदिरूपे सुकृतवहुविवे श्वेतपीते च कृष्णे
नीले रक्ते कपोते तदुपरि रहिते सर्ववर्णे विवर्णे ।
प्राणापाने समाने विपरितकरणे व्यान उद्यानपीठे
एको व्यापी शिवोऽय इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीय ।

अन्त- ध्याना ध्याने विज्ञाने जयविजयकरे भावभावे विभावे
रामारामेति रामे अमृतविषमये लुब्धचन्द्रे अलुब्धे
स्वर्गे नर्के अनर्के अखिलखिलमये चेतितेते अचेते
एको व्यापी शिवोऽय इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीय ॥१०

इति श्रीनन्दीपुराणे नारायणकृत अज्ञानविमोचनस्तोत्र सपूर्णम् ।

४८ ७१४८

गुरुस्मरणाष्टक (स्तोत्रसंग्रह)

पत्र- १, १४, १६, १८, १९ वा अप्राप्त

(१) प्रोतमन्तव (२) गोपालमन्त्रध्यान (३) राविकाशतनाम (४) कृष्णशरणागति-
स्तोत्र (५) दशश्लोकी (६) राधाष्टक (७) चतुश्लोकी (८) आदित्यमन्त्रोत्र (९) निवे-
दनाष्टक (१०) नारदशरणाचतुष्टक (११) निम्बार्कशरणागतिचतुष्टक (१२) आचार्य
पञ्चकस्तोत्र (१३) पञ्चश्लोकी (१४) राधास्तव (१५) आदित्यप्रस्तव (१६) निवादित्य-
लघुस्तव (१७) युगमपोडगनामस्तव (१८) यमुनाष्टक (१९) गोपालस्तवराज (२०)
हरिव्यामाचार्याष्टक (२१) गुरुस्मरणाष्टक (हिन्दी) ।

१ प्रथम मन्था क्रमाङ्क और द्वितीय मन्था ग्रन्थाङ्क - सूचक है ।

१३६

६७०१

यमुनाष्टकादिस्तोत्र, ४८ कृतियां ।

श्री वल्लभाचार्यं रचित—१ यमुनाष्टक २ वासवाय ३ गिद्धातमुक्तावनी ४ सिद्धां-
न्तरहस्य ५ नवरत्नस्तोत्र ६ अन्त करणप्रबोध ७ वित्रेकवीर्याश्रय ८ कृष्णाश्रय ९
चतुश्लोकी. १० पुष्टिप्रवाहमर्यादा ११ भक्तिवर्द्धिनी १२ जनभेद १३ स्वतन्त्रपद्यानि.
१४ सन्यासनिर्णय १५ निरोधलक्षण. १६ मेवाफन १७ पंचध्वजां । (विट्टलेश्वररचित).
१८ यमुनाष्टपदी १९ गोपीजनवल्लभाष्टक २० गोकुलाष्टक २१ मधुराष्टक (वल्लभा-
चार्य) २२. भागवत्सारसमुच्चयेनामसहस्रम् २३ नामावलीप्रिविधनीना २४ मेवा-
फलविचार २५ पूतनामोक्ष २६ गोपालाष्टक २७ नरनातप्रियाष्टक २८ शरणाष्टक
२९ दैन्याष्टक ३० वगदेवाष्टक ३१ गिरिधार्यष्टक ३२ गोकुलेशाष्टक ३३ जन्मप्रतार-
निरूपणाष्टक ३४ वल्लभभावाष्टक ३५ स्वामियुगनाष्टक ३६ पनाक्षरगभितम्नोत्र
३७ वल्लभशरणाष्टक ३८ मत्तश्लोकी भागवत ३९ स्वामिन्यष्टक ४० म्यस्वामिनी-
स्तोत्र ४१ आर्या (वल्लभ) ४२ आर्या (विट्टलेश) ४३. आर्या (रघुनाथ) ४४ शिवा-
श्लोकी ४५ दैन्याष्टक ४६ भुजगप्रयाताष्टक ४७ अष्टाक्षरमन्त्रार्थ ४८ मृष्ट पद्य ।

३-कर्मकाण्ड

२६

५७३६

कुण्डकल्पद्रुम

आदि- ॐ मित्यक्षरमद्वितीयमनघ तत्सद्दहदन्त न्यिन,
नत्वा सौति विभति विश्वमखिल यस्मिन् पुनर्नीयते ।
शास्त्र वीक्ष्य समुद्रराम्यय गता श्रीमाधवांशह नुमी-
निर्मथ्याङ्कसमुद्रमिष्टफनद श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥ १

अन्त - आसीत् काश्यपवशज क्षितितले श्रीमानुदीन्वाग्रगी-
र्गोविन्द श्रुतिवित्तदात्मज इहामूत . . . नागयग ।
तत्सूनुनिगमक्रियामु निपुण कृष्णाभिधस्तत्सुत
शुक्लो माधवसज्जको रचितवान् श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥
भ्रान्ता भद्रा ये गणितान्दवीषु फनागयादी विकलाश्च तेपाम् ।
कृते मूखेनेष्टफल. शिवाये 'नापीपुरे'ऽरोपि सुकल्पवृक्ष ॥
मवद्वितो य कृपया शिवेन फलप्रदोऽस्माविति वालकानाम् ।
शिव प्रसन्नो भवतीह येषां तेपा फलाप्तिर्नहि सशयोऽत्र ॥
पद्य सवाध यदि मत्सृतो चेद् ग्राह्य च तत् साधुजनैर्विशोच्य ।
स्वर्वाहिनीसङ्गमत कुवीथ्या कुनिम्नगायाश्च यथैव तोयम् ॥
रविधनमितवर्षे विक्रमाकौ प्रयाते (१७१२)
नगनगतिधितुल्ये (१५७७) शाककाले प्रवृत्ते ।
शरदि मनुजमाने मन्मथे चैपशुक्ले ॥
परिणतिधियुतचन्द्रे कुण्डकल्पद्रुमोऽभूत् ।

२७. ४६६०

कुण्डतत्त्वप्रदीप

आदि- नत्वाऽच्युतब्रह्ममहेशमूर्तीरिष्टेषु पूर्तेषु यदङ्गमाद्यम् ।
साग सम कुण्डमनेकभेद ब्रूतेऽखिल तद्वलभद्रसूरि ॥ १

अन्त- कल्पे श्वेतवराहनाम्नि विदिते वैवस्वते सप्तमे
सन्मन्वन्तरकेऽष्टविंशतितमे प्राप्ते कलौ सम्प्रति ।
अन्हि स्वे प्रथमेऽखिलक्षितिपतिश्रीविक्रमाकंप्रभो-
र्वर्षाशीतिसहैव षोडशशतातीते च काले त्विह ॥
श्रीमदभूपतिशालिवाहनशकात् पञ्चाध्वित्यन्विते
श्रीसूर्ये गतसौम्यदिग्यथ वसन्तर्ते च चैत्रे शुभे ।
शुक्ले (गच्छति) पूर्णमासि हिमगौ सावित्र्यविष्ण्ये धृती
कन्यास्थे हिमगावथावनियुते मेघे ब्रुधे मीनगे ॥
मिहे देवपुरौ सिते मकरगे कर्के शनौ सन्थिते
कन्याया तमसि प्रकेन्दुषु भूप सस्थे च पुण्येऽहनि ।
सुव्यष्ट्या करणे च सन्मिथुनके लग्नेऽभिजित्के मुह-
र्तेसत्कुण्डविचारणार्थमुदितो दीप प्रकाश प्रयात् ॥
श्रीमत्स्तम्भसुपत्तने (स्थित) महेन्द्राम्भोधियोगे वसन् ।
नानाशास्त्रविचारणे पटुमति श्रीगौडरत्नाकरात् ॥
जातो वत्सकुलाधिगीतकिरण सत्कुण्डतत्त्व स्फुट
शुक्लस्थावरसूनुरत्नवलभद्राख्य प्रवक्ति स्वयम् ॥
य पूर्वं सुहिरण्यगर्भमतुल रूप दधन् वाग्विदाम्
मध्ये भट्टसमाख्ययाऽभवदसौ वेदान्वितत्त्व स्वराट् ।
भूय श्रीजयदेवदीक्षितमणि सम्राट् सुविस्तारितु
साङ्ग कर्मपथ चरन् विजयते श्रीमन्सिंहात्मभू ॥
येन श्रीभगवान् मखैर्वहुविधै सन्तर्पित शाश्वतो
येन द्वादशसौत्यकाग्निचयनै सद्वाजपेयादिभि ।
इष्ट तेन सुशास्त्रवेदविदुषा तत्वोपदेशाय चा-
ज्ञप्तेनायमगाधसागरजलात् पूर्णेन्दुवत्काशित ॥

२८ ४६७८

कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)

रचना- 'रमगगनतिथिप्रमाणवर्षे गतवति विक्रमभूमिका [पा] लान्'
लि क सदाशकर, अम्बिकेश्वरमुत महाशकरपीय, जागेश्वरपठनार्थम् ।
टोडा निवासी ।

३३ ४१२८

कुण्डाकं (मरीचिमालाटीकोपेत)

आदि- कृष्णात्रिगोत्रोद्भववृवसिन्धो समुद्गत विट्टलपूर्णाचन्द्र ।
तस्यात्मज श्रीरघुवीरचिज करोति कुण्डाकंमरीचिमान्नाम् ॥ १

अन्ते— शाखा सप्तभिरावेष्टघ वेदी पचभिरेव च ।
कलय तु त्रिरावेष्टघ म्यापायंद्द्वताक्रमात् ॥ इति श्री०

४१. ४१८५ ग्रहशान्तिपद्धति

अन्त— विश्वरगजकुमर्ये (१८५२) विक्रमातीतकाने
रवितियिद्वचवारे माघवे कृष्णपक्षे ।
रचितमिदमनूप शेटशान्तिप्रकार
सुमतिभिरवलोक्य योद्धराजाह्वयेन ॥ १ ॥

इति श्रीग्रहशान्तिप्रवार नमानिमगात् ।

त्रिपिकर्ता—प० नाथूरामपुरी वचूगी^१मध्ये ।

१०० ४६४६ सूर्तिप्रतिष्ठाविधि

अन्त— व्योमाचलावमुनिशाकरनाम्नि' वर्षे
पक्षे सिते तपसि रमाधवान्दिवारे ।
विधी जयपुरे च गुर्गेनिदेशात्
प्रालेखि पुस्तकमिद गिरधारिग्रामा ॥ १ ॥

११३ ४६६४ रुद्रपद्धति (रुद्रार्चनमञ्जरी)

अन्त— सवद्विक्रमभूपस्य तर्कचन्द्रगते गते । (१६७७)
पञ्चरागोत्तरे वर्षे कातिक्या च प्रकाशके ॥
श्रीदीच्यजातिविप्रेण श्रीत्यगलारयमनुना ।
मालजिना कृता चैथ महारुद्रस्य पद्धति ॥



४—तन्त्रमन्त्रादि

१७ ४३२६ कृष्णचरित

आदि—देव्युवाच—भगवन् सर्वं भूतेषु सर्वात्मन् सर्वमभव ।
देवदेव महादेव सर्वज्ञ वरुणाकर ॥१॥
त्वयानुकम्पितेवाह भूयोप्यद्यानुकपय ।
त्रैलोक्यमोहनोमशस्त्वया मे कथित प्रभो ॥ २ ॥

१ यह ग्राम विचूरा ज्ञात होता है जो जयपुर से पश्चिम उत्तरमे १६ कोस पर है ।

अन्त- अथ वक्ष्यामि भग्नाख्य मुनेश्वरि तमद्भुतम् ।
भुज्य नाम्नो मुने सोऽभूत् पुत्र कनकसप्रभ ॥
तस्यास्यादचला भक्तिर्हरी गोपालरूपिणि ॥२५२॥

इति समोहि (ह) नी (न) तत्रे श्रीकृष्णचरित समाप्त ।

२४ ६२४७

गंधोत्तमानिर्णय

अन्त- सन्दिग्धसन्देहविनाशमुद्गर चक्रे स ग्रथ गुरुसेवको मुदे ।
एन सुधीश्रीगुरुजकुलधरे नाकश्वर कौलवता प्रपद्य हि ॥ १ ॥

सिंहस्थे द्युमणौ गुरौ घटगते मासे नभस्याभिधे ।
मदे ब्रह्मतिथौ विधौ तिमिगते पक्षे शुभे मेचके ॥
शाके विक्रमभूपते परिमिते द्याभ्राद्रिजैवातृकै-
(१७०२) विप्रप्रार्थनयाममाप्तिमगमद् गन्धोत्तमानिर्णय ॥
इति श्री कालेत्युपनामकगुरुसेवक कृत गंधोत्तमा निर्णय ।
गुर्जरञ्जलीलालेन कु भावत्या लिपीकृतम् ॥
बहुशास्त्रान्वितो ग्रथो कौलग्रन्थविनिर्णयम् ।

३२. ४८६७

तत्रलीलावती

आदि- कुजे मञ्जुलमजरीपुलकिते भृ गागनासगते ।
माद्यत्कोकिलकाकलीविलपिते मन्दान (नि) लान्दोनिते ॥
सानन्दव्र [त्र] जसुन्दरीभिरभितो नि शेषमालिगिते ।
वन्दे सान्द्रपयोदसुन्दररुचि शृगारिण माधवम् ॥१॥
... श्रीमत्सूरतनूद्भवो गुणनिधि सत्कीर्तिचद्राकर
ख्यातो विक्रमकेसरी जगति यो दारिद्र्यनागातक ।
नानाशास्त्रविचारकेलिचतुरश्रीकर्णभूमि-
पतिर्द्वीर सतनुते मितेन वचसा श्रीतत्रलीलावती ॥६॥
आनोक्य तत्राणि विचार्य सार निष्कृष्य यत्नादिह साधकानाम्
विनोदहेतोर्गुरुवक्त्रगम्य सिद्धे निदान प्रकटीकरोति ॥७॥

अन्त- होमादावप्यशक्तश्चेद्गुद्विण जपमाचरेत् ॥

इद तु पञ्चाङ्गपुरश्चरणाविषयम् ।
अन्यत्र होमादीनामनुक्तत्वात् ।

इति श्रीतत्रलीलावत्या तृतीय पटल समाप्त ।

३३. ७७११

तत्रस्थहृदय

आदि- श्रुतीना तत्राणा बहुलकथनात्पन्नगपुरे
समायाते मोहे द्विजवरगणाना च विदुषाम् ।
अतस्तै सम्पृष्टे हरिहरविरिच्यादि चरणे
स्तुवन् कार्गीनाथो रचयति हि तत्रस्थहृदयम् ॥ ४ ॥

अन्त - सुखजनक माधूना बालमुकुन्ददीक्षित म्याचंम् ।
 व्यलिखन् परार्थमेतत् हृदय यत् नवंनयागाम् ॥ १
 शिष्यकल्पतरुनल्पितकल्प वेदबोधितविधिप्रभुमल्पम् ।
 श्रद्धामार्गपरम व्यलिखित् श्रीकृष्णादीक्षितमुत् स्वपरार्थंम् ॥ २

४४ ७७०८

परशुरामकल्पसूत्र

अन्त- इति श्रीदुष्टक्षत्रियकुलमालान्तकरेणुकागर्भनम्भूतमहादेवप्रधानशिष्यश्रीमन्नाग-
 यणावतारमहामहोपाध्यायश्रीपरशुरामविरचित कल्पसूत्रे नमाप्तम् ।

७३

४२६६

महाविद्यादशश्लोकीविवरण

आदि- अपक्षसाध्यवद्वृत्ति विपक्षान्वयि यत्र तु ॥
 साध्यवद्वृत्तितायुक्त माद्र्घने माद्र्घवर्जिते ॥१॥

अन्त- तदर्थमाकाशान्येति । तथापि द्रव्यत्वेन व्याघातन्तदग्रम्य एव तदर्थमनित्यनित्या-
 वृत्तीति तथापि न विवक्षितमिद्विरिति ।

७६

४११८

रामपद्धति

आदि- श्रीगणेशाय नमः । ॐ गुन्त्रं ह्या गुर्नविष्णुं रुद्रैवो महेस्वर ।
 गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

अन्त- सर्पं दृष्ट्वा यथा लोके दुर्दुरा भयकपिता ।
 ऊर्ध्वपुण्ड्रं कृतं तद्वत्कम्पन्ते यमकिंकरा ॥ ५६ ॥

इति श्रीगमानुजकृता श्रीरामपद्धतिर्वेदोक्ता मम्पूर्णा ।

लिपिकर्ता—विप्रजयराम ।

८३

६७४२

रामपूजापद्धति

रचना काल—‘इन्दुवाणरसोर्वीभिवंत्मरे याति वैक्रमे ॥ (१६५१)

कार्तिकमासिशुक्लाया द्वादश्या भोमवासरे ।

काश्या कृताऽनवद्येय रामोपाध्यायमूरिणा ॥

राम एवार्पिता रामपूजापद्धतिरीदृशी ॥ १ ॥

६३

५२३६

वसुधारा

आदि- मसाग्रद्वयदेन्यस्य प्रतिहृत्रिदिवावहे ।

वसुधारे सुधाधारे नमस्तुम्य कृपामए [यि] ॥

६४

५२२५

वसुधारानाम धारणीकल्प

आदि- ससारद्वयदेन [न्य] स्य प्रतिहृत्रिदिनवहे ।

वसुधारे सुधाधारे नम तुम्या कृपामए (यि) ॥१॥

अन्त- वसुधारा नामधारणी कल्पमित्यपि धारय इदमेवोचद्भगवान्नात्मना आयुष्मान्
 नन्दस्ते उभिक्षवस्ते च बोधिमत्त्वा नालसवति परिपत् सदेवमानुपासुरगवर्धश्च लोको
 भगवतोभाषितमस्यनदन्निति ॥ इति श्रीवसुधारानामधारणीमन्त्रात्ता ।

११३. ४४६६ शिवपचाक्षरी न्यासविधि

आदि- ऋपय ऊचु -कथ पचाक्षरी विद्या प्रभावो वा कथ वद ।

कथ क्रमो महाभाग श्रोतु कौतूहल हि त (न) ॥

सूत०॥ पुरा देवेन रुद्रेण शिवेन परमेष्ठिना ।

पार्वत्या कथित पूर्वं प्रवदामि समाप्त ॥

अन्त- गृहे जप सम विद्याद् गोष्ठे शतगुण भवेत् ।

नद्या सहस्रगुणिता अनन्त शिवसन्निधौ ॥

इति शिवपचाक्षरन्यासविधि समाप्त ।

११६. ४२०५ सिंहसिद्धान्तसिधु

आदि- यस्याग्निद्वयपूजनेन निखिलाः सिद्धीर्लभन्ते नरा

वृद्धी प्राप्य वसति वेष्मसु परास्तेषा समा सपद ॥

भक्तस्वान्तनितातमोहदलने दक्ष विपक्ष वर

विघ्नाना प्रणमाम्यनारत्तमह त श्रीगणाधीश्वरम् ॥ १

इति गोस्वामिश्रीजगन्निवासात्मजगोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट-

विरचिते सिंहसिद्धान्तसिधौ द्विनवतितमस्तरङ्ग ।

अन्त- चद्रवन्हितुरगैकसमिते वत्सरे सहसि शुक्लपक्षतौ ॥

शीतरश्मिसितवासरे शुभे अथ एष परिपूर्णतामगात् ॥ २

सवत् १८२५ वर्षे राजाधिराजश्रीमज्जयसिंहतनूजश्रीमन्माधवसिंहोपणहरेण स्वात्मा-
वलोकनार्थं लिखापित पुस्तकमिद श्रीमज्जयसिंहनिर्मिते जयनगराख्ये शुभपत्तने लेखीय लेखक-
त्रयाणाम् श्री श्री ॥

५-धर्मशास्त्र

१५ ४११३ आशीचदशक सभाष्य

आदि- मातुर्गर्भविपत्स्वद्य त्रिदिवस मामश्रयेतो यथा

मासाद् त्रिप् सूतिकावधिरत स्नान पितु मर्वदा ।

जातीना पतनादिजातमरणे पित्रोर्दणाह सदा

नाम्न प्राक् तदपैति नूतकवशाद्भ्रातुर्दशाह परम् ॥ १

भाष्यादौ- विज्ञानेश्वरविरचितमुनिजनवाक्यैमिताक्षरामध्यात् ।

आशीचदशकवृत्ति वदति हरिहरिहरौ नत्वा ॥ २

अन्त- “शद्रो धन्य कलिर्धन्य इति व्यासवाक्यात् । शूद्रधर्मस्तस्काराणामाहत । धन्य
शब्दो अगलवाचक इति । इत्याशीचदशकभाष्य हरिहरविरचित मम्पूर्णम् ।”

२४ ४३५१ कालनिर्णयसिद्धान्त सटीक

० आदि- प्रणम्यैकरद देव, शारदा गुरुमेव च ।
कालनिर्णयसिद्धान्त व्याकुर्व विशदात्तित ॥ १

अन्त- गताहणे समये भुजनगरे द्विवेदिग्रग्निहोत्रिश्रीजयरामजेन रघुरामेण ग्रन्थम्येय
व्याख्या बुद्ध्या मनीषया कृतेति ।

इति द्विवेद्यग्निहोत्रिश्रीजयराममुत्तरघुरामविरचितो निर्णयसिद्धान्त मटीक. ममान्निमगमन् ।

२५ ६२४६ कृत्यरत्नावलि

रचनाकाल- भूतशून्य ऋषिचन्द्र मिते (१७०५ त्रि०) माघकृष्ण गह्वरी रविवारे ।
ग्रन्थपूर्तिमकरोत् किल राम श्रीरामापतिसमर्पणबुद्ध्या ॥

प्रति पर पुस्तकके स्वामीका पदचालनेय इय प्रकार है—

“श्रीवीमलनगरवास्तव्यनागरजातीयत्रिपाठीकालात्मजग्रहनाम्नुद्गरनायतदान्मज भा आ
तत्सूनुत्रि० त्रिविक्रम तदात्मज त्रि० मोहनसूनु त्रि० प्राणनाथात्मजबालकृष्णस्येद पुस्तकम् ।
श्रावण शुक्लैकादश्याम् गुरौ सवत् १७५६ ।”

३२. ४१२६ तिथिनिर्णय

आदि- सा द्विविधा शुक्ला कृष्णा च । तत्र एकैककालावृद्धघवच्छिन्न काल शुक्लतिथि
तत्क्षयावच्छिन्न काल कृष्णतिथि ।

अन्त- योजन्तदेवकृतमथनमग्निवन्ध-
क्षीराद्विजोय कमलापतिना धृतो य ॥
नित्ये निजे हृदि सता प्रमुदे तु तस्य
तिथ्यान्वदीधितिरिय स्मृतिकीस्तुभम्प ॥
इति तिथिनिर्णय ममाप्त ।

४० ४६८४ दानवावयसमुच्चय

आदि- पुराणश्रुतिवाक्यानि परामृश्य बुधे सह ।
पुरुपोत्तमेन क्रियते दानवावयसमुच्चय ॥

४३ ४६०५ धानतपद्धति

आदि- धानत इति भविष्योक्ते । जात कसत्र(व)घाथपित्यम्य परभागोऽत्र न नगृहीत ।
अन्त- ऋक्षादिभिर्भाव्यमिति तच्चेष्टादिकमनुकर्तव्यमित्यर्थ ॥ ४३ ॥ इति समाप्तम् ।

४६ ४१८४ प्रायश्चित्तमयूख

आदि- नमामि भास्वत्पदपकजतच्छ्रीनीलकण्ठोऽहमथ प्रकुर्वे ।
स्मृत्वोपदेशान् गुरुशकरस्य विनिर्णय पापविशुद्धिहेतुम् ॥ १

अन्त- निशाया वा दिवा वापि यदज्ञानकृत भवेत् ।
त्रिकालसव्याकरणात्तत्सर्वं प्रविणश्यति ॥

५४

४४४६

मदनपारिजात

आदि- प्रवालादिप्रस्थद्युतिनिचयपर्यायवपुषे
नमो विघ्नश्रेणीविघटनवरिष्ठाय महसे ।
जगत्प्रादुर्भावस्थितिलयनिरायासरचना-
विनोदासक्ताय प्रणतिफलसिद्धिप्रतिभुवे ॥ १
सोऽय कौशिकवशभूपणमणिश्रीभट्टविश्वेश्वरो ।
वेदस्मार्तमते नयेच सय (प) दे वाक्ये कृती वद्धते ॥ २

अन्त- "मतिर्येषा शास्त्रे प्रकृतिरमणीया व्यवहृतिः
परा शील श्लाघ्य जगति ऋजवस्ते कतिपये ।
चिर चित्ते तेषा मुकुरतलभूते स्थितिमिया-
दिय व्यासारण्यप्रवरमुनिशिष्यस्य भक्ति रिति ॥"

इति पण्डितपारिजातकहरिमल्लेत्यादिविरुदराजीविराजमानस्य श्रीमदनपालस्य निबन्धे
मदनपारिजाताभिधाने नष्टम स्तवक ममाप्त ।

५६

४४४४

महाव्रतभाष्य

आदि- मधुसूदन गुरु वन्दे देवमात त्रयीविदम् ।
कृष्ण विनायक राम हरिराम हलायुधम् ॥ १
सप्त चैतान्गुरूर्नत्वा तेषा वै पादपासव ।
भाष्य महाव्रतस्याह कुर्वे गोविंदसज्ञक ॥ २

अन्त- चातुर्विंशकान् पुच्छानीत्पुच्छसस्थे चातुर्विंशकानीत्यादिद्विरभ्यास्तेष्व्यायपरि-
समाप्त्यर्थं ॥ इति शाखायनसूत्रभाष्येऽष्टादशोऽध्याय ॥

६२

४५१६

मानवधर्मशास्त्रसहिता

आदि- स्वयम्भूवे नमस्कृत्य ब्रह्मणोऽमितनेजने ।
मनुप्रणीतान् विविधान् प्रमान् वक्ष्यामि शाश्वतान् ॥ १

अन्त- इत्येतन्मानव शास्त्र भृगुप्रोक्त पठन् द्विज ।
भवस्याचारवान्नित्य यथेष्टा प्राप्नुयाद्गतिम् ॥ १२६

इति श्रीमानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्ताया सहिताया द्वादशोऽध्याय ।

७६

४३५०

रत्नसंग्रह

आदि- नत्वा राम धनश्याम शारदा च मन्नेश्वरम् ।
बालवीधाय गोविंद कुम्भे रत्नसंग्रहम् ॥ १

अन्त- धर्माधिकारिरामस्य निर्ममे तनुज प्रती ।

निबधान् वीक्ष्य निर्व[रव]न्नाद् गोविंदा रत्नगप्रदम् ॥

इति श्रीधर्माधिकारिपण्डितरामगुप्तश्रीमद्गोविन्दपण्डितप्रणी ज्योतिपरत्नसग्रह ममाप्त ।

८८ ४५३३

शांखशास्त्र

आदि- भव्यम्भुवे नमस्कृत्य मृष्टिमहारकारिणे ।

चातुर्वर्ण्यहिताधीय शख शास्त्रमकल्पयत् ॥ १

अन्त- शखप्रोक्तमिदं शास्त्रं योऽधीति द्विजपुत्रैश्च ।

सर्वपापविनिर्मुक्तं स्वर्गलोके भवतीत्यते ॥

इति शाखे धर्मशास्त्रेऽष्टादशोऽध्याय ।

८९ ४४४७

शाखायनसूत्र भाष्य

आदि- ॐ श्रीऋग्वेदमूर्तये नमः । ओम् । पुरुषस्य बुद्धिपूर्वकारिणोऽङ्गुदयनि त्रेयम-
मुपादिस्त्वित तच्च विशिष्टक्रियासाध्य, सा च वैदिकी क्रिया नान्या, या नास्ति नुत एतन्
इत्यादि ।

अन्त- शाखायनकसूत्रस्य सम शिष्यहितेच्छया ।

वरदत्तमुत्तो भाष्यमानस्तीयोऽकरोत्प्रवचम् ॥

इति शाखायनसूत्रभाष्येऽष्टमोऽध्याय ममाप्त ।



६-पुराणकथामाहात्म्यादि

७७ ४२३०

भागवत

१ भागवत द्वादशस्कन्ध के १२वें व १३वें अध्याय पृ. १ मे ३८ तक ।

२ नारायणकवच पृ. ३६ से ५६ तक

३ मत्स्यलोकी गीता पृ. ५७ से ६० तक

४ चतुश्चलोकी गीता पृ. ६१ से ६३ ,,

५ एकश्लोकी रामायण पृ. ६४ से ६५ ,,

६ भारतसावित्री पृ. ६५ से ६७ ,,

७ रामरक्षाकवच पृ. ६८ से ८१ ,,

८ रामाष्टोत्तरनामस्तोत्र पृ. ८२ से ९६ ,,

(पञ्चपुराणातर्ग)

९ नारदगीता पृ. १०० से १०१ तक, श्रीर

१० इन्द्राक्षीस्तोत्र पृ. १०२ से ११३ तक हैं ।

६७ ६४८५ भागवतक्रमसन्दर्भटीका

अन्त- इति कलियुगपावनस्वभजनविभजनप्रयोजनावतारश्रीश्रीभगवच्चैतन्यदेवचरणानु-
चरणाचार-विश्ववैष्णवराजसभाजनभजनरूपसनातनानुशामनभारतीगर्भे श्रीभागवतमदर्भे
क्रमसदर्भे नाम सप्तम सन्दर्भ , समाप्तश्चाय भागवतसन्दर्भ ।

१३३ ६४८८ भागवतसन्दर्भे तत्त्वसन्दर्भे प्रथम

आदि- जयता मथुराभूमौ श्रीलरूपसनातनौ ।
यौ विलेखयतस्तत्त्व ज्ञापिकौ पुस्तकामिमाम् ॥ ३
कोऽपि तद्वान्धवो भट्टो दक्षिणद्विजवशज ।
विविच्याऽप्यलिखद्ग्रन्थ लिखिताद्वृद्धवैष्णवै ॥ ४
तस्याद्य ग्रन्थमालेख्य क्रान्तव्युत्क्रान्तखण्डितम् ।
पर्यालोच्याथपर्याय कृत्वा लिखति जीवक ॥ ५

७-वेदान्त

२ ४५६४ अन्त करणबोध सविवृतिक

अन्त- पितृपादाब्जपरागधनिना मया श्रीवल्लभेन रचिता त्रि(वि)वृति पूर्णतामगान् ।

३ ४२४४ अनुस्मृति

आदि- शतानीक उवाच-
ॐ महातेजो महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।
अक्षीणकर्मबधस्तु पुरुषो द्विजमत्तम ॥ १
अन्त- ननु ध्यायति या देही कथयामि च तत्सुखम् ।
सर्वबन्धविनिर्मुक्त परपदमवाप्नुयात् ॥ ७३
इति श्रीमहाभारते विष्णुधर्मोत्तरे अनुस्मृति सम्पूर्णा ।

२३ ४१४१ आत्मबोध सटीक

आदि- टीका- शतमखपूजितपाद शतपथमनमाप्यगोचराकारम् ।
विकसज्जलरुहनेत्र (त्र) उमाद्यायाङ्कमाश्रय शम्भुम् ॥ १
मून- तपोभि[]क्षीण[य]माना[णा]ना शान्ताना वीतरागिणाम् ।
मुमुक्षूणामपेक्षोयमात्मबोवो विधीयते ॥ १
अन्त- दिग्देशकानाद्यनपेक्षमवंग शीतादिहृन्नित्यमुख्य निरञ्जनम् ॥
य स्वात्मतीर्थं भजते विनि क्रिय य सर्ववित् मवंगतोऽमृतो भवेत् ॥ ६७

टीका— शीतादिद्वन्द्वदुःखानि हरतीति शीतादिदृत् नित्यमुय मोक्षानन्दप्रापकत्वाद् ।
इतरतीर्थेषु तद्विपरीत दृ(इ)ष्टव्यम् तस्मादात्मतीर्थे स्नानस्य न त्रिचिदवशिष्यत उति भाव ।

इति श्रीमत्परमहमपरिज्जाजकाचार्यगोविन्द भगवत्पूज्यपादश्रीमच्छकगचार्य-
विरचित्तात्मशोधप्रकरणं समाप्तम् ।

५८ ६०६१

नाटकद्वीपाख्याद्याख्या

श्रीगणेशाय नमः ॥

नत्वा श्रीभान्तोनीर्यविद्यारण्यमुनीश्वरौ ।

अर्थो नाटकद्वीपस्य मया नक्षिप्य वक्ष्यते ॥ १

चिकीर्षितस्य ग्रन्थस्य नि प्रयूहपरिपूर्णायाभिमतदेवतातत्त्वानुस्मरणालक्षण मन्त्रानुमाचरन्
मन्दाधिकारिणामनायामेन नि प्रपञ्चग्रहान्मतत्त्वप्रतिपत्तयेऽध्यागोपापवादान्यां नि प्रपञ्च
प्रपञ्च्यते शिष्याणां वांघमिद्धयर्थं तत्त्वजैककल्पित क्रम उति न्यायमनुमृत्वात्मन्यध्यागोप ताव-
दाह परमात्मेति—

परमात्माद्वयानन्दपूर्णं पूर्णं स्वमायया ।

स्वयमेव जगद्भूत्वा प्राविशज्जीवन्मत ॥ १

देवाद्युत्तमदेहेषु प्रविष्टो देवताऽभवत् ।

मर्त्याद्यधमदेहेषु निश्चिंतो भजति देवताम् ॥ २

अन्त— न तत्र मानापेक्षास्मिन् स्वप्रकाशस्वरूपत ।

तादृग्भ्युत्पत्त्यपेक्षाचञ्छ्रुति पठ गुरोर्मुखात् ॥ २५

यदि सर्वग्रहत्यागो शक्यस्तर्हि धिय द्रज ।

शरणं नतधीनोन्नर्बहिवैपोनुभूयताम् ॥ २६

इति श्रीनाटकद्वीपाख्या नाम दशम ॥ १०

यद्यप्युक्तन्यायेन स्वात्मा परिशिष्यते तथापि तदापरोक्षया (य) यत्किञ्चित् प्रमाणम-
पेक्षितमित्यत आह न तत्रेति तत्र हेतुमाह स्वप्रकाशेति नन्वात्मा प्रकाशतया स्वस्फूर्तो मान
नापेक्षयत इति व्युत्पत्तिमिद्वये मानमपेक्षितमित्याशङ्क्य श्रुतिरेवात्र प्रमाणमित्याह ताह-
गिति ॥२५॥ एवमुक्तमाधिकारिण आत्मानुभवोपायमभिधाय मन्दाधिकारिणस्त दर्शयति
यदि सर्वेति वृद्धिशरणत्वे कि फलमित्यत आह तदधीन इति बुद्ध्या यद्यत्परिक्ल्पयते बाह्यम-
भ्यन्तर वा तस्य तस्य साक्षित्वेन तदाधीनपरमात्मा तथैवानुभूयतामित्यर्थं ॥२६॥

इति श्रीमत्परमहमपरिज्जाजकाचार्यश्रीभारतीतार्थविद्यारण्यमुनिव्यक्तिकृद्वरेण श्रीराम-
कृष्णाख्यविदुषा विरचिता नाटकद्वीपाख्या नाम दशम ॥१०॥

११-ज्योतिष

५ ४४४२

अद्भुतसागर

इति श्रीपाकसमयाद्भुतावर्त ॥ इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शकशकरश्रीमद्वल्लाल-
सेनदेवविरचित अद्भुतसागर समाप्त ।

पुस्तकके अन्तमे इक्ष्वाकुवशोत्पन्न मानसिहादि राजाश्लोका वगवर्णन है ।

लिपिकर्ता—पुरोहित सदाराम, ठाकुर भैरू सिधजीपठनार्थम् ।

लिपिस्थान—शिवपुरी ग्राम । सवत् १७८७ माघ शुक्ला १ बुधवार ।

६. ४६३०

अद्भुतसागरी प्रथम खण्ड

पूर्ण ग्रन्थकी पत्र सख्या ऊपर ३६० लिखी है किन्तु यह प्रति अपूर्ण है । प्रतिमे ऊपर
“पुस्तकमिदं शुक्लसदासुखजीकस्य” ऐसा लेख है ।

७. ४३१४

(अयनाशादिकरणविधि)

इस गुटके मे उपर्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त शीघ्रबोध करणकुतूहल, गतिचारफल, वध्या-
भेद, सन्तानार्थ औषधविधिके दोहे व यन्त्र बीच बीचमे दिये हुए हैं । दोहे उपयोनी हैं ।
२४ पृष्ठ तक अयनाशादिकरणविधि है । फिर १ पृष्ठ मे ७५ पृष्ठ तक शीघ्रबोध है ।
इसके बाद प्रकीर्ण है ।

१४ ७०६१

आकाशपुरुषचित्र

यह मुपुम्णारचक्र है, जिसमे पुष्पाकारमे मुपुम्णा नाडीमे नक्षत्रमालाकी स्थापना
करके बताया गया है । चित्र अध्येतव्य है ।

५० ४१०४

ग्रहणपद्धति

आदि— श्रीमद्बोवर्द्धनधर नत्वा मौरमतानुगाम् ।

स्वल्पानल्पार्थयुता कुर्वे ग्रहणपद्धतिम् ॥ १

अन्त— नवधृतिविक्रमवर्षे काम्यकवनवासिनन्दरामेण ।

रचितोपरागपद्धतिरियमतिहृद्या यहज्ञानाम् ॥ २४

इति श्रीमिश्रनन्दरामविरचिता ग्रहणपद्धति गमाप्ता ।

रचनाकाल—१८२० सवत् । म्यान—काम्यकवन ।

६१ ४३६२

गणितनाममाला

आदि— गणितस्य नाममालाया वक्ष्ये गुरुप्रनादत ।

वालाना सुखबोधाय हरिदत्तो द्विजग्रणी ॥ १

अन्त— कुण्डलज्ञानविप्रेण हरिदत्तेन धीमता ।

नाममाला कृता श्रेष्ठा देवगुर्वो प्रमादत ॥ ३०

श्रीश्रीपतिसुतेनैषा बालाना बुद्धिवृद्धये ।
गणितस्य नाममाला या रचिता शास्त्रमग्रहे ॥ ३१
इति श्रीज्योतिषनाममानेय सपूर्णा ।

६३ ४७७१ (१) गणितलीलावती आदि

लिपिस्थान—१९७० आके विभवनामवत्मरे वसन्तर्ता वैशाखमासे शुक्लपक्षे नवम्या-
मिन्दुवामरे मर्त्तपिक्केत्रमध्ये लिखितम् ।

अथके प्रारम्भमे मराठी भाषामे गजेन्द्रमोक्ष आदि स्तोत्र हैं ।

७८. ४६७२ चमत्कारचिन्तामणि

अन्त— दधीचे पुरे लाटहासे पुराणा गंगाच्छ्रीहरे स्थापित स्यान्पाल द्विजोऽञ्जीकरात्मुन्द-
राल द्विजन्मा नृपाणामपि नाम चिन्तामणीय ।

लिखित देराश्री लीलाधर पुरुपोतमस्त ककनपुरमध्ये ।

९६ ४२८६ ज्योतिषरत्नमाला

आदि— प्रभवविरतिमव्यजानवन्धा नितान्त
विदितपरमतत्त्वा यत्र ते योगिनोऽपि ।
तमहमिहनिमित्त विद्वजन्मात्ययाना-
मनुमितमभिवन्दे भग्रहै कालमीशम् ॥ १
विलोक्यगर्गादिमुनिप्रणीत
वराहललादिप्रपञ्चशास्त्रम् ।
दैवज्ञकण्ठाभरगार्थमेपा-
विरच्यते ज्योतिषरत्नमाला ॥ २

अन्त— सुवृत्तया श्रीपतिदृष्ययानया
कठस्थितज्योतिषरत्नमालया ।
अलक्षणोप्यर्थपरिच्युतोप्यल
सभानु भूम्ना गणको विराजते ॥ १३

इति श्रीश्रीपतिविरचिताया ज्योतिषरत्नमालाया प्रतिष्ठाप्रकरण विशतितमम् ।

९७ ४४०५ ज्योतिषरत्नमाला

अन्त— ग्रामदण्डे चन्द्रा उत्तररु श्रीदुर्गाजीराज्ये रामपुरानगरे श्रीकाशद्रावातगच्छे
भट्टारक श्रीगोडदपत्पट्टे आचार्य श्रीकान्हाडपाध्यायशिवदामलिखित स्वशिष्यपरपरावाचनार्थ
तथा स्वकार्यार्थं तथा च परोपकारार्थं उच्यते लिखिता ।

१०८. ४४०७ ज्योतिषसार सग्रह

आदि— लग्न लग्नपतिर्वलान्वितवपु केन्द्रत्रिकोणे शिवे
पृच्छाजन्मविवाहयानतिलके कुर्यान्नृपति ध्रुवम् ।

सच्छील विभवान्वित गतरुज मुक्तातपत्रान्वितम्
जातो निम्नकुले विभूतिपुरुष असन्ति गगदिय ॥

अन्त- सत्वेन जायते सिद्धि रजसिद्धिगुण फलम् ।
तामसे फलता नास्ति शिवस्य वन्दन तथा ॥

१०६. ४४१०

न्योतिषसारसंग्रह

आदि- यदा मेघे गुरुद्वय करोति तदा दुर्भिक्षमनावृष्टि ।

अन्त- देशा मार्गे पुरे ग्रामे मत्र श्रीपथ देवता ।
स्वामिनो भूमिकार्येषु नवस्थाने निरीक्षयेत् ॥

११८. ६३६६

जन्मपत्रीप्रकार

यह ग्रंथ मारवाडमे रचित है क्योंकि चरखडे जोधपुर, जालोर, सोजत आदि स्थानों के
दिये गये हैं ।

१२० ५२१५

जन्मपत्रीपद्धति

यह प्रति राजस्थानमे ही लिखी गई है । कारण यह है कि राजस्थानके प्राय सभी
नगरोंके अक्षांश इममे विद्यमान हैं ।

१७४ ६४२०

ताजिकसारवृत्ति

वर्षे शैलहयाङ्गभूपरिमिते मासे तथा फाल्गुने
पक्षे शुभ्रतरे तिथौ दशमिते श्रीशेखातत्पुरे
श्रीमति विष्णुदामनृपतौ वरीभवन्दे हरी
वृत्ति [त्ति] श्रीगुरुहर्षरत्नकृपया मामन्तनामाऽकरोत् ।

१६१. ५८३०

नरपतिजयचर्या

पूर्णाभिर्नक्षत्रभौमे दिनपतिवृषभे माघत्रे शुक्लपक्षे
नन्दानन्दाष्टचन्द्रे गमयति तदा सोमवशावतम ।
देशेऽलर्काक्षमध्ये विदितखरपुटीराममिश्रो लिलेख
पाठार्थ पाठयोग्य कलयति तदा श्रीजयपालसिंह ।

१६६. ४८५१

नवरौजप्रकाश

आदि- हैय्यतजीजमिजस्तिरोमकयवनादिगदितशास्त्राणाम् ।
मतमवलोक्याशेष वक्ष्ये किञ्चित्फल रम्यम् ॥

अन्त- श्रीगौरोपतिनगरे यवनेशोत्साहमानद मुफलम् ।
शिवलालपाठकेन प्रकाशित शिष्यजनतुष्ट्यै ॥
ऋद्धोदयेन्दे भूताया माघशुक्लनिवामने ।
सम्पत्तिरामतोषाय मणीराम ममालिखत् ॥

२०१. ७०८८

नटोद्दिष्टविधि

अन्त- विसमजसकिरणधवलिय महियल मुरनिवहममिपय
पयजुअत्म तिहुअणसिरिवर कुलहर मणहर गुणनिलय जिणजयहि ।

२०६ ७०१०

नारचन्द्र (द्वितीयप्रकरण)

लिपिस्थान—मारमामध्ये महोपाध्यायगुगामुन्दरशिष्यकभंचन्द्रशिष्य चिर० दीना-
पठनहेतवे ।

२०७. ४३५२

नारचन्द्रयत्रकोट्टार सटिप्पण

आदि— अर्हते जिन श्रीन नत्वा नारचन्द्रं गु धीमता ।

मारमुद्वियते किञ्चित् ज्योतिपधीग्नीग्धे ॥ १

अन्त— इति नारचन्द्रटिप्पणके श्रीसागरचन्द्रगुरिक्ते द्वितीय प्रकीर्णक ममाप्तम् ।

इति श्रीनारचन्द्रस्योभयप्रकीर्णके शतशतार्द्धशत १५० धयकारिण ममाप्तानि ।

२२८ ४१८३

प्रश्नमाग

आदि— श्री गुरुभ्यो नम । मध्याटव्यत्रिप दुग्धनिधुक्न्याधव त्रिषा ।

ध्यायामि साध्वह बुद्धे शुद्धघं वृद्धघं च मिद्धये ॥ १

अन्त— कुम्भपूर्तिनिधिभानुचन्द्रमोवृद्धिरिष्करिपुचन्द्रमददृक् ।

घान्धवृद्धिशुभदत्रवृत्तिका शन्ननक्रत्रगिकायराशय ॥ ३६

विदुमल्लिपिविनगंवीचिकाशृ गवद्विपदहीनदूषण ।

हस्तवेगजमद्युद्धिपूर्वक धन्तुमर्हति गमोध्य मज्जन ॥

श्रीमावशिवापंगणस्तु । इति प्रश्नमार्गंस्ममाप्तमगमत् ।

२५५ ४४५२

पञ्चपक्षी प्रश्न

आदि— अभिवद्य महादेव सर्वशाम्प्रविशारदम् ।

भविष्यदर्थबोधाय पप्रच्छुमुंनयो मुदा ॥ १

अन्त— भोज्ये च मासे गमने च पक्षे राज्ये दिनानित्ययनच स्वप्ने ।

मृत्येषु वर्षं सुप्तता विचार्या कालप्रमाणे मुनयो वदन्ति ।

ग्रन्थाङ्क ५५५६ 'पञ्चपक्षी' मे यह श्लोक निम्नप्रकार है—

भुवते तु माम गमने तु पक्षे राज्ये क्षणानीत्ययनच स्वप्ने ।

मृतेषु वर्षं शकुनास्यया च कालप्रमाणे मुनयो वदन्ति ॥

२६८ ४८६३

पद्धतिप्रकाश

आदि— नन्देन्दुवर्षेण मया कृतोऽय ग्रन्थो रवे पादयुगप्रभावात् ।

शाके नगाम्भोविशरेन्दु (१५४७) तुल्ये प्राचा प्रवधान्यभिभाष्य सम्यक् ॥१०४

२८२. ४६७८

पैतामही सारिणी

अन्त— आसीत्वार्थपुरे वरे द्विजन(व)र श्रीगोपिराजाभिष ।

सिद्धान्ताभिनवोद्यमैककुशलो दैवज्ञचूडामणि ॥

तज्ज श्रीपतिरप्रर्गा कृनित्रिशी सिद्धान्तपारगम ।

तत्सूनुर्मधुसूदनाख्यगणक पैतामही निर्भमे ॥

२८६. ४२७७

बालावबोध

अन्त- अर्द्धप्रहरक त्याज्य चतुर्थ सप्तमस्तथा
द्वितीय पचमो घट्ट पण्ठो रविपूर्वक ॥

आदि- उदयाचलपर्यन्तामस्ताचलमहीमिमा ।
विख्यातो बालबोधोऽय मुञ्जादित्यो ॥
पूर्वसागरपर्यन्ता पश्चिमोदधिसयुता
बालमाक्रमते नित्य समा तु दिनेश्वर ॥

इति श्री मुजादित्यविरचित ज्योतिःशास्त्रे बालावबोधाख्यम् ।

२६४ ७११२

बालबोध

अन्त- इति श्रीगोविन्दपदारविन्दमकरन्दवेदाङ्गपाठदक्षिणहिसारनगराधिवाप्तश्रीमुन्दर-
शर्महृदयानन्द-श्रीहरिकर्णकृते बालबोधमकरन्दपद्धतिमणौ ग्रहाणामुदयाधिकार पचम ।

२६६ ६२१२

बीजवासनाभाष्य

अन्त- इति श्रीमन्मार्तण्डात्मजप्रकटस्थगोकुलग्रामनिवासी श्रीमत्प्रचण्डपाण्डित्य-
मण्डितोद्दण्डपण्डितमण्डलीमण्डनवलभद्र भट्टात्मजमाधवभट्टसुतव्रजनाथभट्टसूनुना गणकमण्डली-
मण्डनेन ज्योतिर्विचिताततोषहेतवे विरचित बीजवासनाभाष्य सफ(क)लमन्देहापनोदनवम
श्रीमत्प्रचण्डप्रतापसार्वभौमरामसिंहराज्येऽम्बावत्या अम्बिकेश्वरपुर्यामिकाभ्रनृप १६०६ मिते
शके चैत्रशुक्लपक्षे गुरौ सप्तम्या समीपिमगमत् । सवत् १७७६ शके १६४१ प्रथम
आश्विनकृष्णा १२ सोमे लि० इन्द्रमणिना ।

२६८ ४१८६

बृहज्जातक

आदि- मूर्तित्वे परिकल्पित शशभृतो वर्त्मा पुनर्जन्मना-
मात्मेत्यात्मविदा क्रतुश्च यजना(ता)भर्ता मह ज्योतिषाम् ।
लोकाना प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा य श्रुतौ ।
वाच न त्वनेककिरणास्त्रैलोक्यदीपो रवि ॥ १

अन्त- दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेद ।
शास्त्रमुपसग्रहा नमोऽस्तु पूर्वप्रणोन्म्य ॥ १०

इति बराहमिहिरकृती बृहज्जातके उपसहाराख्य पञ्चविंशोऽध्याय ।

३३६ ४२८४

मयूरचित्र

आदि- अथ मयूरचित्र लिख्यते ।
यस्योदयास्तसमये सुरमुकुटनिघृष्टचरणकमलोपि ।
कुरुतेऽञ्जलि त्रिनेत्र स जयति घाम्ना निधि सूर्ये ॥

३४६ ४२८३

माससारिणी

आदि- सूर्ये स्पष्टवधि ५२ ।

अन्त- वेदाष्टगजभूराज्याद्गता विक्रमवत्सरा ।

पालिवाहन

मार्गशीर्षे सिते पक्षे नष्टेन्दुचन्द्रवासरे ।

मासाना सारिणीश्रेष्ठ बालाना शीघ्रवृद्धिदम् ॥ २

४२२ ५१६५

रमलनवरत्न

नगरसवसुचन्द्रे (१८६७) वत्सरे विक्रमार्के ।

शिववाटिकायां श्रवन्त्यां सीतारामपुत्रेण श्रनूपदेव्या सुतेन परमसुखसनाढ्येन
रचितमिदम् ।

३३२ ४७६६

रमलसार

(लक्ष्मीनृसिंहभट्टसुनगोकुलवास्तव्यश्रीपतिविरचित ।)

आदि- य सिद्धनदपुर्यां स मे हरेत्युपनामक

गुलावरायो घर्मात्मा यशस्वी तत्तनूद्भव ॥ ३

गुरोर्गोविन्दरायस्य क्षात्रवशाशिरोमणे

प्रसादात् कुरुते रमलसार श्रीपतिना मया ॥ ४

४७० ४३५५

वसन्तराजशाकुन

आदि- विरचिनारायणशकरेभ्य शचीपतिस्कर्दावनायकेभ्य ।

लक्ष्मीभवानीपतिदेवताभ्य सदा नवभ्योऽपि नमो ग्रहेभ्य ॥ १

अन्त- इति श्रीवसन्तराजशाकुने सदागमार्थशोभने ।

समस्तसत्यकौतुके कृत प्रभावकोर्तनम् ॥ विशतितमो नय ॥ २०

इति भट्टवसन्तराजविरचित दारिद्र्यविद्रावण नाम सर्वंशाकुन समाप्तम् ।

६२३ ४४२७

क्षेत्रसमासावचूरि

आदि- श्रीवीरजिनेन्द्र सर्वेकाततमोरविम् ।

नत्वा नव्यो लघुक्षेत्रसमासोह्यवचूर्ण्यते ॥

ऐद युगीनान् सक्षिप्तश्चीनपेक्ष्य भगवद्भिः

श्रीसोमतिलकमूरीश्वरैर्द्विद्वेष्यमति महार्थ ॥ २

अन्त- एव सर्वद्वीपममुद्रादिसत्या आनेया तथात्र मनुष्यक्षेत्रे सर्वाग्ने सर्वेऽपि शशिनो-
रवयश्च पृथक् प्रत्येक द्वात्रिंशच्छत तथा बहिर्मनुष्यक्षेत्रात् शशिनोरवयश्च स्थिरा अर्द्ध-
प्रमाणाश्च ज्ञेया ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ इति नरक्षेत्रविचार इति श्रीसोमतिलकसूरिविरचिताया
नव्यक्षेत्रसमासस्यावचूर्णि श्रीगुणरत्नमूरिविरचिता ।

१२-छन्दः शास्त्र

४ ४४३२

वृत्तमुक्तावली

आदि- सकललघुमपूर्वा तत्कृतीना कवीना-
मप्रभवति सुखहेतु. सश्रितायेन ।
... शुभगराद्या व्याललोकावसान-
ङ्कलयति भवतीय छन्दसा मालिनीव ॥ १

अन्त- अतो मेरोरर्धाल्लगविषयणीजातिषुलादिकासुक्रमा-
देकद्वयादिप्रमितिरचिराद्वात्ति २ को युत स्यात् ।
तदङ्क स्यात्सख्या भवति यदि वा मिश्रितरेकयुक्तं
समुद्दिष्टाङ्क स्याद्द्विगुणवपुषा मस्ययकोनयाच्वा ॥

इति श्रीमत्कविधुरन्धरमल्लारिविरचितायां वृत्तमुक्तावली (ल्या) प्रस्तरादिनिरूपण नामा-
ष्टमो गुच्छ ॥

लिपिकर्ता—वराहग्रामस्थ वम्मणभट्टात्मज कालिङ्ग ।

१५ ७५१३

वृत्तरत्नाकरवृत्ति

अन्त- शरवाराणपर्वतकेन्द्रे चैत्रके विशदे वृषे ।
एकादश्या तित्थौ रात्रौ व्यलेखि विक्रमे पुरे ॥ १
भूतनाथप्रसादेन गर्भेशेन लिपीकृतम् ।
कल्याणमस्तु श्रेयोऽस्तु विजयोऽस्तु शमस्तु च ॥ २
पुस्तिकेय वदत्येवाविघ्नमस्तु प्रजासु च ॥

१३-सगीत

१. ६७४१

अनूप सगीतरत्नाकर

आदि- श्रीगुरुगणाधिपवटुकशारदाभ्यो नम ।
श्रीमज्जनार्दननत्त्वा सगीतार्थफलप्रद ।
तन्यते भावभट्टेन रागालापनमजरी ॥ १
त्रिगत्तुग्रामरागास्यु नवोपरागका स्मृत ।
रागाणां विशति प्रोक्ता भाषा पण्यवति स्मृता ॥ २

अन्त- इति श्रीमद्राठोडकुलदिनकरमाहाराजाधिराजश्री' .. हात्मजजयश्रीविराज-
मानचतु समुद्रमुद्रावच्छिन्नमेदिनीप्रतिपालनचतुरवदान्यताग्रेस (सर) निजितचितामणिरिव

प्रतापतापितारिकर्गंभ्रमावतारश्री ५ माहाराजाधिराजश्रीमदनूपसिंहप्रमोदितश्रीमहीमहेंद्रमौलि-
मुकुटरत्नकिरणनीराजितचरणकमलश्रीसाहिजहाँ सभामङ्गलसगीतराजजनाईनभट्टागजानुष्टुप-
चक्रवर्तिसगीतराजभावभट्टविरचिते श्रीअनूपसगीतरत्नाकरे रागाध्यायो द्वितीय समाप्त ॥
० छा॥ छा॥ ॥ छा॥ छा॥

२ ४१६६

रागमाला

आदि- नन्वा धम्मपदाम्बुज तदनु च श्रीशैलकन्यापद-
द्वन्द्व विघ्ननिवारकं च सतत त वारणास्य स्मरन् ।
रागाणा किलमैरवादिसुमनोमोदप्रदानां ब्रुवे
पण्णा लक्षणरूपगानसमयान् सगीतवित्तुष्टये ॥ १

अन्त- रागाणा मैरवादीना पण्णा रूपनिरूपणम् ।
हरिदत्तबुधप्रीत्यै ब्रजनाथेन सूचितम् ॥ २

श्री पञ्चनदान्वयसम्भूतगोकुलस्थब्रजनाथदीक्षितविरचित्ता हरिदत्तभट्टप्रीत्यै रागमाला
समाप्ता । लिपिकर्ता—पुरुषोत्तम आचार्य ।

१४—कामशास्त्र

३ ४४२६

रतिरहस्य

आदि- येनाकारिप्रसभमचिरादद्धनारीश्वरव
दग्धेनापि त्रिपुरजयिनो ज्योतिषा चाक्षुषेण ॥
इन्दोर्मिथ मजयति मुदा धाम वामप्रचारो
देव श्रीमान् भवरसभुजा दैवत चित्तजन्मा ॥ १

अन्त- मुरतरुतगरवचागरुमृगमदमलयजगन्धरसधूप ॥
वेश्मनि विहितस्तेषा परम्पर प्रीतिमातनूते ॥७१॥

इति सिद्धपटीय पण्डितश्रीकोककृतौ रतिरहस्ये योगाधिकारो दशम परिच्छेद ॥

४ ४७७५

रतिरहस्य

अन्त- शाकं वेदनगेपुञ्जन्द्रमितिगे मंचत्सरे नन्दने
माघे मास्यघ घर्मदैवततिथौ सौरस्यवारे पुनः ॥
तापीतीरनिबमिना द्विजवरेणालेखि वै पुस्तक ।
शिष्याणा पठनाय वामलघिया मौह्याय शैवेन यत् ॥

१५-काव्य नाटक चम्पू (१)

२ ४३७९ अध्यात्मरामायण सुन्दरकाण्ड सटीक

आदि- श्रीमहादेव उवाच- शतयोजनविस्तीर्णं समुद्र मकरालयम् ।
लिलघयिषुरानन्दसन्दोहो मारुतात्मज ॥ १

अन्त- यत्पादपद्मयुगल तुलसीदलाद्यै-
स्सपूज्य विष्णुपदवीमतुला प्रयान्ति ॥
तेनैव किं पुनरसौ परिरव्धमूर्ती-
रामेण वायुतनय कृतपुण्यपुञ्ज ॥ ६४

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसवादे सुन्दरकाण्डे पचम सर्गं ॥

३. ४५२० अध्यात्मरामायणसेतु

अन्त- इति श्रीमत्सकलराजविपदुद्धारणसमर्थेत्यादिविरुदावलीविराजमानस्य हिम्मति-
वर्मण पुत्रस्य श्रीरामवर्मण कृतावध्यात्मरामायणसेतावुत्तरकाण्डे नवम सर्गं ॥समाप्त ॥

१० ४३३१ अनर्घराघव

आदि- ह्रीं पचपरमेष्ठिन्यो नम ॥
निष्प्रत्यूहमुपास्महे भगवत कौमोदकीलक्ष्मण ।
कोकप्रीतिचकोरपारणपटुज्योतिष्मती लोचने ॥
याम्यामर्धविबोधमुग्धमधुरश्रीरर्घनिद्रायतो ।
नाभीपल्लवपुण्डरीकमुकुल कन्वा सपत्नीकृत ॥१

अन्त- दृष्ट्वा तुप्यत्पुलत्यो जगति विजयते जानकीजानिरेक ।

इति निष्क्राता सर्वे । इति दशग्रीवनिग्रहो नाम पष्ठाङ्क समाप्त ।

१२ ६४०२ अन्यापदेश शतक

लिपिकर्ता-अभयराम दादूपयी नागपुर-

लेभ्येऽस्य शुभदा तपोभिरमलै श्रीपद्मनाभात्सुत ।
यद्देशो मिथिलाखिलावनितलालकारचूडामणि ॥
तेनेद मधुसूदनेन कविना विद्यावता निर्मित,
श्लोकानां शतक मुदे मुकृतिनामन्यापदेशाब्धयम् ॥ १५

१४ ४३२५ अमरुशतक सटिप्पण

अन्त- प्रासादे सा विशिदिशि च सा पृष्ठत सा पुर सा ।
पर्यंके सा पथि पथि च मा तद्वियोगानुरस्य ॥

दृष्ट्वा चित प्रवृत्तिरपरा नास्ति मे वापि मा मा ।
मा मा मा ना जगति मयने काश्यपःकृतपाद ॥ १०२

इति श्रीमद्भृशपायविरचितसामरगान्त समाप्तिसप्तमम् ।

१८ ४३३० कृष्णसंहार

आदि- प्रचण्डसूयं स्पृहणीयाऽऽभा ।
मदारमाहूताऽऽरिगण ॥
दिगांतरम्बोजगुपनांमन्मथी ।
निदासतान मधुपाता प्रिये ॥ १

अन्त- प्रातःकालेन्दुरस्या म्बनगतजारा ।
करवदपंशितिनीरागात्रमदृषा ॥
माने मथी मधुरतीमत्रभू मनादे-
नारिषो हरति हृदय प्रमत्त नराणाम ॥ २४

इति श्रीविजयपार्ष्ये श्रीनागविशामयी भक्तुमहारे यमराज्यां नाम पद्य कर्तुं समाप्त
तत्त्वमामो ममाप्नोस्य प्रत्य ॥

३० ४३६५ कुमारविहारसप्तम

आदि- तेज पुष्पावु पाश्र्वो नुरितरिजयि व पाश्र्वतान इषात्र ।
मप्राप्त मन्त्रस्या नृजगपनिष्ठाता इष्टमन्त्रभाति ॥
कर्माप्यष्टी समन्तात्रिभुवन त्रयतोऽपगतानां भवाना ।
यश्चेत्तु तुन्यमान वदति निरननुभूत्तगामाऽस्यज्ञम् ॥ १

अन्त- आस्ता तावन्मनुरय प्रकृतिमलिनार्थो पाश्र्ववामोऽत्रवभु-
वक्तु वक्त्रोऽन्तुर्भिविधारिषि तिमत् तस्य मोऽर्षेनऽमीम ।
स्त्रीणां जेषाभिन्नाप परमलयमय स्थानमाप्नोऽपि सन्नि-
धाम्स्या श्रीपाश्र्वेनापस्त्रिभुवाऽऽमुदारासन्त्रदन्कार ॥ ११६
इति विहारसप्तम समाप्तम् ॥८॥८॥

४१ ७७६४ कृष्णगणोद्देशदीपिका

अन्त- शाके दशदशशक्रे नभनि नभोमणिरिने षष्ट्याम् ॥
ब्रजपतिमद्मनि राधाकृष्णगणोद्देशदीपिकाऽदीपि ॥

६५ ५६०२ धम्मंशर्माभ्युदयम्

आदि- श्रीनागिसूनोश्चिरमत्रियुग्म-
नयेन्दव कौमुदमेवयन्तु ॥
यथानमन्नाकिनरेन्द्रचक्र-
चूडाश्मगर्भप्रतिविम्बमेण ॥ १

अन्त- अभजदथ विचित्रैर्वाक्यसूनोपचारै
 प्रभुरिहहरिचन्द्राराधितो मोक्षलक्ष्मीम् ॥
 तदनु तदनुयायी प्राप पर्यन्तपूजो-
 ऽपचितसुकृतराशि स्वपद नाकिलोक ॥ १८५

इति महाकविश्रीहरिश्चन्द्रविरचिते श्रीधर्मशर्माम्युदये महाकाव्ये श्रीधर्मनाथनिर्वाणगमनो
 नाम एकविंशतितम सर्गं पूर्णं । कविवशवर्णन तत्रैव-

मुक्ताफलस्थितिरलकृतिषुप्रसिद्ध-
 स्तत्राद्रं देव इति निर्मलमूर्तिरासीत् ॥
 कायस्थ एव निरवद्यगुणग्रहस्त-
 न्नैकोऽपि कुलमशेषमल चकार ॥ २
 लावण्याम्बुनिधि कलाकुलगृह सौभाग्यसद्भाग्ययो ।
 क्रीडावेदमविलासवासवलभीभूषास्पद सम्पदाम् ॥
 शौचाचारविवेकविस्मयमहीप्राणप्रिया शूलिन-
 शर्वाणीव पतिव्रता प्रणयिनी रथ्येति तस्याभवत् ॥ ३
 अर्हत्पदाम्भोरुहचचरीक-
 स्तयो सुत श्रीहरिचन्द्र आसीत् ॥
 गुरुप्रसादादमला वभूवुः
 सारस्वते स्रोतसि यस्य वाच ॥ ४
 स कर्णपीयूषरसप्रवाह
 रमध्वनैरध्वनि मार्यवाह ॥
 श्रीधर्मशर्माम्युदयाभिधान
 महाकवि काव्यमिद व्यधत् ॥ ७

६६ ४०६२

नलोदय टीका

आदि- नत्वा हरिकमलशखगदामिपारिणि ।
 लक्ष्मीनखाकविलसद्हृदय दयाच्छिम् ॥
 वागीश्वरीमथ गुरूश्च परापरेषा ।
 टीका मनोरथकवि स्वधिया विधत्ते ॥ १
 नलोदयपदावोधाद्बुधा खेद विमुञ्चत ।
 मनोरथकृता टीका शृद्धा सम्प्रति पश्यत ॥ २

अन्त- नलोदयमहाकाव्यटीका विवृषचन्द्रिका ।
 आचन्द्रतारक यावद्भूयादानन्दवर्द्धिनी ॥ ३
 एकेन यमकालापो निस्तरितु सुदु शक ।
 तस्मात्सन्तो दयावन्त स्निह्यन्तु मयि निर्भरा ॥ ३

इति श्रीमन्मनोरथविरचिताया विवृषचन्द्रिकाया नलोदयमहाकाव्यटीकायां चतुर्थं
 आश्वास. ॥ ४ ॥ समाप्त ॥

७४ ४३८८

नृसिंहचम्पू

आदि— कनकरुचिदुकूल कुण्डलोल्लासिगल्ल
शमितभुवनभार कोऽपि लीलावतार ॥
त्रिभुवनसुखकारी शेषधारी नृसिंह
परिकलितरमागो मगल नस्तनोतु ॥ १

अन्त— इति श्रीमन्महाराजधिराजस्पृहणीयशौर्योदार्याद्यनेकानवद्यपद्यगुणगणविराजमान-
श्रीमदुमापतिराज्योद्योतितभट्टकेशवविरचिते नृसिंहचम्पूकाव्ये पञ्चम स्तवक ॥ ५ ॥

८६ ६२४४

महाभारत सभापर्व

लिपिकर्तुर्गोवर्धनस्य ग्रन्थान्ते वशवर्णन यथा—

गोविन्दात्मजजीवनाथनिपुण शास्त्रप्रवाहागमे ।
तेषामात्मजरुद्रभक्तिनिपुण ख्यातो हि शैवागमे ॥
सोऽयं लेखितग्रन्थमेव सुधियो गोवर्धनस्यातिवान् ।
पाठे चात्मपरार्थमेव सकल तस्माच्छिवप्रीतये ॥ २
अस्मत्पितामातुलपुण्यमूर्ते-
विख्यातनाम्ना हरजीति सजे ॥
गोवर्धनोऽह इदमाललेख
प्रसाद तेषा गुरुमातुलस्य ॥ ३
वर्षातीते वेदगोभूपचेति ।
मासेऽपाढे पूर्णिमाभूमिजेति ॥
ग्रन्थेऽलेखी विप्रगोवर्धनेति ।
तीर्थोपुण्ये क्षेत्र भूतेऽवरेति ॥ ४

स० १६६४ वर्षे आषाढमासे शुक्लपक्षे पौर्णमास्या भौमवासरे च ठाकुरगोविन्दसुतठाकुर-
जीवनाथात्मजगोवर्धनेन लिखित इदं पुस्तकं मथुरामध्ये श्रीमहान्हरजीपितामातुलप्रसादेन ।

१०८. ६४७१

महाभारत कर्णपर्व

अन्त— हुताग्नागाद्रिकुभिर्मिते शके ।
श्रीविक्रमार्कस्य च कार्तिके सिते ॥
त्रयोदशी भौमदिने समाप्त-
मिदं तु शास्त्र हरिलालमिश्रात् ॥
लिखनत इति शेष । दांता मध्ये ।

११८ ६१६६

महाभारत मोक्षपर्व

अन्त— मनरामेणालेखि नभोत्यगरारे धृत्यव्दशके भारत्यां सेश जगति शमस्तु ।

१२५ ४३६१

मुद्राराक्षस सटीक

आदि— सिद्धरारुणगण्डमण्डलमदामोदभ्रमद्भृ गिका ।
ऋकारेण कलेन कर्णमुरजध्वानेन मद्रेण च ॥

तत्तौर्यत्रिकरीतिमेति शिरसश्शश्वन्मदान्दोलन ।

यस्य श्रीगणनायक स दिशतु श्रेयासि भूयासि व ॥ १

अन्त- वाराणान्धर्तुमहीसख्यामितेव्दे जयनामके ।

दुंढिना व्याकृत जीयान्मुद्राराक्षसनाटकम् ॥

रचनाकाल—शाके १६३५ फाल्गुने । रूपजित्तनयहरदत्तस्येद पुस्तकम् ।

१३५ ४३६०

मेघदूत सटीक

अन्त- आसीन्निर्मलवक्ष्यतरणिस्वाचारचितामणि -

सद्विद्यासरणिर्भवावितरणि श्रीसोमनाथो द्विज ॥

सूनुस्तस्य धनेश्वरो व्यरचयट्टीका शिशूब्दोधिनी ।

काव्येऽस्मिन् सरसप्रवधविपमे श्रीमेघदूतामिधे ॥ १

१३६ ५१५६

मेघदूत सटीक

अन्त- श्रीवैकुण्ठाभिधगुणवचोलवधतत्त्वावबोधो ।

वाराणस्या विवुधनिकरालकृताया यतीन्द्र ॥

पूर्णानन्दश्चतुररचना मेघदूतस्य टीका ।

काव्यच्छन्दोनिगमनिपुरो बालबुद्ध्यै व्यतानीत् ॥ १

१५६. ७३०२

रघुवशटीका

अन्त- चन्द्रवसुसम्बतसमै वन्हिवाण परमानिये ।

आसोज सुदि एकादशी भृगुवार इह जानिये ॥

लि क खुशालसागरगणि मेदपाटदेशे वैराटमडले सग्रामगढनगरे तथा टुकरवाडग्रामे ।

१६३. ७०८३

राधाकृष्णप्रेमसम्पुटकाव्य

अन्त- षट्शून्यत्वंवनिभिर्गुणिते तपस्ये ।

श्रीरूपवाङ्मधुरिमापृतपानपुष्ट ॥

राधागिरीन्द्रधरयो सरसोस्तटान्ते ।

तत्प्रेमसम्पुटमविन्दत कोऽपि काव्यम् ॥

१७१ ४४००

रामहनुमन्नाटक

आदि- श्रीरामे दशरथेन कँकेयी वाक्पात्रा वन प्रति प्रेष्यमाणे लक्ष्मणस्य भाव ।

निर्यातिमाकर्ण्य वनाय राम ।

सौमित्रिरुत्तभित्तकोपकम्प ॥

विश्रान्तदृष्टि किल चापयश्री ।

दध्यौ स वै लक्ष्यमिद हृदन्त ॥ १

अन्त- रकारादीनि नामानि श्रुण्वतो मम पार्वति ।

मन प्रसन्नतामेति रामनामाभिगकया ॥

इति रामहनुमत नाटकम् ।

२०२ ६०२०

रामायण उत्तरकाण्ड

अन्त- वाल्मीकिना विरचित श्रीरामायणपुस्तकम् ।
लिखित लक्ष्मणाख्येन समाप्त भक्ततृष्टिदम् ॥

२१६. ७०८७

शिशुपाल व(व)घ

अन्त- इति श्रीमाघवणिग्विरचिते महाकाव्ये श्रघ के शिशुपालवधो नामविंशति (त)
म सर्ग ॥ सम्पूर्ण माघकाव्यम् ॥ स० १५५२ वर्षे चैत्रसुदिद्वादशीदिने सोमवासरे
ब्रह्मश्री (पि) रतन पठनार्थे श्री माघकाव्ये लिखित ज्योतिरगमल शुभ भवतु ।

२२१. ६१७६

शृङ्गारमाला

अन्त- श्री गुरुदेव ।

ससारसर्पमुखमर्दनतादयंरूपा
विज्ञानभापटलपाटितमोहकूपा ॥
येषा कटाक्षकलिता फलिता लसन्ति
गङ्गे शमिश्रगुरव सतत जयन्ति ॥ १
कविवशवर्णनम् ।

पानीयप्रस्थात् परतस्तु मार्गो
पट्क्रीशमघ्ये हि घटोत्कचस्य ॥
ग्रामो 'धरोडे'ति प्रसिद्धनामा
पूर्वेस्थितास्तत्र पुरा मदीया ॥ १०
श्रीविष्णुदत्तस्वकुलाब्जभानु-
नारायणस्तत्तनुजो बभूव ॥
कौशल्यगोत्रो यजुपानधीता
माध्यन्दिनीयो द्विजगौडजोसी ॥ ११
तस्यात्मजो स्यादगमत्तु काश्या ।
पद्मिनीवैरमपुत्रमत्री ॥
दामोदरो वैद्यकग्रथकर्ता
श्रीरामकृष्णस्तदपत्यमासीत् ॥ १२

तुलसीमाधवगगाराभाख्यास्तत्तनूद्भवाश्चासन् ।
माधवरामसुपुत्रो हृदयराम इति सुगीयते मनुजै ॥ १३
साहित्ये रसग्रथकृद्बुधवरस्तस्याङ्गजात कवि-
विवराध इति प्रसिद्धिमगमद्वासीपुरे चार्गले ॥
तत्पुत्रेण कृता मया रसमयी माला रसोपासकाऽऽ-
ज(ज्ञ)प्ता प्रापयितु गुणैरपि युता कल्पारसब्रह्मणि ॥ १४
सुखलालेन सुकविना रचिता शृ गारमणिमयीमाला ।
सा रसिकाना सगुणमुवर्णा विलासमातनुताम् ॥ १५
सुधाशुव्योमवस्विन्दौ वर्षे ज्येष्ठसिते रसे ।
शुभा शृ गारमालेय रविपुष्ये सुगुम्फिता ॥ १६

इति श्रीमत्साहित्यशास्त्रानुभावरसिकगौडविप्रवरवावूरायमिश्रसूनुसुखलालमिश्रेण
विरचिताया शृंगारमालाया सकीर्णवर्णन नाम तृतीय विरचनम् ॥ श्रीरस्तु ॥

प्रथम विरचनम्—नायिकाभेदविवरणम् ।

द्वितीय ,, —शिखनखवर्णनम् ।

तृतीय ,, —षड्भक्तुवर्णनम् (सकीर्ण-विरचनम्) ।

२२३. ५३०३

सवित्प्रकाश

अन्त- श्रीगोविन्दकवीशमीशभजनप्राप्त कवीशाग्रणी ।
श्रीमत्कान्हकवि' सुतं प्रसुषुवे श्रीकर्मदेवी च य ॥
वेदान्ताम्बुजभास्वतार्थवह्वलं सवित्प्रकाशाभिध ।
काव्य तेन कृत समाप्तिमगमद्विद्वज्जनानन्दनम् ॥

२२४. ४१२६

सप्तशती आर्यावृत्तवद्धा

आदि- पाणिग्रहे पुलकित वपुरैश भूतिभूपित जयति ।
अकुरित इव मनोभूर्यद्भस्मावशेषेऽपि ॥ १

अन्त- हरिचरणलीलाकविवरवचनवामनशीला वामन इव कविपद निष्ठ्य ।
अकृताचार्यं सप्तशतीमेका गोवर्धनाचार्यं ॥ ७५०
इति गोवर्द्धनाचार्यकृता सप्तशतीय समाप्तम् ।

सवत् १८०७ मिति माघ शुक्ल २ गुरुवासरे सम्पूर्णम् । लीखतं जोसी परसरामेण ।
पर्वणीकरोपनामरघुनाथस्येदम् पुस्तकम् । लेखकपाठकयो शुभमस्तु ॥

॥ शुभ भवतु कल्याणम् भव ॥

२२५ ६०६३

सुन्दरमणिसन्दर्भ

अन्त- मधुराचार्यनाम्नैप गालवाश्रमवासिना ।
सुन्दराभिधमन्दर्भो भावशोधाय निर्मितः ॥



१६-रसालङ्कार

२. ४३६६

अलंकारचन्द्रिका (कुवलयानन्दटीका)

आदि- अनुचित्य महालक्ष्मी हरिलोचनचन्द्रिकाम् ।
कुर्वे कुवलयानन्दसदलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

अन्त- असी कुवलयानन्दश्चन्द्रालोकोत्थितोऽपि सन् ।
प्रतिष्ठा लभते नैव विनाऽलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणज्ञतत्सद्रामभट्टात्मजवैद्यनाथकृता लङ्कारचन्द्रिकारया कुवलयानन्दटीका ।

४ ५६८३

काव्यकल्पलतावृत्ति (कविशिक्षा)

आदि- विमृश्य वाङ्मय ज्योतिरमरेण यतीन्दुना ।

काव्यकल्पलताख्येय कविशिक्षा प्रतन्यते ॥

अन्त- इति

श्रीजिनदत्तसूरिशिष्यमहाकविचक्रचूडामणिश्रीमदमरमिहविरचिताया
काव्यकल्पलताकविशिष्या(क्षा)वृत्तौ अर्थसिद्धिप्रदाने तुर्ये(तुरीये) समस्यास्तवक सप्तम
समाप्त ।

१३. ६०७३ चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)

अन्त- इति श्रीरामचन्द्रदेवात्मजयुवराजश्रीवीरभद्रदेवादिष्टमिश्रवलभद्रात्मजसकलशास्त्रा-
रविन्दप्रद्योतमभट्टाचार्यविरचिते चन्द्रालोकप्रकाशे शरदागमे दशमो मयूख समाप्त ।

२४. ६४६८

रसमञ्जरीटीका व्यङ्ग्यार्थकोमुदी

वर्षाभ्राकसुधाशुभिश्च मिलिते सवत्सरे भाद्रके ।

पक्षे मेचकसजके कुजदिने व्यङ्ग्यार्थविद्योतिकाम् ॥

व्यालेखीद्रसमञ्जरीतिलकिका गोविन्दशर्मा द्विजो ।

राज्ये भारतपत्तने च बलवर्त्महस्यपुण्यात्मन ॥

प्रति के आदि २३ पत्रो मे काशिराज श्रीचन्द्रभानु के वश का विस्तार से वर्णन है । (म०)

३४. ४३०६

वाग्भटालकारवृत्ति

आदि- श्रिय दिशतु वो देव श्रीनाभेयजिन सदा ।

मोक्षमार्गं सदा ब्रूते यदागमपदावली ॥ १

व्याख्या-श्रीनाभेयजिनो वो युष्मभ्य श्रिय दिशतु ददातु किंविशिष्ट श्रीनाभेयजिन देव
दीव्यति क्रीडते परमानन्दपदे इति देव यम्य भगवत् आगमपदावली सिद्धान्तपदपरम्परा सता
सत्पुरुषाणा मोक्षमार्गं ब्रूते सिद्धे पथान वदति । अन्यापि पदावली मार्गं ब्रूते ॥ १

अन्त- अनुमानमाह-

प्रत्यक्षाल्लिगतो यत्र कालत्रितयवर्तिन ।

लिगिनो भवति ज्ञानमनुमान तदुच्यते ॥ ३८

व्याख्या-लिगतोहेतोरतीतानागतवर्तमानकालत्रितयवर्तिन सलक्षणस्य लिगिनो ज्ञान
भवति तदनुमानम् ॥ ३८ ॥ इत्यादि ।

४२ ५६०३

श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डनटीका)

आदि- अहं ॥ ॐ ॥ नमो वीतराग ।

हेरम्ब क्व किमम्ब किं त(व)करे तातस्य चाद्रीकला

कृत्य किं शरजन्मनोक्तमनया दन्तान्तर स्यादिति ।

तात कुप्यति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्या कला-

माकाश जयति प्रसारितकरस्तम्बेरमग्रामणी ॥

य साहित्यसुधेन्दुर्नरहरिररुलालनन्दन ।

कुरुते स श्रवणभूषणाख्या विदग्धमुखमण्डनव्याख्याम् ॥

अन्त- इति श्रीनरहरिभट्टविरचिताया श्रवणभूषणे चतुर्थं परिच्छेदः ।
मगल जैन्यधर्मो उदेवसवेगमगल । मगल गच्छसधेन लेखके मगल भव ॥ श्रीश्रमणमघाय ॥
श्रीविदग्धमुखमण्डनवृत्ति ॥

१७-सुभाषितादि

२. ७२७२

एकषष्टियुतप्रश्नशत

अन्त- अचलावेदवार्द्धीन्दुवत्सरे श्रीरिणीपुरे ।
विद्याविलासगणिना लेखीद कृति हार्दकृत् ॥

३ ४३४७

कर्पूरप्रकर सावचूरि

आदि- कर्पूरप्रकर शमामृतरसे ववत्रेदुचद्रातप
शुक्लध्यानतरुप्रसूननिचय पुण्याव्विफेनोदय ।
मुक्तिश्रीकरपीडनेच्छसि च यो वाक्कामधेनो. पयो
व्याख्या लक्ष्यजिनेशपेशलरदज्योतिश्चय पातु वः ॥ १

अन्त- श्रीवज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्टि-
सारप्रवधस्फुटसद्गुणस्य ।
शिष्येण चक्रे हरिणोयमिष्टा-
सूक्तावली नेमिचरित्रकर्त्रा ॥ ७८

इति श्रीजिनवर्धनसूरिपट्टेश्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टालकारभाग्यसौभाग्यसारश्रीजिनसागरसूरि-
वरेणकर्पूरप्रकराभिधसुभाषितकोशस्यावचूरिण समासत कृता ॥ १४००

१०. ४४५२ (३४)

नीतिशतक

आदि- या चित्तयामि० इति ॥ १
अन्त- भर्तृहरिभूपतिना रचितमिद नीतिरीतिविज्ञेन ।
ज्ञाते यत्र न मुह्यति धीरोऽधीर प्रमाण स्यात् ॥
इति श्रीभर्तृहरिकृत नीतिशतक सम्पूर्णम् ॥

१४. ४४१५

प्रश्नोत्तरषष्टिशतक

आदि- द्विरसि यस्य चकासति दीपिका
इव फणामणिसप्तकदीप्तय ॥
निखिलभीतितम शमनाय किं
सपदि पार्श्वजिन विनचीमितम् ॥ १
अन्त- किमपि यदिहाश्लिष्ट विलष्ट तथा चिरमत्कवि-
प्रकटितपथानिष्ट शिष्टं मया मतिदोपत ॥

रिणीपुर को तारानगर कहते हैं जो कि बीकानेर डिवाजन के चूह जिने (राजस्थान)
मे है । (स०)

तदमलघिया वोध्यं शोव्य मुबुद्धिन्नैर्मन -
 प्रणयविशद कृत्वा घृत्वा प्रसादलव मयि ॥ ६१
 इति अलङ्कारविदग्धप्रश्नोत्तरपट्टिशतक्काव्य ममाप्तम् ।

१७

४४८२

रत्नकोश

आदि- वैशपायन उवाच-

रत्नकोश प्रवक्ष्यामि लोकाना हितकाम्यया ।
 पृथिव्या यानि रत्नानि तेषामुद्धरण प्रभो ॥ १
 कथयिष्ये महाराज शृणु त्व पाहुनन्दन ।
 सर्वशास्त्रमय दिव्य सर्वज्ञानप्रकाशकम् ॥ २
 अल्पग्रथं मुदोधार्थं रत्नकोश सम्म्ययेत् ॥ ३

अन्त- पचविधा गति. नरकगति । तिर्यक् । मनुष्य । देव । मोक्षगति ।

इति श्रीरत्नकोशरत्नाकर सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—कान्हीगम ।

२५.

६१२७

शतकत्रय

अन्त- पुष्पिका- इति श्रीवोधमते गीतमरिपीशिष्यग्रमरमिहतच्छिष्यरूपचदविरचिते
 मानुष्यवोधे त्यन्नवोधमतमम्पूर्णं । समत १४३४ वर्षे आपादशुक्ल १५ काशीनगरमध्ये
 लिपित श्रीवाडीगुजरातीवशे हरीशर्माभट्टतत्पुत्रविष्णुभट्टशर्मा निपीचक्रे लिपायत महाराष्ट्रभट-
 रामकिसनजीवाचनार्थं सर्वसमुच्चयटीका सूत्रग्रथ ५१७५ सर्व ।

४१.

४४५६

सिद्धरप्रकरसटीक

आदि- श्रीमत्पाश्र्वजिन नत्वा स्वोवशीयमकारकम् ।
 सद्य सस्मृतिमात्रेण प्रत्यूह्व्यूहकारकम् ॥ १
 श्रीचन्द्रकीर्तिसूरीणा सद्गुह्या प्रसादत ।
 सिद्धरप्रकरव्याख्या क्रियते हर्षकीर्तिना ॥ २

अन्त-सिद्धरप्रकरस्यव्याख्याया हर्षकीर्तिभि सूरिभि विहितायातु सामान्यप्रक्रमोज्जनि ॥ १
 तपागणे नागपुरीयपूर्वे । श्रीचन्द्रकीर्त्याह्वयसरिराजा । तेषा विनयहर्षकीर्तिसूरिद्वरो वृत्तिमिमा-
 सकार्पीत् ॥ इति श्रीसिद्धरप्रकरस्यटीका ममाप्ता ।

५७

४३४८

सुभाषितसूक्तावली

आदि- दान सुपात्रे विशुद्ध च शील ।
 तपो विचित्र शुभभावना च ॥
 भवार्णवो त्यर्णवयानयात्रा ।
 घर्मा चतुर्धा मुनयो वदन्ति ॥

५८.

५६८४

सुभाषितार्णव

आदि- चद्रनाथ जिन नत्वा जिनयातिचतुष्टयम् ।
 सुभाषितार्णव वक्ष्ये ज्ञानविज्ञानकारणम् ॥ १

६१. ४४१४

सूक्ताली

आदि- वीर विश्वगुरुं नत्वा कृत्वा यत्नेन सग्रहम् ।

सदोपकारसूक्ताली स्वान्यपाठाय लिख्यते ॥ १

अन्त- आराधयेद्धर्ममनन्यकर्मा प्राय. प्रसादावधिरेव सर्व ।

आराद्घुमेन तत्कृतप्रसाद कस्यापि विस्फूर्ति निर्यत्ति चेतः । १८३४

लि क शुभसुन्दरगणि । लिपिस्थान—वृद्धग्राम ।

५५. ४३४६

सुभाषितसग्रह

पत्र २३वें मे पुष्पिका इस प्रकार दी हुई है—

इति श्रीमदाचार्यजी श्री ६ केशवजीकृतानि काव्यानि समाप्तानि । लिपिकृत पूज्यऋषि-
श्री ५ सामजी तच्छिष्य पू०ऋषि श्री ५ महिराजी तत्पिष्य पू० ऋषिश्री ५ टोडरजी-
तत्पिष्य पू० पवित्रात्माश्री ५ भीमजी तच्छिष्येण मुनीदामाख्येणालेखि शुभ श्रेय. सवद्धमुगगन-
समुद्रचद्रवर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे त्रयोदशीगुरुवासरे राणपुरे लिपिकृता प्रतिरिय शुभ श्रेय ।



१८-कथा-चरित्र-आख्यानादि

१ ४३३२

अबडचरित्र

आदि- ॐ नम सिद्धेभ्य ।

धर्मात्सम्पद्यते लक्ष्मीर्धर्मद्रूपमनिन्दितम् ।

धर्मात्सीभाग्यदीर्घायू धर्मात्सर्वसमीहितम् ॥ १

अन्त- इत्थ गोरखयोगिनो वचनत सिद्धोम्बड क्षत्रिय

मप्तादेशवरा सकौतुकभरा भूता न चाभाविन ।

द्वात्रिंशन्मितपुत्रिकादिचरित यद्गद्यपद्येन त-

- च्चक्रो श्रीमुनिरत्नसूरिविजयी तद्वाच्यमानं बुवं ॥

इति श्रीमुनिरत्नसूरिविरचिते गोरखयोगिना दत्तमप्तादेशकरअबडकथानक सम्पूर्णमित् ।

लिपिकर्ता—ज्ञानसुन्दर । स्थान—मवाला ।

७ ४३३५

उत्तराध्ययनकथा

आदि- प्रणम्य श्रीमहावीर नम्राखण्डलमण्डलम् ।

आरभ्यते कथा. कर्तुमुत्तराध्ययनस्थिता ॥

अन्त- गङ्गामुत्तीर्य साधुसमीपे प्रव्रजित अग्रग सम्बन्ध सूत्र एव प्रोक्ता । इति पञ्चविंश-
ध्ययनकथा समाप्ता ।

कथा कृता पण्डितपद्मनागरै
स्वगिर्व्यवाक्यप्रणयेन सम्कृता ॥
पिपाडिपुर्या जिनपार्श्वनायक-
प्रमादत सत्कुशलाय सन्निवमा ॥
रचनाकाल—१६५७ । पीपाडग्राम ।

१६ ४३८७

चित्रसेनपद्मावतीकथा

आदि— कल्याणकमलागेह नि सन्देह सहोदयम् ।
कल्याणविलमद्देह वदेऽह वृषभप्रभुम् ॥
अन्त— नभरसरसचन्द्राब्दे श्रावणमितपचमीतिथौ नोमे ।
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा जयतु वृद्धिविजयकृता ॥ ५६४
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा सम्पूर्णा ।

१६ ४३६८

चित्रसेनपद्मावतीचरित्र

आदि— नत्वा जिन प्रतीमाह पुण्डरीक गणाधिपम् ।
शीलालकारमयुक्ता साञ्चर्या तत्कथा ब्रूवे ॥ १
अन्त— शिष्यस्तदीयो महिमानिधान
चरित्रपात्रैः स्वगुरौ प्रधानम् ॥
पद्मावतीश्रीलगुणस्य कीर्तने
कथाऽकरोत् पाठकराजवल्लभ ॥ १२१४
श्रीनयोविजयशिष्यै भक्तिनास्ति वुक्कार्यं ए ।
चरित्र चित्रसेनस्य पुण्यार्थं चाह निर्मितम् ॥ १२१५
इति श्रीशीलविषये चित्रसेनपद्मावतीमहामतीचरित्र सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—रामविजयगरिा । लिपिस्थान—राधनपुरनगर

२२ ४४३५

देवकुमारकथा

आदि— ॐ नम सिद्धम् ।
पुरा भ्रमूत्कुसुमपुरे सूरनामा नरेश्वरः ।
विरोधिध्वसकरप्रसरमुन्दर ॥ १
अन्त— चिरमत्रिपद भुक्त्वा प्राप्यान्ते व्रतमुत्तमम् ।
प्रपाल्य स्वयंयौ मोक्ष गन्ता च कतिभिर्भयैः ॥ ३६२
पुत्रात्सुख न भवति जनस्य जनकस्य च ।
रात्माश्चर्यमयी चोर्यव्रतपोपकरीकथा ॥ ३६३
इति श्रीदेवकुमारकथातृतीयव्रतमाहात्म्यम् ।

लिपिकर्ता—श्रीजिनसुन्दरसुगुरोशिश्याणुविजयसुन्दरो विनयी ।

देवकुमारकथानकमलिसच्च परोपकाराय ॥ १

२५. ४४३४

धर्मवृद्धिमत्रिकया

आदि- उद्धाहे प्रथमो वर किल कलाश(शि)ल्पादिके यो गुरु-
भूपश्च प्रथमो यति प्रथमकस्तीर्थेश्वरश्चादिमः ।
दाताद्य वरपात्रमाद्यमपर. सिद्धो पद वादिम
सच्चक्री प्रथमश्च यस्य तनयः सोऽस्त्वादिनाय श्रिये ॥ १
धर्मत सकल मगलावली धर्मत सकलसौख्यसम्पद ॥
धर्मत स्फुरति निर्मल यशो धर्म एव तदहो विधीयताम् ॥ २

अन्त- आरोग्य सौभाग्य घनाढ्यता नायकत्वमानन्द ॥
कृतपुण्यस्य स्यादिह सदा जयो वाद्धितावाप्ति ॥ १
घनदो घनमिच्छूना कामद काममिच्छूनाम् ।
धर्म एवापवर्गस्य पारपर्येण साधक ॥ २
इति पापवृद्धिनृपधर्मवृद्धिमत्रिकथानक सम्पूर्णम् ।

३७. ४३३३

युवराजऋषि-चरित

आदि- विशालास्तिपुरीजैनप्रासादैरतिसुन्दरा ।
जयन्ति(न्ती)स्व पुरीमात्मघनधान्यसमृद्धिभिः ॥ १

अन्त- एव निशम्य युवराजऋषेश्चरित्र ।
कर्पूरदीप्तिभिरचौरगुणं पवित्रम् ॥
ससारवारिघितरीतुलिते प्रयत्न ।
स्वाध्यायकर्मणि गुणिन् कुरु नि स्वपन्नम् ॥ १३

इति श्रीयुवराजकथासमाप्तमिति । लि. स्था. —हर्षपुर ।

३९. ४४०२

रूपसेनकथा

आदि- देवा स्युर्वंशगा नवापि निघयश्चाष्टौ महासिद्धय
गेहस्थाः सुरधेनुशाखिमणयो यस्य प्रभावाच्चूणाम् ।
शष्टाभीष्टफलप्रदाननिपुण श्रीवीतरागादितो
लोभव्याभवपारदप्रतिदिन धर्म. समाराध्यताम् ॥

अन्त- यशो धर्मो गुणा सौख्यं लक्ष्मीरायु सुमगलम् ।
सफलान्येतानि दत्ते च धर्मकल्पद्रुमोह्यम् ॥ १०१४

श्रीवीरदेशनाया धर्मकल्पद्रुमे शिखरोपमरूपसेननृपाख्यानवर्णनोनाम नवम. यत्न.
समाप्तः ॥ इति श्रीरूपसेनकथा सम्पूर्णा ।

४२. ४४५८

वरदत्तगुणमंजरीकथा

आदि- श्रीमत्पार्ष्वजिनाधीश फलवृद्धिपुरनस्थितम् ।
प्रणम्य परया भक्त्या सर्वाभीष्टार्थसाधकम् ॥ १

अन्त- श्रीमत्तपगणगगनागणदिनमणिविजयसेनसूरीणाम् ।
 शिष्याणुना कथेय विनिर्मिता कनककुण्डलिन ॥ ५०
 वृषपद्मविजयगणिभि प्रवरै भीमादिविजयगणिभिश्च
 मशोधिता कथेय भूतेपुरसँदुमिते वर्षे ॥ ५१
 गणिविजयसुन्दराणामभ्यर्थनया कृता कथा मयका ।
 प्रथमादर्शं लिखिता तैरेव च मेहतानगरे ॥ ५३

इति कार्तिके सौभाग्यचामीमाहात्म्यविषये वरदत्तनुगुणमजरीकथानफ सम्पूर्णम् ।

४५. ४३३४

शातिनाथचरित्र

आदि- श्रेयो रत्नाकरोद्भूतामर्हत्लक्ष्मीमुपास्महे ।
 स्तृह्यति न के याम्ये श्रेय श्रीविरताशया ॥ १
 अन्त- यस्योपसर्गा स्मरणे प्रयाति
 विष्ट्रे यदीयाश्च गुणा न माति ॥
 यस्यागलक्ष्मी कनकस्थ काति
 सधस्य शान्तिं स करोतु शाति । ६२६

इत्याचार्यश्रीग्रजिनप्रभसूरिविरचिते श्रीशातिनाथचरिते द्वादशभाववर्णनो नाम षष्ठ
 प्रस्ताव । इति श्रीशातिनाथचरित्र सम्पूर्णम् । श्रीजीवविजयगणिनी परत ।

५१

४३३६

शालिभद्रचरित्र

आदि- श्रीदानधर्मकल्पद्रुर्जीयात्सौभाग्यभाग्यभू ।
 पूर्वापश्चिमतीर्थेशलक्ष्मीभोगमहाफल ॥ १
 अन्त- श्रीशालिचरिते धर्मकुमारसुधिया कृते ।
 श्रीप्रद्युम्नधिया शुद्धे सप्तम प्रक्रमोऽभवत् ॥ ५६

श्रीशालिभद्रचरिते सर्वार्थमिद्विप्राप्तिवर्णनो नाम सप्तम प्रस्ताव समाप्त ।
 जिनातिशयपक्षाख्यवत्सरे विहिता कथा । ग्रन्थेन द्वादशशती चतुर्विंशतिसयुता ॥



२०-राजस्थानी

१. ७७५३ (१-१७)

अरुपाटी आदि गुटका

आरम्भिक दो पत्रोमे लघु चारणवयनीतिके दूसरे अध्यायका अन्तिम श्लोक तथा तृतीय
 अध्याय लिखित हैं । आगे १७ पत्रोमे अरुपाटीका लेखन हुआ है, पत्रमे ऊपर अक्षर-संख्या
 और नीचे सुभाषित (नीतिपरक) दोहे, श्लोक आदि हैं । उदाहरणार्थ—

'दान दया दमोद्विण दर्शन देवपूजित ।
दकारा पचवर्तते दूर्गत नैव गच्छति ॥ १ (पत्र १)

दूहा ॥ सरतर अक्षर सीप पीव, जो रपै अप्याण ।
सर वैरीतर सायरा, अक्षर राज दुवाण ॥ १ (पत्र २)

अन्तके १६-१७वें पत्रमे--

दूहा ॥ काली तू कोयल भली, जस मनषरो विवेक ।
अव विहूणी अवरसुं, बोल न बोलै एक ॥ १ (पत्र १६वां)
गाम गोरमे होत है, जोय दूर मत जाय ।
वनी वणाइ पारसी, अरथ कह्यो इण माय ॥ १ (पत्र १७वां)

॥ लीषतं । पीडत श्री ५ श्रीवालचदजी लीपी छै । स० १८३५ मीगसर सुद ५ वार
मगलवार अपसुरं जं सरूप गोठीरा छै ।

६ ६५२५ अजनाचोपाई

आदि- ॥६०॥ श्रीगणेशायनम ॥

दूहा ॥ श्रीगणधर गौतम प्रमुप, एकादम अभिराम ।
मन वद्धित सुष मपजै, नित समरता नाम ॥ १
प्रथम उद्यम मै माडियो, मति दीसै अति मद ।
तिण कारण पहिला नमु, श्रीगणधर सुपकद ॥ २
सेवकने सानिध करै, देडघो अविरल वाणि ।
जिम वेगो सिद्धै चढै, काइम रापिस काणि ॥ ४

अन्त- तिणि गछ पीपल थापीयो, आठ सापा विस्तार ।
सवत रुद्रवावीसमै, वीसमं हूई सुषकार ॥ १२
ते गछ दीसै दीपतो, साचौर नगर मझारि ।
वीर जिणोसर दीपतो, जिहा तीरथ प्रगट उदार ॥ १३
तास पाटै अनुक्रमै हूवा, श्रीलीपमीसागरसूरि ।
विनय करी कर्मसागर, वाचक देव सनूर ॥ १४
तास सीस पुण्यमागर, वाचक पभरां एम ।
अजनासुदरी चौपई, पूरण कीधी ते प्रेम ॥ १५
सवत सोलसत्यासीइ श्रावण मास रसाल ।
सुदि तिथि पचमी निरमल, रिद्धि वृद्धि मंगल माल ॥ १६

सर्व गाथा ॥ इति श्रीअजनासुदरीचौपई सपूर्ण । सवत १८६८ मीगसर कृष्ण पक्षे
तिथि १ भीमवासरे द्वितीय प्रहरे लिपत ऋषी नोलचद पीही ग्रामे उदावत राज्ये वाचनार्थ
चौर नद्यः श्रीरस्तुः ॥ श्री. ॥

३० ७७४३

अध्यात्मरामायण भाषा

आदि— श्री गुरोसाये नीम ॥ सुरसती नीमो ॥ श्री गीतारामजी सत छँ जी ॥
श्री रामाये नमा ॥ कथेत अघातम रामायने भाषा लीपत रामहृदय ॥ राज श्रीराजैसवजी
सभापीत ।

चौपई— जवँ भुव भार भयो दुष्टनतँ । तव ही देव गये जाचन प्रभुवँ ॥
चिदानद मुनी त्रदस वानी । परजापते असतुते ही ठानी ॥ २
तीन सुप्त मन भेये भगवाना । चीदानद यनकी सब जाना ॥
भेष गिरा वानी जु वुचारी । मुनीक व्रमा सते वीचारी ॥ २

अन्त— दुहा ॥ राम हीरदैको राजैदानीते प्रीते करतँ वुचारँ ।
सीय्याराम हीरदै वसँय्या समे नाहे वीचारँ ॥ ६५
राम हीरद भाषा अरथँ कीनी मते वुनमानँ ।
सुनी वह रीजँ न धारी है करीये मते अपमानँ ॥ ६६

ईती श्री अघानँम रामाणँ रामँ हीरदये भाषा अरथ सपुरन ॥ कथेते म्हाराजे श्रीराज-
सीघजी ॥ मुभ समुरथँ ।

८५ ५२११

कछवाहोंकी वशावली

आदि— ॥ श्री गुरोसाय नम ॥ अथ कुछवाकी वशावली लिप्यते ॥
श्रीआदिनारायणतँ कवलमँ ब्रह्माजी ॥१॥ मारीच ॥२॥ कस्यष ॥३॥ सूर्य ॥४॥
ववस्वान ॥५॥ मनु ॥६॥ इप्वाक ॥७॥ विकुपि ॥८॥ पुरजय ॥९॥

अन्त— महाराजाधिराज जन्म नाव मोहोनेसिघ नरवलका राजाकी बेटो सो राज
पायो । जदि मानसिघजी नाव पढ्यो । मीती पोस वदि ६ स० १८७५ का । राज कीयो
महीना ४ दिन ६ ॥ माहाराजाविराज श्रीसवाई जयसिघजी सवत १८७० कँ साल श्रीजमनायजी
पधारथा जाति देवा । सब माज्या साथ पचारी मीती अमाठ सुदि ८ सवत १८८४ कँ साल ।

८७ ७७२० (२२)

कपडकुतूहल

आद्य अश खण्डित है । उपलब्ध रचनाका प्रारभ इस प्रकार है—

-- छि पिलग पर सु दर डोलियँ वाय ॥ १३

मसी जर सु मो मन भयो, प्रीठ डोलिए बोलाय ।

माल मुँडूगीधे लाजिये, मो माहरइ आवी दाय ॥ १४

तन सपुकी साडी चणी, कचु वण्यो सुचग ।

रतन जडीत नीरपी, सोनी मु दर अग ॥ १५

अन्त— कचीयो पेम पछेवडो, कीधो सेज तीआर ।

तिण बेला मदिर गई, प्रीठ माणइ तिणि वार ॥ ३१

प्रीआग गगदास सूत, नगर उदैपुर वास ।

कपडकुतूहल कीधा, वणी देहि दुवास ॥ ३२

इति कपडकुतूहल सपूर्ण ॥

६६ ४०२०

कविकल्पलता

आदि- ॥ दं० ॥ अथ श्रीसारकृत वावनी लिप्यतै ।
 ॐकार अपार पार तसू कोइ न लभ्यै ।
 सवर कर सिरताज मत्र धुरि कविद्यणभ्यै ॥
 अरधचद आकार उवरे मीडो जसु सोहै ।
 जै ध्यावै चित लाय तिकै तिहुयण मन मोहै ॥
 साधक सिध जोगी जती जामु ध्यान अहनिस करै ।
 कवि सार कहै ॐकार जप काइ सँण भुलो फिरै ॥ १

अन्त- क्षिते मडल क्षिति तिलक सहर पाली पुर सोहै ।
 गढ मरु मदिर महिल वाग वाडी सनमोहै ॥
 राज करै जगनाथ सुर सामत र सवायी ।
 सोनगरे सुसमथ सुजस वमुधा वर तायो ॥
 समत सोलैनिव्यासियै आसु सुदी दसमी दिनै ।
 श्रीसार कवित बावन कह्या साभलिज्यी साचै मनै ॥ ५५

इति श्रीकविकल्पलता श्रीसारकृते मपुर्ण । सुभ भूयात् ॥ श्री सवत १८७८ रा
 मती फागुण सुदी १० स श्री श्रीगुराजी श्रीवेनरामजी । लीपता कु इन्द्रभाण वाचनारथम्
 अणदपुरमध्ये ।

१०५ ४४१५ (१६)

कागदरी नकल

इस गुटकेमे पत्र स० ३६८से पत्र स० ४०६ तक चार कागजो प्रेम(पत्रों)की नकले दी
 हुई है, जो इस प्रकार है—

पहली नकल । आदि- कागदरी नकल ।

छद नराच- मते हत साभर नगर सुघर । प्यारी निज हाथ दियो पतर ।
 सूभ वान कथानक मुदरिय । छिव गात अनंत चित हरिय ॥ १
 सलिता सर निसर नीर वहे । नलनि सूभ वास घरै र लहे ।
 बहु वास निवास न कुप वनै । वनिता गनि तीर सूनीर थनै ॥ २

अन्त- दिन जात वृथा तुम सग विना । कवहु मुप होत न आप विना ।
 कहता ज रजौ समचार सवै । सु मिथ्या तन मानहु भांम कवै ॥ १७
 न लिषे तुम पत्र सनेह घनी । पय जावनकी तुम रीत गनी ।
 जुग राम वसु ससि सवत य । सुभ मास तथी सरस चरय ॥ १८ इति ॥

दूसरी नकल-

[संवत् १८३४]

आदि- कागदरी नकल लीपते । स्वस्त श्रीअमुकानगर सुयाने सुकल मुभ ओपमा
 केलास वयारी, प्रेमरसप्यारी, चदवदनी, मृगलोचनी, लगनरी लही, जीवरी जडा,
 हीयारी हार, सेजरी सिणगार, प्रीतमरी पीनार, चितरी ऊदार, हनतमुपी, नदा
 सुपी .. ।

अन्त- मव सरपी नारी नही, सव सरपी नही वाण ।
 मव गुण एकणमे नही, दापु चतुर सुजाण ॥ ६२
 इती ओपमा लिपणारी, जथाजोग मत जाण ।
 कहत दुल्लमल चुप सु, रुप चुप परवाण ॥ ६३ ॥ सपुराण ।

तीसरी नकल-

आदि- सिध श्री प्यारी दिसे, जैपुर नगर जठेह ।
 प्रीतम लिपत वणायकै, नित २ नवलै नेह ॥ १
 चदवदनि मृगलोचनी, चिता लक सुचग ।
 गजगमणि रस जोग है, अतहि जाण सुचग ॥ २
 अन्त- वाहू उत्तर देजो सदा, कागद अधिक उजाम ।
 हित कर लिपजो हेतसु, दमकत अपणा पास ॥ २० मपुरग ॥

चौथी नकल-

आदि- सिध श्री सरवओपमा विराजमान अनेक ओपमालायक गुणनिधान बहोतर
 कलासुजाण, चवदै विद्यानिधान, सूरज जेहा तेज, चक्रवा चकवि जिहा हेज, चद्रमा जेहा
 सितल, रूपा जेहा ऊजला ।

अन्त- मत किण्टिसु लागजो, नैणाहदो नेह ।
 धुकै न धुवो नीमरै, जलै सुरगी देह ॥ १८
 मजन फलजो फूलजो, वट जु विसतरजो ।
 नालेग जु लूवजो, आवा जु फलजो ॥ १९
 इति श्रीपन्ना मपुराण ।

२५७ ४६१४ (५४) जोगी रामा

आदि- अथ जोगी रास लीपीते ॥ ॐ नम मीध्वेभद्यो नम ॥
 आदिपुरिष जो आदिजगोत्तमु, आदिनाथो ।
 आदिजुगोत्तमो जोग पयसो, जय जय जय जगनाथो ॥ १
 तास परपर मुनिवर हुआ, दीगावर महिनाणी ।
 कुदकुदाचरज^१ गुरु मेरै, पाहुजी कहिय कहाणी ॥
 अन्त- जोगीह रासो सीपहु श्रावक, दुप न कबहु लहिसो ।
 जो जिरादासह त्रिविधि हि, सिधहु ममरण कीजहू ॥ ४२
 इती जोगीरामो सपुरणामन्वु ।

२६१ ५४१८ (५४) टडाणा गीत

आदि- टडाणा टडाणा वे, जियडे टडाणा टडाणा ॥
 इत ससारै दुष भडारै, क्या गुण देपि लुभाणा छे ॥
 जिन ठग ठगिया नादइ कालै, फिर तस जोग पत्याणा छे ॥

अन्त- करि उदिम आपन बल मडी, भोगी अमर विमाणा छे ।
समिकि तपोहण दस विधि पूरा, निरमल घरम करणा छे ॥
सुध सरीरु सहज लव लावहु, भावहु अतर भा(णा) छे ।
जपै वृचा तम सुष पावहु वछै पद निरवाणा छे ॥

इति टडाणा समाप्तम् ।

३३६. ४६२४ (३) नागदमण कथा (अपूर्ण)

आदि- ॥६०॥ श्रीसारदाय नम ॥ अथ नागदमणि लिप्यते ॥

हूहा ॥ बलतो सारद विनवुं, गुणपति करो पसाऊ ।
पवाडा पनगा सरस, जटुपति कीधो जाऊ ॥ १
प्रभू अनेके पाडीया, देत वडाचा दन ।
के पालणै पोढीया, के पय पान करन ॥ २
कोइ न दीधो कानवा, सुण्यो न लीला बध ।
आप बधावण उषला, बीजा छोडण बध ॥ ३

अन्त- कलश ॥ सुणे गुणें सम वास, नंदनदन अहिनारी ।
समुद्र पार ससार, दोई गोपद अणहारी ॥
अन्तर आणद सवे वपताप सुणावै ।
भगति मुगति भडार, कशन मुगताह करावै ॥
रमीयो चरित राधारमणि ॥

५३८ ४६०६ (२) राजसभारजन

आदि- ॥६०॥ अथ राजसभारजन लिप्यते ॥

गगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन ।
राजसभारजन कहो, मन हुलास रस लीन ॥ १
दपतिरति नीरोग तन, विद्या सुधन मुगेह ।
जो दिन जाय आनदमै, जीतवको फल एह ॥ २

बीचसे कुछ उदाहरण—

साथ सहेट चलयो चहै, मुग्धा तिय पिय छैल ।
पीसेमे कोडी न्ही, चले वागकी सैल ॥ ६७
सहज रीति कुल तजि लगै, काम कलाकै साज ।
वाप न मारी मीडकी, वेटा तीरंदाज ॥ ७०

अन्त- छंद तीनमै माठ सब, व्यवहारै सुष देत ।
राज-सभा-रंजन सरस, कियो रसिकजन हेत ॥ ६७
अंक वान मुनि ससि (१७५६) समा, विक्रम सक नभ माग ।
उजल नवमी भृगु दिवस, पूरन रस-प्रकाम ॥ ६८

सुपद भूमि सग्रामपुर, श्रीनृपवर जयगाहि ।
 तहि कवि मन मुप्रमन्न अति, मति रतिसो अरवगाह ॥ ६६
 जब लो मुप सज्जन कला, मेरु धराधर घाम ।
 तव लो चिर जीवहु रमिक, पढत गुणत गुन नाम ॥ ७०
 इति श्रीराजमभा-रजन दोहा समाप्त ।

सवत् १७६८ वर्षे मिति पौम वदि १४ शुक्रे लिपिष्ठत श्रीरस्तु कन्यासमन्तु ।

५५० ४८३४ राठोड नाहरपानरी छद

आदि- छद राठोड नाहरपानरी गाडण माघीदासरी कह्यो ॥

आरज्या ॥ उप्पन्ना पुरसाणी उडा । पारणी पछा पापर होटा ।
 श्रीराकीया रछ्छीस जोडा । नाहरपान समर्प घोटा ॥ १
 भाडजी केवी मुगनाणी । पासा पैग जिके पुरसाणी ।
 वड पाता सुण अवरल वाणी । रेवत रोभु दोयै राजाणी ॥ २
 अन्त- कलस ॥ बहम तेज बहु सफल बहुत मोला बहु भोगण ।
 वीरज तेज अनत लोय दीप बवहलोयण ॥
 धड विसाल पै करह गात उतगह मैगल ।
 पवग वेग विसराल वाजि वीया वेगागल ॥
 बरहास बडा बड कवीयणा त्यागी द्यण हरतै रवै ।
 समपीया पान राजानकै कुंप करघह अभिनवै ॥
 इति नाहरपान घोडारा दातारगे छद सपुरण ॥

६४१४

विक्रमचरित्र (हेमाणन्द रचित)

आदि- ॥६०॥ श्रीसरस्वत्यै नम ॥ प्रणम्य देवदेव च वीतरागमुर्चिन ॥

लोकाना हि विनोदाय करिष्येह कथामिमा ॥ १

नत्वा सरस्वती देवी स्वेताभरणभूषिता ।

पद्मपत्रविसालाक्षी नित्य पचासने स्थिता ॥ २

अन्त- श्री विक्रमने वेताल कथा कही चउवीस उदार ।

सोल छियालै भाद्रव मारा । हेमाणद कहै उल्हास ॥ ३६

इति श्रीवेतालपचीसी २४ कथा ।

दोहा- बलि विक्रम सीसम गयो, पाद्यो तिरण ही डाल ।

मडबधी काघइ कीयो, तव बोलै भूपाल ॥ १

विशेष- आगेका अग अपूर्ण है ।

६०३

६१११

विद्याविलास चोपाई

आदि- ॥६०॥ श्री सरस्वत्यै नम ॥

हूहा- सरसति नित आपो सुमति, चित हित धरि प्रणामेवि ।

'जित तित यित थानक अचल, सोभित बह दिसि देवि ॥ १

कवियुग नरसा निधि करण, दूर हरण अग्न्यान ।

चरण सरण उपम धरण, उपावण गुण ग्यान ॥ २

अन्त- वाचक गुणवर्धन सुषदाया, श्रीसोमगरिण सुपसाया जी ।

इम जिनहरण पुण्य गुण गाया, तीस ढाल सुप पाया जी ॥ १४

हिव राजानि सुणं गुग्वाणी ॥

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलासचोपई सपूर्ण ॥ स० १८२६ वर्षे मिति आमाढ
सुदि ७ दिने ।

६११ ७७२२ (१४) वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त

आदि- ॥ श्रीगणेशाय न(म) ॥

कवित्त- गढत लक दईवत सक भकत अहिराडण ।

धनत धीन अहि वेलत पान पेधत पत्राडण ॥

अमरत आस माया तपास रम होड महा जल ।

परमा वात सोवन घात चितत वेगागल ॥

अणाराइ चाइ एकाणवै सालिहातर दिठो सवे ।

त्रिहु राड तिलक नारियेण तना दाता तो वीरमदे ॥

अन्त- कर परि जिण गिरवर धरचौ, मथुरा मारचौ कम ।

रेषा रापस निरदने, जयकारी जदुवस ॥ १०

श्रीठाकुरारी सापी छै ॥ लिपत मिश्र आनदराम ॥ शुभमस्तु ॥

६१५ ७७४३ (४) वेदस्तुति भाषा

आदि- ॥ श्रीरामजी ॥ अथ वेदस्तुता भाषा लीप्यते ॥ राजश्री राजैमीधजी सभापत ॥

छद- श्री भागौत दसम सकध, वेद सतुत्म भाषा वध ॥

अती आनद भव वध छेद, आवागमन मिटे अम पेद ॥

चोपई- श्रीसुपदेव ब्रह्मा ततुवज्ञाता । वेदव्यासके पुत्र विप्याता ॥

तीनके पदवदन मै करु । तीनको ध्यान हीरदमै धरु ॥

अन्त- नीतीप्रती पाठ जु जे करै, बुपजै ब्रम ज्ञान ।

तत पद नीहचै पाय है, राजै प्रम वीज्ञान ॥ ६०

ईति श्रीवेदसतुती भाषा अरथ सपुरण ॥ कथीत गहाराज श्रीराजैमीधजी ॥

६७५ ४०१० शुक्रवहोतरी

आदि- ॥ ६० ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ अथ वात सुवावहोतरी लिप्यते ।

दूहा- करि प्रणाम श्री मारदा, अपनी बुध परमान ॥

सुक शप्त वार्ता उ करो, न्यायते देवी दान ॥ १

विक्रम नगर सुहामणो, सुप नपतकी ठोर ।

हिंदू धान जु हिंदू घरम, अमो महर न और ॥ २

अन्त- हरदन सेठ होम करायो तिहा मारिका पिण आई । उपरनु दिव्यमाला

पडो । उणारे दर्शन सेती सराप छट शुक्रगारिका गधर्व होय आपणं लोक गया ।

इति श्री बहुत्तर वार्ता सुघ सूत्रावहुत्तरी मपूर्णम् ॥ ७२ सवत् १८६६रा मिती
श्रावण सुदी १ दिने लिपत प० विजैसमुद्रेण श्रीजैसलमेर दुर्ग चतुर्मास्या स्थिता ।

६७६ ४४१६

शुकवहोतरी । प्रथम पत्र अप्राप्त

आदि— दी कह्यो । पृथ्वीके विषे बहुत्तरी कथा मनुष्य भाषा करि प्रभावती आगे
कहसी । सील रपावसी । तदि गधमाद परवतके विषे आविनै शुक्र मरीर छोटिके मूलगो
शरीर पामी पाचमै मोहर ब्राह्मणनै दान देई । निपाप थाडम ।

अन्त— कवि देवदत्त कहै । शुक्रका वचन भेला करिके आपकी बुद्धिके अनुसारै
वाची छई ।

इति श्रीशुकवहोतरी कथा समाप्ता ॥ सवत् १७६० वर्षे आसोज वदि ६ पट्टी
भोम वासरे प० वनीतविजय लिपि चक्रे ॥ शुभभवतु ॥ श्रीसमाप्ता ॥

७२४. ४२८७ (१६) सवाई जैसिहजीकी जोधपुर चढाईका वर्णन

आदि— “सवत् १७६७ का मीती सावण वदी ८ ने श्रीमाहराजा मवाड जैमघर्जा
जोधपुर बुपर चढा । राजा अभैसवरी हुकम पांतसाह महमुदसाह का[सा]थे चढा । मो रोज
पदराम १५ जोधपुर जाड लागा । अरफ मडोवरकी डेरा जाड कीया । मुकाम १ ...
विशेष— आगे युद्धके तर्चे और जोधपुरकी तरफमे लिये गये उपहार आदिका वर्णन है जो
अपूर्णा है ।

७७५ ४६०३

हमीररासो (हमीरायन)

आदि— श्री गनेमाय नम । हमीराईन लीपत ॥

कवीत— गवरीनद आनद चद लीलाट वीराजैत ।

च्यार भुज कर फरम सरस भुपन अग राजत ॥

कर कमडल जयमाल लाल वसत्र वोह मुहावै ।

मधुर स्वगव स्वणमय रची ओर उदभाहन कीन ।

हो हय प्रसन सुधी बुधी घनी जो कथ कवीत प्रमा मारण ॥ १

अन्त—कवीत ॥ असी करीउ काहु करै नही, कोउ सो करी राजवी चक्र तल ।

वाईम वीक्रम राण बुयवीन पाईवयाभा अजहु मध्यकी रोड रोने ।

दर्शान भडारा मदगल कहू हमेल करी ।

कदल रनयभ गढ असी करै न कोई ॥

ईती श्रीहमरायन साको श्रीगार सपुरन समापती ।

छद जाजाको ॥ कुडलीयो माई मोहदे असीस काई जीवो वरस सो । याई मोह दे
असीस छीत्री ई तोर जीवो । वारा ऊपर वीस भनैजा जन वीरम केह ।

लीपत पाडे नाथुराम ब्राह्मन गोड मी आसावी अम धर्ममुक्त गउ ब्राह्मनका रक्षपाल
राजा श्रीमलजीकू नाथुराम ब्राह्मन गोड सदारामको भतीजो टोडै रहै है पकीजीको अप
भीष्टुको असीन वचजोजी मीतो पोस वदी ६ मगलवार सवत् १७८७ जो पुस्तग वाचै जीकु
राम राम वचजोजी । जाद्रष्ट दत्त्वा ताद्रस लीपते मा । जदी सुद्ध वीसुद्ध वा मम दोषे न
दीयते ॥ शु० ॥

२१-हिन्दी

१२. ५३६८

अध्यात्मरामायण

आदि-

॥ श्रीरामाय नम ॥

दोहा- जुधकाड पूरन भयो, ब्रह्मज्ञानके भाइ ।

उत्तरकाड कहत हौं, विधिर्सी सब वनाय ॥ १

चौपई- जयति जयति रघुकुल उजिआरे । जयति राम कौसल्या प्यारे ॥

रावन दस सिर मारघौ यैन । राम कमल दल निरमल नैन ॥ २

अन्त- सबत सत्रहसै इकताला । तीज जेठकी चद उजाला ॥

पूरन भयो मउ मैदान । यहई जानौं थान मुकाम ॥ ११०

ग्रथ हीत भए विघन सु भारे । हनुमान गनपति सब टारे ॥

भगवान ग्रथ यह पूरन गायौ । गुरकी कृपा सब वनि आयौ ॥ १११

छंद- भग अक्षिर कटित, अर्थ बिपरजै होइ ।

दुषनत भूपन करै, कोविद कहिए सोई ॥ ११२

इति श्रीब्रह्माड पुराणे उत्तरपडे अध्यात्म रामायने उमा महेश्वर सवादे उत्तरकाडे नवमी अध्याय ॥ ६ ॥ मूल ४४६३ ॥ भाषा ५२६६ ॥ इति श्री रामचरित्र भगवानदास निरजनी कथिते संपूरण । सुभ मगल । सुभ भवत । ब्रपे जेठ मासे वदि दसै रिवि वामुरे ॥ सबत १७८३ ॥ जले रक्षत पेले रक्षित पेले रक्षे रक्षे सथ लाभ तवधानान मूरप हस्त न दातव्य । रावे वधनात पुस्तक ॥ १ ॥ मगल लिषकाना पाठकानाव मगल मगल नर्त्र देवाना भूमी भूपति मगल ॥ १ ॥ नति निरजन तुम सरना मत्र सति राम ॥ राम राम ॥

४०. ५३८२

कवित्त सग्रह

आदि-

॥ श्री महागणपतये नम ॥

कवित्त- मील भरी सोहैं, आन पतिकौं न जोहे,

कुल कानि अरसोहैं तन जोति सरसाती हे ।

उदनाए भोहे कर तीन तीरछोहे

रति भोन लो चलो द्वार लो ना चलि जाती है ॥

वेन कहिवेको पति मोनहीमे रापे प्राण,

असी कुलवधू काहू कामो वतराती है ।

रिम रचें मनमे ती मनहीमे मेटे,

जैसे जलकी लहरि जल माअ ही बिलाती है ॥ १

अन्त-

दोहा- सावन मुदिकी तीजको, करी पचीमी मार ।

सबत अठारह सतहि त्रेपन थिर मनिवार ॥ १०७८

इति छक पच्चीमी संपूर्ण ॥ सबत १८६३ आके १७२७ मिति फाल्गुण वुदि १२ गु-

वार । इदं पुस्तकं समाप्तं । दमकत भट्ट आममुद्रका । रणजीत तन्मून वन्देव पठनार्थं ॥
यादृश पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं निरूपितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥राम ॥

३५५

५३८६

रामायण, युद्धकाण्ड

आदि- (प्रारम्भिक पत्र अप्राप्त)

मनोहर कवि कलानिधि रच्यो ।

तथा जुद्धकाण्डे हि नारदागमं मगं वत्तीर्णो गच्यो ॥ ३२

अन्त- ब्रज चक्रवर्ति कुमार गुनगन गहिर सागर गाजई ।

श्री रामचरन सरोज अग्नि परतापनिघ विराजई ।

तिहि हेत रामायन मनोहर कवि कलानिधिने रच्यो ।

तह जुद्धकाण्डे हि मतः चोतीन अथ फन वसान गच्यो ॥ १३४

लिख्यते लेपक राममेवग लिप्यायन ठाकुरजी श्रीमेदीनहर्जी तस्य पुत्र पृथ्वीमिह आत्म-
पठनार्थं सवत १८३७ शके १७०२ प्रवत्तमाने मामोतम मामे उत्तम माने अश्वेन . . ।

३६५.

४६२३ (१)

रूपमजरी

आदि- श्रीगणेशाय नमः । अथ रूपमजरी नद कृतं निरूप्यते ।

दोहा- प्रथमं हि प्रणञ्जं प्रेममयं, परमं जोतिं जो आहि ।

रूप उपावनं रूपनिधि, नित्यं कर्तुं कवि जाहि ॥ १

अन्त-

दोहा- जदपि अगमते अगम अति, निगमं कर्तुं है जाहि ।

तदपि रंगीले पेमते, निपटं निकटं प्रभु आहि ॥ ११७

इति श्री नददाम कृतं रूपमजरी अथ संपूर्णं समाप्तं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु । मन्वत्
१७२६ चैत्र वदि तृतीया बुधवारे मोकाम रंगामाटी मवलमिध कुवरस्य पठनार्थं रूपमजरी
अथ मुरलीधर मिश्रेणमलेखि ॥

३७४.

६०१६

व्रतकथाकोश

आदि- ॥ दं० २० नमः ॥ अथ श्री व्रतकथा कोश भाखा लिप्यते ।

चौपई- आदिनाथ वहु जिनरा [य] । कर्म कलक रहितं सुपदाय ।

वनुप पच से जाको काय । वृषव लक्ष्य मोर्भै अधिकाय ॥ १

अन्त-

छण्ड- श्री जिनद गुण धाम जाम वच सुणि चित धरिये ।

आवकको आचार पालि कर्मनिर्मा लरिये ॥

दान मील तप भाव च्यारि वृष मुल विचारि ।

श्रीर सकल परिहारि चहु उत्तम उरि धारो

सुरगादि यान दाइक महा क्रमते निवपदको कराहि ।

ताते पुम्याल अनिको अवे इनि विनि मनमे किम धरहि ॥ २१

इति श्रीमूरिश्रुतसागर कृत व्रतकथाकोशके अनुसारि भाषा श्रीपत्य विधानकी

समापिता ॥ मित्ती माघसिर सुदि १३ पचम्या तिथी वार वृहस्पति वासरे सवत् १६२३ का ।
श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

४६२

४०२८

सभासार नाटक

आदि- प्रथम पत्र अप्राप्त

सैं पथरन भीजै पानी कव लौं विचारियै ॥

जिहा वकवाद तिहा अत न सवाद कछु,

आपै जो न सुधरै तो कौनको सुधारिये ।

जोपै अति जोर तो वताउ एक ठोर तोहि,

जानीये जगत जोपै एक मन हारीये ॥ २६

दोहरा- सब लछन पहिलै सुनौ पुण्य सुसगत पाय ।

मन चचलतासू वसै, नीच सग न सुहाय ॥ २७

अन्त- सतगुरु सोही जो वतावै साचे मारगकु,

साथी सतसग जामै चलत ने हान है ।

कहत अरूप कोउ कोट काम कैसे तेज-

पुज घाम जाहि जैसी ही पहिचान है ।

ताहिमै मगन देहको विसर जान,

वेदको विचार यहै जान है सुजान है ॥

यहै पेम लछिना अनन्य भक्ति मुक्ति यह,

यत्र पदप्राप्ति विग्यान निरवान है ॥ २७

दोहा- सब विध सब रस सोहियत, कहत यहै रघुराम ।

यह नाटिक सम सदा, भूपन भेद सुनाम ॥ २८

छप्पै- यह नाटिक जो सुनै, ताहि हिय फाटिक पुलै ।

यह नाटिक जो सुनै, बुधवल कमल प्रफुलै ॥

यह नाटिक जो सुनै, ग्यान पूरन मन आवै ।

नाटिक सुनै सुजान, मरम मनुजको पावै ॥

विग्यान जान निरवानकै, जोग ध्यान घर धन लहै ।

पावत परमपुरुष गत, मति प्रमान कवि रघु कहै ॥ ३२६

इति श्री कवि रघुराम विरचित सभासार नाटिक सपूर्णम् ।

सवत् गुणकृत वसु शशी, तपस्यपक्ष शिति जान ।

पक्षति छाया सुत दिवस, ग्रथ चढ्यो परमान ॥ १

ऋषि किसोर सोभक्त हुते, रत्नचद्रके मित्त ।

सभासारनाटिक लिप्यो, सकल रिभावन चित्त ॥ २

निगम दिवमकी सत्यमै, सत्वरतै गपिरत्न ।

लिख्यो ग्रथ वाचत सुनत, करीयो इनको यत्न ॥ ३

॥ श्रीरम्तु ॥ सबनर ॥ भद्र भूयादिति ॥ श्री ॥

४८४ ५८६५

सिंहासन वत्तीसी

आदि- ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ स्यघासन वत्तीसी भोज प्रवध हितौ उंपदेम
कवि क्रस्नदाश कृति लिपते ।

छैपा- प्रथम मुसरि गरा इसन गणनायक ।

विघ्नहरन मति राय काज सिधिकरण सहायक ॥

येक दत्त मय मन अत नहि पाव पाव सुमति गति ।

फरस हथ समरथ देव परतछ अमित गति ॥

कवि क्रस्नदास वदत चरन, और सुमति दुस्तर तरन ।

रस सिधु मौढ विक्रम चरित सु, करित दुरित दुर्गम हरन ॥ १

अन्त- दीनो वरु विक्रमको सोय, सारिवाहन तन दाहन होय ।

तो लगि सो नृप आयो तहा, विक्रम वीर अवि जहा ॥ ४०

चडी वाच तेरे हेत दहयो तन आय

विशेष- इसके पश्चात् पत्र रिक्त है ।



२२-जैनस्तोत्र

३. ४१४६

अन्तरिक्ष पार्श्वस्तव

आदि- श्री अन्तरीक पार्श्वनाथ छन्द लिप्यते ।

दूहा- सारदपाय प्रणमा करी, आपो अविरल वारिण ।

पुरसादाणी पास जिण, गास्यु गुण-मणि-वारिण ॥ १

अद्भुत कौतुक कलियुग दीसँ एह अदभ ।

घरतीथी अघर रहै, सदा अतरीक थिर थभ ॥ २

अन्त- कीयो छद आनद वृ द मनमाहे आणी ।

सामलता सुपकद चद जिम सीतल वारिण ॥

श्रीविजयदेव गुरुराज आज तस गणघर राजै ।

श्रीविजयप्रभ सूरि नाम काम सम रूप विराजै ॥

गणघर दोय प्रणामी करि थुणियो पास असरण-सरण ।

भावविजय वाचक भरण जयो देव जय जय करण ॥ ४६

इति श्री अन्तरीक पार्श्वनाथ छद सपूरण ।

४ ४३४६

अजित शातिस्तव (सवालावबोध) त्रिपाठ

आदि- अजि अजि असघ भय सति च सत सब गय पाव ।

जय गुरु सति गुण करे दोवि जिणवरे परिणवयामि ॥ १

अन्त- जइ इच्छह परम पय अहवा किर्त्तिसवित्यड भुवणो ।
ता तेलवकुद्धरणो जिणवयणो फु आयर कुणह ॥ ४०
इति श्रीअजितशातिस्तव ।

८. ४३६२ एकादश गणधर स्तवन

आदि- गोयम गणहर पढम सघयण ।
तित्यकर वीर जिण पढमसीम मोन्नन समाणउ ॥ इत्यादि ॥ १

अन्त- इय समयज्जत्ति सव्यसत्ति चित्त भत्ति वन्निया ।
वैशाख सुदि इग्यारिसि दिनि वीर नाहइ थापिया ॥
ए सयलगणहर ए इग्यारसि जे आगहइ भाविया ।
एतवन भणसि भावै मुणमि ते लहइ मुख मपया ॥ ५
श्रीप्रभासगणधरस्तव ।

इति श्री एकादशिदिनसम्बन्धि श्री एकादशगणधर स्तवन सम्पूर्ण ॥

२०. ४०३० कायस्थिति स्तोत्र

आदि- श्री पन्नवणा भगवती माहि थकी उदार करी गीतार्थ पूर्वाचार्य कायस्थिति
नउ स्तवन करइ छइ ।

आदि गाथा—जहतु हदसण रहिउ कायठिई भीसणो भवारणे ।
भमिउ भवभय भजणा जिणित्तह विन्न विस्सामि ॥ १
जह कहता जिम हे जिनेश्वर तुह दसण रहिउ, ताहरइ** आदि ।

अन्त- बहु मो अनन्ती वार हिव घणइ पुण्य तणइ
उदय साप्रत तुभ कुमइ दीव उछइ ।
ता तस्मात्तिणि कारणि अकाय नही काया जिहा एहवा जे मिद्ध तेह तउ
पद मुक्तिपद तेहती सपदा हे तीर्थकर द मुणइ ॥ २४
इति श्रीकायस्थितिस्तवनवालावबोध समाप्त ।

२५ ४३६३ गौतम दीपाली का स्तवन

आदि- इन्द्र भूती गउत्तम भणइ तिसला कुखि निधान ।
ज्ञात पूतनू पामीउ दइ मुभ मुगतिनो दान ॥ १

अन्त- देव गुरु भगत्यमी सुगती वर अगुसरो ।
सकल कहि हीर गुरु गुण विचारो ॥ ७५
जिन वचन दीप दीपालिका राजती ।

इति श्री गउत्तम दीपालिकालि स्तवनम् ॥

२६ ४५६६ चतुर्विंशति जिनस्तोत्र

आदि- जाडघव्वसकृते नत्त्वा नाभेयप्रमुखान् जिनान ।
आत्नन स्मृतये वक्ष्ये यमकस्तुतिवृत्तिकाम् ॥ १

अन्त- स्निग्धा अविशला चासौ विभा दीप्तिञ्च अनच्छविभा अलकाना केशाना अन्ता
यस्या सा अनच्छविभालकाता ॥

इति श्रीचतुर्विंशतिजिनसक्षेपतो वृत्ति समाप्ता ।

३७ ७४४४ (१)

चौवीसी

इस गुटकेमे निम्न कृतियाँ हैं—१ आनदघन चौवीसी २ मग्रहणी सूत्र ३ जीव-
विचार प्रकरण ४ नवतत्त्व. ५ दण्डक प्रकरण ६ सप्तस्मरण ७ प्रतिक्रमणसूत्र
८ पाच तिथिरी थुई १० स्तुतिस्तवन ११ गोतम रासो १२ स्नात्रपूजादि १३ चौढा-
लिया १४ थूलभद्र नवरसो १५ चार भावना १६ आनदघन वहोतरी १७ पनरै
तिथिरी थुई. १८ पचमवि (सारस्वत प्रक्रिया) १९ सिंहरप्रकर आदि स्तोत्रस्तवन ।

६५ ४२६८

पच-परमेष्ठि-नमस्कारार्थ

आदि- श्री जिनाय नम । नमो अरिहताय ।

माहरउ नमस्कार श्री अरिहत भगवत नड हुड । किसा छइ ते अरिहत जीय
अरिहते राग द्वेप रूपिया अडरि वडरी जीता अनड अठारे दोपे रहित ।
इत्यादि ।

अन्त- माहरउ नमस्कार पचाग प्रणाम त्रिकाल वदणा मदा हुड ।

इति श्री पचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ सम्पूर्णा ॥

६१ ४०२५

भक्तामर-स्तोत्र

आदि- इनही पछइ आपरो घरे पाछा आवी राजानी सेवा करिवा लागा पूर्विली
रीतइ आदि ।

अन्त- अन इन्वत्तिकरी मानतुग सूरि ड रची, मई इम ताहरा स्तोत्र रूपिणी पुष्प-
माला जे कठ कदलि घरइ तेह नह लक्ष्मी स्वयवर वरइ ॥ ४४

इति भक्तामरस्तोत्र-प्राकृतवार्तिकवृत्ति समाप्तम् ॥

१०० ६२७७

भक्तामर भाषा

भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हित हेत ।

जे नर पढे सुभाव सो, ते पावे सिव खेत ॥

इति श्री भक्तामर भाषा सपूर्णा ।

१०१ ७४५०

भक्तामर भाषा आदि १८ कृतियाँ

इस गुटकेमे निम्न कृतियाँ हैं—१ भक्तामर भाषा हेमराज कृत १-१६ २ चौमठ
योगिनी नाम तथा घटाकर्ण १७-२१ ३ कल्याणमन्दिर भाषा २२-३२ ४ चैत्यवदन
२-४ ५ भक्तामर स्तोत्र ५-१७. ६ कल्याणमन्दिर स्तोत्र सिद्धसेन कृत १७-२६.
७ लघु शांति २६-३३ ८ अजित शांति ३३-३६ ९ स्तोत्र सग्रह आदि १३ कृतियाँ
३६-८१ १० शक्ति मंत्र ८३-८४ ११ पदस्तवन ८४-८६ १२ वसुधारा ६०-११५.
१३ मोलह पद ११५-१३० १४ स्नात्र अष्ट प्रकारी नवपद पूजा १३१-१६५ १५ वीस

विहरमान गीत १६६ वां । १६ अतीत अनागत वर्तमान चौबीसी १६७-२०० । १७ वावन वीर नाम २००-२०२ १८ पदस्तवन (१२ कृतिर्वा) २०२-२३२ ।

११४ ४३४४

दीतराग स्तोत्र

आदि- य परात्मा पर ज्योति परम परमेष्ठिनाम् ।

आदित्यवर्ण तमम परस्तादमनन्ति यम् ॥ १

अन्त- तव प्रेष्योऽस्मि दासोऽस्मि सेवकोऽप्यस्मि विकर ।

उमिति प्रतिपद्यस्व नाथ नाथ पर ब्रवं ॥ ८

श्रीहेमचन्द्रप्रभावाद्धीतरागस्तवादित ।

कुमारपालभूपाल प्राप्नोतु फलमीप्सितम् ॥ ९

इति वी० स्तोत्रे आशीस्तवो विण प्रकाश ॥ २०

१२३ ४१५६

श्रीदेवीछन्द, शनैश्चर स्तुति

आदि- मकल-मिद्धि-दातार पार्श्वं नत्वा स्तविमह ।

वग्दा मारदा देवी जगदानददायिनी ॥ १

अन्त- इच्छ बहु भक्ति भर अडल छदन सवु ।

या देवी भगवई तु म पमोइ होऊ सया सग कल्याण ॥ ४५

इति श्री देवोच्छद सपूरण ।

शनि स्तुति—आनदन जग जयो रविसूत साभलवान ।

कोड कवित करी तुभ स्तव तुज गुण को हवे मान ॥ १

अन्त- ए मत्र धरी ऊकार उक्षर सारह । ए मत्र जपीय नर धारह ॥

एणो मत्रे उलट धरी विनतडी चीत आणिये ॥

रिध वृध सहजे सदा, वली वली एम मनीमर दपाणीये ॥ १६

इति शनीसर स्तुति ॥ लिपिकर्ता—सुबुद्धिविजय गणी ।

१२८ ४५११

शोभन-स्तुति

आदि- भव्याभोजविबोधनैकतरणे विस्तारि कर्माचिनी

रभा मामजनाभिनन्दनमहा नष्टा पदा भासुरं ।

भक्त्या वन्दितपादपद्मविद्रुपा सपादय प्रोज्झिता (त्यिना)

रभा सामजनाभिनदन महा नष्टापदा भासुरं ॥ १

अन्त- मरभसनातनाकिनागीजनोरोजपीठीलुठतारहारस्फुरद्रश्मिसारक्रमाभोरुहे ।

परमवसुतरागजारोवसन्नाशितारातिभाराजिते भासिनी हारतारावल्का मदा ।

क्षणरुचिरुचिरोरुचत्सटासकटोत्कृष्टकठोद्भूटे सम्पिते ।

सकटा भव्यलोक त्वमवाविके परमव सुतरा गजारोवनन्नाशिताराति भा

राजिते भासिनी हार तारावलका मदा ॥ ६६ ॥ २४ ॥ श्री गुप्त भवतु ॥

१३० ७२७८

शोभन स्तुति

आदि— आसी[द्]द्विजन्माखिलमध्यदेशप्रकाशमाकाश्यानिवेशजन्मा ।
 अलवधदेवपिरिति प्रसिद्धि यो दानवर्षित्वविभूषितोपि ॥ १
 शास्त्रेण्वधीतो कुशल कलामु वन्द्ये च बोधे च गिरा प्रकृष्ट ।
 तस्यात्मजन्मा समभून्महात्मा देव स्वयभूरिव(वा) मुदेव ॥ २
 अञ्जायतास्यश्लाघ्यस्तनूजो गुरालव्यपृज ।
 य शोभनत्वशुभवर्णभाजा ननाम नाम्ना वपुपाप्यधत्त ॥ ३
 कातन्त्रचद्रोदिततन्त्रवेदी यो बुद्धवोद्वाहंततवर्कंतस्व ।
 साहित्यविद्यार्णवपारदर्शी निदर्शन काव्यकृता बभूव ॥ ४
 कोमार एव क्षतमारवीर्यश्चेष्टा चिकीर्षन्निव रिष्टनेमे ।
 य सर्वसावद्यनिवृत्तिगुर्वी सत्यप्रतिज्ञो विदधे प्रतिज्ञाम् ॥ ५
 एता यथामति विमृश्य निजाम्बु (नु) जस्य
 तस्योज्वला कृतिमलकृतवान् स्ववृत्या ।
 अभ्यर्थितो विदधता त्रिदिवप्रयाणा
 तेनैव साप्रत कविघर्नपाल नामा ॥ ६

अन्त— इति श्रीशोभनदेवाचार्यकृतचतुर्विंशतितीर्थकरस्तुतिवृत्ति, कृतिरिय तस्यैव ।

१३२ ६८३६

स्तम्भ पार्श्वस्तुति आदि

इस गुटकेमे निम्न ५ कृतिर्या हैं—१ स्तम्भ पार्श्वस्तुति, २ आत्मोपरि सज्भाय,
 ३ शातिजिनस्तवन, दानशीलादि चौढालियो, ५ जम्बूकुमार सज्भाय ।

१३४ ६१६०

स्तवनम्

पुष्पिका के अन्तिम २ श्लोक
 पूर्वं पाटलिपुत्रमध्यनगरे भेरी मया ताडिता
 पश्चान्मालवसिधुटककविपये काचीपुरे वंदुपे ॥
 प्राप्तोह कलहाटक बहुभट्टैविद्योत्कटै सकट
 वादार्थी विचराम्यह नरपते सा(शा)दूर्लवत्क्रीडितम (क्रीडितुम्) ॥ १
 काञ्च्य नगनाटकोऽह मलमलिनतनुल्लाम्बुसे पाण्डुपिडु ।
 पुड्रोड्रे शाकभक्षी दशपुरनगरे मिष्टभोजी परिव्राट् ॥
 वाराणस्यामभूवं शशिकरधवल पाडुरांगस्तपस्वी ।
 राजन् यस्यास्ति शक्ति स वदतु पुरतो जैननिग्रथवादी ॥ २
 इति समतभद्रस्वामिविरचित स्तुवन ॥छ्छ॥

१३६ ६८२५

स्तोत्रसग्रह

इस गुटकेमे निम्न ५ स्तोत्र हैं—१ नवकार रो स्तवन, २ श्री महावीरजी रो स्तोत्र,
 ३ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र, ४ श्रीशातिनाथ स्तोत्र, ५ सगीत वध नमस्कार, ये पाच स्तोत्र हैं ।

२३-जैनागम

२७ ४३५८

आवश्यकसूत्र सवालावबोध

आदि- नमो अरिहन्ताण नमो सिद्धाण नमो आयरियाण ।
नमो उवज्झायाण नमो लोय सव्वमाहूणम् ॥ १

अन्त- समाईय पोसह, सठियस्म जीवस्स जाइजो कालो ।
सो सफलो बोधवो सेमो ससार फल हेउ ॥ १

इति श्री आठशक सपूर्णम्

४२ ४४१८

उत्तराध्ययनसूत्र (सवालावबोध)

आदि- सजोगाविप्पमुक्कस्स अणगारस्य भिक्षुणो ।
विणय पउ करिस्सामि आणुपुव्व सुणोहमे ॥ १

अन्त- श्रीवर्द्धमानस्वामी परिनिवृत निर्वाण प्राप्त किं ।
उत्तराध्ययनभवसिद्धिका भव्यजीवा तेषा समन्तात् ॥८२ छ॥

इति षट्त्रिंशत् श्रीउत्तराध्ययनवालावबोध समाप्त ॥

५० ४३५७

उत्तराध्ययनावचूरि

आदि- श्रीवर्द्धमानमानम्य बृहद्द्व त्यनुसारत ।
श्रीउत्तराध्यायनानामवचूरि लिखाम्यहम् ॥ १

अन्त- योग उपघानादिरुचितव्यापारस्तदानतिक्रमेण यथायोग गुरु० तच्चित्तप्रसन्नता
स्याद्धेतोरधीयेत न तु प्रमाद कुर्यादिति भाव ।

इति श्रीउत्तराध्ययनावचूरि ॥

८१ १०६

कल्पसूत्र (सस्तवक)

आदि- ॐ नमो अरिहन्ताण नमो सिद्धाणमित्यादि ।

अन्त- श्रीमत्तपागणाधीशश्रीदेवविमलप्रभो ।
श्रीसोमविमलाह्णेन टवार्थो लिखित स्फुट ॥
टवार्थ कल्पसूत्रस्य मूर्खशिष्यस्य हेतवे ।
बृहद्द्व त्यनुसारेण सशोष्य सर्वधीघनं ॥

१२१ ७४४५

प्रतिक्रमणसूत्र आदि

१ प्रतिक्रमणसूत्र । २ जयतिहूयणस्तोत्र । ३ श्रावककरणीस्वाध्याय-जिनहर्षकृत ।

४. शत्रुञ्जयराम-समयसुन्दरकृत । ५. गोतमराम । ६. मुनिमालिका-वादित्रसिंहकृत ।

७. गोतमस्वामिस्तवनादि । ८. कालज्ञानभाषाचौपई—लक्ष्मीवल्लभगरिकृत ।

१२२ ७४४६

प्रतिक्रमणसूत्र आदि

१ प्रतिक्रमणसूत्राणि । २ म्नुति-स्तवन । ३. शत्रुञ्जयराम । ४ गोतमरामो ।

५ स्तवनादि ८ । ६ जीवविचार, प्राचीन राजस्थानी भाषार्यमहित । ७ नवतत्वप्रकरण ।
८ विचारपट्टिका । ९ वावीस परिमह छन्द । १० वारहभावनास्वाध्याय ।

१२७ ७३४५ प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका

अन्त- निवृत्तिककुलनभस्थलचन्द्रोणाभ्यमूरमुस्येन ।
पण्डितगणो न गुणवन्प्रियेण सशोधिता चेत्यम् ।

१५६ ७२२३ समवायाङ्गवृत्ति

वृत्तिरचनाकाल - एकादशशतेष्वथ विगत्यधिकेषु विक्रममभानाम् ।
अण्णहिलपाटकनगणे(रे) रचिता ममवायटीकेयम् ॥



२४-जैनप्रकरण

७ ७०१६ आगमसारोद्धार भाषा

यह और सख्या ७३३१ वाली प्रति मिनती है, किन्तु इसमें निम्न दोहा अन्तमें विशेष है—

करधौ इहा सहाय अति, दुर्गदास शुभ चित्त ।
ममभावन निज मित्त कौ, कीनी ग्रन्थ पवित्र ॥ १२

१६ ४३०२ ऋषभपचाशिका

आदि- ॐ नमो वीतरागाय नम ॥
भक्तिभरनमिरसुरवरातिरीड मणियति कतिकयसोहो ।
उसभाड जिणवरिदाराण पायपकेरुहे नमिमो ॥ १
निज्जिय परीसहचमु सभयुव सप्रवप्ररिउपसरम् ।
सपत्तकेवलिसिरि सिरिवीरजिरोसर वदे ॥ २
अन्त- इयभाराणप्रपत्तीवियकम्मिधराण वालवुद्धिणा विमय ।
भत्ती डपू उभयभयसमुद्दवो हिच्छवो हि फलम् ॥ ५०
इति ऋषभपचाशिका समाप्ता ॥

६७. ४५६६ धर्मोपदेशश्लोका

आदि- हृष्ट्वा शत्रुञ्जय तीर्थं नत्वा रैवतकाचलम् ।
स्नात्वा गजपदे कुण्डे पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १
अन्त- इति श्रीपुराणे कथिता श्लोका ।

८४ ७२०० प्रबोधचिन्तामणि

अन्त- यमरसभुवनमिताब्दे स्तम्भनकाधीशभूपिते नगरे ।
श्रीजयशेखरसूरि प्रबोधचिन्तामणिमकार्पीत् ॥

८६ * ७३४७ प्रवचनसरोद्धार सटीक

ग्रन्थान्ते- श्रीमानर्बुदपर्वतप्रभुरभूत् भूमान् सुरत्राणभू,
सत्याब्धो भुवि राजसिंह इति यो रामावतार पर ।
श्रीमानक्षयराराजराजतिलक प्रोद्यत्प्रतापानल-
स्तत्पुत्रोद्भूऽतभाग्यभूमिरधुना वालोऽपि पाति क्षितिम् ।
तस्य श्री सत्पुत्रद्वयीसयुतो,
राज्यस्तम्भनिभ समस्तभुवनप्रख्यातकीर्तिव्रज ॥ २
यात्रा श्रीविमलाचलस्य महता सधेन माडम्बरं,
द्वेधाभूततपागणस्य सुचिरादद्रेरिवाश्चर्यकृत् ।
सन्धान च मिथो विधाय भूतवान् यो बोधिलक्ष्म्याङ्गिन,
स्वात्मान सुकृत श्रिया च यशसा द्यावापृथिव्यन्तरम् ॥ ३
तेन श्रीतपगच्छनायकगुरुश्रीहीरसूरीशितु,
सधे श्रीमदुपासकेन नगरे श्रीरोहिणीनामनि ।
वर्षे विक्रमतो रसावसुरसक्ष्मासम्मिते वत्सरे (१६८१)
चित्कोशे स्वकृते चिर विजयतामेषा गृहीता प्रति ॥ ४

१११ ४०८५ मङ्गलकलशचोपाई

आदि- श्रीगुरुभ्यो नम ।

दुहा- प्रह उठी नीत प्रणमीयइ, श्रीरिसहेसरदेव ।
नाम थकी नवनिध मीलइ, सिवपद आपड सेव ॥ १
मगलकलसड दानसु, पामि परघल रिद्व ।
राजलीला सुख भोगवी, देव तरणी गति लीघ ॥ ७

अन्त- तस सेवक नित्य हर्षगणि रे, सदा मन आणद ।
तत शिष्य लक्ष्मीहर्ष कहै रे, सर्व नरनावृंद ॥ ५ ॥ दा०
सहैर काकदीनयर भली रे, रह्या तिहा चोमास ।
श्रावक सदा सुखिया वसै रे, पुन्ये करी जस वास ॥ ६ ॥ दा०
माभलवो करवो भावसू रे मनमे आणी वितोद ।
वरम करै ते सुख लहै रे, उछै एह प्रमोद ॥ ६ ॥ दा०
इति श्रीमगलकलशचउपी मपूगर्ग ॥

१२१ ४२६६ विंशतिस्थानकविचारामृतसग्रह

ग्रन्थान्ते- विंशतिस्थानकाचारविचारामृतमागर ।
गच्छेशश्रीजयचन्द्रसूरिशिष्येण निर्मित ॥ २२

वीरग्रामास्यपुरे युग्मव्योमेन्दुपञ्चभि ।
 प्रमिते वत्सरे हर्षेज्जिनहर्षेण साधुना ॥ २३
 ग्रन्थस्यास्य पवित्रस्य वाचनश्रवणादिभि ।
 लभन्ते प्राणिन प्रौढा श्रीजिनेश्वरसम्पदम् ॥ २४
 ग्रन्थोऽष्टाविंशतिशतानुमित मर्वमस्यया ।
 जोवेदय बुधश्रेणिवाच्यमानो निरन्तरम् ॥ २५
 इति श्रीविंशतिस्थानकविचारामृत सग्रह सम्पूर्णा ॥

१२२ ७४७७

विचारामृतसग्रह

ग्रन्त- सूरि श्रीकुलमण्डनोऽमृतमिव श्रीआगमाम्भोनिधि
 इचक्रे चान्विचारसङ्ग्रहमिम रामाद्विशक्रावदके (१४८३) ॥

१२७ ४०२६

शीलोपदेशमालावालावबोध

ग्रन्त- इति श्रीशीलोपदेशमालावालावबोध श्रीखर्गतरगच्छमेरुमुन्दरोपाध्यायविर-
 चित धनश्रीकथा समाप्ता । हिव ग्रथकार ग्रन्थनी ममाप्ती भणी आपगउ
 नामगर्भित मगलगाथा कहइ
 ईय जईसिंहमुणीसरविनेयजयकित्तिगा कय
 एय सीलोवएसमान् आराहिय लहइ वाहि सुहा ॥ ११५

व्याख्या—इणइ पूर्वोक्त प्रकारि करी जयसिंह सूरि तेहनउ विनीत शिष्य
 शिष्य जयकीर्तिमुनि तीणइ ए शीलोपदेशमाला प्रकरणरूप मूलमून
 कीवऊ । इति श्रीशीलोपदेशवालावबोध प्रकरण समाप्तम् ॥ ग्रन्था-
 ग्रन्थ ६२५० ॥ सैलानागाव्विचन्द्रो, वृद्धमास त्रयोदशी । कृष्णपक्षे रविपुत्रो
 अरुणोदयजिनपूजनम् ॥ १

१४२ ४३५६

सग्रहणीवालावबोध

आदि- श्रीपाश्र्वनाथ फलवर्द्धिकास्य गुरु इच श्रीमज्जिनदत्तमूरीन् ।
 गीदेवता भाष्यसुधासमुद्र क्षमाश्रय श्रीजिनभद्रनाम्ना ॥ १

ग्रन्त- इति श्रीवाचनाचार्यश्री श्रीश्रीशिवनिघानगणिविरचिते सग्रहणीवालावबोधे
 सामान्याधिकार समाप्त । इति श्रीलघुसग्रहणी वालावबोध समाप्त ॥

१४५ ४००४

सग्रहणीसूत्र (संघेणनो रासछद)

आदि- दशमइ ग्रह सातमीड चौदश तर आटमइ । अधिके एकेक तिहा थो
 तिमइ । २३॥

ग्रन्त- (ढाल एह) अर्थ- निरुपम अमृत उपम सुण्यो श्रवणे सुख करी,
 विचार करता चित्त धरता कर्मकोडिना दु ख हरे ।
 ता रहु रास प्रकास उत्तम मेरु हू शशि दिण्यरू,
 शासन देवी पमाउलि श्रीसध चतुर्विध जय करू ॥ ५५०

इति श्रीसग्रहणीसूत्रे परिपूर्णता नाम सप्तमोल्लास ॥ श्लोक सख्या ग्रन्थाय ॥ ६४१

१४६ ४०३१

सग्रहणीसूत्र सस्तबक

अन्त- मलिहारि हेमसूरीण सीस लेसेण सूरिणा रइय ।
सघयणिरयणमेय नदउ वीरजिणतिच्छ ॥ ३०
इति श्री सग्रहणीसूत्र सपूर्णमिति ।

१६० ६२०३

सम्मेदशिखरमाहात्म्य

ग्रन्थान्ते पुष्पिका- इति श्रीभगवँल्लोहाचार्यानुक्रमेण श्रीभट्टारकजिनेन्द्रभूपणोपदेशा-
च्छ्रीमद्दीछितदेवदत्तक्र(कृ)ते श्रीसमेदसिखरिमाहात्म्ये समाप्तिसूचको नाम
एकविंसतिमोऽध्याय ॥ २१

१६२

७२१७

समाधिशतकटीका

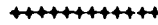
अन्त- तुरङ्गदृष्टितत्त्वभूमिसयुते (१७२७) सुवत्सरे,
तपस्यशुक्लपञ्चमीदिने च तक्षके पुरे ।
समुद्धृत सुपुस्तक समाधिसाधिताशयम्,
सुवादिराजघीघनेन धारित स्वधीगृहे ॥

१७१. ५६११

हरिवशपुराण

अन्त- इत्यरिष्टनेमिपुराणसग्रहे हरिवशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ गुरुपादकमलवर्णनो
नाम षट्षष्टितम सर्ग ।

विशेष- श्रीवर्द्धमानपुरे श्रीपाश्वालिय नत्रराजवसती निर्मितम् ।



* श्री *

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

अ
अखैराज २४२
अग्निवेश मुनि १३६, १५४
अग्रदास २११, २१३
अचलकीर्ति १६५
अजितप्रभ १५२
अद्वयारण्य ७१
अनुभूति स्वरूपाचार्य ७७, ७८, ७९
अनूपसिंह १६५
अनतदेव ४१, ४३, ४५, १५७
अनन्त पण्डित १२६, १४६
अनन्त पण्डित (त्र्यम्बकात्मज) १४३
अनन्त भट्ट २५
अनन्तराम ६६
अन्न भट्ट ७०, ७१
अप्पय (?) (वेकटेशशिष्य) ११७
अप्पय दीक्षित १००, १४१, १४३
अभयदेव २३६, २५५, २५६, २५७,
२५९, २६५
अभयसोम १८६, १६४, २४१
अभिनव नारायणोन्द्र सरस्वती १५
अमृत कवि १७४
अमृतचन्द ७०
अमरचन्द्र १४१
अमरप्रभ २४२
अमरसिंह ८२, ८३, ८४
अमर भस्क १२६, १२७
अष्टावक्र ५८
अहोबल शास्त्री १२
आ
आहमल्ल १६०

आणन्द जेटूमल १७५
आत्माराम २०७
आनन्द कवि २०६
आनन्दगिरि १६, ६१
आनन्दघन १६१, २०८, २३६
आनन्दचन्द १६१
आनन्दतीर्थ ४
आन्हिदत्त १०२
ई
ईमरदाम २०४
उ
उज्ज्वलदत्त ७३
उत्तम २६६
उत्पल भट्ट ६६, १०३, ११२, ११५, १६८
उदय २११
उदयनाचार्य ७०
उदयप्रभ ८५
उदयरत्न १६४
उदयरत्न १७८, १६४, २४०
उदयरत्न १६७
उदयवन्त १७०
उदैराज १८२
उपेन्द्र ११४
उमास्वामी २६३
ऋ
ऋषभसागर १६४
ऋषि शर्माचार्य (महर्षि) १२१
क
कृपाराम १०४ १७४
कृपागम मिश्र १०२
कृष्ण कवि २१७, २२७

कृष्ण जीवन २०८
 कृष्णदत्त १५६
 कृष्णदास ५६, २०८, २११, २१८,
 २३३ २३६
 कृष्णदास पयोहारी १३
 कृष्णानन्द ६६
 कृष्ण मिश्र ७६
 कृष्णयाजी ६४
 करणद महर्षि ७१
 कनककीर्ति १७८
 कनककुशल १५१, २४२, २४३
 ,, ,, (विजयसेन सूरिशिष्य) १५३
 कनकनिधान १६०
 कनकसुन्दर २०४
 कनकसोम १६५, २६६
 कबीर १६७
 कमलबन्धु १८१
 कमलसयम २४६
 कमलाकर ३६, ११५, १२०
 ,, (रामकृष्णसुत) २८
 ,, भट्ट ४२, ४५
 करणीदान २०३
 कर्काचार्य २१, २७
 कर्णसिंह ३२
 कर्मचन्द १७३
 कलश कवि १७१
 कल्याण १५६, १८६
 कल्याणकर १००
 कल्याण मिश्र २२२
 कल्याणराम ६०
 ,, वर्मा ११८
 कविकान्त सरस्वती ४४
 (आदित्याचार्य सुत)
 कवियण १८१, १६१, १६३
 कविराज भिक्षु ६६
 कवि शेखर १२५
 कवीन्द्राचार्य २२०

कात्यायन २८
 कालिदास ७, ६०, १२२, १२३, १२६,
 १२७, १२८, १३०, १३४, १३५,
 १३६, १४०, १५२
 काशीनाथ ६८, १११, ११४ १५४
 ,, भट्ट (जयराम सुत) ३२
 काशीराम १६०, २०१
 किशनसिंह २१८
 किशोरी श्री २१४
 कीर्तिप्रभ २४१
 कीर्तिविलास २३८
 कुक्कोक पण्डित २५
 कुवेरानन्द वर्णा ५०
 कुमुदचद्र २३७
 कुलपति मिश्र २३१
 कुलमण्डन २६८
 कुशलधीर १६३
 कुशललाभ १७७, १८८, २३८
 कुशला २१६
 केदार भट्ट १२२
 केयदेव १५५
 केशरविमल २०२
 केशराज १७६
 केशव ८७, ६३, १११, ११४, २०८
 ,, (आचार्य) १८६
 ,, (कवि शेखर) १३०
 ,, दास १६५, २२१
 ,, देवज्ञ ६२, १०७
 केशव भट्ट १३१
 ,, मिश्र ७०
 केसरसिंह १६७
 केसरी कवि (बालकृष्ण भट्टसुत) २७४
 कैवल्याश्रम १३
 कोक १२५
 कोविद मिश्र २३५
 कौण्डि भट्ट ७६
 ककाली भाटण १७४

स

खडियो जगो १६१, १६२
 खुशाल २३३
 खुशालचद १८७, २३५
 खेतल १७३
 खेतसी २२६
 खेमचद २०८
 खेमो १६३

ग

गजकुशल १७०, २००
 गजमागर २६२
 गजसार २३६
 गगपति देवज २४, २८, १०५
 (रावल हरिगङ्कर मृतु)
 गणपति मिश्र २२७
 गरोग ८८
 ,, गणक (कुहिराजात्मज) ६४, ६५
 ,, दीक्षित ६०
 ,, देवज्ञ ६३, ६४, ६५, १०२, ११४
 गर्ग ऋषि ८८, ६८, १०१, १८३
 गाङ्गना १८८
 गिरिधरोय २३०
 गिरिधारी मिश्र १११
 गुणकीर्ति १६७
 गुणभद्र २०७, २६७
 गुणरत्न १२१
 गुणविजय २३८, २५१
 गुणविनय १२६
 गुणसागर १६७, १७६, १७७, १८०
 गुणसार २४३
 गुणाकर १००, २४२
 गुरुप्रसाद २२०
 गुरुसेवक (धीकाल) ३२
 गोपदास ५८
 गोपाल ३, ७८, ६२, २१६, २१३
 गोपालदास १५४, १८३, १८८, २१६
 गोपाल (न्याय पचानन भट्टाचार्य) ४२

गोपाल भट्ट ६४, १४२
 गोपीनारायण (सूर्यमेन महामहन्द्र) ६०
 गोपेश्वर ६८
 गोप्यजी १७१
 गोरक्षनाथ ३८
 गोवर्द्धन ७१ १२६, १३०, १३१, १४०
 गोवर्द्धन कण्ठोलक (द्विजगम मुत) १०१
 गोविन्द (द्विपुगु देवज मुत) २६
 गोविन्द कर्षीश्वर १४०
 गोविन्द गरिण २४०
 गोविन्द ठक्कुर १४१
 गोविन्ददाम १६२
 गोविन्द देवज ११६, ११७
 गोविन्द गाढारी २१०
 गोविन्द पण्डित ४२, ४३
 गोविन्दराम २०३
 गोविन्दाचार्य ५६
 गौतम मुनि ८६
 गौरीकान्त भट्टाचार्य ७०
 गौरीकान्त मार्कभौम १३
 गङ्ग १६७, २०८
 गङ्गादाम १२२
 गङ्गाधर (रामचन्द्र पाठक मुत) २६
 ,, १००
 गङ्गाधर भट्ट २७३
 गङ्गागम १०६
 ,, कवि (जडचु पनामक) १४१
 ,, भट्ट ४१
 गङ्गेश्वर ७०
 गङ्गेय मिश्र २२७

च

चक्रधर १०६
 चक्रपाणि ६७, १५८
 चक्रवर्ती ६
 चक्रदाम २१६
 चतुर्भुजदाम कायस्थ १८७

चतुर्भुज मिश्र २, १२७
 चतुरविजयगणि १०७
 चरणदास २१८, २३६
 चानरा खिडियो १८८
 चाणक्य १४५
 चामुण्ड कायस्थ १५५
 चिन्तामणि २०६, २१०
 ,, पण्डित ११०
 चिरञ्जीव भट्टाचार्य ६६
 चूडामणि चक्रवर्ती १०४
 चूडामणि भट्टाचार्य ७१
 चेतनदास १७४
 चैतन्यदास १२७, १२६, १६६
 चैनराम २२१
 चैना १८६
 चोथमल १७६
 चोथो श्रावक १६६
 चौर कवि १३०
 चन्द ? १८४
 चन्द कवि १८४, २३३
 चन्द्रकीर्ति ७८, ८१, १८५
 चन्द्रचूड २५
 चन्द्रसिंह ६०
 चन्द्रशेखर ११२

छ

छत्रसिंह श्रीवास्तव २२७
 छीतरदास १७४

ज

जगदैवज १०८
 जगदानन्द महामहोपाध्याय ३१
 जगदीश २०८, २१०
 जगदीश भट्टाचार्य ७१
 जगन्नाथ भट्ट (तैलङ्ग पण्डितराज) २
 जगन्नाथ (पण्डितराज) ५, १३, १३१,
 १४१
 जगन्नाथ मिश्र १२२

जगन्नाथ सम्राट् १११
 जगमाल मालावत १७०
 जटमल १७१
 जडभरत ६१
 जनगोपाल २१६
 जनार्दन २२८
 जयकृष्ण ७५
 जयकीर्ति २६८
 जयगणि ६२
 जयदेव १२६, १३१, १४१
 जयपारदीक्षित १५६
 जयराम ६४
 जयरामन्यायपञ्चानन ७१
 जयराम भट्ट १७
 जयराम भट्टाचार्य २२
 जयरङ्ग १६७
 जयवल्लभसूरि २३६
 जयशेखर २६५
 जयानन्द २४४
 जसराज १८२, २१६
 जसवन्तसिंह १७६, २१६
 जानकवि २१७
 जिनकीर्तिसूरि २३६
 जिनचन्द्र ८१
 जिनदत्तसूरि ७२, २६८
 जिनदास १७६
 जिनप्रभ २६४
 जिनभद्र २६८
 जिनमाणिक्य २०२
 जिनरङ्ग २०३
 जिनवल्लभ १४४, १६५, २४२, २६६
 जिनसागर २४०, २४१
 जिनसागरसूरि १४२
 जिनसुन्दर १७६, २६४
 जिनसूरि १७०
 जिनमेन २३६, २७१
 जिनहर्ष १६४, १६६, १७४, १८२,

१९४, १९५, १९६, २०२, २०८
 २०७, २६८
 जिनहर्षसूरि (मुमतिहम) १६४
 जिनहस २४७
 जिनोदय २०३
 जीवक ५५
 जीवोस्वामी ५९, ६०, ६१, ६३
 जीवनाथ ११६
 जीवागुर्जर (याज्ञिक नरहरिमुत) ९९
 जैतकवि १९८
 जोरावरसिंह २२१

ठ

ठण्डीराम २१६
 ठाकुरसी १८२

ड

डेडराज २२६
 (जनराज)

ढ

ढुण्डियज्वा १३४
 ढुण्डिराज ९३, १०९

त

तत्त्वहस १६६
 तरुणीवीरेन्द्र ३२
 (नरोत्तमारण्यमुनीन्द्रशिष्य)
 तिलकसूरि १८६
 तिलकाचार्य २६३
 तुलछीदाम २०९
 तुलसीदास १४, २२२, २२३, २२४,
 २२५, २२६, २२७, २२८, २३३, २३४
 तेजसिंह १४८, २१९
 तेजमिहगण १४२
 तेराकवि १८५

द

दत्तलाल १७८, २१६
 दलपतिराम २

दलपतिराय २०७
 दक्षनकवि २११
 दाहू १९८
 दाहूजी १७८, १०९
 दामोदर १०८
 दामपण्डित १६०
 दिनकर ८७, ८९
 दिनकर भट्ट (रामकृष्णान्मज) ४५
 दिवाकर १००, १०१, १०४, ११२
 दिवाकर (नृनिहगणगुण) ९२
 दिवाकर भट्ट ४५
 दीपचन्द्र १५५
 दीपोऋषि १७०
 दीपो १७८, २०२
 दुर्गदेव ८५
 दुर्गाशङ्कर ११९
 दुर्गाशङ्कर पाठक ८८
 दुर्गाशङ्कर शुक्ल २८
 दुर्योधन ९८
 दुर्वासो ऋषि ९
 देव कवि १६९
 देवकीनन्दन (जीवानन्द मुत) ०३
 देवगुप्त १६३
 देवचन्द्र २६०
 देवदत्त १९८, २६९, २७१
 देवप्रभ १३१
 देवभद्र २६९, २७०
 देवयाज्ञिक २१, २२
 देवयाज्ञिक (प्रजापतिसुत) २३
 देवसागर (रविचन्द्रशिष्य) ८२
 देवसूरि ७२
 देवसेन पण्डित ७१
 देवीदान १९८
 देवीदास २१४, २२२
 देवेन्द्र २६५
 देवेन्द्रसूरि १४४, २६१, २६८
 देवेन्द्राश्रम ३३

घ

- घनपाल (पण्डितवान्धव) २४३
 घनराजगणि (भुवनराजगणिशिष्य) १०५
 घनसार १४४, १४५
 घनेश्वर १३४, १३६, २७१
 घनञ्जय ८४
 घनञ्जयसूरि ११
 घर्मकुमार १५२
 घर्मघोष २४३
 घर्मदास १४३, २६०
 घर्मदेव १६४
 घर्ममन्दिर १६४, १६०
 घर्ममन्दिरगणि १८२
 घर्ममेरुगणि १३६
 घर्मराजाध्वरीन्द्र ६६
 घमवर्द्धन २०२
 घर्मसमुद्र १६३
 घर्ममागर २५२
 घर्मसी २३७
 घर्मसुधी १४३
 घर्मेश्वरमालवीय ८६
 घुरन्धरमल्लारि १२२

न

- नृपति भूपति ११८
 नृसिंह ३५
 नृसिंहदेवज्ञ १२०
 नृसिंहाश्रम १३०
 न्यायवागीश भट्टाचार्य १४१
 नकुल १६८
 नथमल २२७
 नयनसुख २१२
 नयनसुख (केशवमिश्र सुत) २२८
 नयविजय १६०
 नयविलास २६८
 नयसुन्दर १६७, २०२
 नवदो चारण १६३

- नरपति ८७, ६६
 नरसिंह १३
 नरसिंह (रतनराजगणिशिष्य) १०६
 नरसिंह सरस्वती ६७
 नरहरदास २०३
 नरहरिदास वारहठ १६४
 नरहरि भट्ट १४३
 नरेन्द्रपुरी ७६
 नरोत्तमदास २३३
 नागदेव उपाध्याय ३६
 नागभट्ट ३८
 नागराज (टाकवशीय) १३१
 नागरीदास २१४, २१६
 नागार्जुन १५५
 नागार्जुनसिद्ध ३१
 नागेश ७६, ८१
 नागेश भट्ट ७५
 नागेश भट्ट (श्रीकालोपनामकशिवभट्टसुत)
 १४२
 नागोजी भट्ट १२, ३२, ७५
 नाथिया १८१
 नानू ऋषि २४४
 नाभादास २१७
 नामदेव १८१
 नारचन्द्र ६७, १०३
 नारायण १०, २१, ८६, ६०, १०८
 ,, (रामेश्वर भट्टसुत) २५
 नारायणदास सिद्ध (ब्रह्मदाससुत) ६८, ६६
 नागायणदेवज्ञ (अनन्तपुत्र) १०७
 नारायणदेवज्ञ कौशिक ११२
 नारायण पण्डित (नृसिंहदेवज्ञसुत) ८८
 नारायण भट्ट ३, २७, १३६
 ,, ,, (रामेश्वरसुत) २३
 नारायणामुनि (शठकोपमुनि) २६
 नाहरखान राजसिंहोत २०४
 नित्यनाथ १५८
 नीलकण्ठ ८, ४२, ४५, ६४, ६५, ६८,

१०४, ११२, ११३, ११६, ११७,
 १३२, १३३, १४०
 नीलकण्ठ (शकरभट्टात्मज) २४, ३६
 ,, (गोविन्दसूरिसूनु ३७)
 नीलकण्ठ शुक्ल ७६
 नेमिचन्द्र २६१, २६३
 नेमिप्रभ १४६
 नन्द २०२
 नन्दमिश्र ६८
 नन्दन (अमरसिंहसूनु) ६०
 नन्ददास १४, ६०, १८१, २०६, २१०,
 २१२, २१४, २१७, २१६, २२०,
 २२१, २२६
 नन्दराम ८७, २२०
 नन्दराम मिश्र ८८, ६८, ११६
 नन्दिकेश्वर ८८
 प
 पतञ्जलि ६५, ७३
 पतञ्जलिऋषि ७५
 पृथ्वीधर मिश्र (शाण्डिल्यगोत्रज, जगन्नाथ-
 सुत, हरपुरवासी) ३७
 पृथ्वीधराचार्य ७
 पृथुयश ११५, १६८
 पृथ्वीराज १६८, १६३
 पदम कवि १६८
 पद्मचन्द्र मुनि १७५
 पद्मनाभ ११२
 पद्मनाभ (नर्मदात्मज) १०२
 पद्मप्रभदेव ८
 पद्मप्रभसूरि १०४
 पद्मसागरगण १८६
 पद्ममुन्दर ७६
 पद्माकर २०६, २१३
 परमानन्द ५४
 परमानन्ददेव ६६
 परमानन्ददास २११

परमानन्द विष्णुपुरी (दण्डिपुत्र) ८३
 परमानन्दशर्मा ६८
 परमल्ल १६६
 परमसुखोपाध्य १००, ११०
 परमहंस विष्णुपुरी ६२
 पर्वतधर्मार्थी (कुन्दकुन्दाचार्य शिष्य) ६८
 पराशरऋषि ११२
 पराशरमुनि ४४
 प्रकाशानन्द ७२
 प्रजापतिदास १००
 प्रताप २०१
 प्रतापरुद्रदेव ३१
 प्रतापशाहदेव ३३
 प्रतापसिंह सवाई १६४, २२८, २२६,
 २३०, २३४, २३६
 प्रतापसिंह (महाराज) २११, २१५
 प्रतापसिंह २१२, २१३, २१४, २१६,
 २२०, २२१, २२६
 प्रद्योतम भट्टाचार्य १४१
 प्रधानपुहकर २२१
 प्रबोधानन्दसरस्वती ११, ५६
 प्रभाचन्द्र २३६, २७१
 प्रभुचन्द्र १७६
 पशुपतिराढीय ७३
 पञ्चानन भट्टाचार्य ७२
 पारिणानि १७, ७३, ७५
 पारस्कर २६
 पार्श्वचन्द्र २५०, २६५
 पाशचन्द्र १७७, २५८
 पासचन्द्र २४३
 प्रियदास २१८
 प्रियादास २१७
 पीताम्बर १५४
 पुञ्जराज २४०
 पुञ्जराजनरेन्द्र ७८
 पुण्यकीर्ति १८४
 पुण्यानन्द मुनीन्द्र ३१

पुण्यसागर १६२
 पुन्हकवि १८८
 पुलिन्द भट्ट (बाणभट्टतनय) १२७
 पुरुषोत्तम ४०, ४१, ५५, ६८
 पुरुषोत्तमदेव ७६
 पुष्पदत्त ७, १२
 पूर्णानन्दगिरि ३६
 पूर्णानन्दयतीन्द्र १३४
 पूर्णानन्द श्रीगौड ६०
 प्रेमजी गणि २५८
 प्रेमविजय २४३
 प्रेमविमल २४१

ब

बृहस्पति ८३
 बखतो १८५
 बनवारीदास २०२
 बनारस १६५
 बनारसी गर्ग २१६
 बनारसीदास २०१, २०६, २१०, २१२,
 २२६, २३२, २३६, २४३, २४५,
 २७३
 बप्प भट्टि २३८
 बलदेव २
 बलभद्र ७२, १०६, १२०, २३०
 बलभद्रशुक्ल २२
 बल्लालदेव ४२
 बल्लालसेन ८५, १५३
 ब्रह्मगुलाल २०१, २३६
 ब्रह्मचैतन्यमुनि ६०
 ब्रह्मजिणदास १६३, १८५, २०४
 ब्रह्मदेव २६३
 ब्रह्मरायमल २१६
 ब्रह्महस २४४
 ब्रह्मानन्द ६७
 ब्रह्मज्ञानतत्त्वसार ५६
 बाण १२७

वावादेवज्ञ (रामपुत्र, शिवानुज) १००
 वालकृष्ण १००, २२२
 वालकृष्णानन्दसरस्वती ६४
 वालचन्द्र १८६
 वालपुरी २३२
 विहारी २१७
 वीका १८८
 बुद्धिविजय १५०
 बुद्धिराज ३३
 वैजापण्डित ६०
 वोपदेव १५७, १६०
 वोपदेवमधुसूदन १४०

भ

भक्तिलाभ १७२, २४५
 भक्तिविजय १५०
 भगवतीदास २१५
 भगवान् (अर्जुननागाशिष्य) २०६
 भगवानदास निरजनी २०७
 भगवतीदास १७६
 भट्ट गदाघर (ज्ञानानन्दापरनामधेय, विमर्श-
 शिष्य शिवशङ्करसुत) ३८
 भट्टाचार्य ३६, ४०
 भट्टाचार्यशिरोमणि ७३
 भट्टाचार्यसिद्धातपञ्चानन ७१
 भट्टोजी ८१
 भट्टोजीदीक्षित २६, ४१, ४६, ७५, ८०
 भट्ट १८६
 भरत ११७, ११८
 भर्तृहरि १४४, १४५
 भवदेव ७०
 भवदेव महोपाध्याय ६५
 भद्रराजदशार्ण १७६
 भद्रसेन १७२
 भवानी २१६, २२२
 भान २०६
 भानुकीर्ति १६१

भानुजी दीक्षित ८३
 भानुदत्त १४१
 भानुदत्त मिश्र १४२
 भानुमेरु १६७
 भारवि १२७
 भारामल २७०
 भाव कवियण १६३
 भावचन्द्र १५२
 भावदेव १५१, १५३, १५६
 भावप्रभ १६५
 भावभट्ट (जनार्दनसूनु) १२४
 भावमुनि ६०
 भावविजय २३७
 भास्कराचार्य ८६, ८७, ८८, १०२,
 ११२, ११६
 भास्कर शर्मा १२२
 भीमविजय २६४
 भीमसेन ७५
 भीषम २१६
 भुवनकीर्ति १६२, २४१
 भूवर ५६, २१५, २३६
 भूपति मिश्र ७६
 भैवानन्द ७६
 भैरवदत्त (हरिरामशमपुत्र) ११२
 भोज १५८

म

मकरन्द २०६
 मगनीराम १८२
 मञ्चनाचार्य २५
 मण्डनसूत्रधार १११
 मणिकण्ठ भट्टाचार्य ७३
 मतिकुमल १७३
 मतिचन्द्र १६७, २६१, २७०
 मतिराम २२१
 मतिवर्धन २६२
 मतिसागर २०५
 मतिसागर उपाध्याय ११२
 मतिसार १६७, १६८, २७०

मथुरानाथ (मालवीय शुक्ल) ६१
 मदनगोपाल १५५
 मदनपाल १५६
 मदन भट्टोपाध्याय ७१
 मदनस्वामी ६३
 मधुरगर्मा ६
 मधुराचार्य १४०
 मधुसूदन १२६
 मधुसूदन दैवज्ञ (श्रीपतिशिष्य) १०१
 मधुसूदन सरस्वती ७, १२, ६८
 मनराम १७३
 मनसाराम (रामकृष्णसुत) १०७
 मनीराम ११५, २२०
 मनोरथ कवि १३०
 मनोहर २२५
 मनोहरदास २२६, २३१, २३६
 मनोहरदास सोनी २१२
 मयासुर ११६
 मयूर कवि १४०
 मलयकीर्ति १७३
 मलयगिरि २५३, २५६, २५७, २६१
 मल्लिनाथ ६३, १२७, १२८, १३६,
 १४०
 मल्लूकदास १८३
 मलयेन्द्रसूरि १०६
 महमद १८६
 मङ्गात्मा श्राद्धिपूर्ण ६
 महादेव ६२, ८८, १००, ११०
 महादेव (हीरामणिसुत) ६०
 महादेव (कान्हडजी वाडवसुत) १०७
 महादेव दैवज्ञ ६३
 महादेव राजगुरु २२, ११८
 महादेव सरस्वती मुनि ६०
 महानन्द २३८
 महानन्द पाठक २७
 महामुद्गल भट्ट १३५
 महाक्षपणक (काश्मीराम्नायी) ८२
 महिमानिधान १५०

महिमोदय १६६
 महीदास ७७
 महीधर ३४, ३५, ६४, ६५, १०३
 महेशकवि २०३
 महेश्वर ७६, १३८, १५८
 महेश्वर कवि ७३
 महेश्वर भट्ट ६
 महेश्वर शर्मा ८३
 महेंद्र सूरि १०६
 माघ १३६
 माणिक्यसुन्दर १४६, १५०, २६०
 माधव १५, २२ ४२, ४३, ७७,
 १०३, १५६
 माधवदास २१६
 माधवदैवज्ञ (गोविन्दसुत नीलकण्ठपौत्र)
 १२३
 माधवपण्डित १५४
 माधव भट्ट ७८
 माधो (भगवन्त हरिदासशिष्य) २२८
 माधोदास १८१, १६२, २२५
 माधोदास गाडण १६२
 मानकवि १६५, २३१
 मान कवेसर १६६
 मानतुङ्ग २४१, २४२
 मानतुङ्ग (हेमराज) २४१
 मानदेव २४२
 मानसागर १६८, २०२
 मालकवि १८७
 मालजी (त्यगलाभट्टसुत) २७
 मालदेव १८४
 मालमुनि १८३
 मिट्टन शुक्ल ११६
 मुकुन्ददास २१७
 मुञ्जादित्य ६५, १०६
 मुनिचन्द्र २४३
 मुनिरत्नसूरि १४६
 मुरारि १२६

मुरलीदास २१६, २३३
 मुरलीधर भट्ट २१३, २२२
 गूला (मयारामसुत) २३७
 गूला वाचक २४३
 मेघराज वाचक २५६, २५७
 मेघराज (लब्धिविजयशिष्य) १८२
 मेरुतुङ्ग २६५
 मेरुसुन्दर १२२, २४२, २६८
 मोतीलाल २०६
 मोतीराम २१६
 मोरेश्वर १५६
 मोहन २१५
 मोहनदास २१६
 मोहनदास मिश्र १४०
 मोहनविजय १७२, १७३, १८२, १८८,
 १८६, १६०, २४५

य

यदुनन्दन १०७
 यशवन्तसिंह (महाराज) २०७
 यशोदानन्द गुसाई २२२
 यशोधर मिश्र ६७
 यशोवर्धन १७२
 यश सोम २३६
 यज्ञेश्वर ११३
 यामुनाचार्य १, २
 याज्ञवल्क्य ऋषि १६, ६५
 याज्ञिक दीक्षित ४५
 योगचन्द्र १६०
 योगेश्वर ६१
 योद्धराज २३

र

रघुदेव ७३
 रघुदेव तर्कालङ्कार ७१
 रघुदेव भट्टाचार्य ७०

रघुनाथ ८, १७, ७०, २२०
 रघुराम (शिवराममुत) ५६
 रघुराम कवि २३१, २३२
 रघुवीर १०८
 रघुवीर दीक्षित २२
 रत्नकीर्ति १५१
 रत्नशेखर १६५, २०४, २०५, २२०,
 २५७, २६०, २६२
 रत्नाकर पुण्डरीक ४०, ४१
 रत्नेश्वर सूरि २८
 रतनविमल १८४
 रतनू हमीर २०४
 रविदास १३४
 रसग्रानन्द २०६, २१३
 रसानन्द २२६
 रसनायक २१४
 रसराम २०७, २१३, २१६, २२०, २२१,
 रसिक १६१ २३५
 रसिकराय २१७
 रसिकोत्तस ६१
 राघवचैतन्य ७
 राज १६३
 राजपि भट्ट ६०
 राजऋषि १०६
 राजमार्तण्ड १५८
 राजवल्लभ पाठक १५०
 राजसिंह १६३, १८५, १६५
 राजसी २०१
 राजशील पाठकवर १४६
 राजानक क्षेमराज १३
 राजुल १६१
 राधाकृष्ण २२२
 राधागोविन्द मिश्र (किशोरीरमगणेशिष्य
 नवनन्दसुत) १३६
 राधादासमोदरदास १२२
 राम ११०, १५८
 रामकृष्ण ११, ६०, ६१, ११०

रामकृष्ण कवि ५, ६
 रामकृष्ण दैवज्ञ (नीलकण्ठवगीय
 आपदेव सुत) ३७
 रामकृष्ण भट्ट (नारायणमुत) ४१
 रामकृष्णविद्वान् ६०
 रामकवि १७२, २३५
 रामचरण १८१, २२५
 रामचरणदास १६२
 रामचन्द्र ७४ ११८, १२७, १६६, १८६,
 २२५, २२६
 रामचन्द्रदास २३०
 रामचन्द्र नैमिषवासी २२
 रामचन्द्र भट्ट (विठ्ठलसुत बालकृष्णपीत्र)
 ४०
 रामचन्द्राचार्य (गोपालगुरुशिष्य) ४०
 रामचन्द्राचार्य सोमयाजी ११७
 रामचन्द्राश्रम ७४, ८१
 रामतीर्थ ३५
 रामदान मुंता २२६
 रामदैवज्ञ ८६, १०६, १०७, १०८,
 ११०, १११
 रामदैवज्ञ (मधुसूदनात्मज) १०६
 रामनाथ १६२
 रामप्रसाद (सीतापतिशरण) २२५
 रामरत्न २१६
 रामरुद्र ११०
 रामलाल २२७
 रामशरण २०४
 रामानुजाचार्य ६२, ६६
 रामानुजदास ६६
 रामानन्द १६२
 रामानन्द भिक्षु (रामेन्द्रवनशिष्य) १
 रामाश्रम १३०
 रामेश्वरदास २१०
 रामेश्वर भट्ट (नागयणभट्टसुत) ४१
 रायचन्द्र ऋषि १८५

रावण १२, १५४, १५६
 रुघनदास १६४
 रुचिपति महोपाध्याय १२२
 रुद्रधर २८
 रुद्रधर (लक्ष्मीधरात्मज) ४५
 रुद्रधरत्रिपाठी ११०, १११
 रुद्रमणि ६६
 रूपगोस्वामी ६२, १२७, १४०
 रूपचन्द्र १४५, १७६, २१६, २४०
 रूपचन्द्र २६७
 रूपनारायण ४२
 रूपसनातन ५६, ६३
 रैदास १६३
 रगनाथ ८६, ११४, ११६
 रगदास १३

ल

लच्छीराम २०८
 लब्धिचन्द्र ६२
 लब्धिविजय १८०, २३७
 लब्धिविज्ञान १६३
 लल आचार्य ११२
 लक्ष्मणदान वारंठ २३४
 लक्ष्मणाचार्य ६६
 लक्ष्मीधर १४१
 लक्ष्मीनिवास (नृसिंहाश्रमशिष्य) ३५, ३६
 लक्ष्मीनिवास १३५
 लक्ष्मीपति (कृष्णानन्दसुत) ८६
 लक्ष्मीपति ८६
 लक्ष्मीवल्लभ १६४, २५३
 लक्ष्मीवल्लभ गण १६८
 लक्ष्मीहर्ष २६७
 लाभवर्धन १८३, १६३
 लालचन्द्र १८०, १८७, १६२, १६३,
 १६४, २३५
 लालचन्द्र २३१
 लालदास २०७, २१८

लालभट्ट (अनारगिरिशिष्य) ३६
 लालमणि (जगद्रामात्मज) ६६, १०७
 लावण्यकीर्ति १६२
 लावण्यविजय २३८
 लावण्यसमय २०२, २३८
 लीलाशुक २, १२७
 लेशसूरि २७०
 लोलिम्बराज १४०, १५४, १५८

व

वृद्धवशिष्ठ २३
 वृद्धविजय २६०
 वृन्द १६७, १८२, २०६, २१३, २१६,
 २२६, २२७
 वृन्द (वरदराज) २२८
 वृन्दावनदास २३०, २३२
 वृन्दावनहित २१०
 वच्छराज २७६
 वनमाली ६७
 वरदराज ७५, ७६, ७६
 वरदार्य ६०
 वरदाचार्य (वेङ्कटनाथाचार्यशिष्य) ५८
 वररुचि ७३
 वर्द्धमान सूरि ७४
 ब्रजजीवन २३६
 ब्रजनाथदीक्षित १२४
 ब्रजलाल गोस्वामी ६६
 ब्रजवासीदास २२६
 वल्लभ ४६, ५८
 वल्लभ (आनन्द देवायनि) १३६
 वल्लभगण ८२
 वल्लभाचार्य ५३ ५४, ६०, ६१, ६२
 ६८, ६६, २१५
 वराहमिहिर १०२, १०३, १०५, १११,
 ११२
 वमन्त १८०
 वमन्तराजभट्ट ११३

वसिष्ठ ऋषि ११३
 वसुदेव दीक्षित २३
 वाग्भट्ट १४२, १५४
 वाचस्पति ६५, १५६, १५७
 वानर २४४
 वाल्मीकिमुनि ६७, १२६, १३४, १३७
 १३८, १३९
 वासुदेव भट्ट ७८
 विक्रम १३०
 विघ्नराज १८५
 विजयचन्द्र १६७
 विजयदेवसूरि १९८
 विजयरामाचार्य ८
 विजयहर्ष १६३
 विट्ठल ८, ८६
 विट्ठलदीक्षित २२, ५४, ६१
 विट्ठलेशदीक्षित ११
 विद्यातीर्थ ११
 विद्यानन्द ७०
 विद्यानन्दनाथ (श्रीनिवासभट्ट गोस्वामी) ३८
 विद्याभूषण ५४, ६८, १२२
 विद्यारण्य ३७
 विद्यारण्य योगी १३१
 विद्यारुचि १७२
 विद्याराम १४२
 विद्याविलास ६१
 विद्वन्नारायण ९३
 विनयविजय १९६
 विनयसुन्दर २४२
 विनीतविमल १६४
 विनोदीलाल २४१
 विमलसूरि १४४
 विलास २१२
 विष्णुदास २१६, २३०
 विष्णुदेवज्ञ १०२
 विष्णुपुरी ६३
 विष्णुशर्मा १५३ २३५

विश्राम १५८
 विश्वनाथ ११, २२, ७०, ८८, ९३,
 - १०४, ११३, ११८, ११९
 विश्वनाथ चक्रवर्ती ३
 विश्वनाथ दैवज्ञ ८७, १२०
 विश्वनाथ पञ्चानन, भट्टाचार्य ७२
 विश्वनाथ (श्रीपतिद्विवेदिसुत) २२
 विश्वभूषण २११
 विश्वामित्र ऋषि ८
 विश्वेश्वर ५०, ५८, ६१, ६४, १४१
 विश्वेश्वर (लक्ष्मीधरात्मज) १४१
 विश्वेश्वर कीशिक ४२
 विश्वेश्वर सरस्वती ६२
 विश्वेश्वराश्रम ७०
 विश्वाखदत्त १३४
 विज्ञानेश्वर ४०
 विज्ञानेश्वर (श्रीपद्मनाभभट्टोपाध्यायात्मज)
 ४३
 वीरचन्द्र २००
 वीरचन्द्र २३८
 वीरविजय २४३
 वीरसागर गरिण १०६
 वेङ्कटाचार्ययाजी १३९
 वेङ्कटनाथ वेदान्ताचार्य १०, १४
 वेङ्कटेश १०९
 वेणीराम १७६
 वेदाचार्य १४
 वेदव्यास ५, ११, ४८, ४९, ५६, ५७,
 १३१, १३२, १३३
 वैजलभूपति ७४, ७५
 वैद्यनाथ १४१, १५७
 वैद्यनाथ शाम्भव ९५
 वैद्यनाथ (सोमनाथवंशज) २२७
 वगसेन १५५
 वशीश्रुती २१४, २२६
 वशीधर ६४
 श्याम २०१

श्यामल ११५
 श्यामाचार्य २५६
 श्रीकृष्ण (नरसिंहसूरिसूनु) ७४
 श्रीकृष्ण कवि २२२
 श्रीकृष्ण भट्ट २०६, २११, २१५, २२०
 श्रीकण्ठ १२२
 श्रीचन्द्र २६६
 श्रीचन्द्रसूरि २६६
 श्रीधर ११
 श्रीधरस्वामी १०, ५१, ५२, ५३, ५४,
 ६२, ६३, ६४, २७३
 श्रीनिवासदास ६, ११, ६४, ६५
 श्रीनिवास भट्ट ६६
 श्रीनिवासाचार्य ४४
 श्रीपति ६०, ६१, ६२, ११०
 श्रीपतिपण्डित ६४
 श्रीपति भट्ट ८६, १०४, २३६
 श्रीरामवर्मा (हिम्मतवमपुत्र) १२६
 श्रीरामानुज ३६
 श्रीरामोपाध्याय ३६
 श्रीवल्लभ ८, ६८
 श्रीवल्लभगण ८१
 श्रीविठ्ठल ६६
 श्रीसार १६४, १६५, १६७, १६६,
 १६०, १६३
 श्रीहर्ष ७०, १३०
 श्रुतसागर २२६
 शठारि ? ६६
 शतानन्द १०४, १०७
 शशधर ७१
 शशिनाथ माथुर २११
 शत्रुघ्नोपाध्याय १८, २०
 शाण्डिल्य ऋषि ६७
 शालिग्राम १८६
 शालिनाथ १५७
 शालिवाहन २७३

शाङ्गधर १५६, १६०, १६१
 शान्तिविमल १६५
 शान्तिहर्ष १६४, १७०, १८७
 शितिकण्ठशर्मा ७१
 शिरोमणिदास २१२
 शिवकवि २०८
 शिवचन्द्र २५०
 शिवदासराय २३२
 शिवनिधान १६३, २५३, २६६
 शिवपण्डित १६०
 शिवप्रसाद २४
 शिवराम १६५
 शिवलाल पाठक ६६
 शिवशङ्कर ११४
 शिवादित्य ७२
 शिवानन्द भट्ट ३८, ४१, १५६
 शीलाङ्क २४७
 शीलाचार्य २५८
 शुक् ११५
 शुद्धकीर्ति १६८, २७३
 शुभचन्द्र १६४
 शुभवर्द्धन गण २६१
 शुभशील २०२
 शूलपाणि ४६
 शेखअलम २२१
 शेरसिंह १८३
 शेषकमलाकर १२६
 शेषचिन्तामणि १४२
 शेषनाग ६०
 शेषानन्द पण्डित ७२
 शोभन २४४
 शकर भट्ट २२, १५१
 शकराचार्य १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ११,
 १२, १३, १४, १६, ३८, ५०, ५८,
 ५९, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, १००
 १२६, १३५, १४४

शङ्कराचार्य नारायणतीर्थ ५६
 गङ्गा ऋषि ४४
 शम्भूनाथ मिश्र (सुखदेवशिष्य) २०७

स

सकलकीर्ति १५१, १५२, १७१, १८३,
 १९८, २३७, २३८, २४०, २४२,
 २४४, २५५, २६४, २६८, २७१
 सकलकीर्ति भट्टारक २६०
 मकलचन्द्र सूरि २३८
 सत्यानन्द ३३
 सदानन्द ६६, ६७
 सदानन्द गणि ८१
 समयराज २४०
 समयसुन्दर (सकलचन्द्रशिष्य) १२२,
 १३६, १७०, १७३, १७४, १७८,
 १७९, १८० १८१, १८२, १८६,
 १९८, १९९, २०२, २४२
 समरसिंह ८६ ९४, ९५
 समुद्र ऋषि ११८
 समुद्रमुनि १६५
 समन्तभद्र २४४
 सरूपदास १७७
 सरस्वती (वैरिसाल) २१९
 सरस्वतीतीर्थ (परमहमपरिब्राजकाचार्य)
 १२८
 सर्वदेव ७१
 सहजसागर २९०, २४३
 स्वच्छन्द शङ्कराचार्य ११३
 स्वप्नेश्वराचार्य ६७
 स्वात्माराम योगीन्द्र ६९
 स्वरूपदास २१४, २१५
 साईदास १८०
 सागरचन्द्र १७४, १८९
 सागरचन्द्रसूरि ९७
 सायुकीर्ति २००, २०१, २३८
 सामन्त (हर्षरत्नशिष्य) ९५

सायणाचार्य १८
 सारकवि २२०
 सारग १८८
 सालवाहरण २३५
 सिद्धमेन ७१, २६३, २६५
 सिद्धान्तवागीश ७१
 सिद्धिविजय ११९
 सिद्धसेनसूरि १६६
 सिंहतिलक १०४
 मिहनन्दि २४३
 मीताराम पर्वणीकर १३, १३०
 सुभदेव मिश्र २११
 सुखलाल १४०
 सुखसागर २०९
 सुजसविजय १६६
 सुदर्शनविजय २४०
 सुन्दर २१३
 सुन्दरदास २०७, २०८, २११, २१४,
 २२५, २२८, २३३, २३४, २३५,
 २३६
 सुन्दरलाल २०८
 सुन्दरसूरिचन्द्र १६७
 सुवन्धु १३९
 सुमतिकीर्ति १९४
 सुमतिरग २३६
 सुमतिविजय १३६
 सुमतिसूरि २५४
 सुमतिहस २५२
 सूत्रधारमण्डन ९९
 सूर २३०
 सूरज १८१
 सूरजीगाह १६५
 सूरत २१६
 सूरतमिश्र २०७, २०८
 सूरतदास ४१६
 सूरदास २३४

सूरदेव भट्ट (गोपीनाथसुत) १३६
 सूर्यकवि ६५, १३७
 सूर्यमल्ल १६४
 सूरविजय १६०
 सूरविप्र ८७
 सूरसागर १७६
 सेवक १६६
 सेवकसूर १६०
 सोमतिलक २७३
 सोमचन्द्र १२२
 सोमचन्द्र (रत्नशेखरशिष्य) १४४
 सोमतिलक १२१
 सोमनाथ १२१, २११, २२१
 सोमनाथ (नीलकण्ठमज) २३१
 सोमप्रभ १४६, १४७, २३८
 सोमप्रभाचार्य १४०
 सोमविलास २५२
 सोमसुन्दर २६०, २६५
 सोमसूरि १६५, २६६

ह

हनुमत्कवि १२८, १२९
 हरदयाल २२९
 हरदास १८६
 हर्षकीर्ति ८४, १४६, १८२, २३८,
 २३९
 हर्षकीर्तिसूरि ७४, ७९, ९२, १०९,
 १५७
 हर्षमुनि १८४
 हर्षचन्द्रगण १८४
 हर्षरुचि २४३
 हर्षविजय ६३
 हर्षसागर २४०
 हर्षसौभाग्य (सूर्यसौभाग्यशिष्य) ८५
 हरिकर्ण १०२

हरिकवीश्वर १४४
 हरिदत्त ८८
 हरिदत्तभट्ट ६१
 हरिदास २३१, २४१
 हरिनाथ ११६
 हरिभद्रसूरि २४७, २५४
 हरिभट्ट ६५, १०८, १७७
 हरिभद्रश्वेतभिक्षु ६४
 हरिभद्रसूरि ७२
 हरिमुनि (वज्रसेन शिष्य) १४४
 हरिराम २१०
 हरिराय ८, ६१
 हरिलाल २३५
 हरिवल्लभ ६३, २०९, २१९, २३१
 हरिहर ४०
 हलायुध २६
 हरिश्चन्द्र (आर्द्रदेवकायस्थ) १३०
 हस्तिरुचि १५९
 हारीत ऋषि ४६
 हितहरिवंशगोस्वामी ५७
 हिल्लाज ९४
 हीर २०६
 हीरकलश १६८
 हीररत्न १६२
 हेमकवि १९७
 हेमचन्द्र ७३, ८१, ८२, ८४, १३१,
 २४६, २६७
 हेमचन्द्र (रत्नशेखरशिष्य) १९६
 हेमचन्द्रसूरि ७६, २४३
 हेमचन्द्राचार्य ६५, ७२, ७९, ८०, १४०
 हेमप्रभसूरि १२०
 हेमरत्न १७१, १८३
 हेमराज २०९, २४२
 हेमहस ७१, २५७
 हेमहसगण ८५
 हेमाद्रि ४१

हेमानन्द १९४

हसकवि १७१

क्ष

क्षपणक ८४

क्षमाकल्याण ७५, १८२, २६२

क्षमाश्रवण २६८

क्षीरस्वामी ८३, ८४

क्षेमशर्मा १६०

क्षेमहस १२२

क्षेमेन्द्र १२३, १४४

त्र

त्रिमल्ल १५४, १५५, १५९

त्रिविक्रमाचार्य ११८

त्रैविध्यवृद्ध २१

ज्ञ

ज्ञानकवि १७९

ज्ञानचन्द १८३

ज्ञानभूषण १८४, २३९

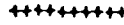
ज्ञानविमल ७६

ज्ञानराज ११९

ज्ञानविमल १६५, १७०

ज्ञानसागर १६६, १७३, १९६

ज्ञानेन्द्रसरस्वती ८०



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २

परिशिष्ट ३



इन्द्रगढ़ पोथीखाना

ग्रन्थ सूची



१९६० ई०

इन्द्रगढ़ का हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रह

राजस्थान सरकार के आदेश सं० २६१, दिनांक ४-८-५६ ई० के अनुसार इस विभाग की ओर से इन्द्रगढ़स्थित पोथीघाने का निरीक्षण किया गया। ग्रन्थों की अस्तव्यस्त स्थिति की जानकारी प्राप्त होने पर राज्य मन्कार से उक्त संग्रह को इस संस्थान के संरक्षण में प्राप्त कराने का प्रस्ताव किया गया। तदनन्तर राज्य के पत्र सं० एफ ६ (६२) एज्यू वी ५६, दिनांक २४-१०-५६ ई० के अनुसार अनुमति प्राप्त होने पर इन्द्रगढ़ से उक्त संग्रह को उक्त विभाग में प्राप्त कर लिया गया।

ठिकाना इन्द्रगढ़ (कोटा) का पोथीघाना विद्याप्रेमी महाराजा श्री गिब-सिंहजी के समय में 'सरस्वती भंडार' के नाम से स्थापित किया गया था। महाराजा गिबसिंह स्वयं अच्छे विद्वान्, मुकवि एवं विद्याप्रेमी थे। उनके द्वारा निर्गमन किये गये ही ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं जिनमें से कुछ उक्त संग्रह में भी प्राप्त हुए हैं। गिबसिंहजी के सुपुत्र महाराजा हाडा संग्रामसिंह अपने समय के एक आदर्श साहित्यकार नरेश हुये हैं। ये बड़े ही विद्यारसिक एवं मुकवि थे। अच्छे-अच्छे पठितों को पुरस्कृत करना एवं ग्रन्थरचना करते-कराते रहना इनका व्यसन था। उनके द्वारा निर्गमन सौ से भी अधिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं जिनमें से भी अधिकांश इन्होंने अपने ठिकाने में शिला-मुद्रणालय की व्यवस्था कर मुद्रित करा लिये थे, जो अब प्रायः अप्राप्त हैं। उक्त हाडा संग्रामसिंहजी के समय में इस संग्रह की दशा अवश्य अच्छी रही होगी, यह स्वतः अनुमेय है। इनके उत्तराधिकारी महाराजा सुमेरुसिंहजी के निःसंतान अवस्था में अकाल ही काल-कवलित हो जाने पर उक्त संग्रह की दुर्दशा होने लगी और ग्रन्थ भी इतस्ततः नष्टभ्रष्ट एवं जीर्ण-शीर्ण होने लगे। जिस समय इस संग्रह को देखा गया उस समय यह ठिकाने की सम्पत्ति के रूप में रखा हुआ था। बहुत से ग्रन्थ गढ़ में घूल में दबे हुये जीर्ण-शीर्ण, कीट-विद्ध, दीमक-वर्षादि से क्षतिग्रस्त अवस्था में पड़े थे जिन्हें प्राप्त करके इन विभाग के संग्रहालय में व्यवस्थित-रूप में संग्रहको के उपयोगार्थ रखा गया है। संप्रति इस संग्रह में २०६ हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं। इनमें बहुत से ग्रन्थ हाडा संग्रामसिंह एवं उनके पिता महाराजा गिबसिंहजी के रचे हुये हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छपे हुए उर्दू ग्रन्थ भी प्राप्त हुये हैं।

राजवशीय साहित्यकार हाडा संग्रामसिंह की ओर, जितना चाहिये उतना, अभी विद्वानों का ध्यान नहीं गया है। उक्त संग्रह की पुस्तकों की प्रस्तुत सूची विद्वानों एवं सर्वसाधारण की जानकारी और उपयोग के लिये प्रकाशित कराई जा रही है।

परिशिष्ट ३

इन्द्रगढ पोथीखाने से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१	श्रवणकारमञ्जरी	संग्रामसिंह	हिन्दी	रसालकार	३२	१९११	त्रिमल्लभट्टकृत श्रवणकार- मञ्जरी का भावानुवाद लि. क गुमानीसाह लि. स्था इन्द्रगढ
२	शालिहोत्र	म. हनुमत्कवि, टी. मोहन. दास माथुर चतुर्वेद चतुर्भुजदास	राजस्थानी	प्रायुर्वेद	१३२	१८९५	
३	हनुमत्शाटक, सटीक (रत्नमञ्जूषा टीका)		संस्कृत	काव्य	१३०	१८वीं श.	
४	मधुमालती चौपई		हिन्दी	"	२२२	१९वीं श.	कामदारी लिपि, आरम्भ में 'स्वप्नावलि के ५ पत्र हैं। पद्य संख्या १४५४ लि क वशीधर गुजराती
५	छन्द-कौस्तुभ	संग्रामसिंह	"	छन्द-शास्त्र	४३	१९३४	
६	सभाप्रकाश	हरिचरणदास	"	रसालकार	७६	१९२३	
७	पृथ्वीराजरासो (पद्मावती समय)	चन्द्रवरदायी	"	काव्य	७४	१८२९	लि क. चैतराम ब्राह्मण लि स्था. किला रण- स्तम्भधर
८	हिक्मतग्रन्थ		फारसी, हिन्दी	प्रायुर्वेद	९४	२०वीं श.	हिक्मत के फारसी भाषा के नुरखे नागरी लिपि में लिखे हैं

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २; पौराणिक-३, इन्द्रगढ पोथीखाना ग्रन्थ सूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
९	रूपकप्रभाकर	सप्रार्थसिंह	राजस्थानी	काव्य	२८	१९वीं श	
१०	वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी	"	८५	१९२२(?)	शिवसिंहनृतिकारिता
११	पुरुषपरीक्षा	विद्यापति	संस्कृत	कथा	८७	१९१२	आदि मे कुछ स्फुट
१२	नाममञ्जरी	नखवास	हिन्दी	कोप	५८	१९१४	कवित्त लिखे है। चारों कृतियों के कुल ५८ पत्र है।
१३	(क) हरिरस (ख) नीसाणी विवेकवार्ता	ईसरवास	राजस्थानी	काव्य			
१४	(ग) नीसाणी ईसरवास (घ) सूरवासके पद	वत्तभद्र	"	"			
१५	सिखल श्रु गार सटिप्पण रसतरंगिणी	शम्भुनाथ मिश्र	हिन्दी	"	१५	१९२३	श्रुतिम प्रशस्ति में गुलाब कवि (श्रलवरगसी) ने रयन् को प्रत्यकर्ता यताया है।
१६	रूप(क) रत्नावलि	सप्रार्थसिंह	राजस्थानी	काव्य	१२	२०वीं श	अपूर्ण, ति क. घाभाई
१७	रसाणव	सुणवेव (?)	हिन्दी	द्वार	५७	"	सम्पन्न, तियसिंहराज्ये
१८	केसोवासकी वाणी	केसोदास	राजस्थानी	सन्तमाहिरप	३-२५४	१८८८	ति क भवानोराम शिवसिंहराज्ये
१९	काव्यरसायन	देववत्त कवि	हिन्दी	रगलकार	७८	१९३१	ति क रामदत्तभ गुजराती
२०	(क) जनरजुहार		राजस्थानी	काव्य	१-४	१९२९	

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि काल	विशेष
२१	(ख) सुखमलरासो (ग) कृष्णबालचरित्र (घ) तारातन्बोलको विस्तार (च) कोटाके महाराजाओं की सूची पाण्डवयोधुचन्द्रिकासटीक (रसाल- बोधिनी)	मू. स्वरूपदास, टी. रसाल	राजस्थानी " " " " हिन्दी	काव्य " " इतिहास " " काव्य	४-७ ८-११ १२वां १३वां १४२	१६२६ " " " " " " १६१७	लि. क. वगसीराम
२२	(क) विज्ञानसागर (ख) गङ्गास्तुति (ग) श्रावचर्यनिधान (घ) भगतिचिन्तामणि (च) चौहतरतन खेत		राजस्थानी " " " " " "	वेदान्त स्तोत्र वेदान्त " " " "	१-११ ११-१३ १-६ ६-३२ ३२-५०	१६११ " " " " " "	
२३	पृथ्वीराजरासो	चन्द्रवरदायी	हिन्दी	काव्य	३१६	१६वीं श. १८३६	मुलिखित प्रति लि. क. खुशालपाण्डे
२४	(क) कवीर की साखी (ख) हरिवशपुराणभाषा		राजस्थानी " "	सन्तसाहित्य काव्य	१-४		
२५	(क) रामचरित (ख) सुदामाजी की चारहखडी	तुलसीदासदादूपन्यौ	" "	" "	१-५७ १-१५४	" " १६वीं श.	
२६	(क) कविफुलकल्पतरु (ख) सूरजमलय (पि) गल (ग) सभाप्रकाश (वशमोल्लासान्त)	चिन्तामणि सूरजमल (?) हरिचरणवास	हिन्दी " " " "	रसालकार छव शास्त्र रसालकार	१२४-१६२ १२-१८ १८-२२ १-२४	" " २०वीं श. " " १६२६	आद्य ११ पत्र अप्राम्त, अपूर्ण अपूर्ण लि. क. दीक्षित वृद्धिचन्द लि. स्या इन्द्रगढ़, अपूर्ण
	(घ) रघुनाथरूपक मरुधरदेशभाषा	कविमधु	राजस्थानी	काव्य	१-५	२०वीं श.	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
२७	(घ) पाण्डवशत्रुचन्द्रिका तृतीय- मयूखान्त (छ) कविप्रिया (ज) साहित्यान्व, षोडशस्कन्धान्त (क) इद्रकचमन (ख) राजनीति कवित्त (ग) स्फुटकवित्त सग्रह रामचरितमानस श्रयोध्याकाण्ड (क) गुप्तपरिचय (ख) ग्रन्थपरिचयश्रुटांग	केशवदास खालकवि देवीदास गो. तुलसीदास	हिन्दी	रसालकार " " काव्य नीति काव्य " सत्तसाहित्य "	१-१२ १२-३६ ३७-२५३ १-१४ १-३५ १-७ १३३ १-७५ १-६६	२०वीं श " " " " " १८६८ २०वीं श "	अपूर्ण अपूर्ण लि. क लाला खुमानसिंह 'श्रीगुरु वलदेवजी शिक्षा' व 'श्रीदुर्जनगुरु शिक्षा' सावि विभिन्न भाग हैं।
३०	फुटकर गजल	धनञ्जय	"	काव्य	८	"	लि. क. प दयाराम, गृहके
३१	(क) धनञ्जयकोप (नाममाला) द्वितीय परिच्छेदान्त	धनञ्जय	संस्कृत	कोप	४-१५	१७५१	के सावि य प्रत्तमें स्फुट कवित्तावि हैं तथा दोनो कृतियों के मध्य एप्रमव्य कवित्त सावि है।
३२	(ख) पृथ्वीराजरासो (नाहराय समय विहारीसतगई लालचन्द्रिका टीका	धन्वतरवायी कवि सात	हिन्दी	काव्य "	१-१३ ५४	१७६० १९वीं श	लि. क. चारण विहारीदास प्रत्तमें न्यस्तुति सावि है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
३३	गीतावली (कवितावली)	मोहनराय	हिन्दी	काव्य	३०६	१८८०	शिवसिंहजी द्वारा लिखाये गये गीत, लि क गुज-राती 'माघाता' लि स्था इन्द्रगढ
३४	रसमहाणव	सप्रामसिंह	"	रसालंकार	१०६	१६२६	लि. क गुजराती वशीधर अपूर्ण
३५	चन्द्रालोकटीका (रसमयूख)	सप्रामसिंह	राजस्थानी	"	३८	१६वीं श	
३६	भक्तिभूषण	"	"	योग (भक्ति)	४०	१६२७	
३७	(क) रागचमनचौतीस्यो (ख) श्रुगारतिलक (ग) हठप्रदीपिका (घ) स्फुट कवित्त (च) राधाष्टक (छ) सितारसिद्धान्त	स्वालकवि " " " सप्रामसिंह केशवदास	राजस्थानी हिन्दी " " " " " " संस्कृत	काव्य रसालंकार काव्य " " संगीत काव्य सन्तसाहित्य रसालंकार छन्द शास्त्र सन्तसाहित्य	१-१२ १-५ १-६ १-७ ८-११ १२-८१ १५५ २ १-१२ १३-२५	२०वीं श " " " " " " १६०६ २०वीं श.	
३८	रामचन्द्रिका	केशवदास	"	काव्य	१५५	"	अपूर्ण
३९	(क) चेतनसिद्धान्त (ख) कविपिया (चित्रालंकारप्रकरण) (ग) वृत्तरत्नाकर (द्वितियाध्यायान्त) (घ) सरयनामप्रकाश	सप्रामसिंह केशवदास केदारभट्ट कवीरदास	" " संस्कृत हिन्दी "	सन्तसाहित्य रसालंकार छन्द शास्त्र सन्तसाहित्य	२ १-१२ १३-२५ ८८	" १६०६ २०वीं श. "	"
४०	वृन्दावनमाधवकथा (चारों मिलन)	केशवदास	हिन्दी	कथा	१-२४	१८११	लि क लाला छेवीराम अपूर्ण
४१	स्वरोदय सटीक	केशवदास	संस्कृत, हिन्दी	ज्योतिष	१-१८	२०वीं श	
४२	(क) निशानो (विवेकविचार)	केशवदास	हिन्दी	काव्य	१-२०	"	

राजस्थान पुरातत्त्वव्यवस्था मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग २; परिशिष्ट ३, इन्द्रगढ पोखोखाना ग्रन्थ सूची]

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि समय	विवरण
	(ख) स्फुट साखियां (कवित्त आदि)	ईश्वरदास	हिन्दी	काव्य	२०-२५	२०वीं श	अन्त में गीत व भौरगीता हैं
	(ग) गुणनन्द्यास्तुति	सुन्दरदास	हिन्दी	"	२५-४८	"	
	(घ) ज्ञानसमुद्र		"	काव्य	४१-८१	"	
	(च) गजल, कवित्त, गीत आदि का संग्रह	गोरखनाथ	"	संस्तसाहित्य	८४-९६	"	अन्त के २२ पानों में कवीर, नामदेव, मोरो, सूर आदि की सातियां व बोहे हैं
	(छ) गुरुस्तुति, गोरखगणेशज्ञानगोष्ठी ग्रन्थ		राजस्थानी	काव्य	११८-११९		
	(ज) निसानी, केशवदास गायण चारण की		"	"	१२०-१२१	"	
	(झ) प्राणशांकली		"	"	१२१-१२२	"	
	(ट) शकावलि		"	"	१२३-१२४	"	
	(ठ) डू. गरसी जगडी को गीत		"	"	१२५-१३०	१८८२	आगे पृ १५४ तक विभिन्न पत्र आदि हैं तथा कुछ शीवधियों के योग हैं, लि. क. 'निहाल'
	(ड) वंजशूच्युपनिषद्	शंकराचार्य	संस्कृत	वेदान्त			र. का. १७८२
४३	बिहारीसतसई टीकाशय	कृष्णकवि	हिन्दी	काव्य	१२३-२७६	१८२४	र. का. १७८२
	(क) प्राणचन्द्रिका	हरिकवि	"	"	"	"	र. का. १८३४
	(ल) हरिप्रकाश		"	"	"	"	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
४४	(ग) अमरचन्द्रिका (क) सर्वस्वसावलिगरी वात (ख) पद्मा वीरमदेकी वात	वलदेव	हिन्दी	काव्य वार्ता	१२३-२७६ १-७२ १-६२	१६२४ २०वीं श. १६१४	र का. १८७३ लि क चि. नूरीलाल
४५	डिगल ग्रन्थ	सप्रामसिंह	"	"	२७	१६३०	
४६	कुलप्रकाश (हाड़ावश के खरडे)	स. जसवन्तसिंह	"	इतिहास	६४	२०वीं श	
४७	शु गारगुडो	सप्रामसिंह	"	रसालकार	७	१६३३	
४८	(क) भाषाभूषणटीका (ख) कविप्रियाव्याख्या (कविप्रिया-भरण, (ग) पिंगलकाव्यविमूषण	टी हरिचरणदास मू. केशवदास टी हरिचरणदास वक्की सुमनेश	हिन्दी " " "	" " " छन्दशास्त्र	४१ २४२ १०२	१६३० १६२६ १६१२	लि क वशीधरगुजराती " " लि स्था इन्द्रगढ़
४९	(घ) ध्रुवाष्टक नीलि (च) पद्यामृतरगिणी	विश्वनाथसिंहदेव भास्कर अग्निहोत्री	" संस्कृत	काव्य "	१०३वां १-२७	२०वीं श १६३०	लि क वशीधरगुजराती ब्राह्मण, लि स्था ग्राम सुनमानपुरा प्रति कीटविद्ध जीर्णशीर्ण
५०	(घ) काथयरसायन हरिरस बिहारीसतसई	देववत्त वारहठ ईसरदास बिहारीलाल	हिन्दी " "	रसालकार काव्य "	१-४ १-१२ ६८	२०वीं श " १७८६	आगे पत्र ८५वें तक आयु- वेव सबधी कुछ स्फुट योग हैं। लि स्था इन्द्रगढ़

क्रमसंख्या	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निर्गमकाल	विशेष
५१	शकुनावली		हिन्दी	ज्योतिष	६	२०वीं श	अन्तमें १८ पृथोंमें कुछ दोहे हैं
५२	(क) गीतगोविन्द (ख) भजन-सग्रह (ग) फुटकर कवित्त	जयदेव चन्द्रसती नीरा श्रादि	संस्कृत हिन्दी	काव्य	१-३८ १-५० १-३४	" " "	"
५३	रामचरितमानस (बाल, अयोध्या, लका व उत्तरकाण्डके स्फुट पत्र)	गो लसीवांस	"	"	१२४	१८८४	अपूर्ण, बाक के देवल २ पत्र (३३ श्लोक व ३२ पद्य हैं) उनी प्रसार अन्व्य काण्ड भी अपूर्ण है। बीच बीचमें पत्र नहीं हैं
५४	पाण्डवयज्ञोत्सुचन्द्रिकाटीका (बोधिनी)	रमास	"	"	१९३	१९१७	नि. ल. प्रकृत रामनाथ
५५	पुरुषोत्तमरासो (एकादशपरब्रह्म)	चन्द्रगिराणी	"	"	१३०	१८७१	नि. ल. लक्ष्मीराज भगत
५६	भावभूषण	प्रमदगान्धिविह	"	रमानन्दार	२३	१९०३	
५७	रित्त्वहमैल (४२वां प्रश्न)	मधुसूदनमिश्र	राजस्थानी	काव्य	१००	१९२६	नि. ल. रामानन्दप्रसाद, इटावा
५८	(क) रमनाज गद्यक (ख) शार्ङ्गक्रीड	सू. भगिराम, श्री लिंगराज गुरुप	हिन्दी	रमानन्दार	६३	२०वीं श.	
५९	(क) श्यामिन्दुश्रित्त (ख) कवीश्रीनी गाली (ग) नामदेवचौरी गाली (घ) प्रभुश्रित्त	राजोर नामदेव श्यामोपास	" " " "	वापुर्वर काव्य महाकाव्य काव्य	७७ १-१० १-१२१ १२१-१७५ १७५-१९९	" १-६८ " " "	पत्रों में २५ पृथोंमें 'नाम' श्रित्तों व 'रामचरित्त' की 'मन्व्यवहिन' हैं नि. ल. बालराम भूषण

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(च) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	हिन्दी	काव्य	१६६-२१४	१८६८	ग्रन्थमें ८ पत्रोंमें नाम महिमा व दासजीकी नाम महिमा है। लि क ब्राह्मण भुवाना।
	(छ) भरतचरित्र	"	"	"	२१४-२२१	"	"
	(ज) राजा मोहमदकी कथा	"	"	"	२२१-२२६	"	"
	(झ) सुन्दरदासजीके सर्वथा	सुन्दरदास	"	"	२२६-३१७	"	"
६०	(क) फुटकर कवित्त	"	"	"	१-३५	२०वीं श.	"
	(ख) हाथीके लक्षण	"	"	ज्यौतिष	३६-४७	"	"
	(ग) रागमाला	"	"	संगीत	१-१६	"	"
६१	नखशिखवर्णन व कोकसार	आनन्दकवि	"	कामशास्त्र	२६	१६०७	लि क रघुनाथसिंह
६२	(क) सुखसवाद	"	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	१-४६	२०वीं श	ग्रन्थमें पत्र सं. ५० तक जनगोपाल आदिके भजन हैं। अपूर्ण कि क रघुनाथसिंह, कीटवित्त
	(ल) गणेशगोरखसवाद	"	"	"	१-१६	"	"
६३	सतसई (डिगल)	संग्रामसिंह	"	काव्य	६३	१६३४	"
	(व) गीतमही (६८० गीतोका संग्रह)	"	"	"	२२८	२०वीं श.	"
६४	भगवद्गीता का अनुवाद	"	हिन्दी (ब्रज)	वेदान्त	१८८	१६००	लि क. ब्राह्मण भुवाना
६५	(क) विवेकविचार	शिवसिंह	हिन्दी	"	४०	१८६७	लि क राव जुहार 'मलाप (महताब) पुत्र,
६६	(ख) फुटकर रागसंग्रह	"	"	संगीत	२०	"	"

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढ़पोथीखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
६७	विवेकवार्ता	केशवदास गाडण	हिन्दी		२१०		जीर्णशीर्ण, कीटविह, अन्त में १० पत्रों में स्फुट श्लोक, पद्य व राग हैं
६८	रघुनाथरूपक	कवि मनसाराम (कविमछ)	राजस्थानी	काव्य	८८	१९२५	लि क ब्राह्मण रामनाथ
६९	यवनछंद (फारसी छंदों का वर्णन)	सभामसिंह	हिन्दी	"	२८	२०वीं श	'गणपतिचरणसरोजरज, घर हाडा सभाम । यवन छव रचना रचत, इन्द्र-दुर्ग निजधाम ।'
७०	संगीतयोनिधि (७९वां ग्रन्थ)	"	"	संगीत	११	१९३३	रामरामग्रहचन्द्रमा, वरश हरियाली रत्न । इन्द्रदुर्ग निजधाम मे, ये तो ग्रथ लखैत । गुनसन्तियोग्रन्थ जो, यह रचवो सभाम, यह सुधार सुध कीजियो, जो सुकवि गुणधाम ।
७१	(क) सुखसवाद	"	"	सन्तसाहित्य	२९	१८८४	लि क 'रामरतन', अन्त में ६ पत्रों में नक्षत्र राशि व वायुविचार आदि हैं । लि क. रामरतन
	(ख) सन्तदासजीकी साखी	सन्तदास	"	"	१	"	"
	(ग) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	"	"	२-३२	"	"
	(घ) ध्रुवचरित्र	"	"	"	३२-६३	"	"
	(च) फटकर ब्रह्मा	अहमद	"	"	२	"	"
	(छ) ठीकरनाथजीकी भावना	"	"	"	२	"	"
७२	छन्देन्द्रकल्याणकरपद्रुम	कल्याणदास भटनागर	"	छन्द शास्त्र	५५	१९वीं श.	कीटविह, अपूर्ण, जीर्णशीर्ण

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
७३	कोदण्डचन्द्रिका	सम्राजसिंह	हिन्दी	प्रकीर्ण	४७	१९वीं श	जीर्ण
७४	दुर्घसिंहचरित्र	वशभास्करगत	"	काव्य	१६०	२०वीं श	अपूर्ण
७५	नवशिलखवर्णन	रसिकप्रियात्तर्गत (केशवदास)	"	रसालंकार	१०	१८६७	लि. क. चि. नन्दराम लि. स्था. 'करवाड'
७६	गुरुपरीक्षा		"	काव्य	३८	२०वीं श	अपूर्ण
७७	ढोलामारुरी वार्ता	राजस्थानी	राजस्थानी	वार्ता	१३४	"	"
७८	सर्वेत्ससावलिगारी वात (क) भक्तिमूर्तिप्रश्नोत्तरी		"	"	८६	"	"
	(ख) तत्त्वसारगीता		हिन्दी	वेदान्त	१-७०	१९११	
	(ग) वर्णपभाकर		राजस्थानी	"	७०-८७	"	
	(घ) भक्तिपर्यार्य		"	धर्मशास्त्र	८७-१६०	"	
	(च) शिरोमणिसार		"	भक्ति(योग)	१-१३	"	लि. क. ब्राह्मण चि चम्पालाल
	(छ) सहजानन्दभक्ति		"	वेदान्त	१३-२२	"	लि. स्था. सेवागनी
८०	कृष्णरविमणीरीवेली सटीक	राठोड पृथ्वीराज	"	भक्ति(योग)	३२-५५	"	मध्य, चर्मण्वतीतडे
८१	वशभास्कर सटीक		"	काव्य	८७	१८१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
८२	(क) चाणक्यवर्षण (ख) नीतिशतक (ग) वृहज्जातक	चाणक्य भतृहरि	संस्कृत	इतिहास नीति	११७	२०वीं श	अपूर्ण
			"	"	१-२०	१८६४	
			"	"	१-१६	"	
			"	ज्योतिष	१-११८	"	अन्त में तीन पत्रों में नव- ग्रहदान लिखे हैं

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषणमन्दिर—हस्तलिखितग्रंथसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढपोलीखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
८३	नरसीजीका माहेरा		राजस्थानी	काव्य	४६	२०वीं श	अपूर्ण
८४	कर्मविपाक		संस्कृत, हिन्दी	कर्मकाण्ड	६	"	"
८५	पातशाहीका फिस्सा		हिन्दी	कथा	१२२	१६वीं श	"
८६	हाडोंके प्रशास्तिगीतके स्फुटपत्र		"	काव्य	६३	२०वीं श	"
८७	स्फुटकीर्तनकवित्तसंग्रह		"	"	५०	"	"
८८	हरिदासजीके पत्र	हरिदास	"	सतसत्साहित्य	४३	१८०७	लि. क. जोशी जीवराज गुर्जरगौड, पृष्ठ ४१ व ४२ वें में देवाचारणके कवित्त लिखे हैं।
८९	गजलचन्द्रिका	सप्रामसिंह	"	काव्य	४१	१६२८	कवित्त सृष्ट्या ११६ से ७७५ तक
९०	अकारादिक्रमसे कवित्तसंग्रह		"	"	५८	१६वीं श	
९१	रसभक्तिपथ	शिवदत्त	"	योग(भक्ति)	१२	१६३५	अपूर्ण
९२	लीलावतीगणितभाषा		"	ज्योतिष	१४	१६वीं श	पृष्ठ सं. १० पर नक्षत्र-स्वरूपचक्र एवं पत्र ६ तथा १० के पृष्ठोंपर दोहा आदि लिखे हैं।
९३	ताराविलास सटीक	विद्यानाथ	संस्कृत, हिन्दी	"	१-६	"	
९४	(क) स्वरोदय (ख) नामसार	चरणदास फतेहसिंह राठौड	हिन्दी	"	१-१३	"	
९५	(क) स्वरोदय (ख) तिथिकल्पद्रुम		"	काव्य	१४-५४	"	
९६	(क) सुमेलीपञ्चाङ्ग	सप्रामसिंह रघुयामलगत	"	ज्योतिष	१-१६	"	
९६			संस्कृत	"	१६-२४	"	
९६				तन्त्र	समग्र १३६	१८२६	लि. क. आचार्य नगाव-विन्ध्य(?) लि. स्या. सागोवा

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र सख्या	लिपि काल	विशेष
	(ख) रजःस्वलास्तोत्र (ग) शिवमहिम्न स्तोत्रादि	पुष्पवन्ताचार्य	संस्कृत	स्तोत्र	समग्र १३६	१८२६	उच्छिष्टगणपति व बटुक भैरवस्तवराज आदि भी हैं। अपूर्ण लि क चि. रामरतन ब्राह्मण
६७	रामाज्ञा	गो तुलसीदास	हिन्दी	काव्य	२१	१६१८	
६८	ज्योतिषग्रन्थ		"	ज्योतिष	४१	१६०७	
६९	फुटकरवार्ता (ज्योतिष ग्रायुर्वेद केयोग व मौकल विद्या)		"	प्रकीर्ण	१७	२०वीं श	
१००	स्फुटवार्ता (लोहगुणवर्णन आदि)		"	"	१०	"	प्रतिमे तीन खुले पत्र हैं जिनमें लोह परीक्षा आदि लिखित है।
१०१	रमलोत्कर्ष	चित्तामणिपंडित	संस्कृत	ज्योतिष	२७	१८६८	
१०२	छायापुनर्विधि और स्वरोदय (कबीरसाहबकी)		राजस्थानी	"	१४	१६वीं श	
१०३	(क) ज्योतिषसार (लघुजात-कानुसार)		"	"	१-३१	१६१०	लि. क द्वारका व्यास, आगे पत्र स ३६ तक ज्योतिष एव जैनशास्त्र सम्बन्धी कुछ चक्र है।
	(ख) मेघमाला (ग) चमत्कारचित्तामणि		"	"	३६-४० ४०-६१	" "	
१०४	मुभापितपद्धति	शाहजंघर, वामोदरसूनु	संस्कृत	सुभाषित	२७	२०वीं श	अपूर्ण, हम्सीरभूषतिचौहान राज्यसभासदस्यराघव-नाथन पौत्रः (ग्र. क.)

[इन्द्रगढ़पोथीखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि काल	विशेष
	राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषणसन्दिग्ध—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढ़पोथीखानाग्रन्थसूची]						
१०५	जुवदा रमलभाषा, सोदाहरण	सग्रामसिंह	राजस्थानी	ज्योतिष	१७	१८७०	लि. क. ब्राह्मणानन्दी, मुजुराठी प्रथम पत्र अप्राप्त आद्य १० पत्र अप्राप्त
१०६	न्ययपंचपञ्चाशिका	प्याराम	हिन्दी	रसालकार काव्य	३१	१९३१	
१०७	किष्किन्धाकाण्ड छप्पय		हिन्दी	कथा (वार्ता)	२१	२०वीं श.	
१०८	विक्रमभूषकी कथा		राजस्थानी	धर्मशास्त्र	८१	१९वीं श.	कामदारीलिपि
१०९	सवसरीफल		हिन्दी	काव्य	१०८	१९३४	लि. कि. ब्रजवल्लभ लि. स्था. माधवपुर
११०	सुन्दरपदसुकुतावली	सुन्दर	हिन्दी		१०	१८८६	लि. क. भुवानी फारसी लिपि
१११	सेऊसमन्तीकी परची	अनन्तदास	"	"	१२	२०वीं श.	"
११२	राशियोगी किताब		उर्दू	ज्योतिष	१६८	"	मुद्रित फारसी लिपि
११३	दीवान मोजीज		"	काव्य	५५	"	"
११४	गुचापरागकी किताब		"	प्रकीर्ण	१२०	"	"
११५	किताब खलायक मुहम्मदरफी उकदीन		"	"	७४	"	"
११६	किताब रमल		"	ज्योतिष	१४	"	इस पुस्तकमें ताजमहल निर्माणका व्यौरा दिया गया है। फारसी लिपिमें फारसी लिपिमें
११७	किताब ताजवीबीका रौजा		"	प्रकीर्ण	१३७	"	मुद्रित " जीर्णोर्ण अपूर्ण
११८	याफता		हिन्दी	इतिहास	८८३	"	"
११९	वाकैराजपुताना		हिन्दी	"	१४६	"	"
१२०	वशाभास्कर		हिन्दी	काव्य	६	"	मुद्रित
१२१	विनयपत्रिका		हिन्दी	धर्मशास्त्र	८६६से१०३२	"	१९३४
१२२	मर्यादापरिपाटीसमाचार	मो. तुलसीदास	संस्कृत, हिन्दी				

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१२३	प्रेमरत्नाकर	राजकुमार, भैया रतनपाल	हिन्दी	काव्य	३३	१७४१	लि. क—स्वामी खेमदास आगे १२ पत्रोंमें स्फुट कवित्त आदि हैं। आद्य ५ पत्र अप्राप्त। अपूर्ण
१२४	कबीरजीकी साखी	कबीर	"	"	२०२	२०वीं श	
१२५	विरवप्रकाश	उमेवसिंह	"	"	२७	१६१६	
१२६	भार्यपण, (३६वां ग्रन्थ) (यात्रा- निर्माणपर्यन्त व स्टेजोन्विके नाम)	संभ्रामसिंह	"	प्रकीर्ण	१४	२०वीं श	
१२७	आदिनिर्देश	नकुल	"	आयुर्वेद	५८	१८६०	
१२८	भोग भोग आनन्द	संभ्रामसिंह	"	काव्य	१६	१६३५	लि क वजीघर गुजराती- ज्ञान
१२९	भोग भोग आनन्द	संभ्रामसिंह	"	वेदान्त	२७	१६१३	आद्य दो पत्र अप्राप्त अपूर्ण
१३०	गुलाबकवि	गुलाबकवि	"	"	११	"	
१३१	जगन्नाथकवि	जगन्नाथकवि	"	रसालकार	१४	१६६२	
१३२	गुराबकवि	गुराबकवि	"	काव्य	१४-१६	"	
१३३	संभ्रामसिंह	संभ्रामसिंह	"	"	१७-१६	"	
१३४	शानर	"	"	रसालकार	३	१६१०	
१३५	इन्द्रजाट	"	"	छन्द.शास्त्र	३	"	
१३६	हुरिलीतामूल	शिवश्रीधर	"	रसालकार	५	"	
१३७	(क) रसशृङ्गार (ख) पावसपञ्चाशिका	"	"	वेदान्त	१-५३	२०वीं श.	छन्द सख्या ५२२
		"	"	"	१-२५	"	
		"	"	भक्ति(योग)	२५-३२	"	
		"	"		३२-४०	"	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१३३	(च) प्रेमप्रभा	शिवसिंह	हिन्दी	काव्य	४०-४७	२०वीं श	
१३४	(ख) मुक्तिमंगल	"	"	वेदान्त	४७-५५	"	
१३५	(ज) स्नेहसार	"	"	काव्य	५५-५८	"	
१३६	(झ) ग्रन्थसंक्रान्ति	"	"	"	५८-६७	"	
१३७	(ट) स्फुटकवित्त	"	"	"	६७-७८	"	
१३८	भट्टहरिचरित	"	"	सत्ससाहित्य	४०	"	
१३९	रामचरित	सेनापति	"	काव्य	१८	"	स्फुटकवित्त (प्रारम्भिक ४ पत्रोमे)
१४०	सप्रामसिन्धु ग्रन्थव्याख्या (व्ययार्थ-नौक्तिकमाला)	सप्रामसिंह	"	"	४७	१६०८	
१४१	रामचरितमानस (बालकाण्ड)	गो तुलसीदास	"	"	११७	२०वीं श	अपूर्ण
१४२	पावसषोडशी (५०वां ग्रन्थ)	सप्रामसिंह	"	"	१७	१६२६	
१४३	भूगोलप्रश्नोत्तरी (१६वां ग्रन्थ)	"	"	"	१५	१६३१	
१४४	रससिरोमणि	महाराज रामसिंहजी छत्रसिंहजीसुत, नरवर-निवासी	"	रसालकार	३७	१८३०	लि क-लक्ष्मण धामाई लि स्या.-बडीवा
१४५	विहारीसतसई, सटीक	विहारीलाल	"	काव्य	१८४	१८५६	
१४६	महाभारत उद्योगपर्व, ९ अध्याय, पद्यानुवाच	कृष्णकवि	"	"	८१	१६२७	र. का १७६२ आद्य तीन-पत्र अप्राप्त
१४७	(क) पूर्णबोधप्रकाश ज्ञानप्रकरण	पूर्णदास (गोवर्धनाश्रम-वासिधेमप्रतापशिष्य)	"	वेदान्त	३१८	१७३१	लि. स्या -बूढीपतिभाव-सिंह राज्ये
१४८	(ख) " भक्तिभक्तसप्रवाय	"	"	भक्ति (योग)	३२८	"	र स्या. " "

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१४३	(क) व्रजचरित		हिन्दी	काव्य	१-४	१८२६	र. का-१७८१
	(ख) श्रमरलोकप्रखण्डधामवर्णन-लीला		"	"	४-७	"	
	(ग) धर्मजहाज		"	"	७-१७	"	
	(घ) गुरुचलासवाद श्रुतायोग		"	योग	१७-३७	"	
	(च) पञ्चोपनिषद्, भाषा		"	वेदान्त	३७-४५	"	
	(छ) ज्ञानस्वरोचय		"	"	४५-५६	"	
	(ज) ब्रह्मज्ञानसागर		"	"	५६-६४	"	
	(झ) भक्तिपदार्थ		"	भक्ति योग	६४-७५	"	
	(ट) चारयुगवर्णन कुण्डलिया		"	काव्य	७५वाँ	"	
	(ठ) नायिका अंगवर्णनादि		"	वेदान्त	७६-१००	"	
	(ड) चौबीसगुरुपरीक्षा		"	"	१००-११५	"	
	(ढ) मोहछुडावनअंगवर्णन		"	"	११५-१२४	"	
	(त) सन्वेहासर		"	"	१२४-१२७	"	
	(थ) शब्दोके मगलाचरणवृहा		"	"	१२७-१७५	"	
	(द) स्फुट फवित्त छन्द आदि		"	काव्य	१७५-१८१	"	
१४४	शनिस्वरकथा		"	कथा	१८	१८१४	अपूर्ण
१४५	इन्द्रजाल		"	ज्योतिष	७	१६वीं श	लि क-मनीराम
१४६	हरिलीतामृत		संस्कृत	तत्र	१६	१८८८	प्रथमपत्र असाप्त
१४७	(क) रसभृङ्गार		हिन्दी	काव्य	३	१९२०	
	(ख) पावसपञ्चाशिका		"	"	१-७	"	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१४८	(ग) भूपाल (दूसरी) आदि	सग्रामसिंह	हिन्दी	काव्य	७-१०	१८२०	
	(घ) शृङ्गाररत्न	"	"	"	१०-१३	"	
	(च) अलङ्कारमञ्जरी	"	"	रसालंकार	१-११	१८२१	२ का-१८११
	(छ) पावसपोडकी	"	"	काव्य	१-८	"	अपूर्ण
१४९	साहित्यबोध (काव्यप्रकाशानुयाय)	सिद्धान्त पञ्चानन-	"	रसालंकार	११	१८वीं श.	लि क-लक्ष्मण, गगारामा-
	परिभाषाप्रकरण	भट्टाचार्य	संस्कृत	न्याय दर्शन	७	१७१८	रमज, लि स्या काशी
१५०	रामस्त्वरोज	सतकुमारसहितोक्त	"	स्तोत्र	१२	१८४७	
१५१	शिवशतनामस्तोत्र	"	"	"	३	१८वीं श.	अपूर्ण
१५२	शृङ्गारप्रश्नोत्तरी, भाषा (६८वां ग्रन्थ)	सग्रामसिंह	हिन्दी	रसालंकार	३१	१८३१	
१५३	अलङ्कारमञ्जरी	त्रिमल्ल, वल्लभभट्टपुर	"	"	१३	१८वीं श.	प्रथम पत्र यमपाल
१५४	वाजिचन्द्रिका (६३वां ग्रन्थ)	सग्रामसिंह	"	ज्योतिष	२१	१८३१	साय नो पर यमपाल,
१५५	आरामदर्पण (७४वां ग्रन्थ)	"	राजस्थानी	प्रतीर्ण	१८	१८३४	लि क-रामनाथ
१५६	स्फुट कवित	पषाकरभट्ट	हिन्दी	काव्य	१५	२०वीं श.	एक कवित्त वेवोका भी हे
१५७	(क) ध्रुवचरित	परमानन्द	"	"	१-१२	१७६१	लि क-यत्तराम
	(ग) मंगलाष्टक	कवि कालिदास	संस्कृत	"	१०-१७	"	
	(ग) गणेशजीकी स्तुति	"	हिन्दी	स्तोत्र	१७-२३	"	
	(घ) गोरवनायजीकी स्तुति	"	"	"	२३-३०	"	
	(च) भोगलपुराण	"	"	"	३०-४०	"	
	(घ) रामनिन्दन	"	"	पुराण(न्याय)	४०-४८	"	
		"	"	गणीत	४०-४८	"	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१५८	(ज) धीतमजीकी जकडी	धीतसराम	हिन्दी	काव्य	४१-५१	१७९१	
१५९	(झ) कायस्थद्वादशनाम टीका	"	"	कथा (पुराण)	५१-५७	"	
१६०	रसचन्द्रोदय	सभार्निपह	"	रसालकार	३५	१९१९	
१६१	रसचन्द्रोदय	"	"	"	२०	१९१०	
१६२	राजयोग भाषा	राजा प्रथ्वीचन्द्र अन्वय	"	वेदान्त	४	१९२१	लि क-श्रीलाल
१६३	बहुलाष्टमी कथा			कथा	५	२०वीं श.	
१६४	लीवरा बालेसराकी वारता		राजस्थानी	वार्ता(कथा)	१७	१८५४	लि.क-घासीराम ज्योतिषी (डाकोत) लि स्था. गेणोली (बूदी) प्रथमपत्र अप्राप्त
१६५	पद्मकौश राजस्थानीटीकासहित		संस्कृत	ज्योतिष	११	१९वीं श	
१६६	(क) मासविचार (ज्येष्ठमाससे)		राजस्थानी	"	१४-१६	१९०५	कीटविद्व
१६७	(ख) छायापुरुषविचार		राजस्थानी	"	१६-१७	"	
१६८	(ग) कबीरजीके रेखता		"	सन्तसाहित्य	१८-२५	"	
१६९	(घ) श्रातमप्रकाश	धर्मदास	हिन्दी	"	२५-३०	"	
१७०	(च) बालबोधिनी चौपाई		"	"	३८-४६	"	
१७१	(छ) हरिवोल		"	"	४६-४९	"	
१७२	(ज) शब्द	कबीर	"	"	४९-५०	"	
१७३	(झ) कवीराष्टक		"	"	५१-५२	"	
१७४	(ट) अखण्डपरब्रह्मकी स्तुति	धर्मदास	"	"	५२-५३	"	
१७५	(ड) श्रातमवान श्रास्ती		"	"	५३वां	"	
१७६	(ण) सन्ध्यासरको फल		"	ज्योतिष	५४वां	"	

राजस्थान पुरातत्त्वविशेषण मंदिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २, परिशिष्ट-३, इन्द्रगढपोथीराजाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१६५	(ड) गुप्तज्ञानगुवरी	कवीर	हिन्दी	सतसाहित्य	५५-५६	१६०५	
१६६	(त) रामरक्षा	रामानन्द	संस्कृत, हिन्दी	"	५७-५८	"	प्रपूर्ण
१६७	(थ) मूलपात्रीग्रन्थ विवेकमार्तण्ड	जालन्धरनाथ	संस्कृत	वेवात्	५८-६१	२०वीं श.	"
१६८	शुद्धारसिन्धु (नवम कल्लोल)	भगवानदास	हिन्दी	रसालकार	१४	"	
१६९	(क) निन्दान्तबोध	जसवंतसिंह	"	वेवात्	५-३२	१८१०	श्राव्य ४ पत्र अप्राप्त
१७०	(ख) सिद्धान्तसार	"	"	"	१-२२	"	
१७१	(ग) गोरक्षवातक	"	संस्कृत	योग	२३-३०	"	ति क-विश्वनाथ
१७२	(घ) चौबीस श्रवतार	गोविन्दराम वडवा, कोटा-	"	योग	३१था	"	
१७३	चीहाणोंकी चवाचली	निवासीकी पुस्तकसे	हिन्दी	प्रकीर्ण	१२	१८८३	
१७४	गीतबही	धेला चारण	"	इतिहास	१५	१९वीं श.	
१७५	गीतमध्याक्षरी	शिवसिंह	"	काव्य	१	"	गरवा
१७६	(क) श्रावित्यकृतमहात्म्य		संस्कृत	पुराण (कथा)	१-७	"	
१७७	(ख) नक्षत्रफल		"	ज्योतिष	८-३३	"	
१७८	मानसवीविका ध्याख्या		हिन्दी	काव्य	५२	"	
१७९	पञ्चाङ्ग		संस्कृत	ज्योतिष	१३	१६१६	
१८०	नृमंजीकी कथा (हिन्दी)	पद्मपुराणगत	हिन्दी	कथा (पुराण)	१४	२०वीं श.	
१८१	ध्यानमन्त्र		संस्कृत	रसालकार	१	"	
१८२	भमाल	गोरषा उगी	राजस्थानी	काव्य	२१	"	
१८३	(ग) फयिस्तशतक	श्रीकृष्णचन्द (मत्तारजा- मिराज)	हिन्दी	"	१-२८	"	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ख) दोहाशतक	मोहनकवि	हिन्दी	काव्य	१-१४	२०वीं श	
	(ग) स्फुटकवित्त		"	"	१-६	"	
	(घ) विष्णुपद		"	"	१-४०	"	
	(च) मोहननामपचीसी		"	"	१-२	"	
	(छ) दोहासग्रह		"	"	१-१२	"	
१७८	(क) शृंगारचमत्	सग्रामसिंह	"	"	१-६	१९३२	लि. क-रामवल्लभ चौबे गुजराती, लि. स्था-इन्द्रगढ़
	(ख) प्रेमचमत्	"	"	"	६-११	"	"
	(ग) रागसयोग	"	"	संगीत	१२-२३	"	"
	(घ) वृष्टिकत्तानिधि (६८वां शय)	"	"	रसालंकार	२४-२७	"	"
१७९	(क) छन्दशास्त्र		संस्कृत	छन्दशास्त्र	१-१०	२०वीं श	अपूर्ण
	(ख) वृत्तरत्नाकरटीका	समयसुन्दरराणि	"	"	१०-२०	"	
१८०	गणेशमहिमाकथा		हिन्दी	कथा	५१	१७८५	
१८१	सग्रामसिन्धु	सग्रामसिंह	"	रसालंकार	१-९	१९०८	
१८२	गीतापरिचयटीका	शिवसिंह (महाराजा)	"	वेदान्त	८-११६	२०वीं श.	लि. क-व्यास कालूराम इसमें निम्नलिखित सूची के अनुसार विविध गीतो का संकलन है।
१८३	चारणगीतसग्रह—		राजस्थानी	काव्य	३४४	"	
	१ कवित्त हींगळाजकी			कवित्तसंख्या?	१		
	२ कवित्त बीजाशाणिकी			२	१		
	३ गीत नरसिगजीका			२५	३		

क्रमांक	ग्रन्थसूची	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
४	बुहा सीरदुण			१	४		
५	कवित राढ (ठ)			२६	४		
६	गीत जाति वीवल			३०	४		
७	कवित यत्रतध्वनि			४७	५		
८	नशाणीमीराद्यलतन (त) जीकी			५४	६		
९	गीत हामाजीकी			१	७		
१०	गीत चतप्रळोळ हतुमत-जीकी			५१	८		
११	गीत गोल डोढो देवजीकी			५३	८-९		
१२	गीतजीगारसा (रस)			५६	९		
१३	कवित् चवाणकी उत्पत्ती			५६	१०		
१४	गीत गोग (गोगा) चहवाण			५८	१०		
१५	गीत राय कोलणकी			६३	११		
१६	गीत हाळजी की			६४	११		
१७	गीत रों (गे) वाळजीकी			६५	११-१२		
१८	गीत वरसळ			६५	१२		
१९	गीत लाताहाडाकी			६७	१२		
२०	गीत भाषो पशुकाळकी			६८	१३		
२१	गीत राय शरजगीकी			६८	१३		
२२	कवित राय सुरजनकी			६९	१३		
२३	गीत रायसुरजमलगीकी			७१-७९	१३-१६		

५६वें गीत का प्रतन नया मिलता है।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२४	नसाणी राव सुरजनकी			८०	१६-१७		
२५	नीसाणी राव दूदा भोजकी			८१	१७		
२६	नीसाणी दूदाजीकी			८२-८३	१७		
२७	गीत दूदाजीकी			८३-८७	१८-१९		
२८	राव भोजकी गीत			८८-९८	१९-२३		
२९	गीत पाडगति			९९-१५८	२३-४०		
३०	राव भावसिंघजीका गीत			१५९-१६७	४०		
३१	गीत भगतसिंघजीकी			१६८-१७८	४२-४६		
३२	राव अमेद(उमेद) सिंघजीका गीत			१७९-१८३	४६-४९		
३३	घ(जोध)सिंघजी लार सती होई जीकी			१८४-१९१	४९-५३		
३४	गीत राव छत्रसालजीकी			१९२वा	५३वां		
३५	गीत म्हाराजा ईंद्रसालजीकी			१९३-१९९	५३-५५		
३६	गीत म्हाराजा सरदारसौंघ-जीकी			२००-२११	५५-५८		
३७	गीत म्हाराजा मेघसिंघजीकी			२१२-२२०	५८-६०		
३८	गीत म्हाराजा छीत्रसिंघजीका (गीत चोसरो)			२२१-२६८	६०-७५		
३९	गीत म्हाराजा देवसिंघजीकी			२६९वा	७५वा		
४०	गीत देलियो साणोर			२७०	७५-७६		
४१	गीत नीकुटवंध			२७१	७६-७७		

इसमें इन्द्रगढमहाराजाकी प्रामाणिक है

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
४२	रूपका महाराजाजी भगत- रामजी का कवित			२७३-२७६	७७-७९		भगतेसनरेशजी प्रशस्ति है
४३	गीत मुक्ताग्रह			२७७-२७८	७९		"
४४	गीत चौसरा			२७९	७९-८०		
४५	गीत त्रिकुटवध			२८०-३०४	८०-९०		
४६	भालडी			३०५-३६२	९०-१०४		इसमें रकुटलवित्त भी है।
४७	साखी महाराजा सरदारसिध- जीकी फही			३६३	१०४		
४८	रूपक कवयत्री सुतमानसिधजी का गीत पंचसर			३६४-३६५	१०४-१०५		
४९	गीत मुक्ताग्रह			३६६-३६७	१०५-१०६		सुतमानसिंह प्रशस्ति है।
५०	गीत सुपतरो			३६८-३७८	१०६-१११		"
५१	गीत त्रिकुटवध			३७९-३९५	१११-११७		"
५२	गीत (कु)वरजी अमानसिध- जीका			३९६-३९८	११७वां		
५३	गीत म(प्र)तापसिधजीको			३९९-४०६	११७-१२०		पलसाया मंत्र पुस्तकमें केवल १ ही रो मई है। पुन ४०६ से प्रारम्भ है।
५४	गीत राव श्रीजीतसिधको			१	१२०-१२५		
५५	रूपक महाराजा अमरसिध- जीका गीत बेलीबी			४०४-४०८	१२१-१२४		
५६	गीत महाराजा फत्तीरसिध- जीकी			४०९-४१०	१२५-१२५		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
५७	माहाराजा जोषीरामजीका			४११-४१३	१२५-१२६		
५८	गीत महाराजा सालमसौंघ- जीका			४१४-४१६	१२६-१२७		
५९	गीत घासीरामजीका			४१७-४१८	१२७		
६०	गीत महाराज प्रतापसिंघजीको			४१९	१२७-१२८		
६१	गीत दलेलसौंघजीको			४२०	१२८		
६२	गीत महाराजा मरजादसिंघ- जीको			४२१-४२३	१२८-१२९		
६३	गीत कँवर फतेसौंघजी सुजाण- सौंघजी ईब्रसालोतको			४२४-४२५	१२९-१३०		
६४	गीत बरीसालोवताका			४२६-४३६	१३०-१३४		
६५	कवित् रूपजी माहासीगोत			४३७	१३४		
६६	साधोसीघजीको			४३८	१३४		
६७	गीत मुकुनसिंघजीका सावभुडो			४३९-४४६	१३४-१३६		
६८	श्रीजी कसोरसौंघजीका गीत			४४७-४५१	१३६-१३८		
६९	गीत रामसौंघजीका			४५२-४५५	१३८-१३९		
७०	गीत भोव(ब) सौंघजीका			४५६-४६५	१४०-१४३		
७१	गीत स्यामसौंघजीका			४६६	१४३-१४४		
७२	गीत डुरजलसाल(डुरजनसाल) जी का			४६७-४७८	१४४-१४८		
७३	गीत जंराम घोयास (व्याम)			४७८-४८०	१४८-१४९		

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषणमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढपोखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
७४	गीत मोहोणसिंघजीका			४८१-४८२	१४६		
७५	गीत गोरधनसिंघजीका			४८३-४८४	१४६-१५०		
७६	गीत अजीतसिंघजीका			४८५	१५०		
७७	माहाराव छत्रसालजी कवित्			४८६-४८८	१५०-१५१		
७८	गीत प्रथीसिंघजीका			४९०	१५१-१५२		
७९	गीत नाहरसिंघजीको			४९१	१५२		
८०	गीत नाथजीको			४९२	१५२-१५३		
८१	गीत हर्षनारायेणको			४९३	१५३		
८२	गीत दोलतसिंघ हरदावतको			४९४	१५३		
८३	गीत भीवसोँघ हरदावतको			४९५	१५३-१५४		
८४	जैतसिंघ हरदावत कवित्			४९६-४९७	१५४		
८५	छीनसोँघजी सेवालता गीत			४९८-४९९	१५४-१५५		
८६	फतेसोँघ जैतसोँघजीको कवित्			५००-५०१	१५५		
८७	कस्युवा(कस्युवा) वायको गीत			५०२-५०४	१५५-१५६		
८८	गीत हाडा भीवसिंघजीको			५०५-५०६	१५६-१५७		
८९	कवित् राय हमीरको			५०७-५०८	१५७		
९०	प्रथीयराराजकी श्रृष्य			५०९-५१२	१५७-१५८		
९१	गीत गोल डोडो वरपोदको			५१३	१५८		
९२	राणा भोजराज चहुयाणको कवित् टोडरमल चहुयाण नीमराणाको राजा			५१५	१५८-१५९		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
६३	गीत वेवलाका ठाकुर बखत- सीध चहुवाण को । सुपखरो चोटीबंध			५१५से५१७	१५६-१६०		
६४	गीत चहुवाणाको			५१८-५१९	१६०-१६१		
६५	गीत सत्रसाळ देवडाको			५२०	१६१		
६६	गीत श्रखसीध देवडोको			५२१	१६१		
६७	गीत सुरताण देवडोको			५२२	१६१		
६८	गीत (वी) रमदे सोनगराको			५२३	१६२		
६९	गीत राणगदे सोनगराको			५२४	१६२		
१००	गीत जसो सोनगरको			५२५	१६२-१६३		
१०१	गीत कुभा(कुभा) लोचीको			५२६	१६३		
१०२	गीत धीरत्तसीध लोचीको			५२७	१६३-१६४		
१०३	गीत नगा लोचीको			५२८-५२९	१६४		
१०४	गीत फतेसीध लोचीको			५३०	१६४-१६५		
१०५	गीत शकवर पातस्याको			५३१-५३२	१६५		
१०६	कवित् साहिजादो बानसाहको			५३३	१६५		
१०७	कवित् खान खान नवाबको			५३४-५३६	१६५-१६६		
१०८	कवित् श्रोस्जे(व) पातस्याका			५३७	१६६		
१०९	गीत साहिजादाको			५३८	१६६-१६७		
११०	गीत बल्लिको			५३९	१६७		
१११	गीत राणा कुंभाको			५४०-५४३	१६७		

राजस्थान पुरातत्त्वव्यवस्थापन विभाग—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग—२, परिशिष्ट—३; इन्द्रगढपोथीखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
११२	गीत रायमल राणाको			५४४	१६८		
११३	गीत राणा परतापसौधको			५४५-५४६	१६६-१६६		
११४	गीत राणा अमरसौधको			५४६	१६६-१७०		
११५	गीत राणा जगतसौधजीको			५५०	१७०		
११६	गीत राणा राजसौधको			५५१-५५५	१७०-१७१		
११७	गीत राणा परतापसौधजीको			५५६	१७२		
११८	गीत राणा सगरामसौधजीको			५५७	१७२-१७३		
११९	गीत राणा सागाको			५५८-५५९	१७३-१७४		
१२०	गीत जमल पताको			५६०-५६१	१७४-१७५		
१२१	गीत रावळजीका			५६२	१७५		
१२२	गीत रावळको			५६३	१७५-१७६		
१२३	गीत अमरसौध रावळको			५६४	१७६		
१२४	गीत जेतसी रावलको			५६५	१७६		
१२५	गीत सातमसौध देवळको			५६६	१७६-१७७		
१२६	कवित् सेवो रावलाको			५६७	१७७		
१२७	कवित् कावडपा लेडीको			५६८	१७७		
	भारतसौधजीको						
१२८	गीत राणा भीयको			५६९-५७०	१७७-१७८		
१२९	गीत उज्जवा प्रचीराजको			५७१-५७२	१७८-१७९		
१३०	गीत सागा मीणाको			५७३	१७९		
१३१	गीत चोरो लाणाको			५७४	१७९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिकाल	विशेष
१३२	गीत सीही चलो			५७५	१७९-१८०		
१३३	गीत देवीसीध बेगुका ठाकुरको			५७६	१८०		
१३४	गीत दवारिकादास चोडावतको			५७७	१८०		
१३५	गीत जसोतसीध चोडावतको मुक्ताग्रह			५७८	१८०-१८१		
१३६	गीत नरायणदास सगतावतको			५७९	१८१		
१३७	गीत गजगति नरायणदास सगतावतको			५८०-५८१	१८१-१८२		
१३८	गीत श्रठतालो			५८२	१८२		
१३९	गीत गोकलदास सगतावतको			५८३-५८६	१८२-१८४		
१४०	गीत परतायसीध सगतावतको			५८७-५९३	१८४-१८५		
१४१	गीत जगतसीध सगतावतको			५९४-५९५	१८५-१८६		
१४२	गीत लालसीध सगतावतको			५९६	१८६		
१४३	गीत सगतसीध सगतावतको त्रीकुटवध			५९७	१८६-१८८		
१४४	गीत सुरतसीध सगतावतको			५९८	१८८		
१४५	गीत सगतावतको			५९९	१८८		
१४६	गीत राणा सत्रामसीधजीको			६००	१८८-१८९		
१४७	रूपक म्होकमसी चत्रावतको			६०१-६०४	१८९-१९०		

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषणमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढपोथीखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थसूची	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१४८	गीत श्रमरसीध चंद्रावतको			६०५	१६०-१६१		
१४९	गीत भारतसीध लाहपुर			६०६-६०७	१६१वां		
१५०	गीत उमेवसीध साहेपुर			६०८-६१२	१६१-१६४		
१५१	गीत श्रवोलसीधको			६१३	१६४		
१५२	गीत रामानंद नागाको			६१४	१६४-१६५		
१५३	गीत केसरीसीध नीसोवो			६१५	१६५		
१५४	गीत सांवलवास डावरको			६१६	१६५-१६६		
१५५	गीत श्रचलसीध राणाउत्तको			६१७-६१९	१६६-१६७		
१५६	गीत जगमाल जाजपुरको			६२०	१६७		
१५७	ठोकुरको गीतकडो						
१५८	गीत वेचलाका ठोकुरको तनर			६२१	१६७-१६८		
१५९	गीत						
१६०	गीत जगमोडो वेधुका			६२२	१६८		
१६१	रावत हरीसीधजीको						
१६२	गीत विहारीवाग गलीतनो			६२३	१६८		
१६३	गीत आनु गलीतको			६२४	१६८-१६९		
१६४	गीत मुलराज सोलगीमो			६२५	१६९-२०१		
	मुक्ताग्रह						
१६५	कवित् नाहारसिध सोळगीको			६२६	२०१		
१६६	दोनु कवित् नाहारपीजीको			६२७	२०१		
	छे । एक कवित् नाहारपीजीको						
	एक एक पुरजीको						

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१६४	कवित हरीजीकी			६२८-६२९	२०१-२०२		
१६५	गीत लालसिंघ सोल (स) खीकी			६३०-६३१	२०२		
१६६	गीत कसनसिंघजीकी			६३२	२०२-२०३		
१६७	गीत वीरमदे सोलखीकी			६३३	२०३		
१६८	गीत सीधराव जैसगकी			६३४	२०३-२०४		
१६९	गीत मुळराज सोलखीकी			६३५	२०४		
१७०	कवित नाथावताकी			६३६	२०४		
१७१	गीत देवीसिंघ नाथावतकी			६३७	२०४-२०५		
१७२	कवित् करण नाथावतकी			६३८	२०५		
१७३	गीत गोयवा सखराडाकी			६३९-६४०	२०५-२०६		
१७४	गीत अमरसिंघ भाटी जैसलमेरकी			६४३	२०६		
१७५	गीत सबळा भाई			६४४	२०७		
१७६	गीत जाडुकी			५४५	२०७		
१७७	गीत विजासर देयाकी			६४६	२०७-२०८		
१७८	गीत करण सरवेयाकी			६४७	२०८		
१७९	बुहा जसा सरवेयाका			६४८	२०८-२०९		
१८०	गीत राठोडाका			६४९	२०९-२१०		
१८१	गीत राजा गजसिंघजीकी			६५०-६५१	२१०		
१८२	गीत राजा जसोतसिंघजीकी			६५३-६५६	२१०-२१२		
१८३	गीत अमरसिंघ राठोडाकी नागौरकी राजा			६५७-६५८	२१२		

राजस्थान पुरातत्त्वावेषणमन्दि—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २, परिशिष्ट-३, झुमगढपोखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१८४	गीत राजा श्रजीतसौधजीको			६५६-६७२	२१२-२१४		६६७ से ६७० तकके गीत नहीं है।
१८५	गीत राजा श्रम(य)सौधजीको			६७३-६७५	२१४-२१६		
१८६	गीत बखतसौधको			६७६-६८१	२१६-२१९		
१८७	गीत जीवा प्रापा वखणीको			६८२	२१९-२२०		
१८८	गीत राजा विजेसौधको । चुपखरो			६८३	२२०-२२१		
१८९	गीत राजसौध रूपनगरको राजाको			६८४-६८६	२२१-२२३		
१९०	(गी) सत कृपा राठोडको			६८७-६९०	२२३-२२५		
१९१	गीत नीवाको			६९१	२२५		
१९२	गीत रतनको			६९२	२२५		
१९३	गीत वलु चांवावतको			६९३-६९५	२२६-२२७		
१९४	सोनग वलुको बंधो बोहा			१०	२२७		
१९५	गीत रामसौध राठोडको			६९६-६९७	२२७-२२८		
१९६	गीत बोलतसौध राठोडको			६९८	२२८		
१९७	गीत श्रमरसौध गरउयाको गीत नागढो			६९९	२२८-२२९		
१९८	गीत श्रित्रसौध गरउयाका ठाकुरको			७००-७०१	२२९-२३०		
१९९	गीत गोरुनवात राठोडको श्रमरसौध नागौरका आगुरक श्रीटे नाम प्रायो			७०२	२३०		

० यह रोहिती सख्या है।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२००	गीत जतसीघ सुमीयाणको ठाकुर राठोडको			७०३	२३०-२३१		
२०१	गीत केसरोसीघ उदाउतको			७०४	२३१-२३२		
२०२	गीत उदाउतको			७०५	२३२		
२०३	गीत मोहोकम राठोडको			७०६	२३२-२३३		
२०४	गीत विजा राठोडको			७०७	२३३		
२०५	गीत हठीसीघ राठोडको			७०८	२३३-२३४		
२०६	गीत तेजसीघ राठोडको			७०९	२३४		
२०७	गीत कुसलसीघ चांपावतको			७१०	२३४-२३५		
२०८	गीत सेरसीघजी कुसल-सीघजीको			७११	२३५		
२०९	गीत कुसलसीघ सेरसीघको			७१२-७१४	२३५-२३६		
२१०	गीत सेरसीघजीको			७१५-७१७	२३६-२४१		
२११	गीत दुरगादास राठोडको			७१८	२४१		
२१२	गीत गोपालसीघ मेडत्याको			७१९	२४१-२४२		
२१३	गीत श्ररघ गोय फसनसीघ राठोडको			७२०	२४२		
२१४	गीत परसा राठोडको			७२१	२४२-२४३		
२१५	गीत चतुरा राठोडको			७२२	२४३		
२१६	गीत करण राठोडको			७२३	२४३		
२१७	गीत साहायसीघ राठोडको			७२४	२४३-२४४		

राजस्थान पुरातत्वावेषणमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढपोथीखानाग्रन्थसूची]

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२१८	गीत करण राठोडको			७२५	२४४		
२१९	गीत संसमल राठोडको			७२६-७२९	२४४-२४६		
२२०	गीत माधोसौध राठोडको			७३०-७३१	२४६-२४७		
२२१	गीत जसोतसौधजीका			७३२	२४७		
२२२	उमरावाको			७३३	२४७-२४८		
२२३	गीत श्रभसौधजीका			७३४	२४८		
२२४	गीत परथीराज राठोडको			७३५	२४८		
२२५	गीत ज(य)सौध राठोडको			७३६	२४९		
२२६	गीत सेवो बादेत्तको			७३७	२४९		
२२७	गीत घाणोरालो ठापुर पवम-सौधको			७३८	२४९-२५०		
२२८	गीत सगतसौध राठोडको			७३९	२५०		
२२९	गीत मोकम चापाउतको			७४०	२५०-२५१		
२३०	गीत श्रमसौध राठोडको			७४१	२५१		
२३१	गीत कसो राठोडको			७४२	२५१		
२३२	कवित् राव चौकाको			७४३	२५१-२५२		
२३३	गीत कल्याणसौधजीको			७४४-७४५	२५२-२५३		
२३४	गीत प्रथीराज राठोडको			७४६	२५३		
२३५	गीत रावसौधको			७४७	२५३		
२३६	गीत बीकानेरको मोणसौधका			७४८	२५३		
२३७	वैद्याको			७४९	२५३		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२३६	गीत साणोर थाणबव वेलीयो रामसींघको			७४८	२५३-२५४		
२३७	गीत रायसींघ वीकानेरको			७४९	२५४		
२३८	कवित् वीकानेरका राजा श्रीनोपसींघको			७५०	२५४-२५५		
२३९	गीत वीकानेरको पदमसींघको			७५१-७५४	२५५-२५६		
२४०	गीत केसरीसींघ वीकानेरको			७५५	२५६-२५७		
२४१	कवित् राजा गजसींघजी वीकानेरको			७५६	२५७		
२४२	गीत भींव राठोडको			७५७	२५७-२५८		
२४३	गीत दुवा राठोडको			७५८	२५८		
२४४	गीत ललघीर रींदा			७५९	२५८-२५९		
२४५	गीत योफ अलरो करण वीकानेरका राजाको			७६०	२५९		
२४६	गीत श्राफुको			७६१	२५९-२६०		
२४७	गीत भ्यागको			७६२	२६०		
२४८	द्युप राव भाराकी जाडो- चाकी			७६३	२६०		
२४९	गीत जाडेजाकी जोसर			७६४	२६०-२६१		
२५०	गीत हीरा मागळयाको			७६५	२६१		
२५१	गीत म्हेर जाडेचाको			७६६	२६१-२६२		

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषणमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २, परिशिष्ट-३; इन्द्रगढयोथीखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थसूची	कर्ता	भाषा	विषय	पृथसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२५२	गीत राव देसलको			७६७	२६२		
२५३	दुरजनसाल सोडाको			७६८	२६२		
२५४	गीत भोज काबाको			७६९	२६२-२६३		
२५५	गीत घातडी सोडा चवाणको			७७०	२६३		
२५६	गीत सोडा राठोडाको चुफको			७७१	२६३-२६४		
२५७	गीत सोडा भाटीकी चुफको			७७२-७७३	२६४		
२५८	गीत राजा मानको			७७४-७७५	२६४-२६५		
२५९	कवित बडो जैसीघकी			७७६-७७८	२६५-२६६		
२६०	गीत बडो जैसीघकी			७७९	२६६		
२६१	गीत जगतसौघ ग्राम[मे]रका राजाको लहूचान			७८०	२६६		
२६२	गीत राजा रामनीघजीको			७८१	२६६-२६७		
२६३	कवित राजा वगनसौघकी			७८२	२६७		
२६४	गीत सीहि प्रोगण राजा मवाई जैसीघकी			७८३-७८८	२६७-२७०		
२६५	गीत यडा जैसीघकी			७८९-७९०	२७०-२७१		
२६६	गीत कुमेठ । मनोहर सागळो बडा जैसीघकी उमराचकी			७९१	२७१		
२६७	गीत ततोस मीघ राजाउरको			७९२	२७१		
२६८	कवित कुशनमौघ नाथा 'त चोमा[मू]को ठाकुर			७९३-७९४	२७१-२७२		
२६९	गीत गजनीघ नागाउतको			७९५-७९६	२७२-२७३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विवेक
२७०	गीत सोरठी उव (य) सीँघ सेखाउतको			७६७	२७३		
२७१	गीत दीपसिँघजीको			७६८	२७३-२७४		
२७२	गीत दोलतसिँघको			७६९	२७४		
२७३	गीत सोसीँघ सेखाउतको			८००	२७४-२७५		
२७४	गीत कानसिँघ बलभदोत			८०१	२७५		
२७५	गीत देवसीँघ खगारोतको			८०२	२७५-२७६		
२७६	गीत अमरसीँघ खगारोत			८०३	२७६		
२७७	गीत गोरधन कल्याणोत			८०४-८०५	२७६		
२७८	गीत मानसिँघ कल्याणोत			८०६	२७६-२७७		
२७९	गीत कमा कल्याणोतको			८०७	२७७		
२८०	गीत जँचद कल्याणोतको			८०८	२७७		
२८१	गीत फतेसीँघ नागाको			५०९	२७७-२७८		
२८२	गीत जँसीँघ नरूको			८१०	२७८		
२८३	गीत दोनु जँसीँघ नरूकाका			८११	२७८		
२८४	गीत मुजाणसीँघ जँग- नाथोतको			८१२	२७८-२७९		
२८५	गीत राहेवरा भाखरोतको			८१३	२७९		
२८६	कथित राजसीँघ भाखरोतको			८१४-८१५	२७९-२८०		
२८७	गीत राजसीँघ भाखरोतको			८१६	२८०		
२८८	गीत गुजरीका पेट (पेटा) को नराणवासजीको दोलतया पेटो छे जीहो गीत छे			८१७	२८०-२८१		

राजस्थान पुरातत्त्वविशेषणमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढ़पोथीखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निर्णयकाल	विशेष
२८६	कवित् जैतसींघ मानसींघउत्त (बाकाउत्त)को			८१८	२८१		अपह बोहेकी सख्या है।
२८७	दुहो बाकाउत्तको			१५	२८१		
२८८	गीत सपुत्तको			८१६	२८१-२८२		अपह बोहेकी सख्या है।
२८९	गीत कपुत्तको			८२०	२८२-२८३		
२९०	गीत वेसरं मानसींघोताको			८२१	२८३		
२९१	दुहा सवाई जैसींघजीको			१५	२८३		
२९२	गीत खगार कछ्यावाको। खगारो ताको बडो सारा सु			८२२	२८३		
२९३	कवित् नायाउत्त कछ्यावाको			८२३	२८३-२८४		गीतम - ६२८ नहीं है।
२९४	गीत जग लोडो राजा विठल- वास गोडको			८२४-८२७	२८४-२८५		
२९५	गीत राजा अनाव (आर्ना?)को			८२६	२८५-२८६		
२९६	कवित् राजा बीठलको डुगरसी बाफ्फडीका कह्या			८३०-८३२	२८६		
३००	गीत राजा अमरव गोत्रको			८३३	२८६-२८७		
३०१	कवित् सावन्डो			८३४-८३५	२८७		
३०२	गीत राजा नरत (ग)को			८३६-८३६	२८७-२८८		
३०३	गीत जाति हुसमग			८४०	२८६		
३०४	गीत अरट गोत्रको			८४१	२८६		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
३०५	गीत अरजन गोडको			८४२-८६०	२८६-२९६		गीतस ८६५ नहीं है।
३०६	गीत सुभराम गोडको			८६१-८६४	२९६-२९८		
३०७	गीत राजा मनोरवासजीको			८६६	२९८-२९९		
३०८	गीत राजा उतमरामजीको			८६७	२९९		
३०९	गीत वीरभद्र गोडको			८६८	२९९		
३१०	गीत अरजन वीरभद्रको			८६९	२९९-३००		
३११	गीत जोरावरसीधजी माहा- राजा छीप्रसीधजीका नावजीको			८७०	३००		
३१२	गीत उव (य) भाण हरभाण गोडको			९७१-९७२	३००-३०१		
३१३	गीत सगता गोडको			९७३	३०१		
३१४	डुहो रासा(णा)साणा उतमराव रतनको कह्यो			१*	३०२		
३१५	गीत थानसीध सागाउतको			८७४-८७५	३०२-३०३		
३१६	गीत कसनसीध गोडको			८७६-८७७	३०३		
३१७	गीत बलाभालाको			८७८-८७९	३०३-३०४		
३१८	गीत राम कीरतसीधजी सादुं(डी)का ठाकराको			८८०	३०४		
३१९	गीत नाथजी भालोताणाको ठाफुरको			८८१	३०४-३०५		
३२०	कुडत्या जलोत भालाका			८८२-८८६	३०५-३०६		

*यह छोहेकी संख्या है।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
३२१	बृहो माधोसौंघ भालाको			४१	३०६		अपह बोहेकी सत्या है।
३२२	बृहो मदनसौंघ भालाको			१-८६०	३०६-३०७		८६० कवित् स है।
३२३	कवित हुमतेसिंघ भालो			८६१	३०७		
३२४	मन्न हेमतसौंघ भाला उपर			८६२	३०७		
३२५	गीत जालमसौंघ भालाको			८६३	३०७-३०८		
३२६	बृहो पुवाराको			४१, ८६४	३०८		४१ सत्या बोहेकी है।
३२७	गीत साबुल (साबुल) पुयारको			८६५	३०८		
३२८	गीत रावत मयण उमटको			८६६	३०९		कविससत्या के अतिस्थित ४ बोहे थीर है।
३२९	गीत परसराम उमटको			८६७	३०९-३१०		दयह मत्या बोहे की है।
३३०	बृहो मानधाता पुवार बीजोलियाका ठाकुरको			४१	३१०		
३३१	गीत नगा सतीको			८६८-८६९	३१०-३११		
३३२	गीत नारग देसतीको			९००	३११		
३३३	गीत रजपुताका गाडको			९०१-९०४	३११-३१३		
३३४	गीत अलोपसौंघ कदवापो			९०५	३१३		
३३५	गीत माधोसौंघ कदवापो			९०६	३१३-३१४		
३३६	अजयगढ भानगडका ठाकुरको			९०७	३१४		
३३७	गीत गोवयराग मापासोको कदवापो			९०८	३१४		
३३८	गीत कमा मायाणी रधरापो			९०९	३१४-३१५		
३३९	कवित् मयाई अंतीगको			९१०	३१५		

राजस्थान पुरातत्त्वविभागमन्दिर—हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २; परिशिष्ट-३, इन्द्रगढपोथीखानाग्रन्थसूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विवरण
३३६	कवित् सताराका राजाका			६१०-६१६	३१५-३१७		
३४०	कवित् हरदसाह बुवेलाका			६२०-६२१	३१७-३१८		
३४१	कवित् आतमाराम रुघनाथ- सीघ गोड भाखरोत			६२२-६२३	३१८		
३४२	कवित् तरवरसाह भाटकी			६२४-६२५	३१८-३१९		
३४३	कवित् घरती चकवहुवाकी			६२६-६२७	३१९		
३४४	कवित् रूपगाकी खोडकी			६२८	३१९-३२०		
३४५	कवित् प्रसताई देवीवासका			६२९-६३६	३२०-३२२		
३४६	कवित् कुडळया गिरधरका कहा			६३७-६६६	३२२-३२६		
३४७	गीत श्रमरमौघजी खातोली का ठाकुरकी			इसके पश्चात् स्फुटपत्र है, उन्हीं पर क्रमशः पत्र- संख्या दी हुई है। अतः गीत संख्या क्रमशः नहीं है			
३४८	गीत महाराजा भगतरामजी की दसर । भयारीदास वागडीकी कह्यो			३३०			
३४९	कवित् तरवरसणका भाव- परी छाप			३३०			
३५०	गीत ओढो अठताळो सवा- तोकी			३३५			

पत्र ३३१ से ३३४ तक
स्फुट कवित्त बोहे हैं।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१६१	(घ) भाषाभूषण परमलोकपत्रिका	जसवन्तसिंह	हिन्दी	रसालकार	१०	२०वीं श	अपूर्ण
१६२	यश प्रकाश	कविजुहार	"	वेदान्त	१०	१६०५	
१६३	विदग्धमूलसमण्डन (तृतीयपरि- चयेवान्त)	धर्मदास	संस्कृत	काव्य	१२	२०वीं श	
१६४	वीरसप्तशती	सूर्यमल्ल	हिन्दी	काव्य	१६	"	जीर्णशीर्ष, अपूर्ण
१६५	महाकालभैरवकवच	गन्धर्वतन्त्रोक्त	संस्कृत	तन्त्र	३	"	
१६६	भैरवकवच (त्रैलोक्यमङ्गलनामक)	रुद्रयामलोक्त	"	"	३	"	
१६७	सुमुखीसहस्रनाम	रुद्रयामलगत	"	"	१२	१८६१	
१६८	अर्गलाकीलकरतोत्र	सप्तशतीगत	"	"	४	२०वीं श.	
१६९	सुमुखीपटल (हनूमद्विषयक)	रुद्रयामलगत	"	"	१०	१८६०	
२००	गणेशकवच		"	"	३	१८६५	
२०१	क्षेत्रपालमन्त्र		"	मन्त्रशास्त्र	३	१६वीं श	
२०२	अमृतसञ्जीवनीकरप		"	तन्त्र	८	"	अन्तिमपत्र अप्राप्त
२०३	बालापूजनपद्धति		"	मन्त्रशास्त्र	१४	"	अपूर्ण
२०४	उडुशतन्त्र		"	तन्त्र	८	"	
२०५	गंगसहितागिरिराजखण्डटीका	नाथूराम गुजराती	हिन्दी	पुराण	३३	२०वीं श	
२०६	इन्द्रगढ़महाराराजसप्रामसिंहवि- रचितग्रन्थोकी सूची श्रावि		"	प्रकीर्ण	२६	"	

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनाचिजयजी

प्रकाशित ग्रन्थ

१-संस्कृत ग्रन्थ

- १ प्रमाणमजरी, तार्किकचूडामणि नवदेवाचार्य, सम्पादक—मीमांसाशास्त्रविद्वान् श्री १० पट्टाभिराम-शास्त्री, विद्यानागर । मूल्य—६ ००
- २ यन्त्रराजरचना, महाराजा-मवाई-जयसिंह-विरचित । सम्पादक—स्व० १० गेंदाराय, ज्योतिषवित् । मूल्य—१ ७५
- ३, महर्षिकुलवंभवम्, स्व० १० मधुसूदन श्रीकाप्रणीत, सम्पादक—म०म० १० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी । मूल्य—१० ७५
- ४, तर्कसंग्रह, अन्नभट्ट, सम्पादक—डा० जितेन्द्र जेटनी, एम ए, पी-एच. डी., मूल्य—३.००
५. कारकसंबन्धोद्योत, १० रभसनन्दी, सम्पादक—डॉ हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी एच-डी, मूल्य—१.७५
६. वृत्तिदीपिका, मोनिकृष्ण-भट्ट, सम्पादक—१० पुरातनमर्मा चतुर्वेदी, नाट्यशास्त्रज्ञ । मूल्य—२ ००
- ७ शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक—डॉ हरिप्रसादशास्त्री, एम ए, पी-एच. डी । मूल्य—२.००
८. कृष्णगीति, कवि सोमनाथ, सम्पादिका—डा प्रियवाला शाह, एम ए, पी-एच डी, डी लिट् । मूल्य—१ ७५
- ९ नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ. प्रियवाला शाह, एम. ए., पी एच डी, डी लिट् । मूल्य—१.७५
१०. शृङ्गारहारावली, श्री हर्ष-कवि-रचित, सम्पादिका—डा प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी, डी. लिट् । मूल्य—२ ७५
११. राजविनोद महाकाव्य, महाकवि-उदयराज, सम्पादक—१ श्री गोपालनारायण बहुरा एम ए, उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य—२.२५
- १२, चक्रपाणिविजयमहाकाव्य, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक—केशवराज काशीराम शास्त्री । मूल्य—३ ५०
- १३ नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्ण रचित, सम्पादक—प्रो रत्नकलाल द्योतानाल पारीख, तथा डॉ० प्रियवाला शाह, एम ए, पी-एच. डी, डी लिट् । मूल्य—३.७५
- १४ उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दर-नाणी-विरचित, सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनाचिजय मुनि । सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य—४ ७५
- १५ दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० १० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक—१० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य । मूल्य—४ २५

ग्रंथों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत ग्रंथ

	संस्कृत ग्रंथ	सम्पादक—
	मुनिप्रदीप, लावण्य शर्मा रचित	मुनि श्रीजिनविजयजी
२	त्रिपुरा भारती लघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत	” ” ”
३	करुणामृतप्रपा, ठक्कुर मोमेश्वर-विनिर्मित	” ” ”
४	बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर सग्रामगिह विरचित	” ” ”
५	पदार्थरत्नमजूषा, प० कृष्ण मिश्र रचित	” ” ”
६	वसन्तविलास फागु, अज्ञात कर्तृक	” एम. मां. मोदी
७.	नन्दोपाख्यान, अज्ञात कर्तृक	” बी. जी. सारंग
८	चाद्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमि विरचित	” श्री बी. डी. दोशी
९	वृत्तजातिसमुच्चय, कवि विरहाङ्ग विनिर्मित	” एम. टी. वेङ्कटराव
१०	कविदर्पण, अज्ञात कर्तृक	” ” ”
११	स्वयम्भूच्छन्द, कवि स्वयम्भू विनिर्मित	” ” ”
१२	प्राकृतानन्द, रघुनाथ कवि रचित	” मुनि श्री जिनविजयजी
१३	कविकौस्तुभ, प० रघुनाथ विरचित	” श्री एम. एन. गौरा
१४.	दशकण्ठवधम्, प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी	” ” गङ्गापर द्विवेदी
१५	नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कृष्ण प्रणीत	” डॉ. प्रियदाता दाह
१६	भुवनेश्वरी स्तोत्र (महात्म्य), पृथ्वीधराचार्य रचित	” श्री गोपालनारायण बहूग
१७	इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध	” डॉ. दशरथ शर्मा

२-राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

१८	मुहता नैणसी री एयात, भाग २, नैणसी मुहता सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद माण्डिया	
१९	गोरा बादल पर्दाशणी चउपई, कवि हेमरतन विनिर्मित	सम्पादक—श्री उदरगिह प्रटनागर
२०	राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज मूल लेखक श्री आर. एम. भण्डारकर	अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी ।
२१	राठोडारी वशावली	सम्पादक—मुनि श्री जिनविजयजी
२२	सच्चित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थ-सूची	” ” ”
२३	मीरा बृहत् पदावली	” विद्याभूषण स्व. पुरोहित हरि- नारायणजी द्वारा मन्वलि
२४	राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ (देवजी वगडावत और प्रतापसिंह वार्ता आदि)	सम्पादक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
२५	पुरोहित वगसीराम हीरां और अन्य वार्ताएं इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रंथोंका सशोधन और सम्पादन किया जा रहा है ।	” श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी

राजस्थान पुरातत्त्व नामसे एक शोध-पत्र (जर्नल) निकालने की योजना भी विचाराधीन है ।

